TEXT FLY WITHIN THE BOOK ONLY

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180434

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H83/M95B Accession No. H2601

Author मुलकराज आनंद

Title बुढ़िया का गहना

This book should be returned on or before the date last marked below.

बुढ़िया की गाय

बुढ़िया की गाय

लेखक

मुल्कराज आनन्द

अनुवादक

मुनीश सक्सेना

आत्माराम एन्ड संस
प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता
काश्मीरी गेट, दिल्ली-६

राजकमल प्रकाशन
दिल्ली बम्बई इलाहाबाद पटना मद्रास

मूल्य : पाँच रुपये पचास नये पैसे

प्रथम संस्करण : नवम्बर १९५७

Checked 1969

Checked 1969

राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली, बम्बई, इलाहाबाद, पटना, मद्रास द्वारा प्रकाशित और ओमप्रकाश कपूर, ज्ञानमण्डल लिमिटेड, कबीरचौरा, वाराणसी द्वारा मुद्रित ५१७०–१४ ।

प्यारे सरदार,

कहानी को अपने ढंग से कहने की इच्छा के वश 'बुढ़िया की गाय' की उस युगों की पुरानी कहानी को मैंने एक बार फिर कहने का प्रयास किया है।

इस उपन्यास में जिस चिनगारी ने भड़ककर ज्वाला का रूप धारण कर लिया है, वह मुझे तुम्हारी ही प्रेरणा के भंडार से मिली थी, इसलिए स्वाभाविक ही है कि मैं इसे तुम्हें ही समर्पित करूँ।

२५ कफ परेड,
कोलाबा, बम्बई–५

तुम्हारा शुभेच्छु
मुल्कराज आनन्द

बुढ़िया की गाय

एक

●●१

पंछी जिस टट्टू पर बैठा हुआ था वह एकाएक भड़क गया और उसने दुलत्ती झाड़कर अपने शरीर को इतने जोर से झँझोड़ा कि दूल्हा और उसका नन्हा-सा चचेरा भाई निक्का, जो शहबाला बना था, दोनों गिरते-गिरते बचे। अपने सेहरे में से, जो उसकी भड़कदार गुलाबी पगड़ी और गहरे गेहुँए रंग के चेहरे को ढके हुए था, पंछी यह भी न देख पाया कि टट्टू इस तरह क्यों भड़क गया था। पिपलाँखुर्द गाँव से पिपलाँकलाँ तक की तीन मील की यात्रा के दौरान मे उसने लगाम को ढीला छोड़ रखा था क्योंकि लाला बीरबल के नौकर ने, जिनसे वह टट्टू किराये पर लिया गया था, टट्टू की लगाम पट्टे के पास पकड़ रखी थी। पंछी का दिल धड़कने लगा और वह पसीने मे नहा गया।

"कसके पकड़े रहना!" पंछी ने निक्का से चिल्लाकर कहा।

पर निक्का के हाथ पंछी की कमर के घेरे से छोटे थे इसलिए वह एक तरफ को लटक गया और चीखने लगा।

"अरे, अरे, मोती!" लाला बीरबल के नौकर सूरज ने टट्टू को कुछ प्यार और कुछ व्यंग्य के साथ डाँटते हुए कहा। सूरज दक्खिन का रहने वाला था और उसके काले रंग को देखते हुए सूरज नाम उसे बिलकुल शोभा नहीं देता था। "चल बेटा, बस अब पहुँच ही गये हैं...और कौन जाने, वहाँ तेरी भेंट उस घोड़ी से हो जाये जो तेरे लिए बेचैन होकर हिन-हिना रही है।"

परन्तु लाला बीरबल का टट्टू—मोती—बहुत ही नखरीला जानवर मालूम होता था। वह रास्ते की पोली मिट्टी में अपने अगले पाँव गड़ाकर

खड़ा हो गया था और किसी तरह आगे चलने का नाम ही न लेता था। सूरज ने उसे काबू में करने की व्यर्थ कोशिश की और गॉव के पीछे अपना सर ऊँचा किये खड़ी हुई पहाड़ियों की तरफ देखकर पहले तो वह यह समझा कि शायद मोती गाँव के पीछे शिवालिक पर्वत की चोटियों को देखकर ही डर गया है। फिर उसने मुड़कर बाहर से बुलवाये गये ढोल और नफीरी बजानेवालों को देखा, जिन्होंने उसी समय शादी-ब्याहवाली धुन छेड़ दी थी।

"बन्द करो यह गाना-बजाना !" सूरज ने चिल्लाकर कहा, "हमारा घोड़ा इन गँवारू धुनों को पसन्द नहीं करता, जानते नहीं बीरबल साहब का घोड़ा है !"

दूल्हा के पीछे बराती आ रहे थे—कुछ पैदल और कुछ इक्कों पर सवार। उनके चेहरों पर सहसा गम्भीरता छा गयी, मानो दुलहन के गॉव से डेढ़-दो फर्लांग पहले ही टट्टू का इस तरह अड़ जाना कोई अपशकुन था; और दम साधकर इस प्रतीक्षा मे कि पंछी अपने तगड़े-कसरती शरीर के भार से, जिसके कारण वह काफी बदनाम था, उस टट्टू को, जो खच्चर की तरह अड़ियल मालूम होता था, चलने पर मजबूर करेगा, उनमें से कुछ लोग आपस मे कानाफूसी भी करने लगे।

पछी ने भी अपना पूरा जोर लगा दिया पर उसे काफी मुसीबत का सामना करना पड़ रहा था। उसने मोती के पेट मे अपनी एड़ियॉ गड़ाकर एक तरफ की लगाम खीची और टट्टू चक्कर खाने लगा। मालूम नही कि पंछी मोती से यही चाहता था कि नहीं, लेकिन उसने जताया यही कि उसे काबू में करने के लिए वह यह सब कुछ जानबूझकर कर रहा है। यह देखकर उसके चाचा मोलाराम घबरा गये; उन्हे पंछी की इतनी फिक्र नहीं थी जितनी अपने बेटे निक्का की, जो शहबाला बना हुआ था। वह अपनी पाटदार आवाज में चिल्लाये, "ओए ! सँभाल के !"

अपने भतीजे से मोलाराम ने जो शब्द कहे थे, उन्हे सुनकर टट्टू चक्कर खाते-खाते फिर भड़क गया।

परन्तु इतने में सूरज ने उसके मुँह पर एक थप्पड़ मारा और वह सँभलकर खड़ा हो गया।

अब पंछी ने भी सूरज और टट्टू पर कुछ चुनी-चुनी गालियों की बौछार कर दी, जिन्हें सुनकर वह नाटे कद का दक्खिनी साईस इतना बुरा मान गया कि उसने मोती को काबू में करने के लिए अपने दुर्बल शरीर का पूरा जोर लगा दिया, हालाँकि पिपलाँकलाँ के बाहर के खेतों मे उगी हुई हरी-भरी काँटेदार झाड़ियों को देखकर वह अब भी बीच-बीच मे भड़क उठता था।

इस गड़बड़ के बाद टट्टू काफी शान्त हो गया और बरात आगे बढ़ी। ख़ैरियत बस यह हुई कि लड़कीवालों की तरफ से अगवानी के लिए आये हुए लोगों ने, जो उस बड़े से गाँव के फाटक के भव्य खँडहरों के बाहर खड़े बरात का इन्तजार कर रहे थे, दूल्हा को टट्टू पर मुसीबत मे गिरफ्तार नहीं देखा।

पंछी की भी जान में जान आ गयी और वह बड़े रोब के साथ तनकर मोती की पीठ पर बैठ गया, क्योंकि अब उसकी इज्जत का सवाल था। इस ब्याह की बातचीत में कई महीने लग गये थे। सबसे बड़ी कठिनाई तो यह थी कि हिमालय की तराई मे बसे पिपलाँकलाँ जैसे प्राचीन गाँव की एक लड़की, उसी नाम के छोटे-से गाँव के एक आदमी को कैसे ब्याह दी जाये। पिपलाँकलाँ जहाँ स्थित था, उसके बाद ही हिमालय पर्वत शुरू हो जाता था, और पिपलाँखुर्द था उस घाटी में, जो पतली होती हुई आगे जाकर होशियारपुर जिले के मैदान में जा मिलती थी। लेकिन यही अकेली कठिनाई नही थी। एक कठिनाई यह भी थी कि यद्यपि पंछी अपनी डेढ़ एकड़ जमीन पर किसानी करता था पर वह एक मनहूस अनाथ था और अपनी खराब सोहबत के कारण बदनाम भी बहुत था, तिस पर इस थोड़ी-सी जमीन के अलावा उसके पास और कोई जायदाद भी तो नहीं थी। और उसकी होनेवाली सास—लक्ष्मी, धन-दौलत की सर्वशक्तिमान् देवी की नामाराशी होने के नाते अपनी बेटी के लिए

खाता-पीता वर चाहती थी और लक्ष्मी का चचेरा भाई अमरू, जो लक्ष्मी के मृत पति के स्थान पर ससुर का पद सँभाले हुए था, बड़ा लोभी आदमी था और साथ ही उसे अपने गुंडेपन पर बड़ा गर्व था।

उस बड़े-से गाँव के फाटक के पास पहुँचते ही पिपलॉकलाँ के बैंडवालों ने लहकती हुई 'तिपरारी' धुन छेड़ दी, जिसमें बरात के साथवाले छोटे-से बैंड की शहनाई की पी-पीं बिलकुल दबकर रह गयी। इस बैंड के सरदार अकबर शाह थे और उनके साथ के सब बाजेवाले नीले और पीले रंग की झालरदार वर्दियाँ पहने हुए थे। मोती ने फिर लगाम को झटका दिया।

पंछी ने उसे फटकार बतायी :

"चल, चल बे...! सब लोग समझेंगे कि तू ही दूल्हा है और दुलहन के पास जाने से डरता है।"

सौभाग्यवश, सूरज मोती का पट्टा कसकर पकड़े था और यह सोचकर कि दूल्हा कहीं उसे फिर न डाँट बैठे, उसने बैंड-बाजों के शोर-गुल में अपनी आवाज उसके कानों तक पहुँचा देने का पूरा प्रयत्न करते हुए मोती की तरफ से माफी माँगकर दूल्हा को खुश करना चाहा।

"पंछी लाल भैया, यह टट्टू है ही कुछ अड़ियल! सिर्फ ठेकेदार साहब ही इस पर चढ़ते है। और किसी के बस का नहीं है यह। और शायद इसे इस बात से भी ठेस पहुँची है कि इसे सिर्फ बरात भर के लिए किराये पर दिया गया है।..."

"अच्छा, अच्छा," पंछी ने कहा। वह छोटा-सा किसान सूरज की इस अपमानजनक बात का मतलब समझकर झुँझला उठा था, "इसका पाप अभी कट जायेगा। मैं खुद इस ढोंग मे यकीन नहीं करता। लेकिन तुम यह नही कह सकते कि मैंने मोती को चलाने में असावधानी बरती है।"

"अरे नहीं साहब, उसके सर पर भी आप ही की तरह सेहरा बाँधा गया है। उसे तो खुश होना चाहिए।...आप बिलकुल बेफिक्र रहें, मैं इसकी लगाम पकड़े हूँ।..."

पछी जानता था कि सूरज साईस ये चिकनी-चुपड़ी चापलूसी की बाते केवल बख्शीश की रकम बढ़वाने के लिए कर रहा है। उसे इस सम्बन्ध में भी कोई भ्रम नही था कि वह मामूली-सी हैसियत का किसान, एक अमीर-लखपती महाजन और ठेकेदार लाला बीरबल के टट्टू पर सवार था। वह उस दक्खिनी साईस को उसके मालिक के बारे मे दो-चार खरी-खरी बातें सुना भी देता, पर इतने मे अकबर शाह के बैड ने पूरे जोर के साथ पंचम स्वर मे एक कर्कश अंग्रेजी धुन छेड़ दी, जिसमे बाकी सब आवाजे डूब गयी और इस धुन ने टट्टू की संवेदनशील आत्मा के साथ तो अनर्थ ही कर दिया; वह भड़ककर दुलत्तियाँ झाड़ने लगा और फुंकारने तथा हिनहिनाने लगा। आखिरकार पछी ने अपनी पूरी ताकत और सूरज ने अपना कोचवानी का पूरा कौशल लगाकर किसी तरह उसे काबू में किया। सौभाग्यवश, टट्टू आखिर मे बड़ी ढिठाई के साथ भयावह और वीरतापूर्ण मुद्रा मे अपनी अगली टाँगे ऊपर उठाकर खड़ा हो गया और इस मुद्रा में दूल्हा इतना शानदार सैनिक विजेता मालूम हो रहा था कि अगवानी के लिए आये हुए लोगों ने सोचा कि टट्टू को जानबूझकर इस तरह खड़ा करके पिपलाँकलाँ के प्राचीन गाँव को सलामी दी जा रही है। अकबर शाह की टोली जो बेसुरी तान अलाप रही थी, उसके शोर-गुल में शीघ्र ही सब लोग टट्टू के नखरों, सूरज की झिड़कियों और तानों और पिपलाँकलाँ और पिपलाँखुर्द के लोगो और स्वयं पिपलाँखुर्द के सूरमा, पंछो की डाँट-फटकार को भूल गये। पंछी का शर्मीलापन वास्तव में केवल उसके दंभ को छुपाने के लिए एक परदा था ; इस समय उसकी नस-नस में सन्तोष की लहरें दौड़ रही थीं। बाहर से देखने में उसकी मुद्रा कठोर थी, पर अन्दर-ही-अन्दर अपनी होनेवाली दुलहन के लिए उसके हृदय में अत्यन्त कोमल भावनाएँ हिलोरें ले रही थीं; कुछ प्रतीक्षा, कुछ संकोच, कुछ कम्पन—अनेक उमगें उसके हृदय में मचल रही थीं !

वह कल्पना करने लगा कि यह लड़की गौरी कैसी होगी ? गोरी होगी या काली ? खूबसूरत होगी या बदसूरत ? या बस यों ही साधारण नाक-नक्शे

की ? यह सोच-सोचकर उसे बड़ा रोमांच हो रहा था कि अब वह उस लड़की को अपनी टाँगों के बीच दबा सकेगा, जिसे अब तक उसने छुपे-छटके पिपलाँकलाँ जाकर गाँव की दूसरी छोकरियों के बीच देखा भर था, जब वह अपनी सहेलियों के साथ गाँव के तालाब पर पानी भरने, नहाने या कपड़े धोने आती थी। परन्तु वह इतना तो जानता ही था कि देखने में वह कैसी भी हो पर वह उसका हुक्म तो मानेगी ही, क्योंकि उसके ससुरालवालों ने शादी की बातचीत के दौरान मे यह हवा बाँध दी थी कि गौरी बिलकुल गऊ है, बड़ी सीधी, बड़ी नेक...

उसके ममिया ससुर अमरू और पिपलाँकलाँ के दूसरे बड़े-बूढ़ों ने पंछी के गले मे जो बहुत-सी फूल-मालाएँ डाल दी थी उनकी वास्तविकता ने उसकी कल्पनाओं के प्रवाह मे बाधा डाल दी थी।

"बहुत ही सुन्दर दूल्हा है।" गाँव के किसी बड़े-बूढ़े ने कहा। वह गाँव का धनी-मानी बूढ़ा किसान आदमसिंह था, जो पंछी के मृत पिता का बड़ा गहरा दोस्त था और उसी के जोर देने पर बाद में यह शादी तै हुई थी। यह कहकर उसने पछी की पीठ थपकी और फिर अपनी रोबदार मूँछों पर ताव देने लगा।

"ये लोग अपने साथ जो बाजेवाले लाये हैं उनमे बस कुछ मिरासी और भाँड़ हैं," लड़की के मामा अमरू ने ताना कसा—"और हमारे अकबर शाह के बाजेवालों की वर्दियाँ देखो, कितनी शानदार हैं! देखो न, तुम लोग खुद ही देखो।"

यह सुनकर पंछी अपमान से तिलमिला उठा और उसकी अभिमानी आत्मा मे आग-सी लग गयी। परन्तु इतने मे मोती ने दाँत निकालकर अपना सर झटका और अमरू पीछे हटते हुए बोला :

"अच्छा, तो दूल्हा बीरबल ठेकेदार के घोड़े पर आया है। वाह! वाह! यह तो बड़ी अच्छी बात है।"

पिपलाँकलाँ के एक और दकियानूस बूढ़े ने कहा, "हमारी गौरी के लिए दहेज भी अच्छा लाये हों तब बात है।" यह गाँव के चालाक

सुनार काशीराम की आवाज थी, उसकी दाढ़ी-मूँछें सफाचट थीं और चेहरे पर चमक थी।

"दहेज लाये हों या न लाये हों, बरात तो बड़ी लाये हैं।" अमरू बोला—"पचास से कम आदमी न होंगे !..."

यह सुनकर पंछी के चाचा मोलाराम के पिचके हुए गाल, कठोर मुद्रा वाले चेहरे में और भी अन्दर को धँस गये।

"उनको कहने दो," पंछी के घोड़े के पीछे अपनी पालकी में से पिपलाँखुर्द के मुखिया सूबेदार चौधरी अछरूराम ने तसल्ली देते हुए कहा—"पिपलाँकलाँ के ये किसान हमारे गाँव के जोधा किसानों से जलते हैं।"

चूँकि लड़कीवालों का पलड़ा हल्का समझा जाता है इसलिए पिपलाँकलाँ वाले यह उलहना सुनकर भी चुप रहे और बहस कुछ देर के लिए खत्म हो गयी।

"कोई और धुन बजाओ, अकबर बादशाहो !" बरकत नाई ने कहा ; पिपलाँकलाँ की लाडली गौरी और पिपलाँखुर्द के सूरमा पंछीराम की शादी तै कराने मे सारी बात-चीत उसी की मार्फत हुई थी।

बादशाह की उपाधि पाकर बैंड मास्टर की बाँछें खिल गयीं; उसने अपनी छड़ी से इशारा किया और बाजेवालों ने 'गाड सेव दि किंग' की धुन छेड़ दी।

टट्टू बड़ी मस्तानी चाल से आगे-आगे चल रहा था और बराती झुँझलाए हुए उसके पीछे-पीछे चले आ रहे थे। अब पंछी टट्टू को काबू में किये हुए था और बड़े नाटकीय ढंग से उसपर तना बैठा हुआ था।

अकबर शाह के बैंड की कानों को फोड़ देनेवाली आवाज में इतना उल्लास था कि सारी शंकाएँ और सन्देह दूर हो गये और चारों तरफ से लोग हर्ष और विस्मय से कहने लगे, "ओए बल्ले ! बल्ले ! कैसी शानदार शादी है।"

पिपलाँकलाँ के बड़े-बूढ़े बरात को रास्ता दिखाते हुए आगे-आगे

चल रहे थे, और उस बड़े गाँव के निवासी मर्द-औरतें और बच्चे भी दूकानों से और छोटे-से टूटे-फूटे बाजार के कोठों पर से, घोड़े पर बैठे हुए दूल्हा को देख रहे थे, हालाँकि फूलों के सेहरे के पीछे उन्हें उसका चेहरा नहीं दिखायी दे रहा था। इस धूमधाम की वजह से बच्चों में बड़ा जोश आ गया था; वे बड़े-बूढ़ों की टाँगों में से निकल कर यह देख रहे थे कि दूल्हा के चाचा कहीं पैसे तो नहीं लुटा रहे हैं, जैसा कि ऐसे मौकों पर आमतौर पर होता है। बच्चों की देखादेखी बूढ़े किसानों में भी जोश पैदा हो गया था और सब लोग, सबसे दबे-कुचले किसान भी, मुस्करा रहे थे और उन्होंने फैसला कर लिया था कि आज का दिन खुशी मनाने का दिन है। बसन्त ऋतु का आरम्भ था; तीसरे पहर का वक्त था। न बहुत सर्दी ही थी, न बहुत गर्मी, इसके कारण बड़ी सुविधा हो गयी थी। गरीब-से-गरीब आदमी भी, दूल्हा पर फूलों की वर्षा कर सकता था; जो लोग जरा खाते-पीते घरों के थे, उन्होंने तो मालाएँ पहनायीं।

पंछी को ऐसा लग रहा था कि वह एक पवित्र बैल है जो उस नन्ही-सी गाय गौरी को ब्याहने जा रहा है।

●●२

पिपलाँकलाँ के तग-से बाजार से आगे जाकर एक बूढ़े बरगद के पेड़ के नीचे काली माई का मन्दिर था जिससे मिली हुई एक धर्मशाला थी; इसी धर्मशाला की कोठरियों में बरात ठहरा दी गयी। बरात में कुल मिलाकर चालीस मर्द और बच्चे थे। पिपलाँखुर्द से तीन मील पैदल रास्ता चलकर आने के कारण सब लोग सर से पाँव तक धूल में अटे थे। हाथ-मुँह धोने के बाद उन सबको तीसरे पहर के नाश्ते के लिए पीतल का एक-एक गिलास भर के चाय और खस्ता कचौड़ियाँ दी गयीं। लड़के तो पीपल के पेड़ के नीचे चबूतरे पर बैठे ताश खेल रहे

थे या पेड़ की एक मोटी सी डाल पर पड़े हुए झूले पर झूल रहे थे और बड़े-बूढ़े छोटे-छोटे हौजों में लगे हुए नलों के नीचे नहा रहे थे। गाँव के और धर्मशाले के कुँए से बाल्टियों में पानी ला-लाकर इन हौजों मे भरा जाता था।

पंछी ने सबसे पहले नहा लिया था और उसे दूल्हे की पोशाक मे सजा दिया गया था—एक रेशमी कुर्ता, उसपर जरी के काम की एक मखमली सदरी और चूड़ीदार पाजामा। और अब वह अपना नया कलफदार गुलाबी साफा बाँधने की दुःसाध्य क्रिया मे व्यस्त था; बरकतराय नाई ने उसे एक जापानी आईना दे दिया था, उसी में वह गौर से अपना चेहरा देखकर साफे के पेंच ठीक कर रहा था। उसके चाचा मोलाराम खुद अपने बेटे निक्का को सजा रहे थे, क्योंकि वह भी तो शहबाला था; लेकिन वह लकड़ी के उस बक्स का सहारा लिये बैठे थे, जिसमे उनकी बीवी ने दहेज के गहने और कपड़े भर रखे थे।

"अगर आज को इस लड़के के बाप बेचारे जिन्दा होते तो उन्हें अपने बेटे की शादी की कितनी खुशी होती!" नाई ने बड़ी हसरत से अपनी भावनाओं को व्यक्त करते हुए कहा।

"भगवान की मर्जी के आगे किसका बस चलता है।" मोलाराम बोले और फिर उन्होंने एक बनावटी आह भर के कहा, "हे परमेश्वर!" वास्तव मे उन्हे अपने भाई की मौत से बड़ा सन्तोष हुआ था क्योंकि उनके बड़े भाई के मरने तक जायदाद का कोई बँटवारा नहीं हुआ था। "भगवान इस लड़के को सलामत रखे। उसके माँ-बाप मरते वक्त इसे मुझे सौंप गये थे। अब यह बड़ा हो गया है और मैंने भी इसके तईं अपना आखिरी फर्ज पूरा कर दिया—इसकी शादी कर दी, कोई यह तो नहीं कह सकता कि मैंने सिर्फ अपनी औलाद का ख्याल रखा और भतीजे के साथ बुरा बरताव किया।"

"नहीं हौलदार जी!" नाई ने मोलाराम की चापलूसी करने के लिए पंछी के चाचा को उस उपाधि से सम्बोधित किया जो उन्हें डोगरा रेजिमेन्ट

से पेंशन पाने से पहले मिली थी। "किसकी मजाल है कि ऐसी बात कहे! आप ने पंछीलाल के लिए क्या नहीं किया? उसके ब्याह पर रुपया-पैसा खर्च किया। उसे जमीन भी दी!"

पंछी ने अपने चाचा के चेहरे का भाव देखने के लिए कनखियों से उन्हें देखा, क्योंकि इसमें शक नहीं कि मोलाराम ने उसे जमीन दी थी लेकिन देने से पहले उन्होंने वह एक एकड़ जमीन, जिस पर अधिकांश फसल होती थी, गिरवी रख दी थी। दूल्हा ने देखा कि जमीन की बात सुनते ही उसके चाचा के चेहरे का रंग फीका पड़ गया था।

"बरकतराय, तुम तो जानते ही हो कि मेरे भाई जेवर के नाम पर एक छल्ला भी नहीं छोड़कर मरे थे।" मोलाराम ने कहना आरम्भ किया, "उन्होंने और उनकी बीबी ने सब कुछ लाला बीरबल के यहाँ गिरवी रख दिया था। और अब मैं खासतौर पर इस शादी के लिए पंछी को चाँदी का एक कण्ठा उधार दे रहा हूँ, जो मैंने निक्का के लिए बनवाया था...और... मैंने किसी और से यह नहीं बताया पर तुम्हें बता रहा हूँ कि बहू के लिए जेवर बहुत कम हैं,...किसी से कहना नहीं।"

"अरे, ठोस सोने का तो है...चीजें कम भी हैं तो क्या हुआ," बरकतराय ने उनको तसल्ली देने के लिए कहा; उसके गेहुँआ रंग के चर्बीले चेहरे के चेचक के दागों से पसीना भी छलक रहा था और सौहार्द्र भी।

"मुझे तो डर है कि अगर वह बहुत बड़े दहेज की उम्मीद लगाये बैठे हैं तो उनकी उम्मीदों पर पानी फिर जायेगा!" पंछी अपने साफे के आखिरी पेंच को ठीक करने मे व्यस्त रहकर ही बोला।

"भइया पंछीराम!..."

"तुम बंसीराम कहा करो," पंछी ने कहा। वह उस नाई की लल्लो-चप्पो से झुँझला गया था, इस कारण भी कि उसकी पगड़ी का सिरा, जो वह अपने दाँतों में दबाये था, बोलते वक्त छूट गया था और उस सिरे के ढीला हो जाने के कारण पगड़ी का पूरा ढाँचा बिगड़ गया था। वह इस

कारण भी झल्ला रहा था कि अब जब कि वह इज्जतवाला शौहर बनने जा रहा था, जब कि वह खुद मर्द बन गया था, उसे यह समझ में आने लगा कि उस नीच नाई को उसका असली नाम बंसीराम ही लेना चाहिए न कि उसका बिगड़ा हुआ नाम पंछीराम, जो बचपन मे प्यार में रख दिया गया था। इस फिक्र मे कि उसे भी बड़ा आदमी समझा जाये, वह बचपन में अपने बड़ों की सारी बातें दुहराया करता था, इसीलिए ज्यादा बकने के कारण उसका नाम पछी[1] रख दिया गया था; परन्तु अब उसे यह आभास होने लगा था कि वह बड़ा हो गया है और उसकी इज्जत ज्यादा होनी चाहिए।

"अरे, बरकतराय तो तेरे चाचा की तरह है," उसके चाचा ने डॉटा, "शर्म नहीं आती तुझे इस तरह की बातें करते !"

पछी अपने साफे को दुबारा ठीक करने मे लग गया और उसने यह अनुभव किया कि नाई पर उसके झल्लाने की एक वजह यह भी थी कि उसने जो आईना दिया था, वह कुछ अजीब ऊँचा-नीचा था, जिसके कारण उसकी सूरत बहुत टेढ़ी-मेढ़ी दिखाई देती थी। उसे इस बात पर गुस्सा आ रहा था कि वह अपना आईना क्यों नहीं लाया। परन्तु उसने इसके बारे में कुछ भी नही कहा और उसने अपने प्रतिबिम्ब के विकृत रूप को बड़ी दार्शनिकता से स्वीकार कर लिया।

"हौलदार जी, आपने और आपके खानदान ने कई पुश्तों से हमारी परवरिश की है," नाई ने कहना आरम्भ किया, "मेरे लायक जो भी काम हो बताइयेगा।...इसी शादी के सिलसिले में बहुत-सी बातें ऐसी हैं जो मैं नहीं कर पाया। मगर मालिक, इसमे मेरा कोई कसूर नहीं है। अब जैसे आपके भतीजे के ससुरालवालों को मैं लाख कोशिश करने पर भी, बरात को एक रात से ज्यादा ठहराने पर राजी नहीं करा सका...आप तो जानते ही हैं कि जमाना कितना बुरा आ लगा है। यहाँ पिपलाँकलाँ में भी

---

१. पंजाब में पंछी तोते को कहते हैं।

किसी की हालत अच्छी नही है। अबकी पानी भी नही बरसा। गेहूँ की फसल सूखी जा रही है और जब तक पानी न पड़े, नई फसल के लिए जोताई नहीं हो सकती। पिपलाँखुर्द मे तो आप सब लोग पुराने फौज के आदमी हैं, मुसीबत के दिनों मे आपको पेंशन का सहारा है, लेकिन यहाँ तो पैसे का अकाल है। इसलिए अब सब लोग पुरानी रीति-रस्में छोड़ते जा रहे हैं...और चूँकि आप कहते हैं कि दहेज भी आप थोड़ा ही लाये है और वह उतना नही है जितना दस्तूर के मुताबिक होना चाहिए, इसलिए आपको..."

"यह सरासर बेइज्जती है !" हवलदार मोलाराम ने बीच मे ही बात काटकर कहा; उनका शरीर झुंझलाए हुए साँप की तरह काँप रहा था।

"लेकिन माई-बाप, आप बरात भी तो बहुत बड़ी लाये हैं," नाई ने कहा, "पिछली फसल की तो आपको मालूम ही है—और अगर पानी न बरसा तो..."

मोलाराम ने प्रतिरोध करते हुए कहा, "जहाँ तक फसलो का सवाल है तो पिपलाँखुर्द में भी हमारी हालत कुछ बेहतर नही है। लेकिन हम लोग कमीने नही हैं। हम दहेज लाये हैं, हालाँकि इसके लिए मुझे पंछी की सबसे अच्छी एक एकड़ जमीन गिरवी रख देनी पड़ी...न जाने हमारी किस्मत का कौन-सा फेर था कि हम इन मनहूस लोगों के चक्कर में आ फँसे। वह बुढ़िया लक्ष्मी बड़ी चालाक है और उसका वह बदमाश चचेरा भाई पूरा दलाल है !..."

"चाचा," दूल्हा ने विनीत भाव से कहा, "चौधरी अछरूराम आ रहे हैं..."

"तुम तो दूल्हा बने हो, तुम्हारे मुँह पर तो बड़ी रौनक है लेकिन अगर एक ही वक्त का खाना खिलाकर हमे चलता कर दिया गया तो मैं अपने लोगों को क्या मुँह दिखाऊँगा ? हमारे दोस्तों और रिश्तेदारों ने अपने कपड़ों पर कितना खर्च किया है और फिर तुम्हें यह भी नही भूलना चाहिए कि उन सबने तुम्हारी शादी के लिए न्योन्दड़ा दिया है..."

"गुस्सा न कीजिए सरकार!" नाई ने फिर वही बात दुहराई, "इसमें मेरा कोई कसूर नहीं है। लेकिन लक्ष्मी का भाई अमरू अपनी धुन का पक्का है। और वह लोग समझते हैं कि अपनी लड़की आपके यहाँ ब्याह कर वह आप पर बड़ा एहसान कर रहे हैं।...वह कहते हैं कि आपकी जात भी कुछ नीची है।"

"हाँ, यही नहीं, कहने को तो वह और भी बहुत-सी बातें कहते रहे हैं," हवलदार मोलाराम ने जलकर कहा, "मैं तो सोचता हूँ कि मैंने यहाँ बात पक्की न की होती तो अच्छा था, इतनी बेइज्जती तो न होती। देखो तो कैसा कलजुग आ गया है!"

"अरे भाई, किस बात पर इतना नाराज हो रहे हो?" चौधरी अछरूराम ने मोलाराम के पास बैठते हुए पूछा।

कई और बराती भी जो पास खड़े थे आकर पूछने लगे कि क्या बात है?

मोलाराम चुप हो गये लेकिन उनका चेहरा तमतमा रहा था और उनके गाल सड़े हुए संतरे के सूखे छिलकों जैसे लग रहे थे, लाल और हरे।

"आखिर बात क्या है?" जग्गू किसान ने अपनी खुसट आवाज में जोर देकर पूछा।

"कुछ नहीं, कोई बात नहीं है। दिन भर बड़ी दौड़-धूप की है, इस वक्त बड़ी गरमी हो गयी है। मौसम बदलने लगा है।...और हमारे समधियानेवाले इस पर जोर दे रहे हैं कि हम लोग दस्तूर के मुताबिक चार दिन यहाँ ठहरें। लेकिन मैंने फैसला किया है कि आज रात शादी की रस्म पूरी होने के बाद ही हम लोग अपने गाँव वापस चले जायँगे। वहाँ इस पिपलाँकलाँ के मुकाबले में तो ज्यादा ठण्डक है। इन पक्के मकानों की वजह से तो यह बिलकुल तन्दूर बना हुआ है!..."

बरात के साथ जो बड़े-बूढ़े थे वह ताड़ गये कि क्या गोलमाल है।

"हाँ, हमें चैती की बोआई का भी तो इन्तजाम करना है," चौधरी

अछरूराम ने कहा, "और चूँकि हमें यहाँ एक ही रात ठहरना है इसलिए जितनी देर मे सब लोग तैयार होते हैं, उतनी देर में हम लोग यहाँ की दूकाने ही देख आयें।"

●● ३

बरात के दूसरे लोग अभी दावत के लिए कपड़े पहन ही रहे थे कि पंछी को उस अड़ियल टट्टू—मोती पर बिठाकर रवाना कर दिया गया। उसके मुँह पर नकली फूलों का एक नया सेहरा पड़ा हुआ था। जब बरात दुलहन के घर की तरफ चली तो रास्ते में पिपलाँखुर्द और पिपलाँकलाँ के दोनों बैंड बारी-बारी से बजते रहे। उसका चचेरा भाई इस वक्त भी उसके पीछे बैठा था और चाचा मोलाराम पीछे-पीछे पैदल चले आ रहे थे। उनके साथ कुछ कुली दुलहन के लिए सौगात के तौर पर लायी गयी मिठाई के टोकरे और लड़केवाले की तरफ से दहेज के कपड़ों और जेवरों से भरा हुआ लकड़ी का बक्स सर पर लादे चले आ रहे थे।

पिपलाँकलाँ मे आते वक्त आखिर मे जिस तरह अकबर शाह के बैंड ने पिपलाँखुर्द के शहनाईवालों की छोटी सी टोली की पीं-पी को दबा दिया था, वही इस वक्त भी हुआ और इसके साथ ही पंछी के हृदय में उठते हुए विशृंखल विचार तथा भावनाएँ भी दब गयीं, और बैंड के संगीत ने इस रीतेपन को एक उल्लास से भर दिया ; क्योंकि वह हर चीज में एक असाधारण वस्तु का अस्तित्व, ब्याह के वातावरण का अदम्य उल्लास अनुभव कर रहा था। परन्तु जैसे-जैसे उसका घोड़ा उस छोटी-सी गली के निकट पहुँचा, जिसके सिरे पर गाँव से लगभग बिलकुल बाहर, उसकी होनेवाली विधवा सास लक्ष्मी का घर था, उसे घबराहट-सी होने लगी। क्योंकि लक्ष्मी से, जिसे लोग लच्छी कहते थे, सबकी रूह काँपती थी। उस पतली-सी अँधेरी और गंदी गली की ढलान पर सड़े

हुए गोबर की दुर्गन्ध बसी हुई थी। जब घोड़ा उस ढलान से नीचे की ओर जाने लगा तो पंछी को ऐसा अनुभव हुआ मानों वह नरक में जा रहा हो। क्योंकि खुली हुई नाली की बू के अलावा उसके कानों में ये आवाजें भी पड़ीं कि उसे 'मनहूस अनाथ,' 'बदमाश पहलवान,' 'गुंडा' और 'माँगे के घोड़े पर माँगे के कपड़ों में इतराता हुआ छैला' आदि उपाधियों से सम्बोधित किया जा रहा था। जो औरतें ये गालियाँ बक रही थीं, उन्हे शायद इस बात पर ईर्ष्या हो रही थी कि वह उनकी बेटियों से ब्याह न करके लक्ष्मी की बेटी से ब्याह क्यों कर रहा था और शायद उनका उस बुढ़िया से और भी कोई वैर रहा हो। परन्तु शीघ्र ही लक्ष्मी के घर की छत पर से बहुत-सी औरतों द्वारा स्वागत-गीत गाने की सम्मिलित आवाज ने उसकी चेतना पर प्रहार किया और उसने अपने हृदय की घबराहट को इस कठिन परीक्षा का ही एक अंग मान लिया, जिसके बाद उसे एक लड़की इनाम में मिलेगी।

स्वागत के चिरपरिचित गीत की धुन बहुत फड़कती हुई थी :

जे तूँ चलें घोड़ी
तेरे नाल वीराँ दी जोड़ी

गीत की धुन उसके रोम-रोम में समायी जा रही थी और उसे बड़ा रोमांच हो रहा था।

उसके माथे पर पड़े हुए नकली फूलों के सेहरे को लक्ष्मी ने तपाक से चूमा और वह सूरज की मदद से घोड़े से नीचे उतरा; नन्हे निक्का को भी उसी ने नीचे उतारा। परन्तु उसे अन्दर जाने की इतनी उतावली थी कि लक्ष्मी ड्योढ़ी के कोनों में तेल भी नहीं डाल पायी थी कि वह चौखट को पार कर गया और बस इसी घड़ी से पिपलाँकलाँ की औरतें हाथ धोकर उसके पीछे पड़ गयीं।

"हाय हाय!" वह बुढ़िया इतने जोर से चिल्लायी कि जैसे उसने उसके छुरा मार दिया हो।

"जरा रुको!..."

"हाय री, अब क्या होगा ?" एक दूसरी दकियानूस बुढ़िया ने कहा।

पंछी एक पाँव घर के अन्दर और दूसरा बाहर रखे ज्यों-का-त्यों रुक गया। सौभाग्यवश इससे पहले कि सब गुड़-गोबर हो जाता, उस बुढ़िया ने ड्योढ़ी के कोनों मे तेल डाल दिया और वह बनावटी ढंग से मुस्करा दी।

लक्ष्मी के गेहुँए रंग के चेहरे पर क्रोध का भाव जिस प्रकार मुस्कराहट में बदला, वह पंछी की चेतना पर हमेशा के लिए अंकित हो गया और लक्ष्मी की बिल्लियों जैसी कजी आँखों के चारों तरफ जो झुर्रियाँ पड़ गयी थीं, उनसे यह छाप और भी पक्की हो गयी। वह फौरन समझ गया कि उसका स्वभाव बहुत अस्थिर और अविश्वसनीय था, वह यह भी समझ गया कि चूँकि उसे उसकी सूरत पसन्द थी इसलिए उन दोनों के बीच सास और दामादों वाला झगड़ा तो इतना ज्यादा नहीं होगा, पर वह उस पर कभी विश्वास नही कर सकता था। उधर की तरफ बहुत कम औरतों की आँखें कंजी होती थी और जिनकी होती थी वे स्वभाव की कितनी ही अच्छी क्यों न हों, उन पर विश्वास नहीं किया जा सकता था।

उसकी यह भावना और भी दृढ़ हो गयी, जब उसने लक्ष्मी के भाई अमरू को अपने चाचा मोलाराम का स्वागत करते समय ये कहते सुना, जिसका एक फरेबी साकेतिक महत्व था :

"आओ जी, आओ, मोलारामजी, गले मिल लो भाई !...मैं लक्ष्मी का चचेरा भाई और गौरी का मामा ही नहीं, परिवार का बुजुर्ग भी हूँ। ...मेरे ख्याल से आप हमारी लड़की के लिए बढ़िया दहेज ही लाये होंगे, सुनहरे मुलम्मे के जेवर नहीं, जिनसे लोग आजकल एक दूसरे को शादी मे धोखा देते हैं ! आओ...और यह आप का बेटा निक्का है ? बड़ा सुन्दर बच्चा है। इसी शादी के दौरान में इसकी भी मँगनी हो जायेगी।..."

मोलाराम इस ढिठाई पर सन्न रह गये, लेकिन बड़ी गम्भीर और रोबदार मुद्रा में ही उन्होंने आगे बढ़कर अमरू को गले से लगा लिया।

"चलो, चलो, जल्दी आगे बढ़ो !" आँगन के बीच में हवनकुण्ड के

पास नंगे बदन बैठे हुए पण्डित भोलानाथ पुरोहित ने जल्दी करने को कहा। हवनस्थल के ऊपर एक शामियाना तना हुआ था। जैसे पंछी और मोलाराम ने दूल्हा के बैठने के लिए टट्टू उधार माँगा था वैसे ही लक्ष्मी और अमरू ने भी यह शामियाना उधार माँगा था।

अमरू ने कर्ता-धर्ता की भूमिका अदा करते हुए मोलाराम से कहा, "लड़के को पण्डित भोलानाथ के हवाले कर दीजिए और आप दहेज का सामान अन्दर कमरे में ले आइए। लड़की ऊपर अपनी सहेलियों के साथ है, वह अभी नीचे आ जायगी।..." और फिर वह पण्डितजी की तरफ मुड़कर बोला, "पण्डितजी कोई जल्दी नहीं है, रात अपनी ही है।"

आँगन में एक दरी बिछी हुई थी। उसी पर एक कोने में मेहमान अपने जूते उतारकर हवनकुण्ड के चारों तरफ बैठ गये थे। वे सब बढ़िया-से-बढ़िया लक-दक कपड़े और रंग-बिरंगी बास्कटें पहने हुए थे; उनके सरों पर पगड़ियाँ सज रही थीं। पंछी जूतों को फाँदता हुआ अतिथियों के बीच से रास्ता बनाता, आगे बढ़ा।

अमरू पण्डित भोलानाथ के पास आया और हाथ जोड़कर उसने उनके कान में कुछ कहा।

पण्डितजी ने सर हिला दिया परन्तु पंछी को ऐसा लगा कि छत पर बजती हुई ढोलक की निरन्तर धड़-धड़, गाने के शोर और सामने हवनकुण्ड की आग की गरमी से परेशान होने के कारण पण्डित भोलानाथ ठीक से अमरू की बात समझे नहीं थे। क्योंकि उधर अमरू बरामदे के पार, अन्दरवाली कोठरी में गया और इधर पण्डित भोलानाथ ने गौरी को ऊपर छत से बुलवाकर रटे हुए मंत्र पढ़ना शुरू कर दिया। अमरू के आगे-आगे लक्ष्मी आ रही थी और पीछे-पीछे मोलाराम चले आ रहे थे।

गाँठ जोड़कर जब पंछी गौरी के साथ आग के दो फेरे लगा चुका, उस समय उसे केवल एक बात की उत्सुकता थी कि चार फेरे होने के बाद जब शादी की यह सारी फिजूल रस्में पूरी हो जायेंगी और दावत भी खत्म हो जायगी तो वह उस लड़की के मुँह पर पड़ा हुआ लाल

दुपट्टा हटायेगा और खुद इस बात का पता लगा लेगा कि लोगों का यह कहना कहाँ तक ठीक है कि वह बदसूरत नहीं है और अगर उसका नाक-नक्शा लक्ष्मी जितना खूबसूरत न भी हो, तब भी कम-से-कम उसका रंग अपनी माँ की तरह साफ तो जरूर होगा। वह केवल इसी उम्मीद मे गर्मी, पसीना और मंत्र-श्लोक सब कुछ बर्दाश्त करने को तैयार था। परन्तु जिस समय वह तीसरा फेरा लगा रहा था, उसी समय सबने कोठरी मे से लड़ाई-झगड़े की आवाजें आती हुई सुनी। इसके बाद ही अमरू कुछ अस्त-व्यस्त-सा बाहर निकला और उसने पण्डित भोलानाथ के पास जाकर उनके कान मे काफी ऊँची आवाज में कहा :

"पण्डितजी ! पण्डित भोलानाथ ! जरा ठहरिए !...फेरे रोक दीजिए ! हम तो मिट गये ! ये दहेज में सिर्फ सुनहरे मुलम्मे के सस्ते जेवर लाये हैं ! "

पण्डित भोलानाथ श्लोक पढ़ते रहे, जैसे वह इन तुच्छ मायावी बातो के स्तर से बहुत ऊँचे हों।

लक्ष्मी ने समझ लिया था कि जो होना था वह तो हो चुका और उसे अपनी बेटी के मोल मे केवल कुछ नकली जेवर मिले थे। ऐसा मालूम होता था कि मोलाराम अपने इस वादे से भी मुकर गया था कि लड़की को दहेज में कुछ नकद रकम भी दी जायेगी। बुढ़िया ने सोचा था कि वह नकद रुपया खुद हड़प कर लेगी और उससे एक भैंस खरीदकर अपना दूध का कारोबार बढ़ा लेगी। उसकी चमकदार कंजी आँखे आँसुओं से धुँधली पड़ गयीं, परन्तु चूँकि उसमें दुनियादारी कूट-कूट कर भरी हुई थी, इसलिए वह सोचने लगी कि मोलाराम की लाई हुई चीजों में से कितनी चीजे आसानी से निकालकर दहेज के उस बक्स मे रखी जा सकती थीं जो माँ होने के नाते वह अपनी बेटी गौरी को देनेवाली थी।

उसने कहा, "पण्डित भोलानाथजी, आप श्लोक पढ़कर खत्म कीजिए, भैया अमरू की फिक्र न कीजिए।...दोस्ती, लेन-देन और प्यार का रिश्ता उन्हीं से रखा जा सकता है जो इसके योग्य हों।...मैं समझ लूँगी

कि मैंने अपनी बेटी गौरी पिपलाँखुर्दवालों को दान कर दी।" और यह कहकर लक्ष्मी बरामदे के पारवाली कोठरी में चली गयी।

● ●४

जब फेरे खत्म हुए तो बाहर गली में अकबर शाह के बैंड ने बड़ी धूमधाम से शादी की दावत की घोषणा की। अमरू का घर उस घर से मिला हुआ ही था; उसी के ऑगन मे मेहमानों के बैठने का इन्तजाम किया गया था और पिपलॉकलाँ के लोग गॉव के मोटे हलवाई दशरथ के तैयार किये हुए पकवान मेहमानों को परोसने के लिए तैयार खड़े थे।

इस शादी से पंछी और उसके चाचा मोलाराम ने जिस हर्ष और उल्लास की आशा बाँधी थी, उस पर तो दहेज के बारे मे अमरू की बात मे निहित अपमान ने और लक्ष्मी की जली-कटी बातों ने पानी फेर दिया था क्योंकि पण्डितजी के कान मे अमरू ने जो कुछ भी कहा था, वह बिरादरी के सब लोगों ने जरूर सुना था। परन्तु दावत मे पेट भरकर भोजन करने की सम्भावना के कारण बरातियों मे अभी तक काफी उत्साह बाकी था। परन्तु वहॉ बैठते ही उन्हे जो बुरा खाना दिया गया और जो गन्दी-गन्दी गालियाँ सुनने को मिली, उससे उनकी सारी खुशी मिट्टी मे मिल गयी। क्योंकि इस प्राचीन संस्कार की एक रस्म यह भी है कि जब बरात के लोग खाना खाने बैठते हैं, तो लड़की की तरफवाली औरतें छत पर बैठकर स्वागत के गीत शुरू करती हैं या फिर नीचे बैठे हुए बरातियों में से मुख्य अतिथियों का मजाक उड़ाते हुए सवाल-जवाब के रूप में गीतों में ही गालियाँ देती हैं। इन गालियों में जो नमक-मिर्च था वह उस दाल और कढ़ी की मिर्चों से कहीं ज्यादा स्वादिष्ट था जो उन्हें चावल के साथ खाने को दी गयी थी।

पिपलॉकलॉ की औरतों ने मोलाराम के बारे मे एक मजाकिया गीत गाना शुरू किया। कई औरतों ने मिलकर गाते हुए प्रश्न किया :

वे मोल्या, वे मोल्या, वे खस्मा नूँ खान्याँ
की ऐ तेरा नाँ

दूसरी औरतों ने गीत मे उत्तर दिया :

मैं मोला
मै मोला
मुँह मेरा खट्टा
क्यूँकि मै रोना-रोना
मै आँ पेशनी हवल्दार
ते मेरा रोब बड़ा
मै जेवर ते दित्ता धोखा
ते सच नूँ मैं रख्या पिच्छे।

पिपलाँखुर्द के मुखिया, साठ वर्ष के बूढ़े जमींदार सूबेदार अछरूराम की भी अच्छी तरह खबर ली गयी।

औरतों ने गीत मे प्रश्न किया :

वे अछरू, वे अछरू, बेटी...
तेरी इज्जत कित्थे ?

दूसरी औरतों ने गीत में ही उत्तर दिया :

मैं छड आया फौज विच
मैं ते मेरा पिड छोटा पिपलाँ पोखा-पोखा
कहर ने मारया ते मैनूँ ते बीरबल नूँ कमीना बनाया।

जैसे-जैसे यह मौखिक आदर-सत्कार अधिक दूषित होता गया, वैसे-वैसे खाना धीरे-धीरे अच्छा होता गया; हलवा आया, फिर गुड़ के सेव, खोये के पेड़े, बर्फियाँ और नुक्ती। बड़े-बूढ़े तो मिठाइयों को टूँग-टूँग कर खाने लगे लेकिन लड़कों ने अपने रंगीन रूमाल निकाले और बड़ी बेशर्मी

से घर ले जाने के लिए मिठाई बाँधने लगे। फिर उसके बाद पकौड़ियाँ और दूसरी मसालेदार चीजें आयी।

लेकिन दूसरी बार ये चीजें परोसी जा चुकने के बाद अजीब-अजीब बातें होने लगी। सारे मेहमान बेवकूफों की तरह हँसने और बेसिर-पैर की बातें करने लगे; छत पर से औरतों ने उन पर जैसी गालियों की बौछार की थी, वे उससे भी ज्यादा गन्दी गालियाँ बकने लगे। छोटे लड़के तो मुक्केबाजी में उलझ गये। जिन लोगों के मेदे में ज्यादा दम था, उन्होंने समय रहते अपने को रोक लिया और दूसरों को चेतावनी दी।

"भाइयो, दही-बड़ों में भंग है!" हवलदार मोलाराम ने ऐलान किया।

"बस अब चलें," गाँव के मुखिया चौधरी सूबेदार अछरूराम ने घोषणा की। काफी धींगामुश्ती, गुल-गपाड़े और लड़ाई-झगड़े के बाद वह पिपलाँखुर्द की उस बेढब फौज को जैसे-तैसे साथ लेकर धर्मशाला के लिए रवाना हो गये। जो लोग अपेक्षतः ज्यादा होश में थे वे दूसरों को सहारा दे रहे थे और ऊपर से लड़की की तरफवाली औरतें उन पर और फब्तियाँ कस रही थीं और उनका मजाक उड़ा-उड़ाकर हँस रही थीं कि वे लोग कितनी आसानी से बेवकूफ बन गये।

पंछी को दुलहन की सहेलियों ने मुँह-दिखाई के लिए रोक लिया।

●●६

पंछी को मुँह-दिखाई के लिए आँगन में लाया गया, उस समय वह भी, जो हमेशा इतना बेझिझक रहता था, एक अजीब-सी शर्म का अनुभव करने लगा। उसे रास्ता दिखानेवाली दो लड़कियों ने जब दुल्हन के सामने, जो अपनी सहेलियों में घिरी हुई गठरी बनी बैठी थी, उसके साथ

पहला बचकाना मजाक किया, उस समय उसकी झिझक लज्जा मे परिवर्तित हो गयी और वह काँपने लगा।

एक सॉवली-सी खूबसूरत लड़की ने उसे आगे घसीटते हुए कहा : "आइए, आइए ! मेरा नाम पारो है और मैं आपकी बीवी गौरो की असली सहेली हूँ ! मुझसे न डरिए !"

वह आगे बढ़ा ही था कि इतने मे एक दूसरी लड़की ने आगे बढ़कर उसे पकड़ लिया और बोली :

"मै हूँ कमली, गौरी की असली सहेली । मैं आपकी देखभाल करूँगी। ...आप आकर यहाँ खड़े हो जाइए ताकि हम आपकी दुलहन से पूछे कि वह आपके सामने अपना घूँघट उठायेगी कि नही !"

पछी दूसरी लड़की की आज्ञा का पालन करते हुए उसके आदेशानुसार एक जगह पर खड़ा हो गया ; क्योंकि वह लड़की बहुत ही खूबसूरत थी इसलिए उसकी बात को टाला नही जा सकता था।

इतने मे पारो पीछे हट गयी और पछी के अनजाने मे उसके पीछे दुबक कर बैठ गयी। दूसरी लड़की कमली ने यह जताया कि वह दुलहन की तरफ जाकर उसके कान मे कुछ कहना चाहती है। फिर वह मुड़ी और मानो पंछी का स्वागत करने के लिए उसने अपना हाथ बढ़ाकर उसे पीछे धक्का दे दिया और पंछी पीछे बैठी हुई पारो के ऊपर लुढ़कता हुआ धड़ाम से जमीन पर गिरा। और जब पंछी अपनी खुली हुई पगड़ी को समेटता हुआ उठकर बैठने की कोशिश करने लगा और अपनी हुलिया दुरुस्त करने के लिए अपने कपड़ों को झाड़ने लगा, तो सब लड़कियाँ ठट्ठा मारकर हँस दीं। परन्तु उसके साथ यह पहला मजाक इतना भोंड़ा और बेहूदा था और उसकी पगड़ी पूरी-की-पूरी खुल गयी थी कि लाख कोशिश करने पर भी अपमान और बौखलाहट के कारण उसका चेहरा पीला पड़ गया और वह इस मजाक को हँसी में भी न टाल सका, जिसकी कि उससे आशा की जाती थी।

दुलहन के पास से दो और स्त्रियाँ उठी और उससे सहानुभूति जताते

हुए पुचकारने लगी और उसकी ओर इस प्रकार बढ़ी मानो उसे दुलहन के पास ले जाना चाहती हों।

पंछी सचमुच बहुत ही भोला और सीधा-सादा था, और स्त्रियों की बात को टालना तो कायरता का प्रमाण देना था। इसलिए उसने सोचा कि सचमुच उन लोगों को अब उस पर दया आ गयी थी, इसलिए जब वे उसे उठाने लगी तो उसने उन्हें रोका नहीं।

उनमें से एक तो उसे उठाने लगी और दूसरी ने उसके मुँह पर हाथ फेरकर कालिख मल दी।

"अरे, यह क्या है?" उसने प्रतिरोध करते हुए कहा।

पर दुलहन को छोड़कर बाकी सब लड़कियाँ उस पर हँस रही थीं; दुलहन तो अभी तक रंगीन कपड़ों की गठरी बनी बैठी थी।

"नहीं राजो, नहीं रूपा, बहन, यह ठीक नहीं है!" उस साँवली लड़की पारो ने पंछी का पक्ष लेते हुए कहा, "ये तो मेरे भाई के समान हैं। मेरे पिता इनके पिता के दोस्त थे।..."

पंछी के स्वभाव में एक जंगलीपन था; उसने किसी पुरुष, स्त्री या पशु के हाथों अपमान सहन नहीं किया था; इस दूसरे मजाक पर तो वह पहले से भी ज्यादा आग-बबूला हो गया। परन्तु उसे कुछ-कुछ आभास था कि यह मजाक विवाह-संस्कार के परम्परागत अंग थे और फिर स्त्री पर गुस्सा दिखाना तो पुरुषत्व के खिलाफ था इसलिए वह चुप रहा, यद्यपि वह अन्दर-ही-अन्दर क्रोध से खौल रहा था। यद्यपि उसका मजाक उड़ाया जा रहा था पर सहसा उदारता के भाव से उसमें यह इच्छा उत्पन्न हुई कि वह स्वयं भी सबके साथ हँसे, इसलिए वह उन दो नवयुवतियों के आदेशानुसार, जिन्होंने उसकी पगड़ी गिरा दी थी, दुलहन की बगल में आकर बैठ गया।

कुछ लड़कियाँ एक तरफ बैठी हुई पान लगा रही थीं और उन पर सोने और चाँदी के वर्क लगाकर एक काँसे की थाली में रखती जा रही थी। उनमें से एक ने बड़े भोलेपन और प्यार से उसकी तरफ एक पान

बढ़ाया। उसके इस व्यवहार ने पंछी की आहत भावनाओं पर मरहम का काम किया।

उसने पान लेकर मुँह मे रख लिया पर फौरन ही उसे पता लग गया कि सोने के वर्कवाले उस पान में कोयले का चूरा और राख भरी हुई थी। उसने फौरन उठकर पान थूक दिया और दुलहन की क्रूर सहेलियाँ फिर हँस पड़ीं।

इतने मे दुलहन कुछ हिली-डुली और उसने अपनी सहेलियों को, जो मारे हँसी के लोटी जा रही थी, उँगली के इशारे से मना किया कि वे अब कोई मजाक न करें।

बजाय कृतज्ञता प्रकट करने के कि उसे उसका इतना खयाल था, पछी उल्टे यह समझने लगा कि उसी के कारण उसका इतना मजाक बनाया गया था, क्योंकि यदि वह उसे देखने के लिए इतना बेताब न होता तो उसका इतना अपमान भी न होता।

"अच्छा, हमारी इतनी दुर्गत बनवायी है तो अब कम-से-कम अपना मुखड़ा तो दिखा दो," उसने बनावटी रोब के साथ कहा।

दुलहन ने लजाकर अपना मुँह फेर लिया और अपनी सहेली के कान मे कुछ कहा कि वह उसके दूल्हे से कह दे।

चूँकि पंछी ने केवल उसके चेहरे को इनकार के भाव से हिलते देखा और उसकी बात उस तक शीघ्र नही पहुँचायी गयी, इसलिए उसने सोचा कि गौरी हठपूर्वक उसे उसका चेहरा देखने के अधिकार से वंचित रख रही है। फौरन वह क्रोध से खौल उठा।

"वह कहती है मै तुम्हें नही परेशान कर रही हूँ बल्कि ये लड़कियाँ खुद हँसी-मजाक कर रही हैं, इसलिए तुम बुरा न मानो।" सहेली ने उसकी बात उसके कानों तक पहुँचा दी।

अब जाकर पछी की समझ में यह बात आयी कि गौरी ने उसे अपनी सूरत दिखाने से इनकार नही किया था!

"अच्छा, अच्छा, तो अपना घूँघट तो उठाओ।" उसने हठपूर्वक कहा।

दुलहन हिली तक नहीं, वैसी ही गठरी बनी बैठी रही।

पर दुलहन की सहेलियाँ बीच मे आ कूदीं। उनमे से एक बोली :

"पहले कुछ रस्मे पूरी करनी होंगी, तब वह अपना मुखड़ा दिखायेगी।"

दूसरी ने ताना दिया :

"सिर्फ मुलम्मे के गहने दिये है आप ने! जब तक सोने की एक अशरफी नही देंगे तब तक हम उसे घूँघट नही खोलने देंगे।"

तीसरी बीच मे बोल उठी :

"आपको पहले तीन पहेलियाँ बूझनी पड़ेगी, तब आपको गौरी का चाँद-सा मुखड़ा देखने को मिलेगा।"

पंछी यह सुन चुका था कि रस्म के अनुसार यह आखिरी वाली शर्त बिलकुल उचित थी और वह उसका प्रतिरोध नहीं कर सकता था। लेकिन मुलम्मे के जेवर वाली बात के हवाले से और सोने की अशरफी की माँग से वह जल उठा। मुँह लटकाये हुए वह प्रतिरोध करने की कोशिश कर रहा था। पर लड़कियाँ उसके रुख को फौरन ताड़ गयीं और उसे जबरदस्ती उठाकर उसके चारों तरफ घेरा बाँधकर नाचने लगी। एक ढोलक बजाने लगी।

जब वे उसके चारो तरफ घूम-घूम कर जोरों से नाचती ही रहीं और पंचम सुर में 'जे तू चढ़ें घोड़ी...' गीत गाती रहीं, तो पंछी से भी न रहा गया; वह भी मुस्करा दिया और बड़े भोंडे ढग से उनके साथ नाचने लगा। उनके मारीत्व के सौन्दर्य की मादक सुगन्ध से उस पर नशा-सा छाने लगा; उनके कोमल-चंचल शरीर का कोई अंग जब अनजाने में उसके खुरदुरे शरीर से छू जाता तो उसके हृदय में वैसी ही कामनाएँ उठने लगती जैसी कि वह अपनी जवानी की कल्पनाओं मे अनुभव किया करता था। उनके नाच तथा तालियों की तेज आवाज की मादकता से उसका हृदय पसीज गया।

जब नाच खत्म हुआ और दुल्हन की सहेलियाँ दम लेने को उसके चारो तरफ हाँफकर बैठ गयीं तो ऐसा प्रतीत हुआ कि सब बन्धन टूट गये हैं और उन युवतियों की रूप-सभा मे वह बिना किसी संकोच या लज्जा के निढाल होकर लेट गया।

गौरी के चेहरे पर अभी तक घूँघट पड़ा हुआ था और पंछी को अभी कविता प्रतियोगिता मे भाग लेना था।

एक लड़की ने पहला छद सुनाया :

छद परागे आइए-जाइए
छंद परागे खीरा

पछी कुछ देर तक मूक बैठा सोचता रहा, फिर उसने छद बनाकर सुनाया :

छद परागे आइए-जाइए
छद परागे खीरा
लोगाँ कीतियाँ कोशिशाँ न होए ब्याह
पर मेरी किस्मत दा फेरा।

इसके बाद दूसरी लड़की ने शुरू किया :

छंद परागे आइए-जाइए
छंद परागे मुँदरी

पंछी घुग्घू की तरह बैठा इधर-उधर ताकता रहा मानो प्रकृति के तत्वों से बुद्धि प्राप्त करना चाहता हो, फिर वह बोला :

छंद परागे आइए-जाइए
छंद परागे मुँदरी
साडी-कुड़ी दा होया ब्याह
ते कौन ल्यावेगा चराके चन्दरी।

तीसरी लड़की ने छन्द पढ़ा :

छंद परागे आइए-जाइए
छंद परागे दुपट्टा

पंछी फिर बौखलाया हुआ देखता रहा मानो उसका दिमाग खाली हो गया हो, लेकिन एक क्षण बाद उसने उत्तर दिया :

छंद परागे आइए-जाइए
छंद परागे दुपट्टा
कुडियॉ हुन सारियाँ समझ जान
हुन नहीं होणा ठट्ठा।

दुलहन के हृदय में अब उसकी प्रति प्यार उमड़ पड़ा और वह अब उसे ज्यादा देर मुसीबत मे नही फँसा रहने देना चाहती थी। उसने अपने बायें हाथ से दुपट्टा उठाकर अपना मुँह जरा-सा खोला और बहुत ही धीमी आवाज में कुछ समझाने लगी।

"नहीं, नहीं, बहन, जब तक यह तुम्हे एक सोने की अशरफी न दे तब तक तुम इन्हे अपना मुँह नही दिखा सकतीं।" लड़कियों ने उसे रोका।

पंछी को उसके उज्ज्वल ललाट और मादक ऑखों की एक झलक दिखलायी दी थी। उनमे उसे उन शब्दों से ज्यादा दिलचस्पी थी जो वह अपनी सहेलियों के कान मे कह रही थी। सहसा उसमे अपनी उत्सुकता को शान्त करने की एक तीव्र इच्छा उत्पन्न हुई और उसने एक झटके से दुपट्टे का आँचल हटा दिया और देखा—एक गेहुँए रंग का चेहरा, किसान युवतियों जैसा नाक-नक्शा, सुडौल और हृष्ट-पुष्ट, और उस पर छाया हुआ यौवनमय भोलेपन का भाव! पर वह उसके चेहरे की हर चीज को अच्छी तरह देख भी न पाया था की गौरी ने दुपट्टा खींचकर फिर अपना मुँह ढक लिया। अपनी पहली सफलता से प्रोत्साहित होकर उसने सोने की बालियों की जोड़ी निकाली, जो उसकी माँ मरते वक्त अपनी बहू के लिए छोड़ गयी थी और यह कहते हुए कि 'लो यह रहा वह सोना जो तुम माँगती थी', उसने हिम्मत करके उसका चेहरा अपने दोनों हाथों से पकड़कर उस पर से घूँघट हटाने का प्रयत्न किया। कुछ हाथापाई-सी होने लगी, जिस पर सहेलियाँ कुछ घबराकर और कुछ भय

और खुशी से चिल्ला पड़ी और दूल्हा-दुलहन एक दूसरे के इतने करीब आ गये कि दुबारा उसके मुँह पर से घूँघट हटाते ही पंछी उसके बालों के गहनों को सवॉरने लगा और उसके कानों से मुलम्मे की बालियाँ उतारकर सोने की बालियाँ उसे पहना दी। फिर पंछी ने उसकी ठोड़ी को ऊपर उठाकर उसकी ऑखों मे ऑखे डालकर देखा और सहेलियों ने ढोलक पर एक नयी धुन छेड़ दी। दूल्हा को पान का एक बीड़ा दिया गया जो उसने अपनी दुलहन को खिलाया और उसी का आधा भाग अपने लिए तोड़ लिया।

पंछी को जिस समय गौरी के दर्शन हुए, उसी समय मुर्गे ने बॉग देकर प्रभात के आगमन की घोषणा की। ढोलक पर एक लहकती हुई धुन बज रही थी और लड़कियाँ गा रही थीः उसी समय लक्ष्मी ने प्रवेश किया और समयानुकूल ऑखों मे ऑसू भरकर लड़कियों से कहा कि वे गौरी को ससुराल विदा करने के लिए तैयार कर दें।

पंछी को अब लड़कियों से किसी प्रकार की झिझक बाकी नहीं रह गयी थी और वह उन्हे गौरी को कपड़े पहनाते, उसके तेल लगाते और उसे फूलों के हार पहनाकर सजी हुई पालकी मे बिठाते हुए देखता रहा।

प्रचलित परम्परा के अनुसार दुलहन अपनी माँ और मामा से बिछुड़ते समय फूट-फूटकर रोयी।

"चुप मादर...!" पंछी ने टट्टू पर सवार होते हुए कहा। और फिर दबी जबान से बोला, "ठहर जा, सबर कर...जब मेरे साथ सोयेगी तो तुझे निहाल कर दूँगा !..."

दो

●●१

"ओ सोने ! ओ चाँदी ! तेरी माँ मरे !...ओए !..." पंछी अपने दुबले-पतले बैलों को आगे बढ़ाने के लिए सौवी बार चीखा; साथ ही वह अपने हल के फाल को सूरज की धूप मे सूखी हुई कठोर धरती मे धँसाने की भी कोशिश कर रहा था। रात कुछ छींटे पड़ गये थे, जिनके कारण मिट्टी ऊपर-ऊपर कुछ नर्म पड़ गयी थी। वह बैलों पर चिल्ला तो रहा था पर वह जानता था कि न सोना और न चाँदी, दोनों मे से कोई भी चींटी की चाल से ज्यादा तेज नही चल सकता था, क्योंकि कई दिन से उन्हे सिर्फ सूखे भूसे की ही सानी मिल रही थी; उसमे न तो कोई अनाज ही होता था और न चोकर की रोटियाँ ही उन्हे मिली थी।

उसने उन्हे पीटने के लिए अपनी छड़ी उठाई, पर उसे यह साहस न हुआ कि वह बैलों के चूतड़ पर उसे जड़ दे, क्योकि बैल उसके चाचा मोलाराम के थे। वे पछी को इस शर्त पर उधार दिये गये थे कि अपनी जमीन जोत चुकने के बाद वह अपने चाचा की दो एकड़ जमीन भी जोत देगा। लाख छड़ी घुमाने पर भी जब बैलों ने कोई खास फुर्ती नही दिखायी तो विवश होकर वह छड़ी से कोंच-कोंच कर उन्हे आगे बढ़ाने का प्रयत्न करने लगा और साथ ही उन्हे मोटी-मोटी गालियाँ देता और कोसता रहा।

इसके जवाब मे सोना और चाँदी अपनी दुमें उठाये बिना ही थोड़ा-सा पतला गोबर कर देते; आखिरकार पंछी समझ गया कि अब उनमे ज्यादा दम नहीं रह गया है, इसलिए वह एक जगह खड़ा हो गया कि ठीक से गोबर कर लें। जब वे गोबर कर चुके तो उसने फिर 'तक-तक' की

आवाज से उन्हें आगे बढ़ने के लिए ललकारा, पर अब वह जुताई गहरी नहीं कर रहा था क्योंकि उसने नागफनी की बाड़ की छाँव में थोड़ी देर ठहर कर सुस्ताने का फैसला कर लिया था।

"आओ, आओ! चलो!" जब वे टस से मस न हुए तो उसने विनम्र भाव से उन्हें बड़े प्यार से पुचकार कर कहा।

बैलों ने बड़े गर्व से फुफकार मारी, मानो उनकी बात का बड़ा मान रखा गया हो। और वे एकदम इतने झटके के साथ हल और उसके पीछे पंछी को भी घसीटते हुए भाग खड़े हुए कि वह अपना सन्तुलन खो बैठा।

"यह बात है," उसने प्रशंसा के भाव से कहा। और अपना सन्तुलन ठीक करने तथा पत्थर जैसी कठोर जमीन को और गहराई तक जोतने, दोनों ही उद्देश्यों से वह हल के ऊपर पूरा जोर डालकर झुक गया।

सोना और चाँदी शुरू में थोड़ी देर के लिए फुर्ती दिखाकर फिर अपनी उसी पुरानी-धीमी रफ्तार पर आ गये। पंछी ने उनके माँ-बाप को गालियाँ दीं; उनकी दुमों को ऐंठा। पर शीघ्र ही पंछी को उनके हाल पर तरस आ गया और वह हल पर जोर कम करके, धीरे-धीरे इस उम्मीद से आगे बढ़ा कि यदि पहली जुताई सन्तोषजनक न भी हुई तो वह खेत के उस भाग को दुबारा जोत लेगा। पर बैलों के प्रति सहानुभूति के साथ ही उसके हृदय में मनुष्य के प्रति एक अस्पष्ट-सी कटुता भी पैदा हुई— अपने चाचा मोलाराम के प्रति, जो उससे सारा काम लेते थे, अपनी बीवी गौरी के प्रति, जिसके आते ही जैसे कर्जों के कारण, और शादी के समय लिये गये कर्ज के सूद के कारण, घर की सम्पदा कम होने लगी थी। उसके ब्याह के बाद ही तो अकाल भी पड़ा था। हीर और राँझा की वह पंक्ति सहसा उसके ध्यान में आयी, जिसमें प्रेमी की मुसीबतों की सारी जिम्मेदारी प्रेमिका के प्रति उसके प्रेम पर डाली गयी है :

इश्क तेरे ने हीरे नि हीरे
दुनिया विच मैंनूँ डाडा खार कीता।

पंछी ने मन-ही-मन यह पद पढ़ा और धीरे-धीरे वह उसे गुनगुनाने लगा; उसका यह गुनगुनाना एक सुरीली तान बन गयी, जिसका प्रभाव इतना संगीतमय था कि जैसे उसे सुनने के लिए बैल भी अपने कान फड़फड़ाने लगे। संगीत मे मस्त होकर उनकी चाल और भी धीमी पड़ गयी यद्यपि उसमे एक सम आ गया। वह छड़ी से उन्हे हाँकता जा रहा था ; अपने सर्वनाश का विचार उसकी कल्पना पर इतनी बुरी तरह छा गया था कि वह उखड़े-उखड़े वाक्यों में बैलों से बातें करने लगा, मानो कोई पागल अपने-आपसे बातें कर रहा हो।

उसके इस रुदन की वेदना इतनी सच्ची थी कि वह बड़ी देर तक शब्दों को दुहराता रहा और अपना स्वर कुछ ऊँचा करके वह फिर गाने लगा—"इश्क तेरे ने हीरे नि हीरे; दुनिया विच मैंनूँ डाडा खार कीता !" फिर अपने ही गाये हुए पद की आवाज को दाहिने कान से ज्यादा अच्छी तरह सुनने के लिए उसने अपने बाये कान पर हाथ रख लिया। ऐसा लगता था कि गीत की प्रतिध्वनि उस बंजर, धूप मे तपे हुए, निर्जन भू-विस्तार पर अंकित हो गयी है। इतने मे पास के खेतों मे से इक्का-दुक्का किसानों ने मुड़कर उसकी ओर देखा और चिल्लाकर कहा, "बल्ले ! बल्ले ! ओय बल्ले ! क्या आवाज पायी है !" फिर वे अपने हलों को गहरा धँसाने के लिए बोझ डालकर बैलों को ललकारने लगे !

दूसरे किसानों की इस वाह-वाह से वह कुछ शरमा-सा गया। सर झुकाकर वह फिर मन-ही-मन अपने-आप से बाते करने लगा।

'अरे सोने ! अरे चाँदी ! उसने तो मुझे तबाह कर दिया। उसने हमारे परिवार को मिटा दिया, उस गौरी ने।...वह सचमुच गौरी है, काली माई का अवतार !...मेरी चाची केसरो ठीक ही कहती है कि यह बहू हर चीज को नष्ट कर देनेवाली काली का अवतार है; जहाँ भी जाती है वहीं अकाल पड़ता है और गाँव-के-गाँव उजाड़ हो जाते हैं। वह बिलकुल धर्मशाला के मन्दिर वाली काली माई की तरह है जिनके गले मे खोपड़ियों की माला पड़ी है।...लोग कहते हैं कि काली के हाथ में खडग

रहता है, वह नर-संहार करती हुई और अपने पति शिव के शरीर को रौंदती हुई चलती है !...क्या केसरो का कहना ठीक है ?...अरे, नही, यह कभी सच नही हो सकता !...अगर यह सच होता तो बस...'

उसने फिर गीत छेड़ दिया :

ओय हीरे नि हीरे, हीरे दिवानी, तेरे इश्क ने... ।

और जब गाना मन्द पड़ते-पड़ते गुनगुनाने तक ही सीमित रह गया तो पंछी सोचने लगा कि उसके दोस्त चौधरी सूबेदार अछरूराम का बेटा राजगुरु, बीरबल महाजन का बेटा दामोदर, शादी-ब्याह तै करानेवाले नाई हशमतराय का बेटा जगतू, चाचा रफीक कुम्हार का छोटा भाई मुहम्मद बख्श और भंगी का लड़का नानक, इस गीत मे व्यक्त किये गये भाव को कितनी आसानी से स्वीकार कर लेगे, क्योंकि उसकी शादी के बाद से वे कभी एक साथ न बाग से फल चुराने गये थे, न मछलियॉ पकड़ने निकलते थे और न शिकार को ही गये थे, जब कि पहले उनका समय इन्ही मनोरंजनों मे कटता था ।

शायद दामोदर के पिता लाला बीरबल ने उनसे उस कर्ज की बात कह दी होगी जो पंछी ने उनसे लिया था । शायद गाँव के बड़े-बूढ़े भी इस षड़यन्त्र मे उसके विरुद्ध मिल गये थे । उसके चाचा की इस निर्लज्ज धूर्तता का और क्या कारण हो सकता था कि उन्होने साफ कह दिया था कि कोई पैतृक सम्पत्ति है ही नही, जिसमे से शादी का खर्च अदा किया जाये और इसलिए उसकी आधी जमीन गिरवी रखकर ही पैसा मिल सकता था—और उसकी तबाही का होनेवाला असली कारण, यही कर्ज था...न कि बीवी गौरी ।

'अरे सोने ! अरे चॉदी ! अरे बेटा, जब वह दूसरे खेत वाली फसल ही नही पनप पायी तो तुमसे अब यह खेत जुतवा कर ही क्या फायदा होगा और यह एकड़ भर जमीन भी... ।' उसका गला भर आया और वह उन डरावने शब्दों को अपने मुँह से कह न सका । उसने कसकर अपना मुँह बन्द कर लिया और मुड़ने के बाद हल को धरती मे और गहरा धँसाते

हुए उसने बड़ी कठिनाई से कोशिश करके सच बात कह ही तो दी : 'हॉ यह जमीन भी गिरवी रख देना पड़ेगी !...'

ऐसा लगता था कि सोना और चाँदी उसके दुःख से कातर हो आये थे; धीमे-धीमे चलते हुए भी वे दोनों बड़ी हमदर्दी से अपने सिर इधर-उधर हिला रहे थे।

पर अब सहसा पंछी ने अनुभव किया कि वे उसकी लापरवाही का फायदा उठा रहे थे और केवल काहिली के कारण धीमे पड़ते जा रहे थे, न कि उसके प्रति सहानुभूति के कारण, जैसा कि वह अब तक समझ रहा था। उसके अन्दर घुमड़ती हुई कटुता की धाराओ ने मिलकर एक उग्र क्रोधावेश का रूप धारण कर लिया और वह बारी-बारी से दोनों बैलों को पीटने लगा, यहाँ तक कि उनकी पीठ पर उसकी छड़ी कर्कश आवाज के साथ टूट गयी।

बेचारे बैलों ने अपनी रफ्तार तेज कर दी; पंछी हल की नोक को जमीन मे जितने ज्यादा जोर से धँसाता, वे भी उतना ही अधिक जोर लगाकर हल को खीचते। उन तीनों के शरीर से पसीना टपक कर प्यासी धरती पर गिरता और फौरन भाप बनकर उड़ जाता। लेकिन बैलों की उस जोड़ी के काम की रफ्तार उस पत्थर जैसी कठोर जमीन पर काफी तेज नहीं थी, इसलिए उनको हॉकनेवाला भी उन्हे और ज्यादा बेरहमी से पीट रहा था और चिल्लाकर उन्हे कोस रहा था :

"अरे तू मरे ! तेरी मॉ मरे ! तेरा बाप मरे ! तुझे बिच्छू काटे ! तुझे साँप डसे !..."

दुर्भाग्यवश मोलाराम ने, जो कि वहॉ से कोई चार सौ गज के फासले पर, कुएँ के पास वाली बगिया में पड़े सो रहे थे, छड़ी के टूटने की आवाज और पंछी को बैलों को कोसते सुन लिया। पिचके हुए गालों वाले उनके चेहरे पर मूछों के बाल क्रोध के कारण खड़े हो गये; उनके माथे के बल छोटी-छोटी नदियों के समान दीख रहे थे जिनमें क्रोध का पसीना, उनकी लिनन की गोल टोपी के नीचे से निकल कर बह रहा था। वे

क्रोध से पागल होकर चिल्लाये :

"अरे, खबरदार मादर...! देख मेरे बैलों पर हाथ उठाया तो तेरी ख़ैरियत नहीं ! आज इतनी सख्त गरमी के दिन तो उन्हे पानी पीने की छुट्टी दे दे !...बाद में जब जरा गरमी कम हो तब अपनी जुताई खत्म कर लेना।"

पंछी उनका आदेश ठीक से सुन नही पाया, पर वह अपने चाचा की आवाज से इतना जरूर समझ गया कि वह नाराज हो रहे थे। मोलाराम के बात करने के ढंग से उसको हमेशा काठ-सा मार जाता था; नतीजा यह हुआ कि यद्यपि वह बड़ा उद्दण्ड और निर्भीक था, पर हवलदार की बोली सुनते ही जैसे उसे साँप सूँघ गया। उसने हल की मुठिया ढीली छोड़ दी; क्रूर प्रकृति पर चारों ओर नजर दौड़ाई; कई गर्म उसाँसें लीं; क्रोध मे आकर थूका और बैलों को कुएँ की तरफ हाँकते हुऐ दबी जबान मे बोला :

"ओ मेरे सोने आ, चल चाँदी ! गुस्सा काका की आँखों मे उतर आया है !..."

●●२

जब पंछी सोना और चाँदी को लेकर कुएँ वाली बगिया में पहुँचा तो वहाँ के वातावरण में अभी तक मोलाराम के आदेश की तूफानी गूँज बाकी थी, जो उन्होंने अभी थोड़ी देर पहले पंछी को दिया था। उसने छाँह में पड़ी हुई चारपाइयों को देखा, जहाँ चौधरी अछरूराम लेटे हुक्का पी रहे थे और मोलाराम अछरू के बेटे राजगुरु और चौधरी साहब के निजी नौकर बच्चू के साथ गम्भीर मुद्रा बनाये चुपचाप बैठे थे; केवल चौधरी के हुक्के की गुड़गुड़ इस शान्ति को भंग कर रही थी। वह बैलों को नाँद के पास खूँटे से बाँधने के लिए चल दिया, जिसमें उनके लिए कुछ

भूसा पड़ा हुआ था।

भूखे बैलों ने बड़ी बेताबी से नाँद में अपने मुँह डाल दिये, जिससे साफ जाहिर होता था कि उन्हे कितनी भूख लगी थी। पर सानी खाने के लिए मुँह डालते ही वे नाक सिकोड़ कर वहाँ से हट गये; स्पष्टतः सूखा भूसा उन्हें पसन्द नही आया था और वे अपनी पानी पीने की इच्छा प्रकट कर रहे थे।

"अरे वह पानी माँग रहे हैं!" मोलाराम ने दाँत पीस कर काफी ऊँची आवाज में कहा और फिर खुद नॉद के पास आकर यह सोचते हुए कि अछरूराम तक उनकी आवाज नहीं पहुँचेगी, काफी जोर से बोले: "तू भी कैसा उल्लू है कि अपना खेत जोतने के लिए पहले तो इतनी गरमी में बैलों को नाधा और अब उन्हें बगैर पानी दिखाये उनके आगे सूखा भूसा डाल दिया। सुअर के बच्चे, तेरा दिमाग तो खराब नहीं हुआ है!..."

"चाचा, मुझे ज्यादा गुस्सा न दिलाओ, नही तो मैं अभी तुम्हे यही सुअर बना दूँगा!" पछी ने उत्तर दिया।

"मुझसे जबान लड़ाता है! मैने तेरे लिए क्या कुछ नहीं किया! ...तुझे पाल-पोसकर इतना बड़ा किया!...नहीं तो तेरे जैसे अनाथ छोकरे की हैसियत क्या थी? कमीना...नाशुक्रा कहीं का!"

"हवलदारजी, गुस्सा न करो!" सूबेदार चौधरी अछरूराम ने पुकार कर कहा। इस गरमा-गरमी से उनके हुक्के की सुचारु गति में बाधा पड़ गयी थी।

"आओ, आओ, हवलदारजी!" बच्चू ने आकर हाथ जोड़कर उनसे विनती की और उन्हे खींचकर ले गया।

मोलाराम सूबेदार अछरूराम को छोड़कर और किसी की इज्जत नहीं करते थे। इसके दो कारण थे—एक तो यह कि सूबेदार साहब फौज मे उसके अफसर रह चुके थे और दूसरे इसलिए कि वह अब गाँव के मान-प्राप्त चौधरी थे। इसलिए मोलाराम उनके कहने से चले आये।

"आओ, हुक्का पियो, गुस्सा ठण्डा हो जायेगा !" अछरूराम ने आज्ञा देते हुए कहा, "बेटा राजगुरू, जरा जाकर बैलों की सानी-पानी में अपने दोस्त की मदद कर दे।...बच्चू, जरा हुक्का ताजा कर दे।"

सूबेदार चौधरी अछरूराम के सुलह करा देने से पंछी को और पानी लाने का मौका मिला और विशेषतः इसलिए और भी कि राजगुरु पानी खींचने मे उसकी सहायता कर रहा था। बैलों को जी भरकर पानी पिलाने के बाद पंछी ने भूसे पर थोड़ा-सा पानी छिड़क कर उसे गीला कर दिया और बैलों ने बड़ी खुशी-खुशी चारा खा लिया। फिर उसने राजगुरू से उसके सर पर दो-एक बाल्टी पानी डाल देने को कहा; सोचा कि इस प्रकार उसे शायद कुछ ठण्डक मिल जाय और उसके सर का दर्द दूर हो जाये, जिसकी वजह से उसकी कनपटियो और माथे मे धमक हो रही थी।

जब पछी नहा-धो चुका तो सूबेदार चौधरी अछरूराम ने उसे बुलाया, "बेटा पछी, जरा यहाँ तो आना।" पछी ने सर झुकाये-झुकाये ही नजरें ऊपर उठाकर बगिया की धूप छाँह की तरफ एक नजर देखा और अपनी सदरी को, जिसे उसने अभी धोया था, निचोड़ता रहा।

"सूबेदार साहब तुम्हे बुला रहे है," दामोदर ने उससे कहा।

"अरे, अच्छा, अच्छा !" पछी ने उत्तर दिया, "तुम्हारे बाप कोई भगवान् नही है।"

"आओ पंछीलाल, आओ भी," बच्चू ने नौकरों जैसी जी-हुजूरी की आवाज मे खुशामद करते हुए कहा।

पछी समझ गया कि अब उसे उन बड़े-बूढ़ों के पास जाना ही पड़ेगा; वह बच नही सकता और वह यह भी जानता था कि उसे उनके लम्बे-चौड़े उपदेश सुनने पड़ेगे।

अपने चेहरे पर वह उनके प्रति आवश्यक सम्मान का भाव लाकर चौधरीजी के सामने आँखे झुकाकर जाकर खड़ा हो गया।

"सूबेदार साहब," उसके चाचा ने हस्तक्षेप करते हुए कहा, "अब आप ही इस बदमाश छोकरे को सबसे पहले तो यह समझा दीजिए कि

बड़ों की इजत करना चाहिए...जो बात उससे कही जाये उसे मानना चाहिए !..."

"चौधरीजी, मैं कोई फौज का सिपाही नही हूँ कि मुझपर हुकुम चलाया जाये, मुझे गाली दी जाये और धौंस जमायी जाये !" पंछी ने पलटकर जवाब दिया।

"नही बेटा, कौन कहता है कि तुम सिपाही हो," सूबेदार साहब ने नरमी से बात आरम्भ की, "हालाँकि मेरा ख्याल है कि अगर तुम फौज मे भरती हो गये होते और वहाँ तुमने कुछ बरस बिताये होते तो तुम्हे लड़ाई में अपना जौहर दिखाने का मौका मिलता.. तुम तो बहुत ही कड़ियल जवान हो !"

"अगर गाँव के ये छोकरे मेरे बस मे होते तो मै उन्हे आदमी बना देता," मोलाराम ने कहा।

पंछी ने उनकी बात पूरी करते हुए कहा, "उन पर रोब गाँठकर और उन्हे गालियाँ देकर आप उन्हें बस गदहा बना सकते थे।"

मोलाराम ने फरियाद करते हुए कहा, "सूबेदारजी, आप ही बताइए क्या किसी लड़के को अपने चाचा से इसी तरह बात करना चाहिए ? इसे पाल-पोसकर बड़ा किया, इतनी मुसीबत उठाई, इसका ब्याह किया, क्या इसीलिए ? मैंने इसे इसके बाप की जमीन भी दे दी है और अपने बैल भी उधार दिये हैं..."

"हाँ बेटा, बैठ जाओ," सूबेदार साहब ने पतली जाली के नीचे अपनी दाढ़ी को अपने मजबूत हाथो से सहलाते हुए कहा, "बेटा पछी, मेरे ख्याल से तुम्हे अपने चाचा का एहसान मानना चाहिए और इस तरह पलटकर जवाब नहीं देना चाहिए।"

"अगर वह मुझे कत्ल करने के लिए उकसाये, तो भी नहीं ?"

"सुनते हैं सूबेदार साहब !" मोलाराम बीच मे बोल उठे, "देखिए, एक राजगुरू है, कितना भला लड़का है और एक यह बदमाश है।"

"खबरदार, जो अब कभी मुझे बदमाश कहा तो मैं सर तोड़ दूँगा !"

पंछी ने चिल्लाकर कहा।

"हमारे धर्म में कहा गया है कि बड़ों का आदर करना चाहिए," सूबेदार ने कहा, "और तुम..."

लेकिन सूबेदार साहब अभी अपनी नसीहत पूरी भी नही कर पाये थे कि मोलाराम ने उठकर पंछी के एक तमाचा रसीद कर दिया।

पंछी ने अपने चाचा की टाँगे पकड़कर उन्हे उलट दिया और फिर अपने मजबूत-युवा हाथों से, जो हाथीसिंह की शागिर्दी मे बड़े-बड़े दाँव-पेंच सीख चुके थे, उसने मोलाराम के शरीर को घसीटा और झुककर उनकी गरदन को इस प्रकार दबाने लगा मानो उनका गला घोंटकर मार ही डालेगा।

"हाय, ओह हाय! दुहाई है! देखो मुझे मारे डाल रहा है!" मोलाराम चिल्लाये, "सुअर कही का!"

पंछी ने अपने चाचा की गरदन और कसकर दबायी और चेहरे पर सहसा इतना खून दौड़ आया कि ऐसा प्रतीत हुआ कि उसका चेहरा तनता जा रहा है, और मानो वह सचमुच ही अपने चाचा को मार डालेगा। उसके शरीर में जो शैतान की शक्ति भरी हुई थी, वह बहुत समय तक यातना सहते रहने के कारण कोई और चारा न रहने पर उसकी आँखों में उतर आयी थी और वह फिर वही उद्दण्ड बालक हो गया था जो हमेशा बकरा या हिरन हलाल करने के लिए या गुलेल से चिड़िया मारने के लिऐ सबसे पहले आगे आता था।

बच्चू और राजगुरू पंछी की तरफ झपटे और उन्होंने मोलाराम को उसकी पकड़ से छुड़ाने की कोशिश की।

"अबकी यह मुझे गाली देकर तो देखे, मैं इसकी सारी हवलदारी भुला दूँगा, चाहे मुझे फाँसी ही क्यों न हो जाये!" पंछी ने तैश मे आकर कहा, "इसने मेरी जमीन बीरबल के हाथ गिरवी रख दी है। मुझसे बैलों का किराया लेता है! और ऊपर से मुझसे अपना खेत जुतवाता है जैसे मैं इसका गुलाम हूँ...फिर चाहता है कि मैं इसका एहसान भी मानूँ!"

मोलाराम ने कुछ जवाब देने की कोशिश की, पर शब्द गले से बाहर न निकल पायेः उनके दुबले-पतले चेहरे की नसों में और उनकी मुर्गाबियों जैसी गरदन की मोटी नस में खून दौड़ आया। बस एक झटके की कसर थी और हवलदार साहब का काम तमाम हो जाता।

इसी समय प्रतिष्ठित सूबेदार साहब चारपाई से उठकर पछी की तरफ आते हुए बोले :

"आओ, बेटा, यह हम लोगों का तरीका नहीं है। यह सब तो बम्बई की उन गंदी फिल्मों मे होता है।...तुम्हारा चाचा कितना ही बुरा क्यो न हो पर तुम्हे उसपर हाथ नही उठाना चाहिए!"

"मगर वह मुझपर हाथ उठा सकता है?"

"हॉ, यह तो बड़ों का हक है।" सूबेदार साहब ने निर्णय देते हुए कहा।

"हॉ!" बच्चू ने भी इस पवित्र सिद्धान्त के समर्थन मे अपना योगदान किया।

राजगुरू तक ने सर हिलाकर सहमति प्रकट की।

इन तमाम सम्मानित व्यक्तियों को एक स्वर से वही बात कहते सुनकर पंछी ने सर ऊपर उठाकर देखा और अपने क्रोध को दबाने के लिए वह दॉत पीसकर चुप रह गया, और उसने मोलाराम की गरदन छोड़ दी। वह उठा और अपने माथे से पसीना पोंछता हुआ गाँव की तरफ चल दिया।

उसे मोलाराम के प्रतिरोध करने की आवाज सुनायी दे रही थी और सूबेदार साहब उन्हे यह धमकी देकर चुप कराने की कोशिश कर रहे थे कि अगर पंछी ने दुबारा उनपर आक्रमण किया तो वह हर्गिज उन्हें नहीं बचायेंगे। पर थोड़ी ही देर में वह उनकी आवाज की पहुँच से बाहर निकल गया। सूरज की गरमी मे किसी प्रकार की कमी नहीं हुई थी। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि आज तीसरे पहर उसने हिंसा का जो पथ अपनाया था, उसके लिए उसे सबसे अधिक घृणा किस चीज से

थी—मौसम से या अपने चाचा से या गॉव के बड़े-बूढ़ों से !

● ● ३

पछी ने घर के ऑगन मे प्रवेश किया। घर का अभी तक बँटवारा नहीं हुआ था और वे सब एक संयुक्त परिवार के रूप मे ही रहते थे। एक कोठरी मे चाचा मोलाराम और उसकी चाची रहती थी और दूसरी में वह और उसकी नौजवान बीवी। वह यह तै करके आया था कि वह केसरो से अपने चाचा के साथ हुए इस नये झगड़े की बात साफ-साफ कह देगा, क्योंकि पहले उसके साथ उसकी चाची का व्यवहार सहानुभूतिपूर्ण था। पर उसने यह भी सोचा कि शायद अब वह उसकी बात न सुने क्योंकि उसकी पत्नी के आने के बाद से उसके प्रति केसरो का रवैया कुछ रूखा-सा हो चला था। उसने देखा कि ऑगन मे एक अजीब-सी निस्तब्धता छाई हुई है, किसी मुर्गे की भी आवाज सुनायी नहीं दे रही थी; पर उसने सोचा कि शायद दिन की क्रूर-झुलसा देनेवाली गरमी के कारण ही सबने अन्दर शरण ले रखी हो। वह केसरो की कोठरी की तरफ बढ़ा।

यह स्पष्ट था कि चरखे की चूँ-चूँ में भी केसरो ने उसकी आहट सुन ली थी और वह उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। वह चरखे के तकुवे पर अपना सर झुकाये यह जताती रही कि वह एकाग्रचित्त होकर सूत कात रही है; अपने बायें हाथ को ऊपर उठाये वह उसमें रुई पकड़े हुए थी, जिसमें से सूत का तार निकल रहा था।

"निक्का कहाँ है ?" पंछी ने बड़ी बेपरवाही से पूछा।

"कहीं खेलने गया होगा।" केसरो ने सर उठाये बिना ही बुद-बुदाकर कहा।

एक क्षण तक पंछी चुप रहा, उसकी समझ मे न आ रहा था कि वह अब क्या कहे ? लेकिन अपने को रोकने की बहुत कोशिश करने पर

भी, वह आखिरकार सहानुभूति के भाव से पूछ ही तो बैठा :

"चाची, बात क्या है ?"

केसरो और थोड़ी देर तक जान-बूझकर चुप रही; इस पर पंछी को बड़ी झुँझलाहट हुई। केसरो जानती थी कि उसे चरखे मे व्यस्त देखकर पंछी हमेशा बहुत झुँझलाता था। फिर सहसा अपनी ही खड़ी की हुई सीमाओं को तोड़ कर वह फूट पड़ी और इतने प्रवाह से बोलने लगी जैसे पंछी ने उसे पहले कभी बोलते न सुना था। अपने अधीर, क्रोधी और बदजबान पति से वह बिलकुल भिन्न थी; वह बहुधा खामोश ही रहती थी।

"अगर हो सके तो तुम उसे समझा लो !...नमकहराम कही की ! तुम्हारी यह बहू पहले तो बिलकुल भीगी बिल्ली बनी रहती थी और एक बात भी नहीं कहती थी, और अब वह मुझे जवाब देने लगी है !...जिस दिन से पिपलॉकलॉ की इस कुतिया ने हमारे घर मे कदम रखा है उसी दिन से हमारा नसीब फूट गया। तुम तो जानते ही हो, सारी फसल सूख कर चौपट हो गयी है। बैल दिन-ब-दिन दुबले होते जा रहे हैं। और हमारी गाय सत्ती भी बीमार पड़ गयी है। निक्का को बुखार आया। और पानी बरसने का कही नाम नही है।...मैं कभी फिकर न करती, मगर देखो तो आज इसने क्या किया है, इस छोकरी ने !..."

"वह है कहाँ चाची, क्या किया है उसने ?"

"उसने क्या नहीं किया है ? भंगन की जात !...बेहया !"

"लेकिन आखिर हुआ क्या है ? क्या बिना दुपट्टा ओढ़े फिरती रही है ?"

"मै इसकी ज्यादा परवाह नहीं करती। आजकल तो सभी नौजवान लड़कियाँ इन सब बातों का कोई ख्याल नहीं रखतीं; हालाँकि हमारे यहाँ कहावत है : 'बद्दल चकोर दे पर वागण, तीमी जेड़ि खावे मलाई; बद्दल बरसण, ते ओह जायेगी नस्स।' मुझे तुम्हारे पीछे दामोदर का और तुम्हारे दोस्तों का हमारे घर आना अच्छा नहीं लगता।"

"क्या आज कोई आया था ?"

"हाँ राजगुरू आया था।—लेकिन बड़ी अजीब बात है। हमेशा की तरह वह काम करते समय अपना सर खोले बैठी थी। मेरी तो समझ मे नही आता कि इसकी माँ, वह कंजी, कैसी औरत थी ! लोग उन लोगों के बारे में तरह-तरह की बातें करते हैं। मगर एक बात मैं कहे देती हूँ कि मैं अपने घर में भंगी-चमारोंवाली ये गंदी हरकतें नही चलने दूँगी !..."

"अगर राजगुरू के साथ उसने बेहयाई से बात की होगी तो मै उसकी जान ले लूँगा !"

केसरो ने उसे कनखियों से देखा; इतना तो उसे विश्वास था ही कि पंछी के दिल में वह उसकी पत्नी की तरफ से जितना भी सन्देह पैदा करेगी, उससे उसका ही फायदा होगा और वह फिर से उसीका पक्ष लेने लगेगा। फिर उसने सोचा कि कही ऐसा न हो कि ऐसी परिस्थिति में जबकि गौरी ने सन्देह करने लायक कोई ऐसी बात नही की थी, वह अविश्वसनीय हद तक झूठी-सच्ची बातें बनाकर उन दोनों के दिलों मे बेकार की तनातनी पैदा कर दे; इसलिए वह उसकी उन गंदी आदतों पर जोर देने लगी जिनके कारण इस बात की सम्भावना थी कि सब लोग उसे दुतकारने लगें।

"नही बेटा, जब तक मेरे दम मे दम है तब तक भला यह हो सकता है कि वह किसी के साथ बेहयाई से खुलकर हँसी-मजाक करे ? यह बात अपने दिल से निकाल दो। हाँ, उससे इतना जरूर कह दो कि वह जरा घूँघट काढ़ने का ध्यान रखा करे !...लेकिन वह इतनी घुन्नी भी न बनी रहा करे कि सारे घर को भ्रष्ट कर दे !...मुझे फिर सारे बरतन मॉजने पड़े। और मुझे घर को शुद्ध करने के लिए पडितानी रामदेवी को बुलाकर पूजा करवानी पड़ी। और बेटा, तुम तो जानते ही हो, ये ब्राह्मण कोई काम मुफ़्त नही करते। मुझे पंडितानी को खिलाना पड़ा—और वह भी सादी रोटी और साग नहीं ! उसे तो खीर चाहिए ! इसलिए सारा दूध खीर पकाने में खर्च हो गया, हमारी सशी देती ही कितना दूध है, और

जो चावल भरा था, वह भी खतम होता जा रहा है !..."

घर को शुद्ध कराने के लिए पूजा की बात सुनकर पंछी समझ गया कि गौरी ने क्या अपराध किया था। और केसरो ने भी उसके दिल में काफी नफ़रत भड़का चुकने के बाद असली बात खुद ही कह दी।

"और सब कुछ इसलिए हुआ कि इस लड़की ने बताया भी नहीं कि उसके महीने का अट्ठाइसवाँ दिन है !"

यह रहस्य मालूम होने पर नवयुवक पति के चेहरे पर से क्रोध का भाव कुछ कम हुआ और गौरी की तरफ से सफाई पेश करने से पहले उसने अपनी चाची के सख्त रवैये को कुछ नरम करने की कोशिश की।

"चाची, गौरी के गॉव के सब लोगों का ख्याल था कि वह बिलकुल गाय की तरह सीधी है।"

"बड़ी सीधी है गाय की तरह ! तब देखते जब मैंने उसे चौके मे जाने से मना किया था, कैसा बड़बड़ाई थी !"

"यह अच्छा हुआ। अब कम-से-कम इन तंगी के इन दिनों मे एक ओर पेट पालने का सवाल तो नहीं होगा।"

"बेटा कैसी बातें करते हो ! तुम्हारी माँ के जमाने मे और तुम्हारी दादी के जमाने में, और यही क्यों, हमारे पूरे धर्म की परम्परा में महीना आने के दिनों मे औरतों को अछूत समझा जाता है। उन्हे सबसे अलग रखा जाता है और चौके से बाहर खाना दिया जाता है, उन्हें कोई चीज छूने नहीं दी जाती ! भगवान तुझे जीता रखें, तू यह बात क्यों कहता है कि इस बार भी उसका महीना आ गया है, जबकि हमारे लोगों के यहाँ तो अच्छा यही समझा जाता है कि वह अबतक पेट से होती। हमें बेटा चाहिए, परिवार में जितने बेटे हों उतना ही अच्छा है।"

"अगर तुम्हें मालूम होता कि चाचा मोलाराम मुझे कितना प्यार करते हैं तो तुम कभी मुझसे ज्यादा-से-ज्यादा बेटे पैदा करने को न कहतीं !...मैं तो जायदाद का बँटवारा चाहता हूँ।"

"पंछी बेटा," केसरो ने अपने स्वर में बड़ी ममता भरकर कहा, "उन्हे

कभी-कभी गुस्सा आ जाता है। पर पंछी, तुम घर की जायदाद के बँटवारे की अपने दिल मे न लाना। हमें अभी निक्का का ब्याह करना है! और तुम तो खानदान के बड़े भाई की सन्तान हो।"

"चाची, बँटवारे पर जोर मैं नही दूँगा बल्कि चाचा देंगे," पंछी ने केसरो की नरमी के जवाब मे अपनी आवाज ऊँची करके कहा, "आज के झगड़े के बाद ..."

"लेकिन तुम्हारी बीवी के बारे मे मैंने जो कुछ कहा है तुम उसका बुरा न मानना। आखिर वह मेरी बहू है, सास के न होने के कारण मै ही..."

"नही, मैं गौरी से आपकी नाराजगी की बात नहीं कर रहा हूँ लेकिन...आज कुएँ पर चाचा के साथ मेरी हाथापाई हो गयी। मै उनकी धौंस और गाली-गलौज बर्दाश्त नहीं कर सका।"

"हाय, क्या हुआ! उन्हें चोट तो नही लगी?"

"उनकी इज्जत को बट्टा जरूर लगा! क्योंकि..."

"क्यों बेटा, ऐसी क्या बात हुई कि उनपर हाथ उठाने की नौबत आयी!" केसरो ने रुआँसी होकर कहा, उसकी आँखों मे आँसू छलछला आये थे। फिर वह चीख-चीखकर रोने लगी, "अरे, हमारे घर को किसका शाप लगा है! हो-न-हो यह इसी मनहूस बहू की परछाईं पड़ी है।"

इसी समय उसका बेटा निक्का बाहर से भागा-भागा आया और अपनी माँ को रोता देखकर हक्का-बक्का रह गया; उसका सारा उत्साह ठण्ढा पड़ गया और वह झिझकते-झिझकते पछी की तरफ बढ़ा।

पंछी ने उसे उसकी माँ की तरफ भेज दिया।

"क्या बात है?" लड़के ने पूछा।

"बेटा, हमारे घर पर मुसीबत आ रही है!" केसरो ने रोते हुए कहा, "वह तेरी भाभी भंगिन है, बिलकुल गन्दी! और अभी पंछी और तेरे बाप में मारपीट हुई है।...हाय, मै क्या करूँ?"

निक्का को धर्म-कर्म की बातों से इतना भी सरोकार नहीं था जितना कि पंछी को था; उसका क्रोधी बाप रोज उस पर अपना गुस्सा उतारता

था, इसीलिए वह पंछी को तो बिलकुल पूजता था।

"माँ हमें भूख लगी है," उसने कहा, "थोड़ी-सी बासी रोटी और चटनी दे दे मुझे।"

"तुझे तो दुनिया मे और किसी बात की फिकर ही नही है," केसरो ने चिल्लाकर कहा, "बस सारे दिन खेलना और जब देखो तब खाना।"

पंछी ने अपनी दाहिनी ऑख दबाकर निक्का की तरफ देखते हुए कहा, "अरे निक्का, इतना मोटा होकर क्या करेगा। इतना नहीं खाते। बखार में अब चावल खतम हो गया है और इसके अलावा तुम्हे अपने बाप जैसा दुबला और गुस्सैल बनना चाहिए। .." इतना कह कर वह अपनी कोठरी की ओर चल दिया।

●●४

जिस समय वह घर की दाहिनी तरफ अपनी सोने की कोठरी मे घुसा उस समय गौरी बानों की एक छोटी-सी चारपाई पर सिमटी हुई पड़ी थी।

न जाने क्यों उसके भीरु, दुर्बल शरीर को एक कोने मे दुबका हुआ देखकर वह अपने आपको अपराधी समझने लगा, क्योंकि बहुधा उसकी सास, केसरो की तरफदारी करने के कारण ही गौरी को उस अँधेरी कोठरी में बानों की उस छोटी-सी चारपाई की शरण लेनी पड़ती थी। और चूँकि अब अपने अभिमान के कारण वह सीधे-सीधे विनम्रता से अपनी बीवी से यह नही कह सकता था कि उसने उसके प्रति अब तक जो कठोरता दिखायी थी, उसके लिए वह उसे क्षमा कर दे, इसलिए वह अपने अपराध से मुक्त न हो सका, फलस्वरूप उसे केवल क्रोध आ गया। वह थोड़ी देर उसके चारों तरफ टहलता रहा। उसके हृदय में एक तरफ तो उस लड़की के प्रति समवेदना भी थी कि उसे इस मूर्खतापूर्ण रिवाज का उल्लंघन करने के कारण, कि मासिक धर्म के दिनों में औरतों को अछूत

बताकर एक कोने मे डाल दिया जाये, अकारण दण्ड दिया गया था और दूसरी तरफ उसे यह भी आशंका थी कि यदि वह उसे मनाने में असफल रहा तो उसे कितनी निराशा होगी। फिर उसने गाँव की इस पुरानी पद्धति के अनुसार उसे मनाने की कोशिश आरम्भ की कि जहाँ तक औरतों का सवाल है उनकी पहले खुशामद करना चाहिए और बाद में डण्डे के जोर से काम लेना चाहिए।

"बस उठ जा, मेरी रानी," पंछी ने बड़ी सहानुभूति से अपने होंठ बाहर को निकाल कर उसे दूर से ही चुमकारते हुए कहा।

गौरी को अपने पति की आहट मिल चुकी थी, और वह थोड़ी देर पहले ही रोना बन्द कर चुकी थी, पर उसने इतने जोर से सिसकना आरम्भ किया कि वह सुन ले। उसने सोचा कि ऐसा करना आवश्यक है क्योंकि उसके विचार से उसकी सास ने उसे बेकार डाँटा था। इसलिऐ अपने पति की सहानुभूति प्राप्त करने का यही अच्छा मौका था; उसका ख्याल था कि आँसुओ की सहायता से वह सफल हो जायेगी। दुर्भाग्यवश, वह अभी तक अपने घरवाले के इस वक्र स्वभाव से भली-भाँति परिचित नही थी कि आँसुओं से उसके हृदय में समवेदना की अपेक्षा क्रोध जल्दी पैदा होता था।

पंछी कमर पर हाथ रखे खड़ा था; वह अपने मुँह को बड़ा प्रयत्न करके बंद रखकर अपने क्रोध को रोकने का प्रयत्न कर रहा था। गौरी के कान के पास अपना मुँह ले जाकर उसने कहा :

"अच्छा, बस बहुत हो चुका, मैं तुझे यकीन दिलाता हूँ कि तेरी माँ अब तक मर गयी होगी।"

माँ का नाम सुनते ही उसकी पत्नी के हृदय मे जवानी की स्मृतियों के कुछ तार झनझना उठे और उसे याद आने लगा कि घर पर उसके साथ कितने प्यार का बरताव होता था, विशेषतः जब उसकी कमर में दर्द उठता था। उसकी सिसकियों ने हिचकियों का रूप धारण कर लिया और वह बीच-बीच में चीख-चीख कर कहने लगी "हाय मेरी माँ! हाय,

तुमने मुझे कहाँ भेज दिया ?...अरे, मेरे सास न होती तो कौन-सा ऐसा नुकसान था।"

अपनी अन्तःप्रेरणा के आदेश का पालन करते हुए वह बानों की चारपाई पर बैठकर उसका सर सहलाने लगा, फिर पंछी को याद आया कि उसकी माँ भी उसके साथ ऐसा ही करती थी और उसे चुप कराने को बहुधा कहती थी : "बेटा, खूब जी भर कर रो लो, सारा गम दूर हो जायेगा।" और उसने भी गौरी के कान में चुपके से यही सलाह दी, "जी भर कर रो लो, मेरी रानी, खूब अच्छी तरह रो लो, सारा गम दूर हो जायेगा ?"

यह सुझाव सुनते ही गौरी फूट ही तो पड़ी और जोर-जोर से चीखने लगी :

"हाय री माई, तुम कहाँ हो ? तुमने मेरा ब्याह ऐसे घर में क्यों कर दिया ?...हाय !..."

पंछी को चुपचाप बैठा देखकर थोड़ी देर बाद गौरी ने रोना बन्द कर दिया और नाक सुड़कती और खँखारती हुई उठ बैठी। चारपाई से उठ-कर खिड़की के पास गयी, छिनक कर नाक साफ की तो उसकी साँस की गति सुगम हो गयी। दुपट्टे से आँसू पोंछकर वह बड़े उदास भाव से, सर झुकाये अपने पति से मुँह मोड़कर खिड़की की ओर मुँह करके चारपाई पर बैठ गयी।

"रोने से क्या फायदा ?" पंछी ने रुखाई से कहा, "तुम्हें धीरज रखना चाहिए !"

"धीरज !" गौरी ने क्रोध को दबाकर धीरे से कहा, "धीरज...मैं इस औरत की दिन-रात की डॉट-फटकार के आगे कबतक धीरज रखूँ, और फिर तुम भी तो उसका पक्ष लेकर मुझको ही जूतों से मारते हो।"

"फिर तुम्हीं बताओ, तुम क्या चाहती हो ?" पंछी ने पूछा। गौरी के आरोप की सचाई के कारण उसका चेहरा उतर गया।

गौरी चुप रही। क्योंकि उसके निकट सास-बहू के इस झगड़े का

इसके अलावा कोई हल नहीं था कि या तो उसकी सास मर जाये या वह खुद मर जाये।

"मेरे ऊपर भी तो उनकी कुछ ऐसी कृपा नहीं है," पंछी ने उसका हौसला बढ़ानेके लिए कहा, "आज ही तो चाचा से मेरा बहुत झगड़ा हुआ।"

"मुझे मायके भेज दो," गोरी ने ऑखे झुकाए हुए कहा ; व्यथित नवविवाहिता वधू की यह परम्परागत मॉग रखते समय उसके चेहरे पर उदासी के काले बादल छाये हुए थे।

"हम कोई और रास्ता भी निकाल सकते है," पछी ने कहा, "हमें करना यह पड़ेगा कि..."

"अच्छा तो इनसे अलग हो आओ। मै खाना पकाने और घर-गृहस्थी का सारा काम कर सकती हूँ। वैसे भी तो सारा काम मुझको ही करना पड़ता है, और कौन करता है ?"

पंछी को यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि वह 'सीधी गाय' इतनी साफ बात भी कह सकती है। पर सामने अपनी चाची को खड़ा देखकर उसे और भी आश्चर्य हुआ।

"हाय, हाय, री। तू मरे ! नमकहराम ! जरा इसे देग्वो तो। जबान पर बिल्कुल काबू ही नही है। चुड़ैल कही की..." केसरो उसे कोसे जा रही थी। वह सामने वाली बड़ी बैठक मे जानेवाले दरवाजे के पीछे खड़ी उनकी सारी बाते सुन रही थी। "लोगों देखते हो, यह बॅटवारा करने को कहती है ! चुड़ैल ! पिपलौंकलॉ की छिनाल ! अपने मरद की हमदर्दी पाने के लिए जाके कोप-भवन मे रूठ के बैठी है !...मै तेरी एक-एक चाल समझती हूँ ! अघोरिन ! भंगिन की जात है तू, जभी तो जरा-सा ख्याल नहीं रखती, मेरा सारा घर भ्रष्ट करके रख दिया !..."

"चाची !" पंछी ने कड़ककर कहा।

"माँ, कैसी बातें करती हो तुम," निक्का ने कहा ; वह अपनी मॉ के पीछे ही खड़ा था।

"यह सब क्या हो रहा है," मोलाराम ने आँगन में कदम रखते ही अपनी बीवी की आवाज सुनकर पूछा और सीधे पंछी की कोठरी मे घुस गये। "मै जानता हूँ यह हरामी पंछी मुझसे झगड़ने का सारा गुस्सा अपनी बहू पर उतार रहा होगा ! कमीना, बदमाश कही का ! इसने हमारे ऊपर हाथ उठाने की हिम्मत की और वह भी इतनी-सी बात पर कि इन तंगी के दिनो मे अपने बैलों को मौत से बचाना चाहता था !..."

"नहीं, वह नहीं है !" केसरो ने अपने पति से कहा जो अब तक उस अँधेरी कोठरी में आ चुके थे। "वह चुड़ैल है जिसे तुम पिपलॉ-कलॉ से लाये हो। बदचलन, कुलटा, छिनाल कही की ! उसकी मॉ भी छिनाल है !"

पर जिस तरह पंछी पर केसरो की कृपादृष्टि थी वैसे ही मोलाराम का रवैया गौरी की तरफ कुछ नर्म था।

"वैसे तो वह बिचारी बड़ी सीधी है और तुम जो कहती हो सब करती है !" मोलाराम ने आश्चर्य से अपनी पत्नी की तरफ देखकर उत्तर दिया, "यह पंछी ही..."

"तुम उस सीधी गाय को जानते नही हो !" केसरो ने चिल्लाकर कहा, "यह पंछी को बँटवारा करने के लिए भड़का रही थी ताकि ये लोग हमसे अलग रह सकें।"

"यह उसी की राय होगी ! मेरी बात तो मानो !" मोलाराम ने दृढ़तापूर्वक कहा, उन्हें पंछी की बदमाशी का पक्का यकीन था। "मैं तो जानता था कि कुएँ पर वाली लड़ाई के बाद वह यही करेगा !...इसे अपने चाचा पर हाथ उठाते और सूबेदार अछरूराम के सामने मुझे बेआबरू करते लाज न आयी !...मेरी बला से, अलग होना चाहता है तो हो जाये।...इसकी जमीन तो इसे मिल ही चुकी है लेकिन वह बीरबल के यहाँ गिरवी है ! अब यह खुद उस महाजन का हिसाब चुकता करके अपनी जमीन छुड़ा ले। जहाँ तक घर का सवाल है, वह यहॉ से जा सकता है क्योंकि जब तक यह मुझे वह सारी रकम लौटा नहीं देगा जो

मैंने अपनी जेब से इसकी शादी पर खर्च की है तब तक मैं इसे यह घर देनेवाला नहीं !"

मोलाराम उसकी चाची से जो उल्टी-सीधी लगा रहे थे, उसे सुनकर भी पंछी अभी तक चुप था। पर अब उसका गुस्सा काबू से बाहर हो गया।

"झूठे ! तूने मेरी शादी पर कौन-सी रकम खर्च की है ?"

"भूँके जाओ कुत्ते की तरह !" मोलाराम ने उत्तर दिया और अनायास ही वह अपनी पत्नी की आड़ में खड़े हो गये। "तुझे कुछ हिसाब भी आता है। तुझे क्या मालूम कि मैंने तेरी शादी पर क्या-क्या खर्च किया है। पर मेरी बही मे एक-एक पाई का हिसाब लिखा है।... तेरी एक एकड़ जमीन और तेरी माँ का हार गिरवी रखकर मुझे बीरबल से जो पाँच सौ रुपये मिले थे उसके ऊपर और मेरे अपने पाँच सौ खर्च हुए हैं।..."

"आओ, गौरी, इस जहरीले नाग के पास रहना भी ठीक नहीं ! आओ चले..." पंछी ने कहा।

"जा, अभी चला जा, बदमाश ! लुच्चा ! जा ठोकरें खा जाकर ! मेरी आँखों के सामने से दूर हो जा ! और खबरदार जो लौटकर इस घर में कदम रखा !..."

"लेकिन यह घर कोई तुम्हारी ही बपौती नहीं, मेरा भी है !" पंछी ने दरवाजे की तरफ झपटते हुए चिल्लाकर कहा, "मैं अपना हक अदालत में लड़कर ले लूँगा।"

"मुझे फौज से पेंशन मिलती है और कानून मेरी तरफदारी करेगा।" मोलाराम ने क्रोध से भरकर, पंछी को अपनी तरफ झपटता देखकर काँपते हुए कहा।

"निक्का के बाप !" केसरो ने अपने पति से दया की भीख माँगते हुए कहा, "लड़के को घर से न निकालो !..."

"यह मुझे क्या निकालेंगे ! मैं खुद ही चला जाता हूँ।" पंछी ने

पलट कर कहा। उसके स्वाभिमान को ठेस लगी थी।

"अच्छा तो जा," मोलाराम ने पंछी के भय से और इस विचार से कि गाँववाले क्या कहेंगे, क्रोध में पागल होकर चीखकर कहा, पर वह अपनी इस आन पर ढिठाई से अड़े हुए थे कि वह अपने इस बदमाश भतीजे पर अपना रोब कायम करके ही दम लेंगे। उन्हे यह भय तो था ही कि पंछी न जाने कब उनपर वार कर दे, इसलिए उससे थोड़ा और दूर हो जाने के विचार से, वह हटकर उस अलमारी के पास चले गये जहाँ पंछी के दहेज मे आये हुए बरतन साफ करके सजाकर रखे हुए थे। वह उन बरतनों को निकाल-निकालकर ऑगन में फेंकने लगे।

"क्या कर रहे हो ? हाय ! कैसी अशुभ बात करते हो ?" केसरो ने चिल्लाकर कहा।

पर मोलाराम पर तो जैसे भूत सवार था; उनके सारे शरीर से पसीना बह रहा था और वे क्रोध के कारण काँप रहे थे। जब तक मोलाराम के हाथ थक नहीं गये तब तक वह बरतन फेंकते रहे और अन्त में बोले, "जा, अब जाके हरामखोरी कर ? घर से अलग होना चाहता था न ? अपना सामान उठा और चला जा यहाँ से !..."

"सामान तो मैं बाद मे उठाऊँगा, पहले तो मैं कही ऐसी जगह जाऊँगा जहाँ तेरी यह जहरीली बातें न सुनायी दें," पंछी ने कहा और चारपाई के पास जाकर, जहाँ गौरी बैठी थी; उसने उठने का इशारा किया। "हम लोग राजगुरू के यहाँ चलेंगे ! चलो उठो !..."

"हाय हाय, बेटा !" केसरो ने चिल्लाकर कहा, "तू क्या अपनी बहू को उस सूबेदार के छोकरे के हवाले कर देना चाहता है, अंधा कही का ! तुझे इतना भी दिखायी नहीं देता कि वैसे ही वह यहाँ के हेरे-फेरे करता रहता है और..."

"क्यों ऐसी बात है ?" पंछी ने गौरी की तरफ मुड़कर कहा, "क्या तू..." पर ये भयानक शब्द उसके मुँह से निकल न सके। उसने बस गौरी के सर पर दो-तीन थप्पड़ रसीद कर दिये और वह चारपाई पर

गिरकर सिसक-सिसककर रोने लगी।

अब राजगुरू के घर जाने का कोई सवाल ही नहीं था।

●●६

सूखे तालाब के पास, पिपलॉखुर्द के श्मशान के पार, आम की एक बगिया थी; पंछी इस समस्या पर विचार करने के लिए उसी ओर अकेला टहलने निकल गया! अपनी भावनाओं से उत्तेजित होकर वह बड़ी देर तक निरुद्देश्य इधर-उधर भटकता रहा; कभी-कभी वह रास्ते में पड़े हुए किसी पत्थर को ठोकर मार देता, ऐसा करने में उसकी भावनाएँ व्यक्त होती थी। वह नहीं चाहता था कि उसका कोई दोस्त उसे देख ले। जब तक काफी अँधेरा नहीं हो गया तब तक वह घर वापस नहीं गया। उसे केवल फायदा इतना हुआ कि बगिया में उसने कुछ ताजी हवा खा ली। क्योंकि जिस समय उसने संयुक्त परिवार के घर के ऑगन में प्रवेश किया, उस समय उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वहॉ हवा का नाम भी नहीं है, इसके अलावा तीसरे पहरवाले झगड़े का तनाव तो वहॉ के वातावरण में अभी तक था ही। वहॉ निस्तब्धता का पूर्ण राज्य था, यहॉ तक कि अहाते के कोने में जहॉ गाय-बैल बॉधे जाते थे वहॉ से भी किसी जानवर के रँभाने की आवाज नहीं आ रही थी।

वह लकड़ी की सीढ़ियों को पार करके अपनी कोठरी की ऊपरवाली छत पर गया। उसने सोचा था कि वह इस तमाम झगड़े को भूल जाने के लिए फौरन सो जायेगा। पर वहॉ पहुँचकर उसने देखा कि उसका बिस्तर लगा हुआ था, पर जिस चारपाई पर गौरी सोती थी, वह खाली पड़ी थी।

"मादर..." उसने गाली दी।

और वह समझ गया कि वह अभी तक कोप-भवन में मान किये पड़ी है। एक क्षण के लिए रुककर उसने सोचा कि क्या करना चाहिए—

नीचे जाकर उसे मना लाये या सो जाये। परन्तु केसरो की अपमान भरी बातें सुनकर उसके हृदय में राजगुरू के प्रति ईर्ष्या की जो घुटन पैदा हो गयी थी वह इस सैर के दौरान मे बिल्कुल खत्म हो गयी थी और उसे इस बात पर अफसोस हो रहा था कि उसने गौरी की बदचलनी के बारे मे केसरो की बेबुनियाद शिकायत का विश्वास करके उसे मारा था। उसे इस बात का भी कुछ आभास था कि उसकी चाची ने यह आखिरी तुरुप क्यो मारा था, और उसके हृदय मे अपनी पत्नी के प्रति कोमल भावनाओ का एक ज्वार-सा आया हुआ था, परन्तु अपनी मर्दानगी का अभिमान उसमें इतना ज्यादा था कि सीढ़ियों की ओर जाते हुए उसने अपनी ऑखो से यह बात जाहिर नहीं होने दी।

इस समय भी उसके हृदय मे ऐसा ही एक ज्वार उठा और वह अधीर होकर सीढ़ियों की तरफ वापस लौटा, पर उसने अपने कदम जरा धीमे कर दिये कि कही केसरो ऑगन मे अपने चौके से या अपनी कोठरी की ऊपर वाली छत से उसे देख न रही हो। पड़ोसियों ने भी झगड़े की बात सुनी थी या ऑगन मे पूर्ण निस्तब्धता से उन्होने इसका अन्दाजा लगा लिया होगा, इसलिए उनके भी कान खड़े होंगे कि देखे अब क्या होता है?

वह सीढ़ियो से नीचे उतरा ही था कि उसने केसरो को अपने बाएँ हाथ पर खाने की थाली उठाये वहॉ खड़ा देखा।

पंछी अभी ऑख उठाकर उसे देख भी न पाया था कि उसने दबी आवाज मे कहा, "आओ बेटा, आकर खाना खालो।...इतना गुस्सा नहीं करते! और तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारे चाचा का तो मिजाज ही गरम है।..."

"ले जाओ, मुझे भूख नहीं है," उसने उत्तर दिया।

"मगर बेटा?" केसरो ने विनीत भाव से कहा।

पंछी ने उसे एक तरफ को ढकेल दिया और तीर की तरह कोठरी के अन्धकार को चीरता हुआ 'कोप-भवन' के अन्धकार मे विलीन हो गया।

जैसा कि उसने सोचा था, गौरी चारपाई पर उसी तरह पड़ी हुई थी जिस प्रकार कि उसने तीसरे पहर खेत से वापस लौटने पर उसे पड़ा पाया था। सफेद धोती में उस कोमलांगी के शरीर की समस्त गोलाइयाँ साफ दिखायी दे रही थीं।

इस बन्द वातावरण मे गर्मी की घुटन से पछी को झुँझलाहट-सी होने लगी और बाहर बनावटी मुहब्बत दिखाने पर अभी केसरो से उसकी जो झड़प हो चुकी थी, उसके कारण वह क्रोध से बरस ही पड़ने वाला था। पर इस बात से कि केसरो उसके साथ अच्छा व्यवहार करने का प्रयत्न कर रही थी, उसकी इस शंका की पुष्टि हो गयी कि वह गौरी से नफरत करती थी और उसने मन-ही-मन अपनी बीवी को इस बेवकूफी के लिए क्षमा कर दिया कि वह घण्टों यहाँ इस प्रकार रूठकर पड़ी रही।

"अरे पगली, गरमी के मारे मर जायेगी! और कौन जाने...यहाँ साँप-बिच्छू भी होंगे।"

उसकी आवाज इस समय भी उतनी ही कठोर थी जितनी कि तीसरे पहर, जब उसने उसे पीटा था; इसलिए गौरी दुबककर चारपाई के एक कोने में हो गयी और सिकुड़ कर और भी गठरी बन गयी।

"आओ, मेरी जान की दुश्मन," उसने अपनी आवाज में कुछ नरमी लाकर कहा।

पर 'जान की दुश्मन' मे जो उलहना छुपा हुआ था उससे गौरी और भी डर गयी और वह बिल्कुल चुपचाप लेटी रही। अबतक उस घुटे हुए कमरे मे, जहाँ हवा का कहीं से गुजर नही था, वह जो गहरी-गहरी साँसें ले रही थी वह भी उसने बन्द कर दी।

"रानी, इतनी जिद नहीं करते।" उसने अपने स्वर में सचमुच बड़ी नरमी लाते हुए कहा। यह उसके लिए बहुत कठिन था और अपनी बात के शुरू में 'रानी' सम्बोधन का प्रयोग करके ही वह यह नरमी ला सकता था। इतना कहकर वह उसके पास बैठ गया।

इस प्यार-भरे और स्नेहमय व्यवहार का गौरी पर प्रभाव पड़ा।

"आप ऊपर जाइए," उसने बड़े आदर से कहा, "मैं यहाँ मजे में हूँ।"

"पागल तो नहीं हुई हो," उसने और भी प्यार-भरी सख्ती से कहा, "तुम यहाँ गरमी मे मर जाओगी।...आओ... तुमने कुछ खाया भी है?..."

"निक्का मेरे लिए थाली लेकर आया था, पर मुझे भूख नहीं है," उसने उत्तर दिया।

"अभी चाची भी मुझे थाली लेकर मिली थी," पंछी ने कहा।

"उसने फिर तुम्हारी शादी मेरे साथ क्यों कर दी, अगर वह..."

"खबरदार, जो ऐसी बात कभी कही," उसने बीच में ही उसकी बात काट दी।

"लेकिन यह सच है," गौरी ने अपना सर उठाकर कहा। उसके साहस को देखकर पंछी भी दंग रह गया।

उसका यह आरोप सुनकर भी वह चुप रहा। वह सोचने लगा कि यह लड़की इतनी भोली नहीं है जितनी कि लोग कहते थे, सब बातों को खूब अच्छी तरह समझती है।

"कैसरो चाचा मोलाराम के साथ बहुत खुश नहीं है," पंछी ने बड़ी देर तक चुप रहने के बाद स्वीकार किया, "और निक्का के पैदा होने से पहले, जब हमारे चाचा फौज में थे, वह मुझे बहुत प्यार करती थी और मुझे अपना बेटा समझती थी।...शायद अब उसे इस बात की जलन होती होगी कि अब उसी घर में एक और औरत आ गयी है..."

"फिर मैं इस घर में कैसे जिन्दा रह सकती हूँ?" गौरी ने शिकायत की।

"मैं कहीं दूसरी जगह कोठरी ले लूँगा।" उसने कहा।

पंछी सर झुकाए बैठा था। गरदन को झटका देकर उसने अपना दाहिना हाथ बालों में फेरा, मानो वह आशा की एक किरण पाने के लिए जी-जान से कोशिश कर रहा हो। पर उस अँधेरी कोठरी में रोशनी कहाँ,

वहाँ तो केवल गर्मी की घुटन थी, उसकी चोटी से एड़ी तक पसीने की जो धार बह रही थी, बस उसके कारण ही इस घुटन मे कुछ कमी प्रतीत होती थी। वह गर्म साँसें ले रहा था। उसने गौरी को अपनी बाँहों मे भरकर गोद में उठा लिया; मैली-कुचैली पसीने मे भीगी हुई धोती के कारण उसका शरीर चिकना हो रहा था। वह बहुत हल्की थी और उसने इस प्रकार गोद मे उठाये जाने का विरोध भी नहीं किया। पछी उसे इसी प्रकार लिये हुए कोठरी के अँधेरे से बाहरवाली कोठरी मे ले आया, जहाँ तेल के दिये के कारण अपेक्षतया कम अँधेरा था।

"अच्छा, मुझे इस तरह ऊपर न ले जाना," उसने खुशामद करते हुए कहा, "वह लोग सब कुछ देख रहे होगे; वे हमे इस बात के लिए कभी माफ नही करेगे।...तुम चलो मै नहाकर अभी आती हूँ।"

"नही, मैं औरतों की सब चालाकियाँ समझता हूँ," पछी ने कहा, यह कहते हुए आज उसके चेहरे पर एक हल्की-सी मुस्कराहट भी दौड़ गयी। "मै तुम्हे साथ लेकर ही ऊपर जाऊँगा।...मै समझता था कि इस हालत में औरतें नहाती नहीं हैं।...अगर तुम नहाओगी तो मै भी नहाऊँगा।"

गौरी यह प्रस्ताव सुनकर शरमा गयी और एक रुआँसी-सी हँसी हँस दी; प्रतिरोध करते हुए, लजाते हुए उसने अपने आपको उसके बाहुपाश से छुड़ा लिया और साफ कपड़े लाने के लिए अँधेरी कोठरी मे चली गयी।

पछी जल्दी से कपड़े उतारकर, दिया लेकर कोठरी के उस कोने की तरफ चला गया जहाँ पत्थर की एक चौकी के पास पानी से भरे हुए पीतल के दो कलसे रखे हुए थे और हाथ-मुँह धोने लगा।

गौरी लाज के मारे अन्दर ही रुक गयी थी कि उसका पति नहा ले तब वह जाकर नहा लेगी। पर पंछी को यह डर हुआ कि कहीं वह फिर रूठकर लेट न गयी हो और साथ ही उसने यह भी अनुभव किया कि यही मौका था जबकि वह उसकी अलग-अलग रहने की प्रवृत्ति को दूर कर सकता था।

वह जैसे था वैसे ही, बिना शरीर पोंछे, झपटकर अन्दर गया और उसने गौरी की पसीने मे भीगी हुई धोती खीचकर अलग कर दी, यहाँ तक कि अँधेरे में उसका शरीर इस प्रकार झलकने लगा कि मन ललचा उठे; वह दबी आवाज में प्रतिरोध करती जा रही थी कि यदि केसरो वहाँ आ गयी तो कितनी मुसीबत हो जायेगी, पर पंछी ने एक न सुनी और लाकर उसे पत्थर की चौकी पर बिठा दिया।

वासना के प्रवाह मे बहते हुए उसने उसपर पानी डाला और उसके स्तनों तथा नाभि को उन्माद मे सहलाने लगा, गौरी को आश्चर्य भी हुआ, इसलिए उसने उसे रोकने की कोई चेष्टा नही की, बस वह बहुत ही दबी जबान मे अपना प्रतिरोध और भय प्रकट करती रही, और उसकी आँखें नीचे झुकी रही। पहले तो एक नयी दुल्हन की स्वाभाविक लज्जा के कारण और बाद मे इसलिए कि उसकी आँखो मे आँसू डबडबा आये थे। पछी ने उसकी ठोढ़ी ऊपर उठाकर उसकी आँखों मे आँखें डालकर देखा।

ज्योंही उसकी आँखें चार हुईं, वह पहली बार पंछी की तरफ मुड़ी और ऐसा प्रतीत हुआ कि नग्न शरीर मे उसकी आत्मा साकार हो गयी है। उसने पंछी की तरफ करुणा-भरी दृष्टि से इस प्रकार देखा जैसे कोई हिरन का बच्चा शिकारी को देखता है, बोली :

"अब उसके कहने से मुझे फिर कभी तो नहीं मारोगे !"

"मगर यह तो पति को करना ही पड़ता है, यदि उसकी पत्नी गलत रास्ते पर चले तो वह उसे दण्ड दे," उसने अकड़कर कहा।

गौरी ने उसका कोई उत्तर नहीं दिया; वह सोच रही थी कि इस समय उसे जो प्यार प्राप्त हो रहा था, वह उसके भाग्य की बहुत बड़ी देन थी, क्योंकि शादी के बाद से उसे अपने बलवान पति से ऐसा कोमल व्यवहार कभी प्राप्त नहीं हुआ था। ऐसा प्रतीत होता था कि उसकी सास—केसरो—की कड़ी निगाह के कारण वह कभी उसके साथ नरमी का सलूक नहीं कर पाता था।

जब वे दोनों ऊपर गये तो पंछी ने देखा कि केसरो उसके बिस्तर पर खाने की वह थाली छोड़ गयी है जो उसे पहले दी गयी थी।

"मेरे साथ थोड़ा-सा खा ले," उसने अपनी पत्नी से कहा।

"नहीं तुम खाओ, मेरा खाने को बिल्कुल जी नहीं होता," उसने उत्तर दिया।

उसने थाली उठाकर छतपर रख दी। यद्यपि उन्होंने पति-पत्नी के रूप में साथ खाना नहीं खाया, पर वे अपने ब्याह के बाद से पहली बार सारी रात एक ही बिस्तर पर एक साथ सोये। उन्हें न इसकी चिन्ता थी कि केसरो देख लेगी तो क्या होगा और न इसका डर था कि पड़ोसी इसके बाद कैसी-कैसी बातें कहेंगे।

●●६

दूसरे दिन पंछी रोज की अपेक्षा कुछ जल्दी ही शौचादि को निकल गया ताकि वह जल्दी से गाँव लौटकर किसी दूसरे घर की खोज कर सके।

श्मशान के पास ही महाजन और ठेकेदार लाला बीरबल के पिता ने एक बावली बनवायी थी जिसमे अस्सी सीढ़ियाँ थी; आखिरी सीढ़ी पर स्नान करने के बाद पंछी ऊपर चढ़ ही रहा था कि उसने महाजन के बेटे दामोदर को नहाने के लिए नीचे आते देखा। वह दोनों हाथ फैलाये उसका रास्ता रोके खड़ा था मानो उसे गले लगाना चाहता हो।

"अरे वाह पंछी! तुम्हारी चुस्ती का भी क्या कहना है! तुम सूरज चढ़ने से पहले कभी सोकर उठते भी नहीं थे! आज यहाँ इतनी जल्दी कैसे! बालों में तेल और चेहरे पर यह रौनक! आखिर बात क्या है!... क्यों न हो, बीवी के आ जाने से बड़ा फरक पड़ जाता है!..."

"अच्छा," पंछी ने गम्भीर मुद्रा बनाकर कहा, "मुझे काम से जाना है।"

"वाह-वाह ! क्या कहने हैं ! बड़ा काम है !"

"मैं कोई महाजन का बेटा तो हूँ नहीं कि ठाठ से गद्दी पर बैठे-बैठे सूद लेकर खाया करूँ !"

यह बात कहते समय पंछी के स्वर में कटुता थी, परन्तु दामोदर बचपन से ही इस प्रकार के ताने सुनता आया था इसलिए उसने बुरा नहीं माना और वह जहाँ खड़ा था वहाँ से हिला भी नहीं।

"मुझे जाने दो," पंछी ने कहा।

"अरे वाह ! आज सबेरे-सबेरे क्या कोई भूत सवार हो गया है तुम्हारे सर पर। सुना है यहाँ भूत-प्रेत नहाने आते हैं।..."

"मैं तो दावे के साथ कहता हूँ कि किसी और के आने से पहले तुम्हारे दादा यहाँ नहाने आया करते थे," पंछी ने व्यंग्यपूर्वक कहा, "महाजन भी कोई चीज छोड़ता नहीं, अपना पूरा पैसा वसूल कर के ही दम लेता है।"

दामोदर को अपने पूर्वजों से बड़ी श्रद्धा थी इसलिए उसे यह ताने की बात पसन्द नहीं आयी। उसका रंग फीका पड़ गया, बोला :

"देखो, झगड़े को अपने गुस्से और हमारे जब्त की हद तक ही रहने दो, बाप-दादा को बीच में मत लाओ।"

"हाँ, तुम्हारे बाप-दादा तो कहीं के लाट साहब हैं जिन्हे कोई कुछ न कहे, हटो..."

दामोदर ने हाथ नीचे गिरा लिये और उसे अपनी गलती का आभास हुआ, साथ ही इस बात का भी कि पंछी अब वह पहले जैसा हँसोड़ व्यक्ति नहीं रहा, अब उसे छेड़ा नहीं जा सकता।

"अच्छा," पंछी ने सहसा कहा, "अगर तुम कायदे की बात करो तो मैं रुकूँ, तुमसे बात करूँ।"

"कौन-सी कायदे की बात ? मैंने तो हमेशा सीधी बात की है।" महाजन के बेटे ने यह बात उस आक्षेप के जवाब में कही थी जो उसके व्यापार की बातचीत के ढंग पर किया गया था, क्योंकि आजकल उसके

पिता ठेकेदारी के काम पर बाहर गये हुए थे और वह ही दूकान पर बैठता था।

"सीधी बात वह बात होती है जो बनिया न कर सकता है न समझ सकता है," पंछी ने उस पर चोट करते हुए कहा।

"देखो, अगर तुम्हारा अपने चाचा के साथ झगड़ा हुआ है तो यह जरूरी तो नहीं है कि तुम सब से झगड़ा करते फिरो," दामोदर ने उसे समझाते हुए कहा।

पंछी को इस बात पर आश्चर्य नहीं हुआ कि मोलाराम के साथ उसके झगड़े की खबर सारे गॉव मे फैल गयी थी। पर वह जानता था कि गाँववालों की राय, और खाते-पीते लोगों के दामोदर और राजगुरू जैसे बेटों की राय भी, उसके खिलाफ ही होगी। इसलिए उसने झेंपकर महाजन के बेटे की तरफ से ऑखे फेर ली। फिर सर उठाते हुए उसने कहा :

"राजगुरू ने तुम्हे बताया होगा !"

"अरे, तुम्हारी ताकत का डंका सारी दुनिया मे बजा हुआ है। बस एक आदमी तुमसे ज्यादा ताकतवर है और वह है किंगकाग ! लेकिन मैंने सुना है कि अपने चाचा की तो वह भी इतनी अच्छी तरह मरम्मत नही कर सकता।...वह देखो राजगुरू कैसे फूँक-फूँककर कदम रखता हुआ आ रहा है। बात यह है कि कल से जबसे उसने तुम्हारा जौहर देखा है तबसे उसके दिल मे दहशत बैठ गयी है और वह तुम्हारे गुस्से के डर से घबराया रहता है !..."

"मै राजगुरू से तो बाद मे निबट लूँगा," पंछी ने पीछे मुड़कर राजगुरू को देखा जो सीढ़ियों से नीचे उतर रहा था। "पहले तुम साफ-साफ यह बताओ कि आज मुझे सौ रुपये कर्ज दे सकते हो कि नहीं।"

"मैं सबेरे-सबेरे व्यापार की बात नही करता," दामोदर ने बात को टालते हुए कहा।

"इसीलिए तो मै तुमसे बात करना नही चाहता था," पंछी ने व्यंग्य

किया, "तुम्हें सीधी बात करना आती ही नहीं है..."

"तुम तो जानते ही हो कि ऐसी बातों के बारे में मुझे अपने बाप से पूछना पड़ता है," दामोदर ने अपनी असमर्थता का कारण पेश करते हुए कहा, "और फिर अभी तो तुमने जमीन गिरवी रखकर जो रुपया लिया था उसी का सूद चढ़ा हुआ है।...यह मेरे बस में नहीं है कि..."

"अरे हॉ, यह तो मुझे पहले ही सोचना चाहिए था, दब्बू कहीं का! जैसे तुम्हारा बाप कायर है वैसे ही तुम भी हो! तुम्हारी जात की जात..."

"मेरी भी यही राय है," राजगुरू ने अपने मित्रों के निकट पहुँचते हुए मजाक में कहा, "किसी राजपूत किसान और बनिये के बीच अगर झगड़ा हो तो मैं हमेशा गँवार का साथ दूँगा..."

"मुझे निरा गँवार न समझ बैठना, समझे तुम," पंछी ने चुनौती दी, "अगर रोब झाड़ा तो मैं सर तोड़ दूँगा। मैं इसकी जरा भी परवाह नहीं करता कि तुम्हारे बाप सूबेदार मेजर थे! गोरे साहबों के तलुए चाट-चाटकर ही वह इस ओहदे पर पहुँचे थे!"

"मालूम होता है यहॉ कोई भिड़ों का छत्ता है, क्यों?" राजगुरू ने दामोदर से पूछा।

"मैं तब तक किसी को डंक नहीं मारता," पंछी ने बात को समझते हुए अर्थपूर्ण ढंग से जवाब दिया, "जब तक कोई मेरे छत्ते को न छेड़े।"

दोनों लड़के कुछ झेंप-से गये और एक क्षण तक चुप खड़े रहे।

"मैं तुम्हारे यहाँ केवल तुम्हें देखने गया था," राजगुरू ने थोड़ी देर बाद अपराधी की तरह कहा।

"अच्छा, तुम मेरे घर के हेरे-फेरे करते रहते हो।"

"अबे बेवकूफ, मैंने तो खुद ही कहा था कि मैं तुझे देखने गया था।"

"बेवकूफ...तेरे बाप ने भेजा था तुझे!"

"अरे इतना गरम न हो," दामोदर ने बीच-बचाव करते हुए कहा, "अगर वह गौरी के साथ गुट्टे खेलने गया भी था तो क्या हो गया? आखिर वह हमारी भाभी ही तो है।"

"बस अपने दोस्तों को ही उल्टे उस्तरे से मूँड़ना चाहता है," राजगुरू ने निराशा से कहा।

"मैं कोई नाई का बेटा जगत् नहीं हूँ कि तुम मुझसे इस तरह नीच समझकर बात करो!" पंछी बरस पड़ा, "तुम्हारे तो कोई बीवी है नहीं कि मैं उसके साथ जाकर गुट्टे खेलूँ। और दामोदर की बीवी के साथ ही हम कब गुट्टे खेलने गये हैं, आखिर वह भी तो हमारी भाभी है। बस इसलिए कि मैं किसान हूँ, हाथ-पैर की मेहनत करता हूँ और तुम इज्जत-आबरूवाले लोगों के बेटे हो, इसलिए यह न समझ बैठना कि मेरी बीवी के साथ तुम लोग जो चाहो कर सकते हो..."

"मगर भैया पंछी!" राजगुरू ने प्रतिरोध किया।

"मैं तुम्हारा भाई नहीं हूँ! तुम सूबेदार के बेटे हो! और वह लाला बीरबल के कुल का दीपक है! मुझे तुमसे मिलने की भी ख्वाहिश नहीं..." इतना कहकर वह बावली की सीढ़ियों पर चढ़ गया।

दोनों नवयुवक मुँह बाये उसे देखते रह गये। उसके हृदय में अपने दोनों मित्रों के खिलाफ नफरत का तूफान उठ रहा था। वह समझ रहा था कि उसने ज्यादती की थी, उन पर अनुचित प्रहार किये थे और उनके साथ दोस्तों जैसा व्यवहार नहीं किया था। पर वह उनसे मिलना ही कब चाहता था। इसीलिए तो वह 'जंगल पानी' के लिए रोज से पहले निकल आया था, क्योंकि वह जानता था कि वह इतना दुःखी और क्रोधित है कि अगर उनसे भेंट हो गयी तो वह जरूर आपे से बाहर हो जायगा। और हुआ भी वही, जिसकी उसे आशंका थी।

'कमीने आदमी की सोहबत कभी अच्छी नहीं होती' वह उन दोनों के प्रति अपने रवैये को उचित ठहराने का प्रयत्न करते हुए बुदबुदाया, 'मैं उनके पास जाऊँगा जो हमारे साथ के हैं। कुम्हार रफीक चाचा और उनके परिवार की भी हालत मेरी जैसी है, शायद वह हमारी मदद करें।"

● ● ७

सौभाग्य से रफीक चाचा घर पर ही थे। और इससे भी बड़ी बात तो यह थी कि उन्होंने मित्रता का बरताव किया। उनकी बीवी ने चोकर की जो लप्सी उनके लिए बनायी थी उसमे से आधी उन्होंने पंछी को दे दी, यद्यपि मुसलमान होने के कारण उन्हे यह विश्वास नहीं था कि पंछी जैसा द्विज हिन्दू उसे स्वीकार भी करेगा, और वह यह भी जानते थे कि पंछी और उसकी बीवी हूरबानों में ज्यादा बनती भी नहीं थी। रफीक चाचा ने अपनी बीवी के गुस्से की जरा भी परवाह किये बिना, उसके सामने ही पंछी को लप्सी दी थी, इसलिए पंछी की आँखों में चाचा रफीक का इस प्रकार लप्सी देना—पिछली रात, उसके चाचा की आँख बचाकर, केसरो के उसे खाना देने से कहीं ज्यादा महत्वपूर्ण था। पिछली रात जबरदस्ती का व्रत हो जाने के कारण पंछी को भूख तो लगी ही हुई थी, इसलिए लप्सी उसे बहुत पसन्द आयी और उसे खत्म करके उसने अपने होंठ चाट लिए, जिससे रफीक चाचा को यह पता लगा कि लड़के को कितनी भूख लगी थी। इस किसान लड़के का नदीदापन देखकर हूरबानो दूसरी तरफ ताकने लगी। उस कोठरी के कोनों में झाड़ू देते समय, जिसमें कुम्हार का आदिकालीन चाक रखा था, उसके गम्भीर तने हुए चेहरे पर कुछ नरमी आ गयी। झाड़ू-बुहारू खत्म करके जब वह बरतन लेने आयी तो उसने ताने से केवल इतना कहा :

"चलो अकाल के खतरे से इतना तो हुआ कि हमारे हिन्दू भाई हमारी इस झोपड़ी को भी इस लायक समझने लगे कि वह यहाँ आयें!"

उसके भारी-भरकम शरीर की परछाईं वहाँ से दूर होते ही रफीक चाचा ने माफी माँगते हुए बात शुरू की :

"भैया, तुम तो जानते ही हो, दंगे के जमाने में हिन्दुओं ने हमारे

साथ जो सलूक किया उसे हूर अभी तक भूल नहीं सकी है।...हम तो बाल-बाल बच गये नहीं तो मारे गये होते।...अगर चौधरी अछरूराम ने खुद अपने घर मे पनाह न दी होती तो हम आज यहाँ दिखायी भी न देते। हमारी बिरादरी के सब मुसलमान लाहौर चले गये, और कुछ मै जानता नही कि यह कहाँ तक सच है, पर मैने सुना है: कि कुछ मार भी डाले गये।...और तुम्हारे चाचा मोलाराम ने भी कोई अच्छा सलूक नहीं किया।...तुमने हवलदार के बारे मे कभी कुछ कहा नही...कि तुम्हारा उनके बारे मे क्या ख्याल है, इसीलिए हूर ने सोचा कि तुम भी उन्ही की तरह के जालिम हिन्दू होगे। वह इसी वजह से तुमसे नाराज है।...इसके अलावा वह समझती है कि तुम मुझे अपनी सोहबत मे खराब करते हो, क्योकि एक बार उसने हम दोनों को साथ ठर्रा पीते देखा था: उस वक्त मेरा भाई मुहम्मद बख्श यही था।...और आजकल काम न होने की वजह से चाक ज्यादातर खाली पड़ा रहता है। इसलिए उसका मिजाज और भी खराब रहता है..."

"हाँ, मुझे याद है, मै बकरीद के दिन यहाँ शराब लाया था और तुमने पूरा बकरा बनाया था," पंछी ने खुश होकर कहा, "मुझे बुखार था इसलिए मैंने नही पी थी पर वह यही समझती रही कि मैं तुमसे और तुम्हारे छोटे भाई से ज्यादा नशे मे हूं।...उसे गुस्सा बड़ी जल्दी आ जाता है, बिल्कुल वैसे ही जैसे मेरे चाचा मोलाराम को। वह उतनी ही कट्टर मुसलमान है जितने कि वह कट्टर हिन्दू है।"

"हाँ, वह पाँचों वक्त की नमाज पढ़ती है और मजहब के मामले मे बड़ी सख्त है। हरदम मुझे ताने देती रहती है...पर वह मोलाराम जैसी बुरी नहीं है। उसकी जबान जितनी खराब है, दिल उतना नही है!"

"हाँ, यह तो सच है, यह बात मैं मोलाराम के बारे मे नहीं कह सकता। सच पूछो तो उन्ही की वजह से मैं आज सबेरे यहाँ आया हूँ।"

"हाँ, मैंने सुना था कि कल कुएँ पर तुम्हारा और तुम्हारे चाचा का झगड़ाहुआ था और...मोलाराम ठहरे कमजोर आदमी, तगड़े आदमी

के मुकाबले में कमजोर आदमी को गुस्सा जल्दी चढ़ता है।..."

"मेरी चाची का भी सलूक मेरी बीवी के साथ कुछ अच्छा नही था। ...और उस साझे के घर में शान्ति नही हो सकती जब तक मैं अपनी बीवी को लेकर..."

इसी समय हूरबानो अपने पति के हुक्के के लिए चिलम मे कोयले सुलगाती हुई वहाँ आ पहुँची। और रफीक चाचा ने इस विचार से फौरन उसे पंछी की मुसीबत की खबर सुना दी कि इस प्रकार वह उसके दिल में पंछी के लिए हमदर्दी पैदा कर देगे :

"अरे कुछ सुना तुमने, मोलाराम और केसरो का पंछी और उसकी बीवी से झगड़ा हो गया है।"

"हाँ, सुना तो है," हूर ने अपनी गम्भीर तथा निश्चित मुद्रा में किसी भी प्रकार की कमी किये बिना कहा—"चिनगारी और भूसे का साथ निभ भी कितने दिन सकता है।"

"इसमे क्या शक है," रफीक चाचा ने उसकी बात से प्रोत्साहित होकर कहा, "और बेचारे की आधी जमीन गिरवी रखी है, बारिश न होने के कारण फसल बिलकुल तबाह हो चुकी है।...गाँव के लिए सगुन बुरे मालूम होते हैं। क्योंकि 'जमीन जेड़ी नही वाई वैसाख विच, उंगर जेना नई खाँदा घा भादों विच, कुड़ियाँ जेड़ी पैके रुसियाँ, ए तिनों होएँगे बरबाद !'...।"

"हमारा चाक भी बेकार पड़ा है !" हूर ने यह बात इसलिए कह दी कि उसका पति कही हमेशा की तरह अपनी आदर्शवादिता में उसकी गृहस्थी पर नया बोझ न लाद दे।

"हाँ यार," रफीक चाचा ने पंछी की तरफ मुड़कर कहा, "तुम्हारी शादी के लिए जब बरतन बनाये थे तब यह चाक जोरों से चला था। बस उसके बाद से लाला बीरबल की जमीन पर मिट्टी की कीमत भी बढ़ गयी है और पाकिस्तान जानेवाले जुलाहे मेरा गधा चुरा ले गये, इसलिए अब मैं बर्तनों के लिए जाकर मिट्टी भी नहीं ला सकता। और चैती की

फसल भी पानी न पड़ने की वजह से तबाह हो गयी, शायद अब अनाज रखने के लिए मटकों की भी जरूरत नहीं।...बड़ी मुसीबत का सामना है।...मगर हाँ, बगल मे एक कोठरी खाली पड़ी है, जिसमे मेरा भाई रमजान और उसकी बीवी रहा करते थे। मेरे ख्याल से अब वह वापस नहीं आयेगा क्योंकि उसको होशियारपुर में पीतल के बरतन बनाने के कारखाने में नौकरी मिल गयी है। इसलिए..."

"मैं तो जानती थी," अपने पति की उदारता पर झुँझलाकर हूर ने कहा, "सबेरे जब यह आया था तभी मै जान गयी थी कि ये लोग अब हमारे गले पड़ेगे।...और अब चाहे पेट में एक दाना न रहे, दारू की नदियाँ बहेगी। और जब वक्त पड़ेगा तब सब यार दोस्त रफूचक्कर हो जायेंगे।" ताना देकर वह पैर पटकती हुई कोठरी से बाहर चली गयी।

दोनों दोस्त थोड़ी देर तक चुप बैठे रहे; इस बीच मे रफीक चाचा ने हुक्के के दो-तीन दम लगाये और धुआँ निकालते हुए हुक्का पंछी की तरफ बढ़ा दिया।

पंछी ने हुक्का नहीं लिया, चुपचाप उदास बैठा रहा।

"भैया, गुस्से मे औरत किसी की नहीं सुनती," रफीक चाचा ने कहना आरम्भ किया, "इधर दो महीने से मैने काम नहीं किया है इसलिए उसे शिकायत करने का मौका भी है। बस दोनों वक्त सत्तू पर गुजर होती है, कभी-कभी बीच मे वह पालक का साग बना देती है तो उससे मुँह का जायका बदल लेते है। मेरे पास एक भी पैसा नहीं है मगर मेरे भाई का चाक खाली पड़ा है, उसे बेच भी नही सकता क्योंकि इधर कोई कुम्हार का चाक चलाता नहीं।...सारे कुम्हार या तो पाकिस्तान चले गये हैं या होशियारपुर के कारखानों मे नौकर हो गये है और जब किसानों के पास फसल ही नही होगी तो फिर वह अनाज रखने के लिए मटके लेकर क्या करेगे?..." कहते-कहते उसकी आँखों मे आँसू छलक आये।

"चाचा मैं तुम्हे उस कोठरी का किराया दे दिया करूँगा," पंछी ने कहा।

रफीक चाचा मुस्कराकर चुप हो गये।

हूरबानो दरवाजे के पीछे खड़ी सब बाते सुन रही थी। दरवाजे से झाँककर बोली, "मेरा गुस्सा इतना खराब भी नही है जितना तुम समझते हो। मगर तुम्ही बताओ, जिस औरत को सेर भर चावल खरीदने को पैसा नसीब न हो वह क्या करे?"

"मै उस कोठरी के लिए पाँच रुपये हर महीने खुशी से दे दिया करूँगा," पंछी ने उसकी नरमी का फायदा उठाने के लिये कहा।

"पैसा! पैसा!" रफीक चाचा बरस पड़े, "खबरदार जो अब मेरे सामने कभी पैसे का नाम लिया! इस मनहूस चीज ने मेरा घर तबाह कर दिया है। हमारे बाप-दादा तुम किसानों को बरतन देते थे और बदले मे अनाज ले लेते थे। जबसे मुझे लाचारी मे पैसे लेकर बरतन बेचने पर मजबूर होना पड़ा, बस तभी से हमारी सारी मुसीबतें शुरू हुईं!..."

"पैसे से ही खाना मिलता है।" हूरबानो ने चिल्ला कर कहा क्योंकि वह समझ रही थी कि पैसे की बात को लेकर उसका पति जो लम्बा-चौड़ा उपदेश दे रहा था, उसका लक्ष्य वही था।

"हाँ हाँ!" रफीक चाचा ने कटुता से उत्तर दिया। फिर उन्हे खाँसी आ गयी और एक टूटे हुए टीन मे, जिसमें राख भरी हुई थी, बलगम थूकते हुए उन्होंने गला साफ करके कहना शुरू किया, "मै भी सोने की कदर जानता हूँ। उसी सोने की खरीदी हुई दाल-रोटी खाकर बनियो को चरबी चढ़ जाती है और उनके मुँह पर रौनक आ जाती है मगर सोना उनकी नस-नस में पैठ जाता है और उनमें इतनी बू आने लगती है कि पास जाने को मन नहीं चाहता।...और जमीदारों का रुतबा भी इसी सोने की बदौलत बढ़ता है, पकौड़ी ऐसी नाक और बटन ऐसी आँखें होते हुए भी वे खूबसूरत लगने लगते हैं मगर आखिरकार उनका सारा पैसा रण्डीबाजी में तबाह होता है। लेकिन हमें पैसे की हकीकत मालूम है। लानत है इस पर!...मुझे तो अनाज मिलता रहे और घर पर सुख से सूखी रोटी भी खाने को मिले तो मैं किसी की चुपड़ी रोटी की तरफ आँख

उठा कर देखूँ भी नहीं !..."

"अच्छा भैया, मैं किराये मे तुम्हे अनाज दे दिया करूँगा," पंछी ने कहा, "बस पानी बरस जाये क्योंकि एक छींटा सौ जुताई का काम करता है; और अगर मैं किसी तरह जुताई खतम कर लूँ और बोने के लिए कुछ बीज उधार मिल जाय तो मेरी एक एकड़ जमीन में तो इतना पैदा होगा कि मै दूसरी एक एकड़ जमीन जो गिरवी रखी है उसका सूद भी चुका दूँगा। तब हम अगली फसल तक जिन्दा रह सकेंगे।"

"इन्शाअल्लाह !" रफीक चाचा बोले।

"बड़ी बात है कि तुम्हारा ऐसा दीन-मजहब को न माननेवाला आदमी अल्लाह पर इतना भरोसा करे !" हूरबानो ने फब्ती कसी।

रहने की जगह का आश्वासन मिल जाने पर पछी ने कहा, "मेरी बीवी के पास एक जोड़ सोने की बालियाँ हैं, मेरी माँ बहू के लिए छोड़ गयी थी। मैं उसे गिरवी रखकर बीज लूँगा और उसी मे से अगली फसल तक दाल-रोटी का सहारा हो जायेगा।..."

"हाँ, तुम लोगों का बस चले तो तुम तो अपनी जान बचाने के लिए अपनी बीवियों तक को बेच दो !" हूर ने चुटकी ली।

"नही चाची, तुम देखना, मोलाराम जैसे शैतान और यह तंगी हमारा कुछ नही कर सकती। हमारे भी अच्छे दिन आयेगे।"

"अच्छा भैया, तुम अपना सामान लेकर आ जाओ। मगर देखो, खबरदार जो अपनी बीवी को मारा। मैंने सुना है कि तुम उसे बहुत पीटते हो। मैं औरत हूँ और जानती हूँ कि नौजवान लड़की के हाथ-पैर कितने नाजुक होते हैं !..."

"मेरा ख्याल है कि तुम्हारे ऊपर तो एकाध बार की पिटाई का कोई असर नहीं होगा," रफीक चाचा ने आँख मारकर हूर से कहा। फिर पंछी की तरफ मुड़कर बोले, "बस ठीक है भैया, मैं जाकर शेखू तेली के बैल माँग लाऊँगा और पहला पानी पड़ते ही तुम्हारी जुताई पूरी करवा दूँगा। तुम अपनी बीवी को लेकर आ जाओ, उस लँगड़े की परवाह

न करो !"

पंछी ने हाथ उठाकर रफीक चाचा को सलाम किया। उन्होंने तपाक से दोनों हाथ बढ़ाकर अपने दोस्त का हाथ अपने हाथों में कसकर भींच लिया।

● ●८

हालाँकि सूरज की किरणें सीधी पड़ रही थीं पर अगले दिन तीसरे पहर ही पंछी और गौरी, रफीक चाचा के घर के बगलवाली खाली कोठरी में अपना सामान लेकर आ गये—कपड़ों से भरा हुआ एक बक्स, अपना ब्याहवाला बड़ा पलंग, गौरी की खटिया, जिस पर वह रूठकर लेट जाती थी और खाने-पकाने के बरतन जो दुलहन दहेज मे लायी थी। इस कोठरी में जाने के लिए जुलाहों की गली से एक अलग से रास्ता था इसलिए पंछी को इस बात का इतमीनान था कि हूरबानो से ज्यादा झगड़ा नही होगा। रफीका चाचा की बीवी बाहर से देखने में कठोर स्वभाव की जरूर थी पर दिल की इतनी नेक होगी, इसकी उसने कभी कल्पना भी नही की थी ; क्योंकि उन्होंने गौरी को गेहूँ का आटा और पालक का साग देते हुए कहा, "तुम्हारे ब्याह के लिए जो बरतन बनाये थे उन्हीं के पैसों से यह आया है। इसलिए इस पर तुम्हारा भी उतना ही हक है जितना हमारा।"

सारे गाँव में इस सनसनीखेज घटना की खबर फैल गयी थी कि मोलाराम और पंछी अलग हो गये। इस घटना से वैसी ही कटु भावनाएँ पैदा हुई जैसी कि इससे पहले पूर्वी और पश्चिमी पंजाब के बँटवारे से हुई थीं।

पंछी और उसकी बीवी के जाने के समय केसरो ऐसा फूट-फूट कर रोई जैसे कोई मर गया हो। उसे सचमुच इसका यकीन नहीं था कि वे

लोग ऐसा करेंगे। मगर पंछी ने अपना दिल पत्थर करके उसकी एक भी विनती न सुनी और गौरी को साथ लेकर वह आँगन पार करके बाहर गली में निकल गया। चारों तरफ पड़ोस के लोग खड़े हुए कानाफूसी कर रहे थे और तरह-तरह की कल्पनाएँ कर रहे थे। वह गाँव मुख्यतः एक पितृसत्तात्मक हिन्दू राजपूत गाँव था, इसलिए अधिकाश लोगों ने 'बदमाश नौजवान भतीजे' के खिलाफ मोलाराम की तरफदारी की, क्योंकि वह केवल 'बड़ों का निरादर करने' के लिए ही बदनाम नही था बल्कि रीति-रिवाजों को तोड़कर वह बहुधा 'मुसलमानो और अन्य नीच जात के बदमाशों के साथ खा-पी लेता था।' जब लोगों ने रफीक चाचा को पंछी के खेत में नाली बनाते देखा तो सारे गाँव मे चर्चा हो गया कि 'उसने तो कुम्हार से साझा कर लिया है' और इस तरह 'बिरादरी से बिल्कुल ही अलग हो गया है।' और यह तो 'अन्धेर ही हो गया' था कि पंछी ने यह सब कुछ 'अपनी नयी ब्याहता पत्नी गौरी के, पिपलाँकलाँ की उस बदचलन बुढ़िया लच्छी की बेटी के कहने पर किया था।' 'अगर पंछी जैसे बदमाश गाँव के लड़कों के सामने ऐसा बुरा उदाहरण रखेंगे तो दुनिया का क्या हाल होगा?' मोलाराम बोले, "इस बात पर तो बिरादरी की पंचायत कर के इस सुअर को हिन्दू धर्म से ही निकाल बाहर किया जाये कि वह जुलाहों की गली में, एक मुसलमान के घर में खाक छानने गया है।"

केवल पंचायत के सरपंच सूबेदार चौधरी अछरूराम को फौरन बिरादरी की पंचायत बुलाने के लिए राजी नही किया जा सका। बाकी सब लोग पंछी के खिलाफ हो गये थे।

रफीक चाचा की दोस्ती के कारण पंछी को बड़ा सहारा हो गया था। अब गौरी को अपनी सास केसरो का भी डर नहीं रह गया था इसलिए उसने अपने पति के सामने घूँघट निकालना छोड़ दिया ताकि वह उसका पूरा चेहरा देख सके और वह बगैर किसी मिन्नत-खुशामद के अपने आप उससे बातें करने लगी।

पंछी बड़े पलंग पर लेटा हुआ था। वह गरम चाय से भरा हुआ गिलास लेकर उसके पास आयी और भोले बच्चे जैसी आवाज में बोली, "हमारे हिन्दुओं के मुकाबले मे मुसलमान ज्यादा अच्छी तरह दोस्ती निभाते हैं। अपने गॉव में भी मैने हमेशा यही देखा। त्यौहार के दिन हमारी जातवाले उन्हे दूर से फेंककर खाना देते हैं मगर वह हमेशा ईद के दिन हिन्दुओं के लिए खाने की ऐसी चीजें लाते थे जिनमे छुआछूत का सवाल ही न हो। बस एक इस बात को छोड़कर कि वह गाय का मास खाते हैं..."

"हाँ, मेरी नन्ही गाय !" पंछी ने चिढ़ाते हुए कहा, "तुम होशियार रहना, नहीं तो किसी दिन तुम्ही को हलाल कर देगे। मैने तो लोगो को कहते सुना है कि बछिया का मास गाय के मास से भी स्वादिष्ट होता है। तेरी मॉ..."

"तुम तो हर बात पर उल्टे मेरा ही मजाक बनाने लगते हो," गौरी ने उसकी तरफ से रूठकर मुँह फेर लिया।

"अच्छा, इधर तो आओ," पंछी ने उसकी तरफ हाथ बढ़ाकर कहा, "तुमसे एक बहुत जरूरी बात कहना है।"

उसने अपना सर हिलाकर मना किया और शरमाई हुई दूर खड़ी रही। पर वह अपनी धोती के ऑचल मे चाय का गरम गिलास पकड़े हुए अभी तक उसकी तरफ बढ़ाये हुए थी और गरमी के कारण उसके चेहरे पर पसीना आ रहा था।

"अरे आ भी जा, भलीमानस," उसने अपनी हल्की-सी मुस्कराहट को दबाकर गम्भीर मुद्रा धारण करते हुए कहा।

"अगर मैं कुछ कहती हूँ तो मेरी मॉ पर कोई दोष लगा दिया जाता है और अगर चुप रहती हूँ तो मेरे बाप को गधा कहा जाता है," गौरी ने प्रतिरोध के भाव से कहा।

"अच्छा रानी, यहॉ आके मेरे पास तो बैठो," उसने बड़े प्यार से विनती की।

गौरी को इत्मीनान-सा हो गया और चाय का गिलास उसे देकर वह सिमटकर उसके पाँयती इस तरह बैठ गयी कि उसका चेहरा पछी की नजरों के बिल्कुल सामने था।

उसके चेहरे को एक झलक देखते ही पंछी को लगा जैसे उसके चेहरे पर अब स्वच्छन्दता की दमक थी जिसके कारण उसका गेहुँआ रंग सुनहरा हो गया था। उसकी बड़ी-बड़ी भोली आँखें मादक मिठास से परिपूर्ण थी और ज्योंही पंछी की आँखों से उसकी आँखें चार होतीं वह शरमाकर उन्हें झुका लेती। पंछी ने सोचा कि उसके मुखड़े की यह आभा कहीं सोने की बालियों के कारण तो नही थी और उसकी नजरें फौरन उसके कानो पर जाकर जम गयी।

गौरी ने कनखियों से देखा, वह बारी-बारी से उसके दोनों कानों को देख रहा है। उसके हृदय के अन्दर जैसे उससे किसी ने कुछ कहा और वह पंछी का अभिप्राय समझ गयी; वह अनुभव करने लगी कि घबराहट और गर्व के कारण उसके कान लाल हो गये हैं।

पंछी भी समझ गया कि वह ताड़ गयी है कि वह क्या कहने जा रहा था, लज्जित होकर उसने सर झुका लिया।

"मैं कहती हूँ तुम इन्हें गिरवी रख दो," उसने अपने कान की लवो से बालियाँ निकालते हुए कहा—"जो पैसे मिलेगे उससे बीज खरीद लेगे और फसल तक के लिए कुछ दाल-भात का भी सहारा हो जायेगा।"

पंछी एक गहरी साँस लेकर चुप बैठा रह गया। उसे अपना यह व्यवहार बहुत ही मूर्खतापूर्ण और नीच लग रहा था कि उसने उसे एक ही तो चीज दी थी और वह भी उससे वापस लेना चाहता था।

गौरी ने जल्दी से दोनों बालियाँ अपने दाहिने हाथ में ले लीं और कुछ कहने से पहले फौरन बालियाँ उसने पति के हाथ मे रख दीं। झुककर उसके चरणों मे सीस नवाया और वहाँ से उठ गयी।

पंछी बड़े पलंग पर बैठा अपनी भवें नोच रहा था पर अपनी आँखें उसकी तरफ से फेरे हुए था। वह उठा और उसकी तरफ से नजर फेरे-फेरे

ही उसने कोठरी के उस कोने में, जहाँ चूल्हा था, मुँह धोया और गाँव के महाजन और ठेकेदार लाला बीरबल के घर की तरफ चल दिया।

● ● ९

लाला बीरबल अपने तिमंजिले पक्के मकान की सबसे नीचे की मंजिल मे, बैठक के बाहरवाले चबूतरे पर एक मोढ़े पर बैठे चाय पी रहे थे। उन्होंने वहाँ से बैठे-बैठे ही पंछी का स्वागत करते हुए कहा, "आओ जी आओ ! आओ बेटा !"

"नमस्ते लाला जी," पंछी ने हाथ जोड़कर दिखावटी विनम्रता के साथ कहा।

"अरे रामजी, पंछी के लिए थोड़ी-सी चाय तो ले आ," लालाजी ने बनावटी ढंग से अपने नौकर को तपाक से आवाज दी। उनकी आवाज उनके लम्बे-चौड़े, ढीले-ढाले तथा स्थूल शरीर के सर्वथा अनुकूल थी।

"रहने दीजिये लालाजी, मैं तो चाय पीकर ही निकला था," पछी ने चबूतरे के पक्के फर्श पर बैठते हुए कहा, जो तीसरे पहर बैठने के लिए धोया गया था ताकि वहाँ ठडक हो जाय।

"अरे कैसी बात करते हो ? पहाड़ पर रहने वाले हमारे जैसे लोगों के लिए चाय तो अमृत है। अरे रामजी, ओ रामजी, कहाँ मर गया !..."

इस उदार आवभगत के आगे पंछी लाचार हो गया।

"और तुम वहाँ जमीन पर क्यों बैठे हो ? बेटा, तुम्हे हो क्या गया है ? चटाई ले लो।...तुम तो हमारे बेटे की तरह हो। आजकल क्या तुम्हारी और दामोदर की दोस्ती नहीं है ? कहीं झगड़ा तो नहीं हो गया तुम दोनों का।..."

"अरे लालाजी, आप तकल्लुफ न कीजिए; मैं बहुत आराम से बैठा हूँ," पंछी ने बुजुर्ग लालाजी की सरपरस्ती से किंचित् प्रभावित होकर

कहा।

"अच्छा अच्छा, आराम से इस मोढ़े पर बैठ जाओ," लाला बीरबल ने अपने पाँवों के नीचे वाला मोढ़ा पछी की तरफ बढ़ाते हुए कहा।

पंछी ने इस बात को वहीं पर खत्म कर देने और अपने मतलब की बात आरम्भ करने के विचार से मोढ़ा ले लिया।

"अरे रामजी कहाँ मर गया है जाकर !"

इतने में लालाजी का बीस-वर्षीय नौजवान पहाड़ी नौकर रामजी वहाँ आ गया।

"कहाँ गया था ? तुझे कभी काम करना नहीं आयेगा !...पंछीराम के लिए एक गिलास में चाय ले आ और मेरा हुक्का तैयार कर दे।... जा जल्दी कर ! या सूरज कोचवान से कह दे कि वह हुक्का भर दे और तू चाय ले आ।"

"लालाजी, आप इतना तकल्लुफ बेकार करते है," पछी ने फिर प्रतिरोध किया—"मुझे चाय की जरूरत होगी तो मैं माँग कर पी लूँगा। मैं दामोदर के साथ कितनी बार यहाँ खाना खा गया हूँ !"

"बेटा, यह नौकर कामचोर होते है, इन्हे कुछ काम भी तो करना चाहिए," लालाजी ने कहा, "मै इस पहाड़ी को सिखाकर ऊपर के काम-काज मे होशियार बना देना चाहता हूँ ताकि जब मैं होशियारपुर मे अपने नये बँगले में जाऊँ तो वहाँ यह ठीक से काम कर सके।... और इस घर में तो तुम बेटे के समान हो।"

"लालाजी आप की मेहरबानी है," पंछी बोला।

"नहीं, इसमें मेहरबानी की क्या बात है," लाला बीरबल मोढ़े पर पहलू बदल कर बैठते हुए अधिक गम्भीर मुद्रा धारण करके बोले, "दरअसल, बेटा, मैं तुम्हें बहुत दिन से जरा सख्ती से डाँटने की बात सोच रहा हूँ। देखो तुम्हारे बाप तो रहे नहीं। अगर हम लोग तुम्हे सलाह नहीं देंगे तो और कौन दे सकता है ?...मैंने तुम्हारे बारे में तरह-तरह की बातें सुनी हैं। खैर बहुत-सी बातों की ओर तो मैं ध्यान ही नहीं

देता।...और लड़के अपनी जवानी की नातजुर्बेकारी मे बहुत-सी बातें कर बैठते हैं—आखिर लड़के ही जो ठहरे! लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं कि...अब जैसे इसी बात को ले लो, मैंने सुना है कि तुमने धर्म बदल दिया है, रफीक कुम्हार के यहाँ जाकर रहने लगे हो! यह क्या बात है?..."

"लालाजी, आप मेरे चाचा मोलाराम के मिजाज को तो जानते ही है," पछी ने साहस बटोरकर अपनी सफाई देते हुए कहा, "मैंने अपना धरम-वरम बिलकुल नहीं बदला है। बस इतना है कि..."

"बेटा, बस बात यह है कि तुम्हारा मिजाज कुछ कम गरम नही है। तुम्हे अपने चाचा का घर नहीं छोड़ना चाहिए था। जरा सोचो, कितनी बदनामी होगी! अभी से..."

"लाला जी, इस गाँव मे तो लोग राई को पहाड़ बना देते है!"

"हाँ बेटा, लेकिन अपनी कहो, तुमने एक ऐसे मुसलमान का साथ किया है जो अपनी कामचोरी की वजह से खुद को तबाह कर चुका है। इन मुसल्लों को तो बस अपनी हॉड़ी के गोश्त की फिकर रहती है। और कुछ चाहे हो या न हो मगर गोश्त रोज खाने को होना चाहिए..."

"रफीक चाचा ने मेरे साथ जितनी नेकी की है उतनी तो मेरे चाचा ने भी नहीं की..."

"मैं मोलाराम को बहुत अच्छा नही समझता। उसमे वह हवलदारी की टें-टें बहुत है।...यह तो ठीक है...मगर मान लो अगर उसने तुम्हें बिरादरी से निकलवा दिया तो? तब तुम क्या करोगे?...और अपनी बीवी के साथ जाकर मुसल्लों के साथ रहना, भला यह भी कोई बात है? याद है तुम्हे, बँटवारे के दौरान में वे हमारी औरतों को किस तरह भगाकर ले गये थे!"

"लालाजी, मैंने तो धरम की बात सोची भी नहीं थी, जिस वक्त..."

"तब तो तुम्हें अच्छी तरह सोच-विचार कर काम करना चाहिए।"

लाला बीरबल के कुशल तर्क के आगे पंछी को लगभग पूरा विश्वास

हो गया कि उसने गलती की थी। और वह अपना सर लटकाकर बैठ गया।

लाला बीरबल ने सोचा कि मौका अच्छा है, इसी लपेट मे दो-चार खरी-खरी बातें पंछी को और सुना दें।

"बेटा, तुम्हारे बारे मे सभी लोगों की यह राय है कि तुमने अपनी हरकतों से गाँव के सब लड़कों को खराब कर दिया है। तुम्हारा बाप नही था इसलिए तुमने ताश-पत्ते खेलना शुरू किया, नशा-पानी करने लगे और आवारा घूमने लगे। और मैं जानता हूँ कि मेरे बेटे ने ये सारी बुरी आदतें तुमसे सीखी हैं।...इसलिए तुम्हे चाहिए था कि अपनी शादी के बाद तुम मेहनत करके अपनी रोजी कमाते, अपना कर्ज चुकाते और अपने बड़ों का कहा मानते। इसके बजाय..."

कुछ देर बाद पंछी धीमे स्वर मे बोला :

"लाला जी, मोलाराम चाचा के साथ मेरा निबाह नामुमकिन था। वह सारी जायदाद खुद हड़प लेना चाहते थे।"

"तुम बेकार बात का बतंगड़ बनाते हो, पंछी! वह इतने बुरे नहीं हो सकते।...लो, वह रामजी तुम्हारे लिए चाय ले आया। लो चाय पियो और खुश रहो और अपने चाचा पर इतना गुस्सा न करो। कुछ हो, फिर भी वह तुम्हारे बुजुर्ग हैं, उन्होने तुम्हे पाला-पोसा है।"

पंछी ने चाय का गिलास ले लिया, जो ठंडी हो चली थी, और एक साँस मे उसे पी गया; क्योंकि उस पर जो आरोप लगाये गये थे उनके कारण वह झुँझलाहट के मारे कुछ बौखला-सा गया था। लाला बीरबल को अपना हमला फिर आरम्भ करने का मौका मिल गया। अपने मोढ़े पर पहलू बदल कर बैठते हुए वह बोले :

"अच्छा अगर मोलाराम की नीयत तुम्हारी जायदाद हथिया लेने की थी तो बहुत बुरी बात थी। मगर तुम उनसे अलग हो गये हो इसलिए संयुक्त परिवार मे तुम्हारी हैसियत कम हो गयी है। तुम्हारी बात का कौन यकीन करेगा! वह तो फिर भी फौज से पेंशन पाते हैं, उन्हें सरकार

से बँधी रकम मिलती है। तुम्हारी आधे एकड़ जमीन गिरवी रखकर मैने तुम्हें जो पाँच सौ रुपये दिये थे, उसके सूद की अदायगी न होने पर भी उनकी पेंशन की कुछ जमानत तो थी।...अब तो मुझे न कहीं फसल ही दिखायी देती है, न जमीन ही ! जिससे तुम, असल की तो बात छोड़ो, सूद ही दे सको।...और जहाँ तक जमीन की बात है तो कानून के मुताबिक मैं खेती की जमीन पर तो कब्जा कर नही सकता। वह जो आम के बाग मैंने खरीदे थे, उसी मे मुझे बड़ी मुसीबत का सामना करना पड़ा। अब तुम्ही बताओ कि इसका क्या भरोसा है कि जो रकम मैंने तुम्हे शादी के लिए उधार दी थी वह कभी वापस आयेगी..."

"असल मे मै आपके पास इसलिए आया था..."

"मै जानता हूँ तुम कुछ और पैसा उधार माँगने आये थे..."

"मगर लालाजी, मैं दो सोने की बालियाँ गिरवी रखने के लिए लाया हूँ..."

"हाँ, क्यों नही बेटा, तुम्हारे ख्याल मे तो पैसे पेड़ पर फलते है ! अगर फलते भी होते तो मेरे पास ज्यादा पैसे न होते, क्योंकि मेरी आम की बगिया मे तो इने-गिने पेड़ ही है। ईंटे के भट्टे मे मेरा काफी पैसा लग गया है।...और आजकल बाजार बहुत मन्दा है। लाओ, देखूँ तो कैसी हैं बालियाँ।...तुम मेरे पास छोड़ जाओ, तुम्हारी एकड़ भर जमीन के बकाया सूद के हिसाब में मैं उसकी कीमत चढ़ा दूँगा !"

"मैं बालियाँ साथ तो लाया नही हूँ, वह तो मेरी बीवी के कानों मे पड़ी हुई हैं," पंछी साफ झूठ बोल गया, "मैं सिर्फ यह मालूम करने आया था कि आप उन्हें गिरवी रख लेंगे—और पहली बात यह कि आप उनके कितने पैसे देंगे ?"

लाला बीरबल घाट-घाट का पानी पिये हुए थे, वह इस प्रकार के चरकों मे आने वाले नहीं थे, पर साथ ही यह बात भी थी कि वह पंछी की जेब से गहने जबरदस्ती भी नहीं निकाल सकते थे। उन्होंने मुँह बनाकर इस तरह देखा, मानो उन्हें इस बात का आभास हो कि उन्होंने जरूरत

से ज्यादा चालाकी से काम लिया है। उन्होंने बड़े व्यंग्य से केवल इतना कहा, "मैं कोई अन्तरयामी तो हूँ नही कि बालियाँ तुम्हारी बीवी के कान मे पड़ी रहे और मैं यहाँ से बैठे बैठे वजन मालूम कर लूँ। जाकर ले आओ, मैं देखूँगा, अगर काफी भारी हुई तो मैं बकाया सूद मे से कुछ रकम काट दूँगा और कुछ थोड़े से पैसे तुम्हे भी दे दूँगा।"

पंछी स्तब्ध बैठा हुआ महाजन के मोटे-मोटे गठियाये हुए पैरो को घूर रहा था। वह महाजन चालाकी से उसे फदे में फँसाने का प्रयत्न कर रहा था, जिससे बच निकलने का कोई रास्ता ही नही था। इसलिए पंछी कुछ घबरा और बौखला गया था। पर इस फंदे से बच निकलने की इस तरकीब के लिए पंछी ने मन ही-मन कृतज्ञता प्रकट की और हाथ जोड़ कर सेठ जी से यह कह कर वह भाग निकला कि अगर मेरी बीवी मुझे बालियॉ देने पर राजी हो गयी तो मै उन्हे लेकर आऊँगा।

यह सुनकर लाला बीरबल बोले, "अगर तुम्हारे लौटकर आने मे इतनी दुविधा है तो पंछी बेटा, अपनी जमीन की गिरवी की रकम का कुछ बकाया सूद दस दिन के अन्दर अदा कर देने का इन्तजाम कर देना। याद रखना..."

पंछी ने सामने देखा न पीछे; बड़े अदब के साथ अपने पावों की तरफ देखता हुआ और अत्यधिक विनम्रता दिखाता हुआ, शीघ्र ही लाला बीरबल की ऑखों से ओझल हो गया।

●●१०

लाला बीरबल के यहॉ अपनी बीवी की बालियॉ गिरवी न रख सकने के कारण पंछी बड़ी कठिनाई में फँस गया था और फिर गाँव के पितृसत्ता को मानने वाले कुलीन हिन्दू समाज के ठेकेदार भी आमतौर पर उसके खिलाफ थे। इसलिए उसके सामने इसके अलावा कोई चारा ही नही

था कि वह दूसरे दिन पिपलाँकलाँ जाकर वहाँ के महाजन, सेठ नारायणदास के यहाँ गहने गिरवी रखे। हिम्मत बढ़ाने के लिए उसने रफीक चाचा को अपने साथ ले लिया। कुम्हारी का कारोबार ठण्डा पड़ जाने के कारण रफीक चाचा को भी काम नही था, इसलिए उन्होंने भी बाहर जाने के इस अवसर का स्वागत किया।

सौभाग्यवश सेठ नारायणदास की दूकान गॉव मे, पंछी की ससुराल के बिलकुल दूसरे सिरे पर थी। और फिर सेठ नारायणदास ने उन गहनों का मूल्य सौ रुपया आँका। पंछी को उन बालियों के बदले इतना रुपया मिलने की आशा नही थी। इसलिए पैसे अपनी धोती की गॉठ मे बॉध, उसने रफीक चाचा के सामने यह सुझाव रखा कि चलकर ताड़ी की दुकान मे इस सफलता पर खुशी मनायी जाय। बात यह थी कि दिन रहते ही उसने लेन-देन का काम पूरा कर लिया था और वह नही चाहता था कि लोग उसे अपने मुसलमान मेजबान और शुभचिन्तक के साथ घर लौटते हुए देखें, वह डरता था कि गॉव मे इस बात का चर्चा होगा। शराबखाने मे जमने का नतीजा यह तो जरूर हुआ कि देसी ठर्रे की एक बोतल और बगल की दुकान से पकौड़ियॉ वगैरह मँगाने पर गहनों के बदले मे मिली हुई रकम का थोडा-सा हिस्सा खर्च हो गया। और जब अँधेरे ने हर चीज पर अपनी चादर उढा दी, तारे निकल आये, तब वे दोनो लगभग पूरे चॉद की रोशनी मे रास्ता देखते हुए घर वापस चले। उन्होंने रास्ते के लिए ठर्रे की एक बोतल और ले ली थी, बीच-बीच मे रुककर वे उसमे से एकाध घूँट चढ़ा लेते थे। पिपलॉखुर्द की सीमा तक पहुँचते वे दोनों बुरी तरह झूम रहे थे और दोनों यदि एक दूसरे के साथ न चलते होते और कदम लड़खड़ाने पर एक दूसरे को सहारा न देते तो उनके लिए अपने पॉवों पर खड़ा रहना भी मुश्किल था। रास्ते मे पॉच-छ बार गिरने के बाद वे जुलाहों की गली के नुक्कड़ पर, सर से पॉव तक धूल मे अटे हुए पहुँचे थे; उनके कपड़े अस्त-व्यस्त थे, बाल बिखरे हुए थे; ऐसा मालूम होता था कि भूतों का जोड़ आ रहा हो। अधिकाश लोग उस

समय तक खा-पीकर सोने के लिए छतों पर जा चुके थे, इसलिए किसी ने उन्हें वापस आते देखा नही। रफीक चाचा के घर के देरवाजे से कुछ दूर तक खुला हुआ नाला था, जिसमे कीचड़दार पानी भरा रहता था। दुर्भाग्यवश रफीक चाचा के पॉव ज्यादा लड़खड़ाने के कारण वे खुद फिसले और साथ पंछी को भी ले गिरे। दोनों एक ही मुसीबत में फँसे हुए थे, इसलिए अलग-अलग और मिलकर भी बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे। उस समय रफीक चाचा की सूरत देखकर पंछी को ऐसा लगा जैसे कोई जिन्न हों; उनके चोहरे पर नाले की हरी-हरी कीचड़ पुती हुई थी। पंछी ने अपने मन की बात उनसे कह भी दी :

"रफीक च...चा तुम्हारी सूरत...अरे तुम्हारी सूरत देखकर हँसी आती है...कैसी सूरत हो गयी है !—बिलकुल जिन्न लेगते हो..."

"हैं !..." रफीक चाचा चौंक पड़े, उन्होंने दाहिने हाथ से अपना मुँह पोंछा। बहुत-सी कीचड़ तो छूट आयी, पर उनके चेहरे पर कीचड़ की धारियाँ-सी पड़ गयीं।

"अब...अब तो रफीक चाचा तुम बिलकुल शेर लग रहे हो ! शेर...!"

"हैं !...लाहौल-बिलाकुवत...अल्ला हो अकबर !...यह तो अच्छा है, इसलिए भी बहुत अच्छा है, कि...हिची...मुझे...अभी शेरनी का सामना करना पड़ेगा ! हिची !..."

पंछी हँस पड़ा।

देखा-देखी रफीक चाचा भी हँस पड़े, पर उनकी हँसी हिचकियों के साथ मिलकर उनके गले मे एक गड़गड़ाहट की आवाज बनकर रह गयी।

और यह अनोखी आवाज हूरबानों के कानों तक पहुँच गयी जो आँगन में गौरी के साथ बैठी हुई उन दोनों के वापस आने की प्रतीक्षा कर रही थी। वह चिल्लाती हुई बाहर भागी, पीछे-पीछे शर्मीली-लजीली गौरी भी चल दी। हूरबानों चिल्ला रही थी :

"हरामखोर कहीं के ! मैं तो जानती थी ! मै पहले ही जानती थी कि

तुम दोनों आज इसी हालत में घर आओगे !...जब तुमने वह कोठरी पंछी को दी थी, तभी मैंने कह दिया था कि वह तुम्हें खराब करेगा !... अब देख लो अपनी हालत !...हाय बहना, घर में खाने के लाले पड़े हैं और यह लोग दारू पी-पी के आये हैं !..."

उसने बहनों की जो दुहाई दी थी वह बेकार नहीं गयी, पास-पड़ोस की औरतें तमाशा देखने के लिए भागी हुईं अपने ऑगनों से बाहर निकल आयीं। कुछ मर्द भी, जो घरों की छतों पर चारपाइयों पर बैठे हुक्का पी रहे थे और इस बात का इन्तजार कर रहे थे कि जरा ठण्डक हो तो सो जायें, वह भी नीचे उतर आये। भीड़ में सभी प्रकार के लोग थे; कुछ लोग बड़ी सहानुभूति से चटकारियाँ ले रहे थे, कुछ लोग खेद प्रकट कर रहे थे, और कुछ लोग कानाफूसी कर रहे थे। इन विभिन्न मिली-जुली आवाजों में सबसे ऊँची आवाज हूरबानो की थी :

"कैसा बेवकूफ है ! इस बदमाश छोकरे के बहका देने मे आ गया। ...मैंने इससे कह दिया था, मैने पहले ही बता दिया था ! इसका बेड़ा गर्क हो ! मरे, जहन्नुम मे जाये !..." यह कहती हुई वह झुकी और उसने रफीक चाचा को उठाने की कोशिश की, लेकिन वह इतना भारी था कि उसने हारकर उसे छोड़ दिया और अपना माथा पीट-पीट कर कहने लगी : "मेरी फूटी किस्मत, बहना, मेरा नसीब काला कि ऐसे मरद से बियाह हुआ मेरा !"

गौरी ने हूर को इस तरह बैन करने से रोकने के लिए आगे बढ़कर कहा, "आओ, मैं सहारा देकर चाचा को उठाती हूँ !"

"जा जा, बड़ी आयी ! जा अन्दर बैठ जाके। बेशरम कहीं की !" पंछी उस पर बरस पड़ा, "वह मुझे गाली देती है और तू उसी का पक्ष लेती है ! जा, अन्दर जा !..."

"वह नहीं, तू है बेशरम !" हूर ने चिल्लाकर जवाब दिया। बेचारी बच्ची खाना पकाये कब से तेरी राह देख रही है। तुम दोनों तो पीने में मस्त थे ! खाया भी जरूर होगा तुम लोगों ने ! उस बेचारी ने एक दाना

नहीं चखा है !..."

"अच्छा, अच्छा, उसे गाली न दो !" रफीक चाचा ने कहा, "सारा कसूर मेरा है ! मगर जरा यहाँ से बाहर तो निकाल दो ! आओ, जरा सहारा दो..."

हूर बानो फिर कोशिश करने के लिए बढ़ी ही थी कि पंछी लड़खड़ाता हुआ उठ खड़ा हुआ और पहलवानों की तरह ऐंड़ता हुआ वह बड़े रोब के साथ वहाँ पर खड़े हुए लोगों की तरफ मुड़ा, "जाओ यहाँ से, क्या कोई तमाशा हो रहा है यहाँ !" और उसने रफीक चाचा को सहारा देकर खड़ा कर दिया। शायद हूर बानो की गालियों से उसका दिमाग कुछ-कुछ ठिकाने आ गया था और वह अकेले अपने बूते पर रफीक चाचा को, जो बार-बार पीछे की ओर गिरे पड़ते थे, लेकर आगे चला।

वह अपने शरीर को झटका देकर बड़े रोब के साथ मुड़ा और उन औरतों से बोला, जो पास खड़ी घूर रही थीं : "जाओ, अपने-अपने घर जाओ ! यहाँ क्या कोई मेला है ! हम लोगों ने बस थोड़ी-सी शराब पी है, तो उसमें ऐसी क्या बात है ? क्या तुम्हारे मर्द नहीं पीते ?"

हूर जानती थी कि इस घटना के कारण पास-पड़ोस में उनकी बड़ी बदनामी होगी और कई दिन तक इसका चर्चा रहेगा, इसलिए अपने पति को घर पहुँचाने में वह पछी की सहायता के लिए आगे बढ़ी।

गौरी ने पहले ही अन्दर जाकर आँगन में एक खटिया डाल दी थी।

थोड़ी ही देर बाद रफीक चाचा को आराम से लिटा दिया गया। गौरी तो सबकी सेवा करने को हरदम तैयार रहती ही थी, उसने उनका मुँह धुला दिया और हूर बानो उनकी बनियाइन उतारने की कोशिश कर रही थी, पर वह किसी तरह उतरती ही न थी।

गौरी को हूर का हाथ बँटाते देखकर पंछी को ऐसा लगा कि उसकी बीवी ने हूर के साथ मिलकर यह साजिश की थी कि इस हंगामे की पूरी जिम्मेदारी उसी पर डाल दें। वह क्रोध से आग-बबूला हो उठा और अपनी बीवी पर बरस पड़ा।

● ● ११

इसके बाद कुछ दिन तक पछी किसी से कुछ भी नहीं बोला, जो उसकी समझ में आया, करता रहा। बरसात आनेवाली थी; वह अपने खेतों के लिए नालियाँ बनाता रहा।

सूरज एक निर्मम और निर्दयी पिशाच की-सी क्रूरता के साथ चमक रहा था और हर चीज उसकी आग मे भुनी जा रही थी। सूरज की किरनें दिन प्रतिदिन तेज होती जा रही थी, आखिरकार ऐसा लगने लगा कि बस अब सूखा जरूर पड़ेगा। फिर भी गरमी की चरम सीमा पहुँच जाने के बाद जो बादल गरजते हैं, उनका कहीं नाम तक न था। पिपलॉ-खुर्द में आस-पास के गाँवों से बुखार, लू लगने और पेचिश से बूढ़ों के मरने की उड़ती-उड़ती खबरें आ रही थी। कहा जाता था कि पहाड़ियों पर बच्चे मर रहे थे और लोग कुत्ते खा रहे थे।

फिर भी पंछी ने बोने भर को काफी बीज खरीद लिये और वर्षा की प्रतीक्षा करने लगा। उसने बड़ी ईमानदारी से घर के खर्च के लिए केवल एक बोरा अनाज रखा था। सारा अनाज घर पर रखने से उसके खर्च हो जाने का भय था।

फिर वह इन्द्र भगवान को खुश करने के लिए नदी के किनारे जाकर कुछ पूजा-पाठ करने लगा, उसकी माँ भी उसे अपने साथ ले जाकर यही पूजा-पाठ करती थी। वह रोज दिन निकलते ही नदी की देवी को नारियल और दूध भेंट चढ़ाता, क्योंकि वह घड़ी शुभ समझी जाती थी और इस वक्त इस बात का भय भी नहीं रहता था कि उसके पुराने दोस्त उसे देखकर हँसेंगे, पर उसका सब पूजा पाठ बेकार गया। गरमी बढ़ती ही गयी। आस-पास की पहाड़ियों के पत्थरों से बिजली की चिनगारियाँ-सी निकलने लगीं, जो पुरानी-भूरी चट्टानों की पृष्ठभूमि पर चमकदार हीरों

जैसी दिखाई देती थी। चारों तरफ चकाचौंध कर देने वाली चिलचिलाती हुई धूप का राज था; एक झाड़ी नही बची थी जहाँ खुटबढ़इयाँ, गौरैयाँ या अन्य चिड़ियाँ शरण ले सकतीं।

उसके भाग्य में क्या लिखा था ? अकाल मुँह फाड़े सामने खड़ा था। ऐसी दशा में वह अपने दुर्भाग्य से बचने के लिए क्या कर सकता था ? अकाल के दौरान में जब वह अच्छे दिनों की प्रतीक्षा की वेदना में तड़प रहा होगा, तब उसकी कौन सहायता करेगा ? ये सवाल उसे पागल बनाये दे रहे थे।

पर इनका कोई उत्तर न था। वह केवल हवाई किले बनाता रहता कि अगर वर्षा हो गयी तो खेतों में फसल कितनी होगी और कितनी फसल साहियाँ, चूहे, गिलहरियाँ, तोते और अन्य जानवर खा जायेंगे। भावी फसल को जीव-जन्तुओं से होनेवाली हानि के बारे मे उसकी कल्पनाएँ कुछ निराशाजनक थी, इसलिए उसने सर्वनाश की उस भावना से छुटकारा पाने का प्रयत्न किया जो उस पर बुरी तरह छा गयी थी। पर नैराश्य उसकी नस-नस मे समा गया था। यद्यपि वह कुछ कहता नही था फिर भी वह समझता था कि वह अकाल के देवताओं से लड़ सकता है और इसीलिए वह किसी की भी रत्ती भर परवाह नहीं करता था।

इन दिनों रफीक चाचा या हूर बानो से उनका मिलना-जुलना बंद ही था; केवल एक मर्तबा वह अपने मित्र की बीवी के पास समझौता करने के प्रस्ताव के साथ, आधा बोरा अनाज लेकर, गया था। इस पर हूर बानो का दिल पसीज गया था और उसने पंछी को चोकर के सत्तू भी खिलाये थे, जो घर का सबसे प्रिय खाना-पीना समझा जाता था। पंछी को विश्वास हो गया कि कम-से-कम ये लोग, जो उसके एकमात्र दोस्त थे, उसके खिलाफ नहीं हुए थे। एक बात जरूर हो गयी थी कि अब रफीक चाचा को उसे नैतिक सहायता या घरेलू सलाह देने का मौका बहुत कम दिया जाता था।

उस कुम्हार के साथ सम्बन्धों में अब औपचारिकता की एक नयी

भावना पैदा हो गयी थी जिसके कारण वह और भी अकेला-अकेला अनुभव करने लगा था। उसे बार-बार गौरी का ख्याल आता जो इतना नजदीक होते हुए भी उससे इतनी दूर थी, लेकिन फिर भी वह हर जगह मौजूद थी। वह अब भी बहुत उदास रहती थी और अपने शर्मीलेपन के कारण अपने ही में खोयी-खोयी-सी रहने लगी थी। वह उससे शर्माती थी, झिझकती थी, यहाँ तक कि डरती भी थी; इस बात का जरा-सा सन्देह भी होता कि वह आ रहा है तो वह अनायास ही छटककर खडी हो जाती।

पंछी समझता था कि उसके पाशविक बरताव के कारण ही गौरी इस तरह उससे दूर भागती है, इस बात से उसे कष्ट होता था और उसके हृदय में नैराश्य का भाव और भी गहरा हो जाता था। कारण यह था कि पंछी उन लोगों में से था, जिनके अक्ल नाम को भी नही होती; जो जरा-सी बात पर आपे से बाहर हो जाते है और गुस्सा उतर जाने पर उस बात को बिल्कुल ही भूल जाते हैं। वह कभी कल्पना भी नही कर सकता था कि कोई उसकी बात का बुरा भी मान सकता है। इसके अलावा वह साफ दिल का आदमी था, अपने दिल मे कोई कटुता छुपाकर नहीं रखता था, सब कुछ कह देता था और उसे उन घुन्ने लोगों से झुँझलाहट होती थी, जो चुपचाप सब कुछ सहन करते रहते हैं और अपनी भावनाओं को शब्दों या झगड़े के द्वारा नही बल्कि इशारों और संकेतों के द्वारा व्यक्त करते हैं। इसके अलावा खेत पर अपना काम समाप्त कर चुकने के कारण अब उसके पास खाली समय भी बहुत था। उसने गौरी के शरीर की गोलाइयों को देखा, उसकी सख्त गठी हुई छातियाँ, उसकी पतली कमर, उसके भारी कूल्हे, और सुडौल टाँगें, और उसके चेहरे पर यौवन की वह दमक! उसका जी तो बहुत चाह रहा था कि वह जाकर उसे पकड़ ले पर नशे में उसने उसके साथ जो पाशविक बरताव किया था, उसके कारण वह अपने-आपको इतना अपराधी समझ रहा था कि जा नहीं सका; केवल देखता रहा। वह उसके लिए बेचैन और लालायित

था, और साथ ही लज्जित भी। अपराध के आभास ने लज्जा के आवरण में अपने-आपको छुपा लिया था।

गौरी उसकी इच्छा को समझती थी, पर घर का काम करते हुए वह उसकी पहुँच से दूर ही रहती थी, यद्यपि मन-ही-मन चाहती वह यही थी कि वह आकर उससे बातें करे, आकर उसे मनाये, उसी तरह जैसे कि उसने उसके रूठ जाने पर किया था। वह अपनी नजरें उससे बचाती थी पर वह उसके घूरने को अनुभव करती थी और उसे लगता कि उसके सारे शरीर पर जैसे किसी ने जादू कर दिया हो। कई क्षण उसे ऐसा अनुभव होता कि वह आकर उसे छेड़ेगा और लज्जा दूर चली जायेगी। लेकिन उसने अनुभव किया कि वह अपने मान के कारण ऐसा नहीं कर रहा है। उसने यह परिस्थिति इस आशा से स्वीकार कर ली कि उसकी जबान ज्यादा देर तो चुप रहने वाली है नहीं, वह थोड़ी देर में प्यार-भरी आवाज में उसका नाम लेकर, उसे 'रानी' कहकर पुकारेगा और तब वह लजाई हुई नजर से उसका उत्तर देगी कि वह तो हमेशा उसकी ही है, वह चाहे तो स्वीकार कर ले और चाहे तो ठुकरा दे।

पर उस कोमल स्वर के बजाय एक भारी व्यग्यपूर्ण डॉट सुनाई दी, जिसकी प्रेरणा पंछी को शायद हिन्दू नीति-शास्त्र के इस सूत्र से मिली थी कि पत्नी को डाँट-डपट कर ठीक रखना पति का कर्तव्य है। वह बोला :

" 'चल्ली औरत साग बिच पानी !'—ब्याह के बाद भी तुम अपनी माँ के लिए ही रोती रहती हो !"

गौरी को यह बहुत बुरा लगता था कि जब भी पंछी उससे नाराज होता, वह उसकी माँ को भी बीच में लपेट लेता था।

गौरी के हृदय में उसके प्रति प्रेम उमड़ा पड़ रहा था। पर उसे हजारों वर्ष पुरानी इस भारतीय परम्परा का भी ध्यान था कि बीवी कभी पहल नहीं करती और इसलिए घर का काम-काज करते समय वह मन-ही-मन मुस्कराती रही।

एक दिन जब गौरी चावल बीन रही थी तो पंछी ने उससे कहा,

"अच्छा महामाया, खाना दोगी मगर बोलोगी नही ! मुझे भी तुम्हारे न बोलने की रत्ती भर परवाह नही है ।"

उसका हृदय सहसा करुणा और दया से भर आया, पर वह दरवाजे के पास पत्थर की मूरत की तरह खड़ी चावल बीनती रही । उसकी आँखे थाली पर जमी हुई थी पर उसका हृदय उसके लिए धड़क रहा था ।

"मुझे जाने दो," पंछी ने कुहनी से उसे एक तरफ को धक्का देते हुए कहा और बाहर निकल गया ।

उसने फौरन आँखें ऊपर उठाकर देखा; उसे आशा थी कि वह अपनी आँखों मे प्रार्थना भरकर उसकी आँखों मे आँखे डाल देगी और वह उसे अपने सीने से लगा लेगा । पर उसके पास से गुजरते समय भी वह उसे आग्नेय नेत्रों से घूरता हुआ निकल गया था और उनकी आँखे चार नहीं हो पायी । मौका हाथ से निकल गया था । उसने आह भरकर सोचा : "ओह, काश वह दरवाजे पर जरा देर के लिए रुका होता, उसने मुझे यह जताने का मौका तो दिया होता कि मै चाहती थी कि वह मुझे छुए और . " पंछी लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ गली मे निकल गया और गौरी के हृदय की ज्योति जैसे बुझ गयी; वह अपने आपको धिक्कार रही थी; उसे अपने ऊपर क्रोध आ रहा था कि वह समय रहते क्यों न मान गयी, क्यों हठ किये रही । यह पीड़ा उसे रह-रहकर तड़पा रही थी ।

उधर पंछी ने यह फैसला किया था कि दिन का समय प्रेमालाप के लिए उचित नहीं है, इसलिए अच्छा यही है कि वह जाकर टहल आये और जब शाम हो जाये तब घर लौटे । उसने यह भी सोचा था कि लाला बीरबल की, नदी के किनारे वाली, बगिया के बाहर वाले पेड़ों पर से वह कुछ आम ही तोड़ता लाये । वहाँ उसने छः बड़े-बड़े पक्के रसीले आम लटकते देखे थे, उन्हीं पर उसकी नजर थी ।...

पंछी को यही समय उचित जान पडा । बात यह थी कि अभी तीसरे पहर का वक्त बहुत काफी बाकी था और इस समय लाला बीरबल की उस आम की बगिया के पास, जो अस्सी सीढ़ियों वाली बावली से आगे सूखी

हुई नदी के किनारे स्थित थी, किसी के होने का भय नही था। फिर भी वह परिस्थिति का निरीक्षण कर लेना चाहता था और यह बात पक्की कर लेना चाहता था कि उस बाग के माली मियाँ को उस पर संदेह न हो। इसलिए वह बावली की सीढ़ियों से उतरकर नीचे गया और जल्दी से नहाकर शरीर की सारी थकन और शिथिलता दूर कर ली। ढलते हुए सूरज की किरनें छन-छन कर बावली की दीवारों पर पड़ रही थीं। पंछी को भय लग रहा था कि कहीं लाला बीरबल के किसी पूर्वज का भूत सीढ़ियों पर से सहसा उसे पुकार ले तो क्या होगा, क्योंकि कहा यही जाता था कि उन सीढ़ियों पर भूत रहता है; या बावली में से कोई सॉप निकल आये तो क्या होगा ? अपने भय को दूर करने के लिए पंछी पानी में छप-छप करता रहा और फिर जल्दी से स्नानादि से निवृत्त होकर बाहर निकल आया। उसके शरीर में शीतलता समा गयी थी और उसका मिजाज भी ठंडा हो गया था। अब वह आमों पर हाथ मारने के लिए बिलकुल तैयार था।

उसका कहना न मानने के कारण गौरी पर जो उसे क्रोध था वह गायब हो गया और उसके बजाय उसे स्वयं अपनी कमजोरियों पर ग्लानि हो रही थी। उसने बुदबुदा कर कहा, 'यह मेरी अकड़ भी मादर...!' और अपनी चेतना के उस धूमिल सीमात प्रदेश में पहुँचकर, जहॉ अन्तःप्रेरणा पर एक क्षण के लिए तर्क का प्रभुत्व हो जाता था, वह मन-ही-मन इस बात को स्वीकार करता था कि जब से गौरी उसके घर आयी थी, तब से वह उसे लगातार सताता आया था। शुरू में तो वह अपनी चाची कैसरो के कहे में आकर ऐसा करता था, पर बाद में उसकी आदत पड़ गयी थी।

धीरे-धीरे जैसे-जैसे वह आम के बाग के सिरे की तरफ बढ़ता गया, उसका हृदय धड़कने लगा। वह एक छोटी-सी खाई के पास जाकर रुक गया और हाथ बाँधकर चो नदी के पार पहाड़ियों के सुन्दर दृश्य को देखने लगा। उसने सोचा कि चोरी करते हुए पकड़े जाने का भय ही

उसकी चिन्ता का कारण है। अच्छा यही होगा कि वह ऐसा न करे। लेकिन वे बड़े-बड़े रसदार आम—उनके अलावा वह गौरी के लिए और क्या उपहार ले जा सकता था।...और आखिर बीरबल की बगिया से कुछ आम ले लेने से पहले इतना भयभीत होने का कारण भी क्या था, जब कि वह जानता था कि उस बनिये ने यह बाग गिरवी रखी हुई जमीन के बकाया सूद के बदले में हथिया लिया था—यह तो सरासर लूट थी। कितने आश्चर्य की बात है कि कोई बड़ी चोरी करता है और कोई छोटी, पर बड़ी चोरी को क्षमा कर दिया जाता है। एक बात ने उसका निश्चय पक्का कर दिया कि दूसरे किसानों की तरह वह भी बीज के लिए रखा हुआ अनाज खा रहा था और अगर अगले कुछ महीनों में उसने अपनी गुजर जंगली फल खाकर न की तो उसके पास बोने के लिए कुछ भी न बचेगा।

पंछी थोड़ी देर तक उस खाई के किनारे टहलता रहा ताकि कोई यह न समझे कि वह वहाँ चोरी करने आया है बल्कि यही समझे कि यों ही टहलता हुआ उधर आ निकला है। वह कनखियों से उन पेड़ों को खासतौर पर देखता जा रहा था जो बड़े-बड़े आमों से लदे हुए थे। चो नदी से आते-जाते समय उसने दो पेड़ों को कई दिन से ताक रखा था, जिनके फल सबसे अच्छे थे। वह उन्हें पीछे छोड़कर आगे बढ़ गया था। वह इसी प्रकार निरुद्देश्य-सा टहलता रहा और मंत्र की तरह यह वाक्य रट-रटकर अपने जी को कड़ा करता रहा—'मुझे डर किसका है।'

इस मंत्र से भी उसका आत्मविश्वास कुछ ज्यादा नहीं बढ़ा, क्योंकि उसका दिल और भी जोर से धड़क रहा था। इसलिए उसने फैसला किया कि अब कुछ कर ही डालना चाहिए।

फुर्ती से अपनी एड़ी के बल घूमकर वह पीछे मुड़ा और तेज कदम बढ़ाता हुआ खाई के सिरे पर उस जगह पहुँच गया जहाँ उसने नागफनी की झाड़ी में एक रास्ता बना हुआ देखा था। देखते-देखते वह वहाँ पहुँच गया और इससे पहले कि वह जान पाता कि वह कहाँ है, बाग के अन्दर

पहुँच चुका था।

अपने लक्ष्य पर नजरें जमाये हुए वह दबे पाव उन दो पड़ों में से एक के पास जाकर फल तोड़ने लगा। उसकी समझ मे कुछ भी न आया कि देखते-देखते किस तरह उसके हाथों मे दो बड़े-बड़े आम आ गये। उसने अनुभव किया कि वह उन्हे अपने हाथों मे नहीं ले जा सकता। वह काँप रहा था और उसका चेहरा पीला पड़ गया था। जल्दी से उसने अपने कुरते का एक झोला-सा बनाकर, दोनों आम उसमें डाल लिए और बड़ी उत्सुकता से और आमों के लिए हाथ बढ़ाया। आम बिलकुल पक गये थे और उसके छूते ही चार-पाँच रसीले आम सामने टपक पड़े। उसकी उत्कंठा इतनी बढ़ गयी थी कि वह उन्हे उठा भी न सका। उसने सोचा, गिरे हुए आम शायद चोटियल हो गये हों, इसलिए वह डाल पर लगे हुए पके आमों की तरफ इतने जोर से लपका कि पेड़ की तमाम डालें हिल गयी और तोतों का एक झुड पासवाले पेड़ से शोर मचाता हुआ बाग के दूसरी तरफ उड़ गया। उड़ते हुए तोते बहुत सुन्दर मालूम हो रहे थे, वह बिल्कुल गौरी की तरह चीख रहे थे, जब उसने उसे मारा था। एक क्षण तक वह उन्हे देखता रहा और तोते चक्कर काटकर दूसरे पेड़ पर जा बैठे।

तोतों का शोर सुनकर माली का ध्यान बाग के इस हिस्से की तरफ आकृष्ट हुआ। मियाँ फल चुरानेवालों को चेतावनी देने के अंदाज मे चिल्लाया "हो हो, हो, हो, हो..."

पंछी को चुपचाप खड़े रहकर, दुबारा निस्तब्धता छा जाने का इन्तजार करना चाहिए था। वह घबराया हुआ तो था ही, उसका भय और बढ़ गया और इसी घबराहट में वह एक डाल से उलझता रहा जिस पर कुछ ऊँचाई पर एक बड़ा-सा रसीला आम लगा था; उसने डाल झुकायी ही थी कि वह चरचराने लगी।

"ठहर तो जा ! मादर...! पंछी के बच्चे ! आज मैंने पकड़ा है तुझे ! बदमाश, गधे का बच्चा !..." गालियों की इस बौछार के पीछे ही माली

भागा हुआ चला आ रहा था।

पंछी समझ गया कि अब वह मुसीबत में फँस गया है इसलिए वह वहाँ से भागा। वह मियाँ से कई गज आगे था।

दुर्भाग्यवश नागफनी की झाड़ी के बीच में कटा हुआ रास्ता उतना पास नहीं था जितना कि उसने सोचा था, भागते समय उसके कुरते का झोला एक तरफ से खुल गया। वह गौरी के लिए कम-से-कम दो आम उठा लेने के लिए ठिठका ही था कि माली बिल्कुल उसके पास आ पहुँचा। वह भागने मे बहुत तेज था, वहाँ से निकल भागता, मगर माली ने पीछे से उसका कुरता पकड़ लिया।

"मादर...! सुअर! चोर कही के! सब अच्छे-अच्छे आम तोड़ के ले जा चुके हो तुम!..."

"नही काका, मैं तो पहले यहाँ आया भी नही!"

"चोरी करता है, ऊपर से झूठ बोलता है! क्या मै जानता नही! बदमाश! शराबी! रंडीबाज! भले बाप का कपूत बेटा! मैं जूतों से तेरी खबर लूँगा!..."

"जाने दो," पंछी ने कहा, "तुम्हारे लिए या लाला बीरबल के लिए दो आमों से क्या फर्क पड़ता है!"

"अरे चोट्टे, तू मुझसे माँग लेता! मगर तू तो अपनी शेखी मे फूला रहता है! बदमाश! नमकहराम!"

"अच्छा बस, अब गाली न देना, नहीं तो मै मारे बिना न छोड़ूँगा," पछी उसकी गालियों पर क्रोधित और अपमानित होकर बोला। लेकिन वह अपने हाथों को रोक गया।

"अच्छा, उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे!" मियाँ ने चिल्लाकर कहा।

"चोर! तुम्हारे मालिक सेठ बीरबल खुद डाकू हैं। मैं नहीं हूँ चोर! मुझे छोड़ो...!"

"मैं तुझे लाला बीरबल के हवाले कर दूँगा, उन्हीं से यह सब कुछ कहना।"

"अच्छा चलो, मैं तुम्हारे मालिक से भी निपट लूँगा। आओ चलो। मैं डरता थोड़े ही हूँ। मै साफ कह दूँगा कि अगर मैं चोर हूँ तो वह डाकू हैं।...और तुम पालतू कुत्ते हो।"

"अभी मालूम हो जायेगा कि कौन क्या है !...बल्दू जरा रस्सी तो ले आना।..."

"कह तो दिया कि मैं साथ चल रहा हूँ।" पंछी ने उचटकर कहा— "अगर तुमने मुझे बाँधने की कोशिश की तो मैं तुम दोनों को मार डालूँगा मगर यह बेइज्जती कभी नही बर्दाश्त करूँगा !..."

"अच्छा चल हरामी ! आ..." व्यथा-पीड़ित पंछी ने अपना रहा-सहा धीरज बटोरकर शान्तिपूर्वक चलने का निश्चय किया। वह अपने को निस्सहाय और अकेला महसूस कर रहा था और अपने दुर्भाग्य को कोस रहा था कि चोरी के आम भेंट करके गौरी का प्यार वापस पाने के लिए वह आकर मुसीबत मे फँस गया था।...

तीन

●●१

जिस समय पंछी को लेकर वह लोग लाला बीरबल के चबूतरे पर पहुँचे, उस समय सेठ जी पुराने बेंत के मोढ़े पर बैठे हुए हुक्का गुड़गुड़ा रहे थे। उनका साईस सूरज उनके पाँव दबा रहा था। देखने से मालूम होता था कि लालाजी अभी घुड़सवारी करके लौटे थे क्योंकि वह अभी तक जोधपुरी बिरजिस पहने थे और उनका टट्टू—मोती—थोड़ी ही दूर पर बँधा घास खा रहा था।

"आओ जी, आओ!" ठेकेदार साहब ने बिना यह सोचे कि पंछी इस बार किस काम से आया है, हमेशा की तरह बड़े तपाक से कहा।

पंछी सर झुकाये चुप खड़ा रहा। मियाँ और बल्दू भी अपने मालिक के सम्मान और भय के कारण निःशब्द खड़े थे।

"क्यों बेटा पंछी, तुम सूद का पैसा अदा करने का वादा कर गये थे, पर तुम फिर शुक्रवार के दिन आये नहीं।...चलो आज तुम अपने आप आ गये, मुझे बड़ी खुशी हुई। मैं जानता था कि तुम वाकई अच्छे लड़के हो। तुम्हारे चाचा वगैरह तुम्हें नाहक बदनाम करते हैं।" लाला बीरबल के भरे हुए चेहरे पर बनावटी मित्रता की चमक थी क्योंकि वह घाट-घाट का पानी पिये हुए थे। वह बिना किसी कठिनाई के पंछी के आने का वास्तविक कारण समझ गये थे।

"हुजूर, यह अपने आप नहीं आया है," मियाँ बीच में बोल पड़ा, "हम लोग इसे जबर्दस्ती लाये हैं।"

"हाँय! तो क्या यह आम चुरा रहा था, क्यों माली?" लाला बीरबल ने सहसा बनावटी गुस्से में आकर कहा।

माली ने सर हिला दिया, और यह देखकर कि बाग की निगरानी ठीक से न करने का जो आरोप मालिक ने उस पर लगाया था, उसका कलंक धो डालने का यह मौका अच्छा है, वह बोला, "लालाजी, इसी जैसे बदमाश हर साल फसल चौपट कर देते है ! अब ऐसे चोरों का मैं क्या कर सकता हूँ ? ..और आप मेरी ही तनख्वाह काटने की बात करते हैं..."

"कैसा अन्धेर है !" लाला बीरबल बोले, "ऐसे भले घर का लड़का और..."

"लालाजी !" पंछी इस अपमान पर गरज पड़ा।

"बेवकूफ, खबरदार जो बीच मे बोला !" लाला बीरबल ने डॉटकर कहा, "कभी तूने यह भी सोचा कि इस बाग को छोड़कर मेरे पास और कोई जमीन नहीं है, क्योंकि यहाँ के कानून ही ऐसी बेइसाफी के है कि कोई गैर-काश्तकार जमीन नही रख सकता। और उस बाग के एक-एक पेड़ को बड़ी मेहनत से पाल-पोस कर बड़ा किया गया है। अल्फान्जो आम हैं यह, जानते हो ? इनकी कलमें बहुत दूर बम्बई मे बुलसार के पास के एक बाग से मँगवायी थी।...इन सब पेड़ों के लिए रेल का जितना भाड़ा देना पड़ा था, उससे कम मे तो तुम्हारी एकड़ भर जमीन खरीदी जा सकती है। सैकड़ों रुपये तो मैंने हर साल इनकी जड़ मे बकरी की चरबी डलवाने मे खर्च कर दिये। इतने बरसों से इन पेड़ों को बड़ा होते देख रहा था और उनमें फल लगने की प्रतीक्षा कर रहा था। इनमें से एक-एक पेड़ को मेरे माली ने मेरी निगरानी मे पाल-पोसकर इतना बड़ा किया है। इसके एक-एक पेड़ के आगे तुम्हारी या तुम्हारे बाप की या तुम्हारी पूरी जायदाद की कोई कीमत नही है !...तुम्हारी यह हिम्मत कैसे हुई कि तुम जाकर उस बाग से आम तोड़ो !...मुझसे माँगते तो दो-एक आम तो मैं तुम्हें यों ही दे देता..."

"हुजूर, यही बात मैंने भी कही थी इससे," माली बोला, "यह, मुझसे कुछ आम माँग लेता। माई-बाप, मैं इसे तोतों के कुतरे हुए या

गिरे हुए कुछ आम दे देता ..."

"अच्छा, तो तोता आम कुतर जाये या गिरा दे तो कोई हर्ज नहीं है, मगर कोई आदमी एक-दो आम तोड़ ले तो मारते-मारते उसका कचूमर निकाल दिया जाये," पंछी ने प्रतिरोध किया।

"तुम कोई जानवर तो नहीं हो !" माली ने उसका उत्तर दिया।

"नहीं, मैं तुम्हारी तरह सबके सामने दुम हिलाने वाला कुत्ता नहीं हूँ !" पंछी उत्तेजित होकर चिल्लाया, "इस वक्त तो लाला जी के सामने चिकनी-चुपड़ी बातें कर रहे हो और उनकी पीठ पीछे..." लेकिन वह माली की शिकायत करते-करते रुक गया। माली के बारे मे यह किसे नही मालूम था कि वह अपने मालिक से चुरा कर हर साल फसल का कुछ हिस्सा बेचकर खा जाता था।

"मैं जानता हूँ कि सभी लोग मुझे धोखा देते हैं।" लाला बीरबल फौरन ताड़ गये थे कि पंछी क्या बात कहते कहते रुक गया था।

"सरकार, यह पंछी चोर ही नहीं, झूठा भी है !" माली ने प्रतिरोध किया।

"मैं तुम सबको जानता हूँ।"

"और यह बल्दू, इसकी यह मजाल कि आज मेरे ऊपर हाथ उठाये ! अगर यह मर्द है तो ईमानदारी से बताये कि इसकी माँ कच्चे आमों की हाड़ियाँ भर-भर के बेचती रही है कि नही !" पंछी ने डूबते मे तिनके का सहारा लिया। बाग के इन दो रखवालों ने उसकी जो पिटाई की थी, उसकी पीड़ा उसे अब तक सता रही थी, इसीलिए उसने कमीनेपन से बल्दू की चुगली खायी थी।

"क्यों बे बल्दू !" लाला बीरबल बल्दू की तरफ मुड़े।

"सरकार, यह झूठा है !" बल्दू बोला, "मैंने तो बस वह आम उठाये थे जो आँधी में गिर गये थे।"

"सरकार, अगर यह सच है तो मैं बल्दू से निबट लूँगा। वैसे अगर आप चाहें तो..." माली बीच में बोल दिया।

"कौन चोर कहेगा कि उसने चोरी की है!" पंछी ने बड़ी अकड़ के साथ अपना सीना ठोंकते हुए कहा, "और यह लोग चोर सिर्फ इसलिए हैं कि इनमें यह कहने की हिम्मत नहीं है कि इन्होंने आम इसलिए लिये कि यह काम करते हैं, इसलिए आमों पर इनका भी उतना ही हक है, जितना आपका! बुजदिल कहीं के। मुझे अपनी बीवी के लिए कुछ आम चाहिए थे, मैंने जाकर तोड़ लिये।...आखिर हम किसानों के पास इस अकाल में खाने के लिए बचा ही क्या है?..."

"ऐसी बातें करके क्यों अपनी शामत बुला रहे हो?" माली ने कहा।

"नहीं कोई बात नहीं है!" लाला बीरबल बोले। पंछी को इतने जोश के साथ अपने को निर्दोष साबित करते देखकर वे हक्के-बक्के रह गये थे, और उन्हें डर था कि कहीं वह और भी ताव में आकर इससे सख्त बातें न कह दे।

"लाला बीरबल, बात है क्यों नहीं।" पंछी ने अब खुद हमला किया, "बात होगी, इस बात का फैसला करने के लिए कि डाकू कौन है, चोर कौन है और अपना खून-पसीना एक करनेवाला लाचार मजदूर कौन है!..."

"क्या तुम कम्युनिस्ट हो गये हो जो ऐसी बातें करते हो?" लाला बीरबल ने कहा और वह इस नौजवान छोकरे को रोकने के लिए अपनी कुर्सी छोड़कर प्रायः उठ खड़े हुए कि कहीं वह उन दो आज्ञाकारी मालियों के सामने और ज्यादा सख्त बातें न कह दे, जिससे उनके दिमाग में भी विद्रोह का कीड़ा घुस जाये। "तुम खुद तो बिगड़े हुए हो ही, तुमने मेरे बेटे को भी बिगाड़ दिया है! वह भी ऐसी ही बातें करता है...अगर तुम्हें अपनी बीवी के लिए आम चाहिए ही थे तो तुमने दामोदर से कहा होता। वह माली से कहकर तुम्हें कुछ आम दिलवा देता, बेवकूफ!"

"अब यह क्या नया झगड़ा है?" चौधरी अछरूराम ने शाम की

गप-शप के लिए ठेकेदार साहब के चबूतरे की तरफ आते हुए दूर से ही पूछा। वह सफेद चूड़ीदार पैजामा और कुरता पहने हुए बड़े रोब के साथ टहलते हुए चले आ रहे थे।

सूबेदार साहब के पीछे-पीछे अपने अफसर की परछाई की तरह हवलदार मोलाराम चले आ रहे थे। उन्होंने जलकर दबी आवाज में कहा, "यह बदमाश छोकरा! सच कहता हूँ, यह पछी हमारे गाँव भर के लिए एक आफत बन गया है।"

"जाओ माली, बल्दू तुम भी जाओ, जाकर अपना काम करो!" लाला बीरबल ने यह सोचकर उन्हे वहाँ से चलता किया कि अगर पंछी के चाचा को यह मालूम हो गया कि उनका भतीजा आम चुराता हुआ पकड़ा गया है तो उनके चबूतरे पर मोलाराम ओर पंछी का झगड़ा हो जायेगा और वह यह नहीं चाहते थे।

माली और बल्दू हाथ जोड़कर वहाँ से चल दिये।

"आओ, आओ सूबेदारजी, आओ हौलदार मोलाराम!" लाला बीरबल ने उनका स्वागत करते हुए कहा। और फिर अपने साईस की तरफ मुड़कर, जो अभी तक उनके पॉव दबा रहा था, बोले, "जाओ, चिलम ताजी कर लाओ और शरबत बनाने को कह दो। आओ, बैठो सूबेदार साहब, हौलदार साहब बैठो..."

"पंछी बेटा," अछरूराम ने बड़ी नम्रता से पूछा, "तुम्हारे कपड़े बड़े मैले हो रहे है! क्या बात है?"

"अरे, वही पुरानी हरकतें हैं इसकी," लाला बीरबल ने गोलमोल बात कही।

पंछी उनकी तरफ से मुँह फेर कर गाँव के घरों को देखता रहा। वह चाहता था कि किसी तरह वहॉ से चल दे। फिर उसने साहस बटोरकर लाला बीरबल की तरफ मुड़कर उन्हे हाथ जोड़कर नमस्कार किया।

"ठहरो बेटा, जरा देर ठहरो। मुझे एक मामले का फैसला करना है, चाहता हूँ, तुम्हारे और तुम्हारे चाचा के सामने ही हो जाये।"

उस नवयुवक किसान का हृदय इस आशंका से भर गया कि यदि उसे क्रोध आ गया तो क्या होगा और बीरबल की इस बेमुरव्वती पर वह दाँत पीसकर रह गया, यद्यपि उसने मन-ही-मन ठेकेदार साहब की इस सामन्ती उदारता की प्रशंसा भी की कि उन्होंने चोरी की बात किसी से नहीं की थी।

"अब कुत्ते की तरह दुम दबाकर भाग जाना चाहता है!" मोलाराम ने परिस्थिति का कुछ अनुमान लगाते हुए कहा, "चोर कहीं का! इसने सारे खानदान के नाम पर बट्टा लगा दिया।"

"लड़के, यह मैं क्या सुन रहा हूँ!" सूबेदार अछरूराम ने बेंत के एक मोढ़े पर बैठते हुए बड़े तिरस्कार के साथ कहा और एक मोढ़ा मोलाराम की तरफ बढ़ा दिया। वह भी बैठ गये।

"जो लड़का किराये की कोठरी लेकर रहता हो, जिसके घर के कोने में नाज का ढेर न लगा हो, वह दुखी नहीं होगा तो और क्या होगा?" पंछी ने उन लोगों के बैठ जाने के बाद कहा।

"कुत्ते की दुम बारह बरस तक सीधी करो मगर वह रहेगी टेढ़ी की टेढ़ी ही!" मोलाराम अधीर होकर उछल पड़े और बोले, "इस बदमाश की हेकड़ी अभी तक नहीं गयी, बड़ों के सामने इतनी गुस्ताखी से बात करने की हिम्मत करता है...फजूलखर्च! शराबी! और अब चोरी भी करने लगा है!"

जाहिर बात थी कि लाला बीरबल के आम के बाग में पंछी द्वारा चोरी करने की खबर गाँव में फैल गयी थी। वास्तव में यही कारण था कि गाँव के वह दो बड़े-बूढ़े उस दिन रोज से पहले आ गये थे। पंछी ने यह भी अनुभव किया कि गाँव के कुछ और लोग भी थे जो धीरे-धीरे आकर चबूतरे से थोड़ी दूर पर छोटे-छोटे झुंडों में जमा होते जा रहे थे।

"सच्ची बात तो यह है," लाला बीरबल ने अपने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए अपना दाहिना हाथ घुमाकर कहा, "मुझे अपने बाग से दो-चार आमों की चोरी की कोई फिक्र नहीं है, हालाँकि मैंने इन पेड़ों को

अपने खून से सींचकर बड़ा किया है...लेकिन मैं अपना पैसा चाहता हूँ, अगर असल न भी मिले तो गिरवी की रकम का सूद तो मिलना ही चाहिए। इस वक्त हौलदार साहब आप भी यहाँ है और आपका भतीजा भी, इसलिए फैसला हो जाये कि कौन रकम अदा करेगा। पट्टा आप दोनों के नाम का है, क्योंकि जायदाद तो पूरे कुनबे की है !"

"मेरा इस चोर से कोई वास्ता नही है !" मोलाराम फौरन बोल उठे, "इसके अलावा आप सब लोग जानते ही है कि यह मुझसे अलग हो गया है।"

"काजी के घर के चूहे भी कानून बघारते है," लोगों के झुड मे से रफीक चाचा ने आगे बढ़कर कहा, "लड़के को छोड़ो और गालियाँ बन्द करो।"

"इस मामले के बीच मे बोलने वाले तुम कौन होते हो ?" मोलाराम ने चिल्ला कर कहा।

"देखो, गरमी का मौसम है, सब लोग अपना-अपना गुस्सा शान्त रखो !" चौधरी अछरूराम ने सलाह दी।

"मालिक, आप लोग शरबत पीकर अपना गुस्सा ठंडा कर ले !" लाला बीरबल के नौकर को पीतल के तीन गिलासों मे ठडा शरबत लाते देखकर कुम्हार ने मजाक करते हुए कहा।

रफीक चाचा मजाक करने मे बहुत उस्ताद थे, इसलिए मोलाराम को छोड़कर सब लोग मुस्करा दिये। मोलाराम ने शरबत का गिलास एक तरफ रख दिया और इस बात पर झुँझला कर कि पंछी की तरफ से जमीन गिरवी रखने मे वह नाहक फँस गये थे, उन्होंने पंछी को ललकार कर कहा, "अगर तुमने गिरवी की रकम के बकाया सूद का कुछ हिस्सा फौरन नहीं अदा किया तो मै तुम्हे जेल भिजवा दूँगा। मै जानता हूँ कि तुम्हारी माँ ने तुम्हें जो सोने की बालियाँ दी थी, जो तुमने अपनी बीवी को पहना दी थी, वह भी तुम गिरवी रख चुके हो !"

"मैंने उस रुपये से बीज खरीद लिये हैं," पंछी साफ झूठ बोल गया,

क्योंकि उस रकम का कुछ हिस्सा इस समय भी उसकी जेब मे था।

"मतलब है शराब में उड़ा दिये! और शायद तुम्हारे उस मुसलमंटे दोस्त ने कुछ रुपये कर्ज ले लिये होंगे!" मोलाराम ने दाँत निकालकर व्यंग्य से कहा, उनके सूखे हुए चेहरे पर मुसलमानों के प्रति तिरस्कार की भावना साफ झलक रही थी।

"बेटा, सब पैसा तो खर्च नहीं हुआ होगा," लाला बीरबल बोले, "अगर तुमने सब पैसा खर्च कर दिया है तब तो मुझे डर है, तुम कभी धनवान नही हो सकते। मेरी यह बात गाँठ बाँध लो..."

रफीक चाचा ने पंछी को सम्बोधित करके, उँगली उठाकर बनावटी ढंग से डाँटते हुए कहा, "पाई-पाई जोड़ कर रखना!"

कुम्हार की यह खरी बात सुनकर सामन्ती जमींदार सूबेदार अछरूराम कहकहा मार कर हँस पड़े।

कुम्हार ने बड़ी सफाई के साथ कहा, "चौधरी साहब, आप तो जमींदार हैं, अपनी जमीन पर आप मजदूरो को खेती के लिए लगाते हैं, अकाल के दिनों मे उन्हे अपने लगर से खाना खिलाते है, आप का ऐसा भला आदमी लाला बीरबल का स्वभाव नही समझ सकता। लालाजी व्यापारी है, महाजन हैं और ठेकेदार भी। पैसा जोड़ना उनका धरम है! इस हवेली को, उनकी दूकानों को और कारखानो को देखिए। यह सब कुछ एक-एक पाई जोड़कर बनाया गया है। लालाजी उस जमाने में भी पैसा जोड़ रहे थे जब आप फौज मे तमगे बटोर रहे थे और हम लोग काम न मिलने की वजह से हाथ पर हाथ धरे बैठे थे। और यह सब उस हालत में है जब उनके माता-पिता गॉव में सिर्फ अनाज की एक दूकान छोड़ कर मरे थे।"

"अच्छा, ये बातें यहाँ मत बघारिए," मोलाराम बोले, "तुम जाओ यहाँ से, हम लोग बाते कर रहे हैं, तुम बीच में क्यों आते हो? तुम्हारे इस मसखरेपन मे किसी को मजा नहीं आ रहा है।"

"मैं मसखरापन नही कर रहा हूँ," रफीक चाचा ने जवाब दिया,

"मैं तो सीधी बात कर रहा हूँ।"

"अच्छा, तो सीधी बात यह है कि पंछी के रूमाल मे जितने पैसे बँधे है, वह मुझे दे दे," लाला बीरबल ने कहा, "उसने यहाँ आकर कुछ पैसा दे जाने को कहा था पर वह फिर आया ही नही। अब वह मजबूरी में यहाँ आया है। आम के बाग मे घुसने के लिए तो मैने उसे माफ कर दिया। लेकिन पैसा, गिरवी की रकम के सूद की किस्त तो मुझे मिलनी चाहिए।"

पछी बुरा फँस गया था; वह सर लटकाये चुपचाप खड़ा रहा। भय तथा गरमी के कारण उसकी कनपटियों मे धमक हो रही थी।

"कोई चारा नही है," रफीक चाचा ने अपने मित्र की तरफ मुड़कर कहा। महाजन की इस बेरहमी के खिलाफ उसके हृदय मे कटु-भावनाओ का एक तूफान-सा उठ रहा था। उसने फिर कहा, "भाई, कोई चारा नहीं है...लाला बीरबल के आगे किसका बस चलता है!"

"मै पैसा उधार देता हूँ, यह मेरा हक है!" लाला बीरबल ने गरज कर कहा, "दूर हो जा मेरी नजरों के सामने से, बदतमीज कही का! बेवकूफ! मुसलमान जाहिल!..."

"सेठजी, मगर हमारे इस्लाम मे तो सूद लेना हराम है। इसलिए मै तो एक सीधी-सी बात कह रहा हूँ!"

"मजहब का सवाल न उठाओ," चौधरी अछरूराम ने डपट कर कहा।

"नहीं तो हम तेरी वह गत बना देगे जो हमे बहुत पहले बना देनी चाहिए थी!" मोलाराम बोले।

"मजहब को भूल जाओ," लाला बीरबल बोले। उन्हे भय हो चला था कि कहीं उनके सूद के सवाल पर सदाचार के बारे में फजूल की बहस न छिड़ जाये। "बस अपने दोस्त से मेरे पैसे दिलवा दो।"

"अच्छा भाई," रफीक चाचा ने पंछी से कहा, "अदा कर दो इनके पैसे..."

पछी की रही-सही ताकत भी खत्म हो गयी। उसने कुरते की जेब से रूमाल निकाला, जिसमे रुपये बँधे हुए थे और बीरबल के पैरों के पास फेंक दिया।

वह लड़खड़ाते हुए कदमों से रफीक चाचा का सहारा लिये चला जा रहा था और जोर-जोर से सिसकियाँ भर-भरकर रो रहा था।

"बस-बस, हो चुका," कुम्हार ने उसे धीरज बँधाया, "मिल-बाँट के खाने मे गरीब की रोटी मे कोई कमी नही पड़ती। जो कुछ हमारे पास है, वह मिल-बाँटकर खायेंगे। मुझे होशियारपुर मे अपने भाई से कुछ रुपया मिलने वाला है। हम लोग किसी तरह अपना काम चला लेगे।"

लेकिन पंछी को धीरज बँधाना असम्भव था। शाम को घुटी हुई गरमी मे उसकी सिसकियाँ तेज होती जा रही थी...जो कि लोगों की कानाफूसी के रूप मे इधर-उधर प्रतिध्वनित हो रही थी। भौरो के गुंजन ने सर्वनाश के वातावरण को पूरा कर दिया था। अपनी कमर मे पड़े हुए रफीक चाचा के हाथ के स्पर्श से उसकी वेदना कुछ कम हो रही थी, पर वह नही चाहता था कि उसका कुम्हार मित्र उसके साथ जरा भी सहानुभूति दिखाये, क्योंकि सहानुभूति दिखाने से वह रहा-सहा धीरज भी खो बैठता।

●●२

इस बार रूठकर 'कोप-भवन' मे पड़ जाने की बारी पछी की थी और उसे प्यार करके मनाने की कोशिश करने का काम गौरी के जिम्मे आ पड़ा था। पछी तो मानो सत्याग्रह करके चारपाई पर लेट गया था; इस सत्याग्रह के दौरान मे उसने जिस अटल हठ, घुटे हुए सर्वव्यापी क्रोध और अखण्डनीय मौन का परिचय दिया, उसके सामने गौरी का हठ, उसका मन-ही मन कुढ़ते रहना और कई-कई दिन तक रूठे रहना कुछ भी नही था। रूठने का प्रभाव बहुधा तभी पड़ता है जब किसी को उसका लक्ष्य

बनाया जाये, परन्तु न वहाँ गाँव के बड़े-बूढ़े आते थे, न उसके कोई सगे-सम्बन्धी और न इधर की बाते उधर लगाने वाला ही कोई था, इसलिए गौरी को इसका लक्ष्य बनाया गया।

लेकिन इससे गौरी मे एक विचित्र परिवर्तन आ गया। पंछी के 'कोप-भवन' में जाकर लेट रहने से वह इतना उकता गयी थी, इतनी भयभीत और बेज़ार हो गयी थी कि उसे अपने पर गुस्सा आने लगा कि अपने विवाहित जीवन के कुछ ही महीनों मे विभिन्न मौकों पर तरह-तरह से रूठ-कर उसने बहुत बुरा किया था। उसे आभास हो चला था कि उसने अपने पति के सामने एक बुरा उदाहरण प्रस्तुत किया था। अपने पति के इस मौन की प्रतिक्रिया उस पर यह हुई कि सहसा उसे जैसे वाणी मिल गयी, वह हमेशा से ज्यादा वाचाल हो गयी; यहाँ तक कि वह उसके हाथ-पाँव दबाकर और अपने विशिष्ट चतुर हास-परिहास के द्वारा उसे फिर प्रकृत अवस्था मे लाने का प्रयत्न भी करने लगी।

एक दिन सबेरे ही गौरी शरमाकर उसके पैर का अँगूठा पकड़कर उसे जगाने पहुँची। रोज सबेरे वह इसी तरह गिलास भर चाय लेकर उसे जगाने आया करती थी। लेकिन वह उसके जगाने से नही उठा, इसलिए उसने उसके पैर का अँगूठा जरा और जोर से ऐंठा। पहले तो वह बड़ी इज्जत के साथ केवल 'उठो' कहा करती थी लेकिन इस बार उसने बड़ी विनर्ता करते हुए कहा, "उठो ना, उठो !"

उसके शब्दों मे आग्रह भरा था। पंछी चौंक पड़ा। वह हट भूलकर सर उठाने ही जा रहा था कि उसने अनुभव किया कि उसके चेहरे पर जो पसीना, मैल और आँसुओं का लेप है, वह फौरन यह भेद खोल देगा कि वह रात भर रोता रहा था और उस बलवान मर्द को अपनी पत्नी के सामने लड़कियों जैसे कमजोर रूप मे आते शर्म लगती थी।

फिर गौरी ने हौले से उसके बाये पैर का तलवा गुदगुदाया, उसे हँसी आ गयी पर अभिमान के कारण वह इस स्वाभाविक प्रतिक्रिया को दबा गया। इतना ही नही, दुनिया भर के खिलाफ अपनी झुँझलाहट स्पष्ट रूप

से व्यक्त करने के लिए उसने जान-बूझकर चाय के गिलास को इतने जोर से ठोकर मारी कि गिलास उसके हाथ से छूट गया और सारी चाय उसके हाथ, उसकी जाँघों और गोबर से लिपे हुए फर्श पर बिखर गयी।

उसके इस रोष को देखकर कुछ क्षण तक वह भय से काँपती रही। अगर वह चाय के बजाय उसे ही ठोकर मार देता तो वह क्या कर लेती? परन्तु उसे सिखाया गया था कि पति-सेवा ही उसका धर्म है, इसलिए एक क्षण के लिए अन्दर-ही-अन्दर सुलगते रहने के अतिरिक्त वह कुछ भी न कर सकती थी।

पंछी चुपचाप निर्जीव-सा होकर लेटा रहा। सब से विमुख होकर, रूठ-कर पड़े रहने मे ही उसे शान्ति मिलती थी। कई दिन तक न दाढ़ी बनाना, न नहाना, यहाँ तक कि शरीर से दुर्गन्ध आने लगे—नैराश्य की मानसिक दशा में केवल इसी प्रकार की विरक्ति काम आती है। पीड़ा की निम्नतम गहराइयों तक पहुँच जाना और फिर वहाँ असीम व्यथा की गहराइयों की थाह लेना!...यदि वर्षा न हो और इसी प्रकार सूखा पड़ा रहे तो फिर उसे काम नही करना पड़ेगा। और फिर उसमे उसका कोई अपराध भी न होगा। वह कुछ-कुछ समझने लगा था कि उस दशा मे वास्तव मे सारा गाँव एक उदास-नीरस जीवन की शिथिल धारा मे विलीन हो जायेगा। गाँव वालों का जीवन आहों और कराहों, टाइफायड, खुजली और अथाह पसीने के कारण कमर के दाद और एक दूसरे की बुराई करने तक ही सीमित रह जायेगा, जिसमे उसकी आमों की चोरी वाली बात सबसे नयी और सनसनीखेज खबर होगी।... और उसने बड़ी ईमानदारी के साथ जीवन के अन्तर्विरोधों को अनुभव किया—एक तरफ तो उसके हृदय मे अपनी जवानी और शक्ति, काम करने, खाने-पीने, प्रेम करने और आम के बाग में पेड़ों की छाँव मे मस्त लेटे रहने की क्षमता का प्रबल उत्साह था और दूसरी तरफ इस अपमानजनक बात का भी आभास था कि किसानों को ये सब बातें, उनके अपने किसी दोष के कारण नहीं, बल्कि उनके तथाकथित करम के कारण उपलब्ध नहीं

थीं ! उनके उस भाग्य के कारण, जिसमें एक के बाद दूसरा अकाल देखना ही लिखा था। छिः...इन नीच ब्राह्मणों ने भी कैसे-कैसे जाल रच रखे हैं—करम ! गोरे साहबों के चले जाने के बाद काग्रेस सरकार नये कुएँ खुदवा सकती थी और गाँववालों को पानी की सुविधा भी प्रदान कर सकती थी, मगर उनके मालिक तो बड़े-बड़े चोर बाजारों मे शामिल थे। पानी और बिजली दिलाने का उनका जो तरीका था, उसमे इतना समय लग रहा था कि जब तक नहरें बन कर तैयार होंगी तब तक वह और उसके जैसे न जाने कितने लोग मर चुके होंगे। बस, छोटे-मोटे लोगों को दो-चार आम चुराने के लिए सजा दी जा सकती है, मगर बड़े-बड़े बनिये कोठियाँ खड़ी करते रहे तो कोई पूछने वाला नही है। "इस दुनिया मे कोई बात तो इन्साफ की होनी चाहिए," उसने बुड़बुड़ा कर कहा।

गौरी ने कनखियों से उसे आशा-भरी दृष्टि से देखा और बोली; "इंसाफ हो जायगा... तुम उठ कर नहा-धो तो लो..."

पर उसने कोई उत्तर नही दिया। तब उसने हँसी-मजाक का सहारा लिया। वह अपना कामकाज छोड़ कर उठी और उसके पास जाकर उसी के स्वर और भाव से बोली, जिससे कि वह बहुधा उसे मनाने का प्रयत्न किया करता था :

"रानी, अब उठ भी जाओ, बेवकूफी की बातें नही करते !"

बड़े आश्चर्य की बात थी कि यह तरकीब सफल हो गयी। लाख कोशिश करने पर भी इस परिस्थिति के व्यग्य से उसकी मुद्रा कुछ नरम पड़ी और वह सर उठाकर मुस्कराया, जोर से नाक छिनककर उसने बन्द नथुनों को साफ किया और ठट्ठा मारकर हँस पड़ा। परन्तु इस समय उसके हँसने और रोने मे इतनी समानता थी कि उसकी सूरत सहसा बिल्कुल रोनी हो गयी और उसने जोर से सिसक-सिसक कर प्रतिरोध करना आरम्भ किया :

"मुझे परेशान न करो। मैं परेशान आ गया हूँ ! मैं मर क्यों नही जाता ! दुनिया ने मुझे अपमानित किया है और मुझे सताया है।...और

सब तेरी वजह से ! न मैं तेरे लिए वह आम चुराने जाता और न यह सब होता...तू मुझे पड़ा रहने दे..." कहते हुए वह पूर्ववत् खटिया पर गठरी बनकर लेट गया।

गौरी फिर घबरा गयी। वह उसकी तेज आवाज और गालियों की तो आदी हो चुकी थी क्योंकि वह जानती थी कि यह कठोरता केवल बाहर ही बाहर है, इसके अन्दर अत्यन्त कोमल हृदय छुपा हुआ है। पर इस बात की पुष्टि से उसे आघात-सा पहुँचा कि वह उसी के लिए आम चुराने गया था और इस कारण वह अपने को अपराधी समझने लगी। वह यह समझ गयी कि वह उससे क्यों रूठा था। उसे अपनी आत्मा पर विशाल और भयानक तथा जटिल संसार का दम घोंट देने वाला भार रखा हुआ प्रतीत हुआ। सहसा उसे आभास हुआ कि दिन चढ़ता जा रहा है और उसे अब खाना पकाना आरम्भ कर देना चाहिए। कौन जाने पंछी को न जाने कब भूख लग आये और वह खाना माँग बैठे। उस समय यदि उसे खाना न मिला तो वह और नाराज होगा, इसलिए वह आग सुलगाने लगी।

आग जलाने के बाद चावल धोते समय वह अपने विचारों में खो गयी। शून्य में बड़ी देर तक घूरती रही। उसे अपने विवाहित जीवन के कष्टमय दिनों की याद आ रही थी, बारी-बारी से उसके इस जीवन में कितना संघर्ष और कितना प्यार उसके हिस्से में आया था। उसे उस लोकगीत की धुन भी याद आ रही थी जो उसकी माँ उसे चिढ़ाने के लिए कभी-कभी सुनाया करती थी कि उसका ब्याह हो जाने के बाद उसका दूल्हा कैसा बरताव करेगा :

आणि दिने लड़दा,
ते राती गल्लाँ गूड़ियाँ माये !

और गौरी ने अनुभव किया कि यह हास्यपूर्ण गीत उनके जीवन पर कितना चरितार्थ हुआ था। जब से वे रफीक चाचा के यहाँ आ गये थे तब से इस सब ले-दे के बाद गौरी, घर में जो कुछ होता उसे खिलाती,

उसे छाछ पिलाती या उसके लिए बादाम की ठंडाई पीस देती ! वह भी उस पर उसी प्रकार निर्भर रहने लगा था जैसे बच्चा अपनी माँ पर अवलम्बित होता है। यद्यपि उसने कभी कहा तो नहीं था, पर वह अपने व्याह के बाद ही इस बात को समझ गयी थी कि इस अकेलेपन के कारण ही वह अपनी चाची केसरो के साथ इतने घनिष्ठ रूप से बँधा हुआ था; और गौरी ने कई बार अनायास ही केसरो का स्थान लेने का प्रयत्न किया था, ठीक उसी प्रकार जैसे केसरो ने पछी की माँ का स्थान ले लिया था। पर उम्र में कम होने के कारण और वे छोटे-छोटे गुर न जानने के कारण, जिनकी सहायता से अपेक्षाकृत अधिक उम्र की औरतें नौजवान मर्दों को मोह लेती है, उसे हमेशा ऐसा लगता था कि वह शायद उससे दूर हो जाये और उससे दूर होकर अपने ही मे खो कर रह जाये या केसरो की शरण मे चला जाये।...वह मन-ही-मन कहती, 'शायद मुझे अपने बनाव-सिंगार का बहुत शौक था और मै अपने बाल सँवारने मे जरूरत से ज्यादा समय व्यतीत करती थी...! लेकिन क्या वह इतना भी नहीं समझता था कि यह सब कुछ मैं उसी की खातिर करती थी ?' लेकिन केसरो का भय, जिसने एक अन्ध विश्वास का रूप धारण कर लिया था, फिर उसे सताने लगा और यह कल्पना करके वह सर से पॉव तक कॉप गयी कि केसरो दरवाजे पर खड़ी है।

लेकिन एक दिन उसने देखा कि केसरो सचमुच उसके दरवाजे पर खड़ी थी। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि मानो उसके बारे मे उसका हरदम सोचते रहना ही उस जल्लाद औरत को, जिससे वह आतंकित रहती थी, वहाँ खीच लाया था। केसरो सचमुच दरवाजे पर खड़ी पुकार रही थी :

"पंछी, पछी, मेरा बेटा..."

गौरी का सारा शरीर सर से पॉव तक कॉप गया, चेहरा पीला पड़ गया। यह सोच कर कि दाल की हाँड़ी कहीं हाथ से छूट न जाये, उसने उसे चूल्हे पर रख दिया और चमचे से उसे चला कर यह जताने लगी कि वह काम में बहुत व्यस्त है।

"बेटा पंछी !" केसरो ने अपने भतीजे की चारपाई के पास आकर पंजाबी माँ की भावपूर्ण ममता के साथ चुमकारते हुए कहा, "बेटा, मैंने ऐसा क्या कसूर किया है कि मुझसे इतनी नफरत करने लगे ?...तुम तो जानते ही हो कि तुम्हारे चाचा कितने जिद्दी हैं, वह मुझे पीटते हैं, जब से बचाने के लिए तुम नही हो तबसे तो और ज्यादा पीटने लगे हैं !..."

पंछी छोटी-सी खटिया से चिपका निश्चल पड़ा रहा।

"बेटा, तुम्हारी चाची, तुम्हारी माँ आयी है, उठो बेटा," उसने बड़े प्यार से उसके सर पर हाथ फेरते हुए विनती की की, "पंछी, अपनी दुखिया माँ को माफ कर दो, वह तुमसे बहुत प्यार करती है ! पंछी, मुझे माफ कर दो, कुछ बात तो करो बेटा...अपने चाचा की तरह हठ न करो !..."

पंछी के बालकों जैसे स्वभाव को, जिसे अब गौरी ने पहचान लिया था, केसरो पहले से भलीभाँति जानती थी। पंछी ने करवट बदली और उठकर बैठ गया। फिर रोनी सूरत बनाकर उसने सिसकियाँ ले-लेकर कहना आरम्भ किया :

"फिर तुमने इतने दिन तक मेरी खबर क्यों नही ली ? अगर वह तुम्हें पीटता था तो तुम मेरे पास यहाँ क्यों न चली आयी ?..."

"बेटा, हमारा धर्म ही ऐसा है, क्या करूँ ! मैं एक मुसलमान के घर कैसे आ सकती थी ! और वह कुलच्छनी, जिसके मनहूस पैर पड़ते ही हमारा मिला-जुला परिवार बिखर गया, तुम्हे देखने के लिए भी मेरा आना उसे कभी फूटी आँखों न सुहाता।...आज राखी का त्योहार था तो मैंने सोचा आकर तुम्हारे हाथ पर राखी बाँध दूँ..."

एक क्षण तक दोनों चुप रहे। उस त्योहार की बात सुनकर जिस दिन औरत मर्द के हाथ पर राखी बाँधकर उसे अपना सरक्षक बनाती है, उसका हृदय भावनाओं से भर उठा और केसरो की तरफ से उसके मन का सारा मैल धुल गया, पर वह बोला कुछ नहीं।

गौरी जानती थी कि यह सब होगा। पर इस गहरे-मजबूत बन्धन के

आगे, जो केसरो और उसके पति को नाल की तरह एक-दूसरे से जोड़े हुए था, वह लाचार थी। उसने अपनी साड़ी का पल्ला सर पर खींचकर घूँघट काढ़ लिया और चावल पसाने के लिए चौके से उठकर नहाने की चौकी तक गयी। इस तरह वह अपना अस्तित्व भी जता देना चाहती थी।

केसरो गौरी की ओर कोई ध्यान दिये बिना फिर पंछी को सम्बोधित करके बोली, "तुम्हें इस तरह घर से अलग कर देने पर मै तुम्हारे चाचा से रोज झगड़ा करती रही हूँ।"

पंछी ने आँखे उठाकर उसे देखा और सर झुकाकर सिसकने लगा।

केसरो ने उसका सर उठाकर अपनी गोद मे रख लिया और बड़े स्नेह से थपथपाने लगी, रोने से नही रोका। घटती हुई पीड़ा के इस शान्त वातावरण में वह पंछी के हृदय मे अपने लिए सद्भावना के बीज बोने लगी।

"जब कभी तुम्हे बुखार आया या कहीं चोट लगी तब क्या मैंने तुम्हारी तीमारदारी नहीं की है?...फिर इन पिछले तीन महीनों में तुमने अपने दुख के समय मुझे बुलाया क्यों नही?"

"क्योंकि तुम्हारे पति ने मुझे निकाल दिया था! क्योंकि वह मेरे पीछे हाथ धोकर पड़ा है और तुम उसे रोकती नही! क्योंकि...क्योंकि तुम्हें तो मालूम है कि उस गिरवी जमीन के मामले मे उसने मेरे साथ कैसा सलूक किया है, मुझे अदालत तक ले जाने की धमकी दी है! और वह लाला बीरबल को उकसाता रहता है!...कमीना, सुअर है वह!— तंगी के इन दिनों में खर्च करने के लिए मेरे पास थोड़ा-बहुत पैसा बचा था, वह भी उसने मुझसे छिनवा दिया!...अब मैं क्या खाऊँगा?... उसे तो पेंशन मिलती है!"

"देखो, इसमें सारा दोष उनका ही नही है। यह सब उनके फौज मे रहने का नतीजा है...उनकी जनमपत्री मे भी यही लिखा था...कि घर मे एक कुलच्छनी लड़की के आने से हमारा परिवार टूट जायेगा, सो टूट गया...जनमपत्री में जैसा लिखा था...।"

चाची और उनके लैपालक बेटे के बीच जो बातें हो रही थीं उन्हें गौरी सुन रही थी और वे दोनों, विशेष रूप से केसरो, इतने जोर-जोर से बोल रहे थे कि उनकी बातें आसानी से सुनी जा सकती थीं। वह नहाने की चौकी पर से उठी और चारपाई के पास आकर खड़ी हो गयी। क्रोध के आवेश मे वह थर-थर काँप रही थी, आते ही केसरो पर बरस पड़ी :

"निकल जा मेरे घर से, चुड़ैल ! निकल जा ! जब मैं शुरू-शुरू मे ब्याह कर आयी थी, उसी समय तूने मुझे काफी सता लिया था। तूने और तेरे पति ने हमे घर से निकाल कर ही दम लिया। अब फिर आयी है हमारी जिंदगी मे टाँग अडाने। अगर तेरा खसम नहीं है तो किसी और के पास जा मगर खबरदार जो मेरे मरद पर नजर डाली।...जा, निकल जा ! छिनाल ! दो-दो मरद चाहिए तुझे ! एक तेरा अपना मरद जो तुझे पीटे, और प्यार करने के लिए मेरा मरद। मगर मैं कहे देती हूँ... मेरा आदमी तेरे लिए नही हो सकता ! यहाँ से चली जा..."

केसरो ने कभी कल्पना भी न की थी कि गौरी ऐसा भी कर सकती है और न पंछी ने ही इस भूमिका मे उसकी कल्पना की थी। वह उन दोनों के पास खड़ी थी, उसका चेहरा तमतमाया हुआ था और वह सरसे पाँव तक काँप रही थी...पर वह एक काँपती हुई लपट के समान सुन्दर दिखायी पड़ रही थी।

"हरामजादी, तेरी यह मजाल कि मुझसे ऐसी बातें करे ! तू खुद न जाने कितने मरदों से आँख लड़ाती है ! छिनाल की जाई !"

गौरी ने बढ़कर केसरो का जूड़ा पकड़ लिया और उसके सुकोमल शरीर मे सहसा न जाने कहाँ से इतनी शक्ति और बल आ गया कि उसने उसे चारपाई पर से खीच लिया। उसके लाख हाथ-पैर पटकने और प्रतिरोध करने पर भी उसे धक्के देकर दरवाजे के बाहर निकाल दिया।

पंछी अपनी कुहनी का सहारा लिये लेटा हुआ यह सब कुछ देख रहा था पर वह बीच में न बोल सका, क्योंकि रोते रहने के कारण उसने

अपने-आपको मूक, दुर्बल और लाचार बना लिया था और इस कारण भी कि वह अपनी विनम्र गौरी में सहसा ऐसी उद्वेगमयी शक्ति देख कर निस्तब्ध रह गया था, जिस शक्ति ने उसे संहारकारी काली-माई का रूप प्रदान कर दिया था। जितनी थोड़ी देर के लिए केसरो वहाँ रही थी, उस बीच में उसके और उसकी चाची के बीच के बन्धन मजबूत नही हो पाये थे और उसकी गोद से हटकर उसका सर ज्यों ही फिर शून्य मे पहुँचा, वे बन्धन कच्चे धागे की तरह टूट गये।

जब गौरी लौट कर आयी, उस समय भी वह एक शब्द भी कहे बिना उसे घूर रहा था। एक क्षण बाद उसने कहा :

"मुझे एक गिलास पानी दे दो...और मेरी सलाह है कि तुम भी एक गिलास पानी पी लो।...मै तुम्हारी जगह होता तो मै जरूर पी लेता!"

वह पानी का गिलास लेकर आयी। उसका सारा शरीर क्रोध और भय से काँप रहा था। उसने अपने बायें हाथ से पछी का सर उठा कर उसे पानी पिला दिया।

एक-दो घूँट पानी पीने के बाद उसने गौरी को अपने पास खीच लिया...।

● ● ३

पानी के घूँट और गौरी के प्रेम का रस पीने के बाद पछी 'कोप-भवन' से बाहर निकल आया। दिन गुजरते गये और वह भी सताये हुए किसान की तरह पूर्ववत् अपना काम करने लगा; वह बिल्कुल भी लज्जित नही था। वर्षा न होने के कारण उस छोटे से गाँव का हर व्यक्ति विपदाओं के भँवर मे फँसा हुआ था, इसलिए गप्पों और बातचीत का बाजार मन्दा पड़ गया था और उनका स्थान गहरी आहों ने ले लिया था। सूरज की तेजी दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही थी। चारों तरफ पृथ्वी की छाती पर

पपड़ियाँ जम गयी थी। पंछी के हृदय मे अपने चाचा के खिलाफ घृणा की ज्वाला अभी तक धधक रही थी और उसका यह गहरा असंतोष रह-रहकर निराशा के रूप मे फूट पड़ता था। पर गौरी के प्रेम मे पतिसेवा का एक भाव आ गया था और इसके कारण पंछी गॉव के बड़े-बूढ़ों के हाथ अपने अपमान की व्यथा को भूल जाता था। उसकी ये सारी चिन्ताएँ भी दूर हो जाती थी कि यदि वर्षा न हुई तो उसके ऊपर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ेगा, फसल तबाह हो जायेगी और फिर बीरबल महाजन के यहॉ उसकी जो जमीन गिरवी है, उसका सूद न अदा कर सकने के कारण उसकी बाकी जमीन भी बिक जायेगी। इसका एक विचित्र परिणाम यह हुआ कि वह अपनी पत्नी को हृदय की गहराइयों से प्यार करने लगा। पहले वह उस पर इतना प्यार न लुटा सका था। अब वह दिन-रात उसके पास लेटा प्रेमालाप मे रत रहता, क्योंकि वह अपने चारों ओर की अनिश्चितताओं से अपने-आप को अलग करके गौरी के व्यक्तित्व के उन स्रोतों में लीन हो जाना चाहता था जहाँ से केवल प्यार ही प्यार प्रवाहित होता था। गौरी ने उसे पूरी छूट दे रखी थी, पर न जाने क्यों उसके हृदय को शाति नहीं मिलती और वह सोचने लगती कि क्या उसके लजीलेपन के कारण, जिसके कारण अभी तक उसका कौमार्य भंग नही हुआ था, पंछी की तुष्टि नहीं हो पाती।

पर एक दिन पंछी के मुँह से अपनी इस हताशा के बारे में एक ऐसी बात निकल गयी जिससे गौरी ने भी उस बात को जान लिया, जिसे पछी ने जान-बूझकर अपने हृदय मे अब तक छुपा रखा था। एक दिन पास के जंगल से वह जलाने लिए लकड़ी काटने गया था, वहाँ इत्तफाक से कुल्हाड़ी से उसने अपना पैर काट लिया। इसी बात की ओर संकेत करते हुए उसने कहा :

"मादर...मेरी तकदीर ही मेरे खिलाफ मालूम होती है।"

यह वाक्य अनायास ही उसके मुँह से निकल गया था, पर कुछ दिनों तक यह बात उसके सर पर भूत बनकर छायी रही। वह उस जन्मपत्री के

बारे में सोचने लगा जिसका जिक्र उसकी चाची केसरो ने किया था और वह उसकी इस बात पर दिन-रात विचार करता रहता कि गौरी के आने से उसके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा था। कुछ देर के लिए उसने इस बात पर विचार किया कि क्यों न वह पण्डित हरिहर के पास जाकर अपनी जन्मपत्री दिखा ले। पर मस्तिष्क में यह विचार आते ही उसे ऐसा लगा कि वह बड़ा कायर है क्योंकि उसने इस प्रकार के अन्धविश्वासों पर कभी यकीन नहीं किया था और वास्तव में वह अपनी माँ और केसरो के पूजा-पाठ पर हँसा करता था। हर पूजा के बाद जो प्रसाद बाँटा जाता था, केवल उसी के कारण वह इन चीजों को बर्दाश्त कर लेता था। न जाने कैसे उसके दिमाग में यह बात बैठ गयी थी कि उसके लिए, जिसके पास इस दुनिया में कुछ नहीं था, भगवान भी मर चुका है और उसकी दया का सहारा ढूँढ़ना बेकार है।...गौरी को मनहूस समझने के विचार पर उसे अपने-आप से घृणा हो रही थी, क्योंकि उसे याद था कि उस व्यथा के बावजूद, जिसमें कि उसने और उसके जीवन की परिस्थितियों ने गौरी को डाल रखा था, उसकी श्रद्धा में कभी कमी नहीं आयी थी। पर केसरो ने उसके दिमाग में जो यह भयानक विचार बैठा दिया था, उसे वह कैसे दूर करे? विशेष रूप से कई लोगों से उसकी आँख लड़ाने वाली बात को...

परन्तु गौरी के ग्रह खराब होने का विचार उसके दिमाग से नहीं उतरा क्योंकि वे परिस्थितियाँ, जिनके बारे में यह कहा जाता था कि वे गौरी के आने के फलस्वरूप पैदा हुई थीं, दिन-ब-दिन बदतर होती जा रही थीं, अकाल ने तो मानो वहाँ स्थायी रूप से अपना डेरा डाल लिया था, वर्षा का कहीं नाम नहीं था, गरमी के कारण खेतों में मरकर गिरने वाली चिड़ियों की संख्या बढ़ती जा रही थी, कुएँ सूखे जा रहे थे, मवेशियों की संख्या कम होती जा रही थी। जिन लोगों के पास गायें, भैंसें, बैल आदि थे, वे उन्हें घाटी में और नीचे होशियारपुर शहर की तरफ के गाँवों को ले जा रहे थे।...और उसके मनहूस होने की बात के साथ ही दूसरों से नजरें लड़ाने की बात, जो रह-रह कर उसके दिमाग में चुटकियाँ लेती थी,

एक ईर्ष्या का रूप धारण करती जा रही थी।

उसे अपना जीवन भार लगने लगा और वह इन बातों की तरफ से अपना मन हटाने के लिए गॉव के चक्कर लगाता रहता, पर उसके जाने के लिए कोई जगह नहीं रह गयी थी क्योंकि वह जहॉ भी जाता, उसकी उत्पीड़ित आत्मा उसके साथ रहती। वह हमेशा से ज्यादा बौखलाया हुआ रहने लगा।

आमों की उस घटना के बाद से उसने अपने मित्र रफीक चाचा के अलावा और सबसे बात करना छोड़ दिया था। रफीक चाचा के घर में बहुत समय से चाक न चलने के कारण यों ही कठिनाइयाँ बहुत बढ़ गयी थीं, उसके ऊपर से अनावृष्टि के फलस्वरूप पैदा होने वाले संकट का प्रभाव उस कुम्हार पर भी पड़ रहा था, इसलिए उन दोनों की बात-चीत भी छोटी-मोटी समस्याओं तक ही सीमित रहती थी।

एक दिन जब वह गौरी के प्रति अपनी बचकानी शंकाओं को दूर न कर सका तो उसने बूढ़े कुम्हार से सारी बातें कहकर अपने दिल का बोझ हल्का कर लिया; उसे यह भी बता दिया कि केसरो ने गौरी के बारे में क्या कहा था।

रफीक चाचा ने बड़े गौर से उसकी बात पर विचार किया। वैसे रफीक चाचा बहुत मस्त जीव थे और आमतौर पर किसी बात की चिन्ता नहीं करते थे, पर इस समय बात कुछ उल्टी ही थी; उनका चेहरा गम्भीर हो गया और माथे पर बल पड़ गये। वह बोले :

"तोबा ! तोबा ! बेटा, क्रोध में आयी हुई औरत, भयभीत साँप और घिरे हुए शेर का कोई भरोसा नहीं होता। तुम केसरो से गौरी के बारे में और क्या सुनने की आशा करते हो। फिर भी तुम्हें अपनी तरफ से चौकस रहना चाहिए। मैं तुम्हें एक ताबीज़ देता हूँ जो मसजिद के मुल्ला साहब, कई बरस हुए पाकिस्तान जाने से पहले मुझे दे गये थे। उससे तुम्हारी सब मुश्किलें दूर हो जायेंगी..." यह कह कर वह अलमारी में से चाँदी का एक ताबीज ढूँढ़ लाये, जिसमें एक गंदी-सी सफेद डोरी बँधी

हुई थी। तावीज़ पंछी को दिखाते हुए वह बोले, "यह हर मुसीबत से तुम्हारी हिफाजत करेगा और तुम्हारे सामने तुम्हारा कोई भी दुश्मन पनपने नहो पायेगा।" अपनी आँखें मूँदकर उन्होंने कुरान की आयतें बुदबुदा कर तावीज़ पर फूँकी और तावीज़ पछी को दे दिया।

यद्यपि पंछी अपने मित्र की इन हरकतों पर खुल कर हँसा नहीं पर गंडे-तावीज़ों और झाड़ फूँक मे उसे कोई विश्वास नही था।

रफीक चाचा समझ गये कि उसे इन चीजों पर विश्वास नहीं है, इसलिए वह उसे अधिक ठोस बातों से तसल्ली देने लगे, "बेटा, हिम्मत न हारो! हममे अभी भी जिन्दगी बाकी है। और याद रखो, अच्छे और बुरे दिन तो आते ही रहेंगे! हमारा मुल्क बहुत बडा है!...यहाँ फिर खेतियाँ लहलहायेंगी..."

पंछी की सहज ही प्रभावित हो जाने वाली आत्मा के लिए इन शब्दों ने प्रेरणा का काम किया। इसके बाद दो दिन तक वह अपने खेत के पास की नाली गहरी करता रहा क्योंकि सहसा आकाश पर बादल छा गये थे और धूलभरी हवा का बवण्डर गाँव के खेतों पर से गुजर चुका था। किसानों को आशा बँध चली थी कि अब वर्षा होगी, जिसकी प्रतीक्षा वे बहुत समय से कर रहे थे।

परन्तु पछी को सोचने का भी समय न मिलता था, इसलिए गौरी के मनहूस होने का विचार इस बीच मे उसके दिमाग में कभी उठा भी नहीं। उसके हृदय मे अन्धविश्वास की एक हल्की-सी लहर उठी और उसने सोचा कि शायद यह परिवर्तन रफीक चाचा के तावीज़ की वजह से आया है। धूल-भरी हवा का अपने साथ कई बवंडरों को उड़ा ले जाना भी उसे तावीज़ की ही करामात मालूम होती थी। शायद यह निशानी गौरी की मनहूसियत को दूर कर देगी या कम से कम उसे गौरी के खराब ग्रहों के प्रभाव से तो सुरक्षित रखेगी ही। पर इसका पक्का प्रमाण तो तब ही मिलेगा जब परिस्थिति में आमूल परिवर्तन हो जाय...जब वर्षा हो जाय। वर्षा हो जाने से यह संभव था कि सब कर्जे धुल जायें सारा गाँव

इस व्यथा से, दरिद्रता और तबाही की मुसीबत से छुटकारा पा जाय, जो आकाश पर एक विशाल घंटे की तरह लटकी हुई उन्हे धमका रही थी। यह घंटा मानो बिना ध्वनि पैदा किये बज रहा था और सैकड़ों मील तक विनाश का सन्देश सुना रहा था।

बादल थोड़े-बहुत जमा होना आरम्भ हुए थे, पर शीघ्र ही वह छँट गये और न बादलों की गरज सुनाई दी, न बिजली चमकी और न वर्षा ही हुई। सूरज की गरमी नारकीय आग को और बढ़ा रही थी। इसी ज्वाला की आँच मे धरती का गला प्यास से सूखा जा रहा था और यह ज्वाला सभी लोगों की आत्माओं और शरीर को चुपके-चुपके निरन्तर यातनाएँ पहुँचा कर, उनका रस निचोड़े ले रही थी। पंछी फिर व्यथा से विह्वल होकर मारा-मारा फिरने लगा हालाँकि ऊपर से वह जताता यही था कि उसे किसी बात की परवाह नही है। उसने मन ही मन यह प्रश्न किया : 'क्या यह सच हो सकता है कि मेरी अनुपस्थिति मे जब दामोदर घर आया था तब गौरी ने उससे प्रेम जताया हो ?'

अब वह गौरी के शरीर से भी दूर रहने लगा था; उसकी यह घृणा अपने दिमाग की उलझन को दूर करने की इच्छा से उत्पन्न हुई थी।

परन्तु उसके पास जानबूझ कर न जाने या उससे कतरा जाने या जब वह पास आये तो मुँह फेर लेने या उसे धक्का देकर अलग कर देने का परिणाम यह हुआ कि गौरी को अस्वीकार करने की उसकी आदत-सी पड़ गयी। यहाँ तक कि उसकी आत्मा भी, जिसने अन्धविश्वास और गौरी के प्रति उसकी शंकाओ का मुकाबला किया था, घृणा का शिकार हो गयी। उसके हृदय मे इस घृणा की लहरें उठतीं और कुछ देर के लिए दब जाने के बाद और भी अधिक जोर से उभरती और गौरी की जरा-जरा-सी गलती पर वह झुँझला उठता।

परन्तु गौरी तो अपने देवता और स्वामी की उपासना में ही विश्वास करती थी और वह उसे अपनी भक्ति और सेवा से ही जीतना चाहती थी। ब्याह के बाद शुरू के कुछ दिनों तक पंछी ने अपने चारों तरफ जो

दीवारें खड़ी कर रखी थी, उन्हें भी उसने इसी प्रकार तोड़ा था और पंछी को नरमी का बरताव करने और भावुकतामय प्यार करने पर मजबूर कर दिया था। वह हिन्दू पत्नी की तरह उस बेरुखी, अविश्वास और घृणा की जड़ तक पहुँचने के लिए बड़े धीरज के साथ सब कुछ सहने को तैयार थी, जो पंछी के हृदय में उसके प्रति पैदा हो गयी थी। क्योंकि अपनी अन्तरात्मा में वह विश्वास करती थी कि पंछी के हृदय में, जिसने एक जमाने में कोमल भावनाएँ प्रदर्शित करने की क्षमता का प्रमाण दिया था, प्रेम का एक अक्षय स्रोत मौजूद था, केवल आवश्यकता इस बात की थी कि अविश्वास का जो कचरा जमा हो गया था, उसे हटाकर हृदय के मूल स्रोत को साफ कर दिया जाये। बचपन में सुने हुए मीरा के भजन उसे याद थे और इसीलिए उसके हृदय ने कभी हार नहीं मानी। वह सोचती कि यदि मीरा अपनी भक्ति, त्याग और तपस्या से भगवान का हृदय पिघला सकती थी तो वह भी पंछी तक तो पहुँच ही सकती थी। अपने हृदय के दृढ़ निश्चय से प्रोत्साहित होकर वह अपना प्रतिदिन का काम एक विचित्र निश्चिन्त भाव से और बड़ी आत्म-मर्यादा के साथ करती रहती, जिसके कारण वह भावनाओं के प्रवाह में बह जाने से बची रहती थी।

इस प्रेममयी आकर्षक और सुकुमार लड़की की वास्तविकता के आगे, जो उसका क्रोध और उसकी घृणा, सब कुछ चुपचाप सहन कर लेती थी, पंछी के लिए हथियार डाल देने के अतिरिक्त और कोई चारा ही नहीं था। गौरी ने उसे पागलपन के इस उलझाव के दलदल से निकाल लिया और इसमें पछी ने किसी प्रकार की बाधा भी नहीं डाली। उसने उसे स्वीकार कर लिया, और उसे फिर भरपूर उमग के साथ प्यार करने लगा। कई दिन तक कुढ़ते रहने के कारण उसका प्रेम अवरुद्ध हो चला था। और अब प्रेम की धारा फिर से प्रवाहित हो जाने के कारण वह काफी नरम भी पड़ गया था और गौरी के शरीर के लिए उसमें इतना तीव्र आकर्षण उत्पन्न हो गया कि उसने कसम खायी कि वह अब कभी

इस विचार को अपने दिमाग में नहीं घुसने देगा कि उस पवित्र आत्मा पर बुरे ग्रहों का प्रभाव भी हो सकता है। उसने इस बात को समझ लिया था कि वह धैर्य के साथ प्रतीक्षा करेगा, उतने ही धैर्य के साथ जैसे उसने वर्षा की प्रतीक्षा की थी और भगवान उसी प्रकार कृपावृष्टि करेंगे, जैसे गौरी ने उस पर अपने प्रेम की वर्षा की थी।

वह इन्हीं भावनाओं में खोया रहा। एक दिन बहुत सबेरे गौरी ने उसे प्रेम के अनिवार्य परिणाम की सूचना दी। उसने बहुत शरमाते हुए कहा :

"अब तो पानी को बरसना ही पड़ेगा...मैं माँ बनने वाली हूँ...और शीघ्र ही हमें एक और प्राणी का पेट पालना पड़ेगा।"

सहसा इस रहस्योद्घाटन के आघात ने उसे अवाक् कर दिया। एक क्षण के लिए उसके चेहरे पर आत्माभिमान की लाली दौड़ गयी। मनुष्य के हृदय में पहली बार पिता बनने का जो भय होता है, वह सहसा उसकी अन्धकारमय आत्मा पर छा गया; उसे होने वाले बच्चे की चिन्ता सताने लगी। उसने एक क्षण तक इस परिस्थिति को पूरी तरह समझने का प्रयत्न किया और फिर मूर्खों की तरह प्रश्न किया :

"लेकिन यह कैसे हो गया ?...कब ?..."

गौरी ने पछी के विचारों को ताड़ते हुए उत्तर दिया, "लोग कहते हैं, हर बच्चा अपना भाग्य साथ लेकर पैदा होता है। शायद अब हमारा भाग्य भी बदले..."

●●४

परन्तु गौरी अपना वह सीधा-सादा विश्वास, जो गर्भवती माता के स्पंदनशील शरीर में होता है, पंछी की अनुभव-हीन आत्मा में नहीं भर सकी। और वह ऐसी उलझन में फँस गया जैसी उलझन में वह

अबसे पहले कभी नहीं पड़ा था। उसके हृदय मे विभिन्न भावनाओं का एक घोर तूफान उठ रहा था और वह अपने होश-हवाश बिल्कुल खो बैठा था। सहसा उसमें कायरता की भावना इतनी प्रबल हो उठी कि एक दिन जब गौरी उसके पॉव दबाने आयी तो उसने उसे अपने पास से ढकेल दिया और बड़ी निर्दयता से ठोकर मारकर बोला :

"जा, अपनी मॉ के घर जा, अपनी यह मनहूसियत लेकर चली जा यहॉ से ! अगर वर्षा हुई तो मैं समझूँगा कि मेरी चाची केसरो जो कहती थी वह झूठ था !...और अगर न हुई तो मै अपने प्राण दे दूँगा। और तू अपना और अपनी औलाद का पेट पालने का कोई रास्ता ढूँढ़ लेना...।"

इस कायरतापूर्ण क्रोध के कारण उसका चेहरा विकृत, कुरूप और काला मालूम पडने लगा।

गौरी ने ऑखें उठाकर देखा। उसके हृदय को बहुत आघात पहुँचा था, उसे क्रोध भी आ रहा था और यह अपमान उसके लिए असह्य हो गया था। फिर उसे सहसा अपनी लाचारी का आभास हुआ और उसने उसके क्रोध को यह सोचकर चुपचाप सहन कर लिया कि पहले की तरह यह तूफान भी गुजर जायेगा। पर वह दोनो हाथ ऊपर उठाये चिल्लाता हुआ गौरी की तरफ बढ़ा, "किसका है यह ? मेरा है या और किसी का ?"

"और किसका हो सकता है ?" गौरी ने चिल्लाकर कहा। और फिर नरम पड़कर विनीत स्वर मे बोली, "मैं तुमसे हाथ जोड़कर विनती करती हूँ, इतने निर्दयी न बनो। यह शंका अपने मन से निकाल दो !..."

उसकी कमजोरी और बेबसी को देखकर वह कॉप गया, अपना मुँह फेर कर और हाथ से छुपाकर केवल यही चिल्लाता रहा :

"जा, चली जा ! दूर हो जा मेरी ऑखों के सामने से ! जा अपनी मॉ के पास। वह शायद तुझे और तेरी औलाद दोनों के खिलाने भर के लिए काफी कमा लेगी !...और तेरे उस बदमाश मामा के पास भी तो खाने की कोई कमी नहीं है !"

गौरी उसके पैरों पर गिर पड़ी, हाथ जोड़कर गिड़गिड़ायी :

"मुझे इस तरह न निकालो।"

पंछी ने उसे धक्का देकर हटा दिया; उसकी इस ठोकर के पीछे उस अभिमान और क्रोध का जोर था जो महीनों तक मन-ही-मन अपमान सहते रहने के कारण उसके हृदय में जमा हो रहा था। वह गिर पड़ी और पंछी ने बड़ी निर्ममता के साथ उसके शिथिल शरीर की तरफ से मुँह फेर लिया। अनावृष्टि के आगे अपना कोई बस न चलने के कारण ही उसमें यह पाशविकता आ गयी थी, और उसके करुण क्रन्दन को सहन न कर सकने के कारण वह घर से बाहर चला गया।

गौरी ने बड़ा प्रयत्न करके अपना सर उठाया और चुप हो गयी, पर थोड़ी देर बाद फिर आँसुओं की धारा बह चली और बीच-बीच में सिसकियाँ लेती हुई वह उठी और अपनी गठरी बाँधने लगी। उसने दृढ़ निश्चय कर लिया था कि वह अब अपने गर्भ पर किसी प्रकार का पाशविक प्रहार न होने देगी।

चार

●●१

लक्ष्मी ऑगन के एक कोने मे बैठी अपनी गाय चन्दरी का दूध दुह रही थी; वह चौंककर बोली, "अरी, तू कैसे ?" अपनी बेटी गौरी को अपने पास खड़ा देखकर पीतल की छोटी-सी गगरी उसके हाथ से छूटते-छूटते बची।

एक क्षण रुककर बुढ़िया ने जल्दी से दूध की गगरी एक तरफ रख दी और बनावटी मुहब्बत के साथ रोते हुए गौरी को अपने कलेजे से लगा लिया।

अपने मायके मे पैर रखते समय गौरी का दिल धड़क रहा था क्योंकि उसे ठीक से नहीं मालूम था कि उसका स्वागत किस प्रकार किया जायेगा। यह देखकर गौरी को बड़ी शाति मिली कि उसकी मॉ ने कम से कम बनावटी मुहब्बत तो दिखायी।

चन्दरी गाय भी अपनी बहुत दिन की बिछुड़ी हुई बहन का स्वागत करने के लिए रँभाने और सर झटकारने लगी, क्योंकि ब्याह होने से पहले गौरी ही उसकी देखभाल करती थी। रस्सी तुड़ाकर गौरी के पास पहुँच जाने की कोशिश में उसने दूध की गागर ही उलट दी होती।

"माँ, वह दूध की गागर सँभालना !" गौरी ने अपनी मॉ की सिसकियों से पीछा छुड़ाते हुए कहा।

लक्ष्मी जल्दी से गागर की तरफ लपकी और गिरने से पहले ही उसे चन्दरी के पैरों के पास से हटा लिया।

गौरी गाय के पास जाकर उसे थपथपाने लगी। उसने बड़े प्यार से चन्दरी के मुँह पर हाथ फेरा, उसकी गरदन सहलायी। चन्दरी प्यार

और कृतज्ञता से दो-चार बार और रँभाकर शान्त हो गयी।

"अरे अमरू! ओ अमरू! अरे आ, देख तो...देख कौन आया है। हमारी गौरी आयी है!..." वह बुढ़िया चाहती थी कि अगर कोई मुसीबत आनेवाली हो तो वह अपने भाई के साथ मिलकर उसका मुकाबला करे। उसकी आवाज में घबराहट का साफ पता चलता था। वह दुनिया देखे हुए थी, और यह ताड़ गयी कि गौरी किस कारण लौटकर मायके आयी थी और यही उसकी घबराहट का कारण था। पर वह चन्दरी के पास बैठी दूध दुहती रही।

गौरी को भी अपनी माँ की परेशानी का कुछ-कुछ आभास हो गया और उसने अपने आने के सही कारण को छुपाने के लिए बड़ी बेपरवाही से बहाना बना दिया:

"पिपलाँखुर्द में मेरा जी घबराने लगा...इसीलिए मैं यहाँ चली आयी।..."

वह इस प्रकार का झूठ पहले शायद ही कभी बोली हो, इसलिए उसका चेहरा लाल हो गया। सुबह की गरमी और तीन मील पैदल चलने की थकान से उसके चेहरे की तमतमाहट और भी बढ़ गयी।

यद्यपि गौरी चन्दरी के पास से हट आयी थी पर लक्ष्मी ने उसके चेहरे पर घबराहट के चिह्न देख लिये। उसी क्षण उसने यह अनुभव किया कि अब गाय और ज्यादा दूध नही देगी क्योंकि अपनी सहेली के लौट आने की खुशी में उसका दूध सूख गया था।

लक्ष्मी ने शिकायत के भाव से कहा, "लो देखो, चन्दरी फिर नखरे करने लगी, बिल्कुल वैसे ही जैसे कि वह तुम्हारे लाड़-प्यार के कारण करती थी। यह अब दूध नही देगी। हे भगवान्!...मै तुम सब लोगों का क्या करूँ?...गौरियाई, तू तो जानती है कि यहाँ का हाल बहुत बुरा है। पानी बिल्कुल बरसा ही नहीं। ले-देकर यह गाय ही मेरा सहारा रह गयी है, सो उसका भी चारा किसी मोल नहीं मिलता। और तेरे मामा अमरू की गेहूँ की फसल बिल्कुल तबाह हो गयी है।...हमारी फसल,

खेत, भूसे की खत्तियाँ—सब कुछ जाता रहा !...अरे, कहाँ है तू ? घर मे बेटी आयी है और तू है कि..."

"माँ, पिपलाँखुर्द मे भी यही हाल है," गौरी ने अपनी गठरी बरामदे में रखते हुए कहा, और लकड़ी के उस एकमात्र चौकोर खंभे से लिपट कर खड़ी हो गयी जो इस बरामदे की छत को सँभाले हुए था। और कुछ झूम-झूम कर, जैसे वह बचपन मे भी किया करती थी, वह एक-एक शब्द को तौल-तौल कर बोलती रही, "सच बात तो यह है कि इसीलिए..." पर वह अपना वाक्य पूरा न कर सकी।

इसी बीच हाथ मे अपनी नारियल की गुड़गुड़ी लिये हुए उसका मामा अमरू आ गया। उसकी छोटी-छोटी मूँछों मे एक मुस्कराहट नाच रही थी, जो घर मे बहुत दिन बाद किसी के आने के समय दिखायी जाने वाली बनावटी—रस्मी मुहब्बत की द्योतक थी।

गौरी ने खम्भा छोड़कर सर पर थोड़ा-सा आँचल और सरका लिया और हाथ जोड़कर दबी जबान से बोली, "मामा, पाँयलागी !" कहते हुए वह मामा के पैरों पर माथा टेकने के लिए झुक गयी।

अमरू ने उसके सर पर हाथ रखकर उसे आशीर्वाद दिया और उठा लिया। फिर वह बान की मचिया पर बैठ कर बोले :

"बिटिया, हमें सन्देसा तो भेज दिया होता !...या अपने पति के साथ आयी होती..."

गौरी ने कोई उत्तर नहीं दिया। थोड़ी देर तक पूर्ण निस्तब्धता छायी रही, जिसमें लक्ष्मी के लस्सी बनाने की आवाज, चौके और बरामदे मे गूँजती रही। प्रातःकाल के सूरज की चमक सारे आँगन में छायी हुई थी और जो किरने चौके मे पड़ रही थी, जहाँ लक्ष्मी बैठी हुई थी, वे तो अपनी तेजी से हर चीज को झुलसाये दे रही थी।

"कोई गड़बड़ तो नहीं है ?" अमरू ने गंभीर मुद्रा बनाकर गौरी की तरफ देखकर पूछा।

गौरी ने कोई उत्तर नहीं दिया और बिल्कुल शान्त बने रहने की

कोशिश की ताकि उसका भेद कहीं खुल न जाये। यह भय कि कहीं उन लोगों को सच बात का पता न चल जाये, उसके अन्दर समा गया था। उसकी नाक पर पसीना आ गया। और फिर गरमी भी तो पड़ रही थी।

"बिटिया, पंखा ले लो," लक्ष्मी ने हाँडी में से छाछ पर का मक्खन उतार कर एक कटोरे में रखते हुए बड़े अर्थपूर्ण ढग से कहा। फिर वह अमरू की तरफ मुड़ी और वहाँ के वातावरण मे कुछ नरमी लाने के लिए बोली, "मैं समझती हूँ कि अब कुछ दिन में यह अकाल दूर हो जायेगा!"

यह सुनकर गौरी को कुछ धीरज बँधा।

"मगर भौ, पिपलौखुर्द मे तो उसके दूर होने की कोई उम्मीद दिखाई नही देती। खेती को बहुत नुकसान पहुँचा है...अब कोई चारा नही रह गया है!...और तुम तो जानती ही हो, उनकी जमीन लाला बीरबल ठेकेदार के यहाँ गिरवी रखकर ब्याह के लिए पैसा लिया गया था! और अब...।"

"और अब क्या?" अमरू ने पूछा। गौरी के एक-एक शब्द को सुनकर उन्हें ऐसा लग रहा था कि जैसे कोई बहुत बड़ी मुसीबत आ रही है।

"और अब उनकी चाची..." गौरी ने कुछ कहना चाहा पर वह इससे ज्यादा कुछ कह न सकी।

"बेटी, कोई भी सास अपनी बहू के साथ अच्छा सलूक नही करती!" लक्ष्मी ने कहा, "और तुम्हे भी हठ करने के बजाय दबकर रहना चाहिए था! मगर हमेशा से छल-कपट भी तुम्हारे अन्दर बिल्कुल 'मीसनी' जैसा है। मेरी तरह नही कि जो बात दिल में हुई कह दी, कभी कोई बात दिल में रखी ही नहीं..."

"उनके चाचा..." गौरी ने एक बार फिर कुछ कहने का प्रयत्न किया, "उन्होंने उनके साथ बड़ा बुरा बरताव किया!" और एक बार फिर उसकी जबान रुक गयी।

"तुम्हे तो सभी मामा-चाचा बुरे लगते है," अमरू ने अपनी बचत करते हुए कहा, "आज कल के लड़के-लडकियाँ बड़ों की, समझदार लोगों की इज्जत नही करते। मैने पंछी के मोलाराम के घर से अलग हो जाने की बात सुनी है। मुझे यह भी मालूम है कि उसने तुझे जो बालियाँ दी थी, वह उन्हे यहाँ आकर बेच गया था और जो पैसे मिले थे वह सब शराब में उडा दिये !"

"नही, उन्हे बीज खरीदना था और गिरवी की रकम का सूद देना था।" गौरी ने कहा। यद्यपि उसके पति ने उसे मार कर घर से निकाल दिया था, फिर भी उसने उसकी तरफ से सफाई देना अपना कर्तव्य समझा।

"अरे वह शराबी, बदचलन ! क्या मै उसे जानता नहीं ?" अमरू ने चिल्लाकर कहा।

"लो, लस्सी पीकर अपना गुस्सा ठंडा कर लो," लक्ष्मी ने अमरू के आगे लस्सी का गिलास रखते हुए कहा। और फिर गौरी के सामने लस्सी का एक छोटा गिलास रखते हुए वह अमरू से बोली, "उसे गालियाँ तो न दो ! कुछ भी हो, वह हमारा दामाद है ! मगर मेरी इच्छा थी कि वह तुम्हारे साथ आता। हम उससे कुछ पैसा कर्ज ले लेते। आखिर वह बालियाँ जो उसने बेची हैं..."

"माँ, बेची नही गिरवी रखी हैं !"

"अच्छा गिरवी ही सही ! मगर वह कुछ पैसे तो हमे दे जाता। बेटी, वह जेवर तो असल मे तेरा था। दहेज भर मे वही तो एक असली सोने का जेवर था, और उस पर तो हमारा हक भी है..."

देर तक चुप रहने के बाद अमरू ने घड़ा फोड़ दिया और बोला, "शायद इसके मरद ने इसे घर से निकाल दिया है। जैसे यह कुलच्छिनी यहाँ हमारे ऊपर मुसीबते लाती रही है, जिनसे हम कभी उबर ही नही सके, वैसे ही यह उस पर भी मुसीबतें लायी होगी !"

"ऐसा न कहो ! भगवान न करे !" लक्ष्मी ने भावावेश में आकर

कहा।

"उन्होंने मुझे यहाँ मायके इसलिए भेज दिया है कि बहुत बुरा समय आ पड़ा है; घर में खाने के लाले पड़ गए थे," गौरी ने अपने बचाव में कहा, "इसलिए नहीं कि मैं मनहूस हूँ! और..."

"और क्या?" अमरू ने अधीर होकर पूछा।

गौरी चुप रह गयी। और एक क्षण के लिए यह निस्तब्धता सारे वातावरण में छा गयी। सूरज ऊपर चढ़ रहा था। गरमी बढ़ती जा रही थी। चारों तरफ आग सी लगी हुई थी।

"बेटी, क्या बात है? अगर अपने मामा से डर लगता है तो अपनी माँ से तो बता दे!" और फिर वह बुढ़िया लस्सी का गिलास हाथ में उठाये उसकी तरफ झुककर बोली, "ले, यह पी ले और अपना जी ठंडा कर ले। अभी मैं तेरे नहाने के लिए पानी रखे देती हूँ, तू नहायेगी नहीं? कुछ तबियत खराब है?"

"माँ," गौरी ने कहना आरम्भ किया और फिर चुप हो गयी। थोड़ी देर बाद उसने झुककर अपनी माँ के कान में कहा, "मैं पेट से हूँ, इसीलिए उन्होंने मुझे मायके भेज दिया है!"

"है!" अमरू ने चिल्लाकर कहा, "और मुसीबत आने वाली है लक्ष्मियाई! एक जीव का पेट और पालना पड़ेगा।"

"बेटी, तू फिकर न कर, बिल्कुल चिन्ता न कर," लक्ष्मी ने उसे धीरज बँधाया। यह बात सुनकर परेशान तो वह भी हो गयी थी पर यह सोचकर कि शीघ्र ही उसे नानी बनने का गौरव प्राप्त होगा, सहसा उसकी नस-नस में ममता फड़फड़ाने लगी।

●●२

सुबह अमरू ने जो बातें मालूम कर ली थीं, उनसे लक्ष्मी को पूरी परिस्थिति का अंदाजा हो गया कि उसकी बेटी और दामाद के बीच क्या

झगड़ा हुआ होगा। और लक्ष्मी तो आदमी की नस-नस को इतनी अच्छी तरह पहचान लेती थी कि तीसरे पहर ही वह गौरी को ऐसी-ऐसी बातें बताने लगी, जिनके बारे में गौरी का ख्याल था कि वह उसके और पंछी के गुप्ततम भेद हैं; पर लक्ष्मी उन बातों को डॉटने और धिक्कारने के ढंग से नहीं बल्कि सहानुभूति, सान्त्वना और नसीहत के ढंग से कह रही थी।

गौरी चौके के पास वाले बरामदे में खाना खाकर जिस चटाई पर सो गयी थी, अभी तक उसी पर पड़ी हुई थी और लक्ष्मी अपना चरखा लिये बैठी थी। लक्ष्मी ने कहना आरंभ किया, "बेटी, पंछी को तुझे लेकर आना चाहिए था और खासतौर पर तुझे इतनी बुरी तरह पीटकर निकाल देने के बाद।"

"माँ, उन्हें गुस्सा इसलिए आ गया कि हर तरफ से उन्हें बहुत सताया जा रहा था।" गौरी को आश्चर्य हो रहा था कि उसकी माँ को यह कैसे मालूम हो गया कि पंछी ने उसे मारा था।

लक्ष्मी बोली, "मैं तो यही मनाती हूँ कि कहीं तेरी कोख के बच्चे को कोई हानि न पहुँची हो। उस जंगली ने तेरी दाहिनी कलाई और पीठ पर कितने जोर से मारा है...अभी तक गहरे-गहरे निशान पड़े हैं...जिस तरह उसने तुझे मारा है उससे तो लगता है कि अगर बस चलता तो उसने तुझे मार ही डाला होता।"

गौरी समझ गयी कि शायद उसकी माँ ने सफर की थकान के बाद ऑगन में नहाते समय उसके शरीर पर चोट के निशान देख लिये थे। उसने कुछ कहा नहीं क्योंकि उसे ऐसा लगा कि उसकी माँ उससे पंछी के पाशविक व्यवहार की पुष्टि कराना चाहती है। गौरी की ऑखों में एक विचित्र-सी चमक थी, मानो वह प्रार्थना कर रही हो कि अपने पति के हाथों उसने जो पिटाई और अपमान सहन किया था, उसके बारे में और ज्यादा बातें करके उसे लज्जित न किया जाय। उसकी दशा अत्यन्त दयनीय थी, फिर भी यह सोचकर वह बिल्कुल खिची-खिची रहना चाहती थी कि पिछले तीन

महीनो की यातनाओं के दुःख को वह केवल अपने आत्म-बल की सहायता से दूर कर सकती है, यद्यपि यह सच था कि इस उद्देश्य से उसने शरण लेने के लिए जो स्थान ढूँढ़ा था, वह उसकी माँ का घर था।

लक्ष्मी ने हार न मानी, फिर पूछा, "तब तू उसी वक्त पहले क्यों न आ गयी जब उसने केसरो के कहे मे आकर तुझे पीटा था? हम गरीब सही, मगर किसी न किसी तरह गुजारा कर ही लेते!...और वह अकेला मरद तो है नही..."

गौरी ने कुछ कहा नही पर अपने पति के लिए लक्ष्मी की इतनी अपमानजनक बातें सुनकर गौरी ने उसे इतने जोर से घूरकर देखा कि वह अपनी बात भी पूरी न कह सकी। "माँ, मगर मेरा ब्याह तो अब हो चुका है।" गौरी के चेहरे का करुण भाव एक प्रज्वलित रोष मे परिवर्तित हो गया।

बरामदे मे जैसे गरमी की लहरो की कई तहें छायी हुई थी और इसी वातावरण मे एक तनाव ओर पैदा हो गया। एक तरफ तो वह बुढ़िया अपनी बेटी के भविष्य के मंसूबे बाँध रही थी और दूसरी तरफ गौरी मन-ही-मन अपने पति से मिलने के लिए तड़प रही थी।

घृणा की उन्मत्त लहरों पर जब उन दोनो की भावनाएँ काफी देर तक हिलोरे ले चुकी तो बुढ़िया ने चरखा चलाना बद कर दिया और शान्ति को भंग करते हुए बोली :

"उठ, जा कर हाथ-मुँह धोले और हाँडी मे से थोड़ा-सा दूध निकाल कर पी ले!"

फिर वह स्वयं गरमी और पसीने की यातना से मुक्त होने के लिए पंखा झलने लगी।

पंछी के बारे मे गौरी के कोमल विचारों की शृखला भंग हो गयी और वह उस भय के बारे में सोचने लगी जो अपनी माँ का अन्तिम वाक्य सुनकर उसके हृदय मे पैदा हो गया था। वह इस भय के गर्त में खो गयी; वह इस गढ़े मे बड़ी तेजी से नीचे गिरी जा रही थी। उसकी आँखे

बद होने लगी; उसे सहसा गरमी लगने लगी और उसके विचार धुँधले पड़ने लगे, फिर भी वह अपनी माँ की दुष्टता का विरोध कर रही थी। वह माँ की युवावस्था के घिनावने किस्से सुन चुकी थी। वह यह भी जानती थी कि उसने उसके पिता के साथ विश्वासघात किया था। कुछ-कुछ लोग तो यहाँ तक कहते थे कि लक्ष्मी ने ही उन्हें जहर दे दिया था। और उसकी माँ को सोने-चाँदी का जितना लोभ था उसे तो वह अपने अनुभव से जानती थी। इसलिए वह कुछ भी कर सकती थी, विशेष रूप से अकाल के इस जमाने में, जिसने उसके ससुराल की ही तरह यहाँ भी कोई सहायता पाने की उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया था। एक क्षण के लिए उसके हृदय की कोमल भावनाओं ने उसे वश में कर लिया और उसकी आँखों में आँसू आ गये—लाचारी और थकन के आँसू। पर फिर किसी तरह उसकी जीवित रहने की अभिलाषा ने उसे उस अभेद्य भीत के पीछे सुरक्षित कर लिया, जिसमें से होकर पंछी के अतिरिक्त किसी दूसरे को पति बनाने का कोई भी सुझाव या विचार उस तक नहीं पहुँच सकता था। उसके दिल को कुछ ढाढ़स बँधा और उसने उठकर बैठने का प्रयत्न किया।

"बेटी, जाकर मुँह-हाथ धो ले, तेरे मामा कुछ मेहमानों को लेकर आते होंगे!"

गौरी को उस सर्वनाश का पूर्वाभास हो चुका था जिसकी तैयारी में उसकी माँ लगी हुई थी, उसकी यह शंका और पुष्ट हो गयी। वह झटपट उठकर बोली :

"माँ, मैं पारो, कमली, राजो और रूपा से मिलने जा रही हूँ!"

और यह कहते-कहते वह नंगे पैर तपती हुई जमीन पर दौड़ती हुई आँगन को पार करके दरवाजे से बाहर निकल गयी। लक्ष्मी पुकारती रह गयी :

"अरी! तू कहाँ जा रही है, बता न कहाँ?...ठहर तो!"

● ● ३

गौरी जानती थी कि इस समय उसकी सहेलियाँ कुएँ पर होंगी। इसलिए तीर की तरह गली को पार करके वह मुसलमान जुलाहों के गिरे-पड़े मकानों से होकर, जो बँटवारे के दंगो के जमाने मे नष्ट कर दिये गये थे, छोटे रास्ते से खेतो के पास पहुँच गयी, जहाँ जीवन-सुधा का स्रोत था। उन ध्वस्त खंडहरों को देखकर, जहाँ एक जमाने मे मुसलमानों के घर आबाद थे, उसकी एकान्त की भावना और उग्र हो उठी : उसे याद आ आ रहा था कि मुस्तफा जुलाहे के बेटे आगा की हत्या करने मे उसके मामा अमरू ने कैसे आगे बढ़ कर हिस्सा लिया था; और यह सोचते ही वह सिहर उठी। अपने हृदय को शान्त करने के लिए वह कुएँ के पास एकत्रित औरतों को पहचानने का प्रयत्न करने लगी। उसने पारो को पहचान लिया; वह दूसरी औरतों के पास अपने घड़े लिये प्रतीक्षा कर रही थी।

उसने चिल्लाकर आवाज दी, "पारो ! पारो !"

पारो उठी और सूरज की चमक से बचने के लिए अपने माथे के सामने हाथ रख कर उसने गाँव की तरफ देखा। उसने गौरी को पहचान लिया, परन्तु अपनी विवाहिता सहेली को गाँव मे वापस आया देखकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ और वह चिल्लाती हुई भागी—"अरी तू कहाँ से आयी ? कैसे आयी ?" गौरी तब तक उसके पास पहुँच चुकी थी।

"बड़ी अजीब बात है," पारो बोली, "मेरी छोटी बहन रूपा कह कह रही थी कि शायद उसने आज सुबह तुम्हें हमारी गली से जाते हुए देखा था।"

"कमली कहाँ है ? और राजो !"

"वे कुएँ पर पनी भरने आती होंगी।...मगर बहन इस सूखे के कारण पानी इतना कम रह गया है कि हमें शाम तक इंतजार करना पड़ता है; कहते हैं कि उस वक्त पानी कुछ चढ आता है।...इसलिए वह लोग देर से आती हैं।"

"मैं तो समझती थी कि तुम सब लोग यही होगी।" यह बात कहते समय गौरी ने औरो से मिलने की इतनी उत्कंठा प्रकट की कि पारो ने तुरन्त उत्तर दिया :

"तुम जाकर जुलाहो के घरों वाले खंडहरो मे इंतजार करो, मै कमली और राजो को अभी बुला कर आती हूँ।...पानी भरने की मेरी बारी बहुत देर मे आयेगी।"

"अच्छा, लेकिन मै वहाँ खंडहरो मे अकेली नही जाऊँगी। और न मै कुएँ पर जाऊँगी, क्योंकि सब लोग बेकार चर्चा करेगे। मै पीपल के नीचे सूखे तालाब के पास, जहाँ हम लोग झूला झूलते थे, तुम्हारा इन्तजार करूँगी।"

"हाँ, मगर जब हम लोगों को आते देखना तो तुम पीपल के तने के पीछे छुप जाना और तब हम लोग उन लोगों को यह कह कर डरायेंगे कि तुम नही बल्कि तुम्हारा भूत आया है।"

गौरी जल्दी-जल्दी कदम बढ़ाती हुई पीपल की तरफ चल दी क्योंकि उसके पाँवों के नीचे जमीन जल रही थी और मूर्खतावश वह घर से निकलने से पहले जूतियाँ पहनना भूल गयी थी। पीपल का पुराना पेड कोई पचास गज की दूरी पर था, शीघ्र ही वह छाया मे पहुँच गयी। वहाँ आस-पास कोई नहीं था। पीपल की जड़ के पास गोल चबूतरे पर एक बड़ा-सा पत्थर रखा था जिस पर महाबीरी पुती हुई थी। यही भैरों की मूर्ति थी। पुरानी स्मृतियाँ आकर उसकी चेतना पर छा गयी। उसे याद आ रहा था कि अपनी माँ के साथ वह इसी मूर्ति के पास न जाने कितनी बार विचित्र ढग की पूजाएँ करने आयी थी। बचपन में अपनी माँ के कहने पर वह हमेशा मूर्ति के सामने हाथ जोडती थी, पर इस

समय न जाने क्यों वह हाथ न जोड़ सकी।

'काश मैं मायके लौटकर न आयी होती।' उसने अपने मन मे बुदबुदा कर कहा, पर यह बात उसके मुँह से इतने जोर से निकल गयी कि अगर कोई पास खड़ा होता तो सुन लेता। गॉव से इतनी दूर जब उसे अपने मॉ के व्यवहार की याद आयी तो उसे ऐसा लगा कि कुछ भी हो सकता है। मन-ही-मन वह अपने पति को कोस रही थी, पर वह अपना यह प्रतिरोध शब्दो मे व्यक्त नही करना चाहती थी। 'आखिर उन्हे मुझे इस तरह वहॉ से भेज देने की क्या पड़ी थी?' उसने मन-ही-मन यह प्रश्न किया।

वहॉ के एकान्त वातावरण मे वह फिर सुखद कल्पनाओं के जगत मे विचरने लगी, जब वह अपना सर्वस्व अपने पति को समर्पित कर चुकी थी। उसके बाद उसके पति ने जिस प्रबल उन्माद के साथ उसे भीच-भीच कर हलकान कर दिया था, उन चंचल स्मृतियो से उसकी ऑखे अनायास ही नीचे झुक गयी; और उसके पति ने उसके हृदय मे आलिंगन के उन्माद की जो ज्वाला प्रज्वलित की थी, उसका विचार आते ही उसके हृदय मे एक लहर-सी दौड़ गयी!...यह सब कुछ होने के बाद उसने उसे भेज कैसे दिया? वह उसका मारना-पीटना, उसका गुस्सा और उसका रूठना, सब कुछ समझ सकती थी, पर उसके इस तिरस्कार को नही समझ सकती थी। विशेष रूप से ऐसी दशा मे जब कि वह उसकी सन्तान को गर्भ मे धारण किये थी और उसे अपनी कोख के इस उत्तरदायित्व के वहन के लिए तितस्कार की नही, बल्कि प्रेम की बातो और लाड़-प्यार की आवश्यकता थी।...उसने सोचा कि उसे अपनी पूरी शक्ति के साथ उसे दोनों हाथों से पीटना चाहिए था, ताकि उसे उसकी कोख की उस अबोध नन्हीं सी जान की चीत्कार का आभास हो जाता जिसे सुनने से वह डरता था।...पर अब यह सब कुछ करने के लिए बहुत देर हो गयी थी क्योंकि उसने अपने और अपने पति के बीच एक फासला खड़ा कर लिया था।...कौन जाने सहसा उसे पश्चात्ताप हो और वह

उसके पास आ जाये ! पर गौरी ने उसकी आँखों में इतनी पीड़ा, इतना क्रोध और इतनी हिंसा कभी नहीं देखी थी जितनी कि उस समय थी जब वह उसे पीटने के बाद मुँह फेरकर चला गया था। नहीं, उसने उसे हमेशा के लिए त्याग दिया गया था। और अब उसे स्वयं को अपने ही तक सीमित रखना होगा...उसे अपनी विपदा तथा थोड़ा-बहुत जो भी भोजन जुटे, उसी पर अपनी कोख के लाल का पोषण करना होगा। ...उसकी आँखों में सहसा आँसू छलक आये और उसका मुँह इस तरह विकृत हो गया जैसे वह सिसक-सिसक कर रोने वाली हो, पर उसने रुदन को दबा दिया कि कहीं उसकी सहेलियाँ आकर उसे रोता हुआ न देख लें।...वे उसी ओर चली आ रही थीं—पारो, कमली और रूपा,पर राजो उनमें कहीं दिखायी नहीं देती थी। अपने-आप को वश में रखने के लिए वह एक गीत गुनगुनाने लगी, पर उसकी जबान पर एक ही धुन आ रही थी जो अपनी पत्नी के साथ एक पति के विश्वासघात से सम्बन्धित लोकगीत की धुन थी :

फिराक़ तेरे विच रातां रोवां

गौरी को देखते ही उसकी सहेलियाँ उसकी तरफ दौड़ीं। पारो पीछे रुक गयी कि वे भी अपनी सहेली से जी भरकर अच्छी तरह मिल लें।

गौरी ने अपनी बाँहें खोलकर पारो की ग्यारह-वर्षीय बहन रूपा को अपने सीने से लगा लिया। गौरी से लिपटकर उस बच्ची के चेहरे का रंग प्रायः बिल्कुल सिंदूरी हो गया। इस सरल प्रेम और उस भोली-भाली अल्पवयस्क बालिका के शरीर की विचित्र सुरभि के आगे गौरी अपने को और अधिक रोक न सकी। वह बच्ची भी रोने लगी और जब पारो ने आकर उसे घसीटा तब जाकर वह अलग हुई। इसके बाद काशीराम सुनार की, अच्छे वस्त्रों में सजी-बजी, सुकुमारी पुत्री कमली ने भी गौरी से लिपटकर कुछ आँसू बहाये। अपने धनी कुल की बातें सुनते-सुनते वह अपने मित्रों के प्रति कुछ उदासीन और अभिमानी हो गयी थी, फिर भी किसान लड़कियों के साथ रहने की मनाही की अवहेलना करके वह उनके

साथ काफी मित्रता का भाव रखती थी।

"बहन, राजो घर पर नही थी," पारो ने कहा, "न जाने कहाँ जाकर मर गयी है।"

"गौरी बहन, उसकी माँ ने उसे बाहर निकलने से मना कर रखा है, शायद जल्दी ही उसका ब्याह होने वाला है," रूपा ने सूचना दी और वह एक साँस में और भी बहुत कुछ कह गयी, "उसकी माँ ने झूठ कहा कि वह घर पर नही है। मगर बहन, पारो ने मुझे ऊपर जाकर उसे लाने नहीं दिया। सुना है कि होशियारपुर मे किसी बूढ़े के साथ उसका ब्याह तै हुआ है।"

"अरी," पारो ने अपनी छोटी बहन को डाँटा, "तुझे क्या मालूम? अभी बित्ता भर की है और बाते कैसी बघारती है!"

"मगर राजो की माँ एक दिन तीसरे पहर चरखा कातते समय बूढ़ी चाची फागो से यह बात कह तो रही थी," कमली ने पुष्टि करते हुए कहा।

"मैंने कहा था न!" रूपा आँखे चमकाकर बोली और अपना नया-नया सीखा हुआ करतब सबको दिखाने के लिए, रबर की गेंद से खूब उछल-उछल कर खेलने लगी।

"अरी जा!" पारो ने रूपा पर हाथ उठाया।

"अच्छा, आओ यहाँ झूला डाले," रूपा बोली, उसको चुप रखना असभव था। "गौरी दीदी मुझे अपनी गोद मे बिठाकर झुलायेंगी।..."

"पगली कही की! अभी पानी तो बरसा नही और पानी बरसे बिना झूला डालना अपशकुन होता है," पारो बोली, "हाँ तो गौरी...अरी, क्या हुआ है तुझे..."

"अरे, सारी दुनिया अगर खिलाफ हो तो बड़े-बड़ों की हिम्मत टूट जाती है," गौरी ने आह भरकर कहा। वह खोयी खोयी आँखों से अपने ससुराल के जीवन के बारे मे सोच रही थी, वह एक ऐसे शून्य वातावरण में पहुँच गयी थी कि हृदय के उलझावों के फलस्वरूप उत्पन्न

होनेवाली भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पा रही थी।

"कहाँ भटक गयी," पारो ने थोड़ी देर बाद मुस्करा कर पूछा, "मूरख, तुझे चाहिए था कि इस तरह अपना ब्याह होने ही न देती।"

"इसमें तेरे बाप का भी उतना ही हाथ था जितना किसी और का," गौरी ने उत्तर दिया, "और वह मेरे पिता के समान थे। मैं मानती न तो क्या करती?...और पारो, उनका कहना ठीक ही था। वह तो बहुत ही अच्छे है!..."

"तू उनका नाम तक लेने की हिम्मत नहीं करती...वह! बिलकुल गाय है तू!" पारो ने उसे चिढ़ाते हुए कहा, "तू भी कैसी डरपोक है! और उनकी अच्छाई यही है कि तुझे रोज पीटते थे और फिर मायके भेज दिया!"

"पारो ऐसी बातें न करो, मुझे तकलीफ होती है!" गौरी ने बड़ी नरमी से प्रतिरोध किया। गौरी के इन शब्दों का प्रभाव नन्ही रूपा के सहज ही प्रभावित हो जाने वाले हृदय पर यह हुआ कि अपनी फटी हुई बचकानी आवाज में पत्नी के साथ पति के विश्वासघात का वही चिर परिचित गीत गाने लगी :

न ते टिकी देदाँ खान नुँ माइये
न मैंनूँ देदाँ कमान।
मी की देंदाँ गालियाँ
टुटी होइ चारपाई देदाँ सोवन नुँ माइये
ते सर्दियाँ दि राताँ दे विच न देदाँ रजाई माइये

इस गीत में जो व्यंग्य छुपा हुआ था, उसे सुनकर सब सहेलियों ने अपना सर झुका लिया। और सब खिसियाकर उस बच्ची के इस विचित्र व्यवहार पर मुस्कराने लगी। कमली की हँसी से प्रोत्साहित होकर रूपा फिर गाने जा ही रही थी कि पारो ने चिल्लाकर कहा :

"बन्द कर! रूपा!...सुना कि नहीं! जा यहाँ से..."

यद्यपि पीपल के नीचे, जहाँ वे सब बैठी हुई थीं, अपेक्षतः कुछ छाया

थी, फिर भी गरमी के कारण हवा में एक घुटन-सी थी। और बिना समझे बूझे नन्हीं रूपा ने जो सच्ची बात कह दी थी उसके कारण वातावरण असह्य हो गया था। लड़कियाँ अपने दुपट्टों के पल्ले से पंखा झलने लगीं।

"कितना अच्छा होता अगर वर्षा हो जाती," पारो बोली, "तब हम लोग पिताजी से कहकर झूला डलवा लेते।...ओरी गौरियाई, भला तुझे याद है कि हम लोग यहाँ किस तरह दिन भर खेला करते थे और हमारी माँ यहीं हमें खाना लाकर दे जाती थीं!"

गौरी ने सर हिलाकर कहा कि उसे सब याद है। पर वह जानती थी कि ये सब स्मृतियाँ अब केवल स्वप्न होकर रह गयी थीं क्योंकि उनके लड़कपन का भोलापन और ताजगी जा चुकी थी और वह कभी लौट कर न आ सकती थी। मस्त रूपा को वहाँ गेंद से खेलते देखकर यह अन्तर उनकी आँखों के सामने और भी स्पष्ट रूप से आ गया था। उसके हृदय में दबी हुई प्रतिरोध की चिनगारियाँ भड़क उठीं, मानो वह एक प्रकार से देवताओं से दया की भीख माँग रही हो।

"शायद भैरों हमसे अप्रसन्न है!" उसने कहा।

"अरे न कोई भैरों है न कालो!" पारो बोली, "बस अपने में शक्ति होनी चाहिए। मेरे पिता जी यही कहते हैं।"

"तेरे पिताजी तो जब से लड़ाई पर गये, तबसे देवी-देवताओं पर से उनका विश्वास ही उठ गया!" कमली ने कहा, "वह तो यों ही बकते हैं। तुम तो जानती ही हो कि औरत जो कुछ करती है वह गलत ही होता है। वह अपने लिए तो कभी कुछ कर ही नहीं सकती! उसके लिए तो ब्याह के अलावा और कोई रास्ता है ही नहीं!"

गौरी ने कमली को देखा फिर पारो को और फिर कनखियों से पास खेलती हुई रूपा को। उसकी नस-नस में क्रोध की लहर दौड़ गयी पर थककर और निराश होकर उसने अपने कर्म और भाग्य को स्वीकार करके हथियार डाल दिये। उसके मुँह से एक आह निकल गयी और

उसकी आँखों मे प्यार उमड़ आया। और इससे पहले कि पारो या कमली उसे सांत्वना देती, वह व्यथा से पीड़ित होकर फफक-फफक कर रोने लगी और उसके हृदय की कटुता उसके आँसुओं के साथ बह निकली।

●●४

कुएँ से लौटकर गौरी ने दरवाजे से कान लगाकर सुना कि उसकी माँ चन्दरी को दुह रही है और रो-रो कर उससे कह रही है, "मुझे या तो तुझे बेचना पड़ेगा या गौरी को..."

गौरी चारपाई पर मूर्तिवत् बैठी थी। उसकी समझ मे नहीं आ रहा था कि उसके हृदय मे अपनी माँ के प्रति अब इतनी कोमलता क्यों नहीं रह गयी थी। पर न जाने क्यों उसका जी यह नहीं चाह रहा था कि वह वहाँ से उठ कर जाये और अपनी माँ के सर पर हाथ रखकर उसे सान्त्वना दे। उसका शरीर शिथिल और बोझिल हो गया था, ऐसा प्रतीत होता था कि उसका हृदय पत्थर हो गया है। चेहरा पसीने से तर था और बगलों तथा छातियों से पसीना बह-बहकर कुर्ते के नीचे शरीर पर गिर रहा था। वह बहुत कोशिश कर रही थी कि हृदय मे अपनी माँ के प्रति कुछ सहानुभूति पैदा हो, पर उसके यौवनमय हृदय में दया और सहानुभूति रह ही नहीं गयी थी। अपने कर्जों के पहाड़ के बोझ के नीचे दबे हुए बड़े-बूढ़ों की दुनिया का अदृश्य भार उसे भी दबा रहा था और इसके अतिरिक्त उसके हृदय मे अपने पति से झगड़ा हो जाने की व्यथा भी थी। पर अपनी माँ के शब्दों से उसे इतना आघात पहुँचा था कि वह बिल्कुल संज्ञाहीन हो गयी थी। उसकी माँ ने उसके सामने यह सवाल खड़ा कर दिया था कि या तो गाय को बेच दिया जाये या स्वयं उसे। इस आघात से किंकर्तव्यविमूढ़ होकर वह चुपचाप बैठी रही।

बेटी को अपने पास आता न देखकर लक्ष्मी को यह आभास हुआ

कि वह उससे कतरा रही है।

"बेटी, मेरी तो जिंदगी ही आँसुओं का एक अथाह सागर बनकर रह गयी है। मेरे ऑसू निकलना शुरू होते हैं तो थमते ही नहीं। बेटी मैं उन्हें रोक ही नहीं सकती! हाय! मैं और कर ही क्या सकती हूँ? मेरे करमों का यही फल है।"

"लेकिन माँ, तुम्हारे ऊपर ऐसी क्या मुसीबत आ पड़ी है?" गौरी ने बनावटी सहानुभूति के साथ कहा, पर साथ ही वह झुँझला भी रही थी।

बुढ़िया ने बगैर कुछ कहे अपना सर झटक दिया।

गौरी अपनी हथेलियों पर ठोड़ी टिकाकर बैठी घूरती रही, बिल्कुल हतबुद्धि होकर घूरती रही, मानो उसके सामने एक दीवार खड़ी हो!

उसके मामा अमरू के आने पर व्यथा के इस लम्बे युग का अन्त हुआ। अमरू के लम्बे-चौड़े शरीर और उसके दिखावटी हँसमुख स्वभाव के आगे त्रिया-चरित्र के सब हथकंडे बेकार हो जाते थे।

"लक्ष्मिया!" उसने अपनी पाटदार आवाज में पुकारा, "अरी लक्ष्मिया!...हैं? यह क्या है? तुम दोनों...क्या कोई मर गया है? इधर देखो! मैं तो बिल्कुल हट्टा-कट्टा हूँ।"

माँ-बेटी में से जब किसी ने भी उत्तर नहीं दिया तो वह थोड़ी देर तक कमर पर हाथ धरे कुछ खिसियाया हुआ लक्ष्मी और गौरी को गौर से देखता रहा। फिर एक तरफ अपनी मूँछ पर ताव देते हुए बोला :

"आओ, बस बहुत हो गया लक्ष्मिया! यह री-री बन्द करो! आओ, सेठ ज्वालाप्रसाद तुमसे मिलने आये है।"

"हाय भगवान!" लक्ष्मी ने कराहकर कहा, पर अपनी जगह से हिली नहीं।

"बस, यह नखरे बन्द करो," अमरू ने गरजकर कहा।

फिर भी बुढ़िया अपनी जगह से नहीं हिली।

"अरी, भलीमानस, कम से कम जवाब तो दे!"

"तुम्हारे ऐसों को मैं क्या जवाब दे सकती हूँ ! हर बात पर हाँ करने के अलावा मेरे पास चारा ही क्या है ?" बुढ़िया ने निराशा-भरे सपाट स्वर में कहा और कुछ देर रुककर वह फिर बोली, "मुझे पहले ही तुम्हारे ऐसे बुरे आदमी की बात पर कान नहीं देना चाहिए था।"

"हैं !" उसकी जली कटी बातों और गालियों से स्तम्भित होकर अमरू ने चिल्लाकर कहा, "मैंने तेरे लिए इतना सब कुछ किया और तेरी यह मजाल ! तुम दोनों का खर्चा उठाया और अपनी बचायी हुई सारी पूँजी तुम्हारे घर पर खर्च दी ओर बदनामी उठायी सो अलग से ! नमकहराम ! अब यह मजाल कि ऐसी बातें कहती है ? देखते हो, कैसा अन्धेर है !..."

लेकिन वहाँ इस अन्धेर को देखने के लिए कोई था ही नहीं, इसलिए उसे कुछ निराशा हुई और अपनी आवाज की प्रतिध्वनि सुनकर उसे अपनी मूर्खता का आभास हुआ। लक्ष्मी न वहाँ से हिली, न उसने जवाब ही दिया। इस पर वह और झल्ला गया, उसका चेहरा विकृत हो गया और उसने दाँत पीसकर कहा :

"मेरे अच्छे-भले करम फूट गये ! मैंने तेरे लिए क्या कुछ नहीं किया और तू मुझे बुरा आदमी कहती है। और मैं सब कुछ तेरे ही भले के कर रहा हूँ। चन्दरी के बिना तू क्या करेगी ?...अगर ज्वाला ने अपनी रकम वापस माँगी तो क्या तू उसका कर्जा उतार सकेगी जो तूने गाय गिरवी रखकर लिया था ? सूद तक देने को तो तेरे पास है नहीं और यह छोकरी...यह जबसे लौटकर आयी है तबसे...मैं पूछता हूँ...तुम में इसे खिलाने भर का भी दम है ?"

"मामा, अगर सारा झगड़ा मेरी ही वजह से है तो मैं चली जाऊँगी," गौरी बोली।

"नहीं, नहीं, तुम दोनों यहाँ रहो," अमरू ने व्यग्य से कहा, "तुम दोनों माँ-बेटी यहाँ सुख से रहो।.. अब तुम वापस आ गयी हो, मेरा यहाँ क्या है, मैं तो गैर हूँ। मैं खुद ही चला जाऊँगा ताकि तुम्हारे सुख-

चैन मे कोई बाधा न पड़े। मगर लक्ष्मिया याद रखना ! अगर ज्वाला-प्रसाद महाजन चन्दरी को ले जायँ तो मेरे पास रोती हुई न आना कि मैं तुम्हें और तुम्हारी इस लाडली बेटी को खिलाने का बन्दोबस्त करूँ !... मेरा तुमसे अब कोई नाता नही।" यह कहकर वह क्रोध से भरा हुआ आँगन से दरवाजे की तरफ चल दिया।

"हाय !" लक्ष्मो ने आह भरी पर वह अपनी विपदाओं मे डूबी हुई वैसे ही सिमटी बैठी रही।

"मैं बताये देता हूँ, तुम दोनों का अंजाम बहुत बुरा होगा," अमरू ने दरवाजे पर ठिठक कर कहा।

इस पर भी जब उन दोनों मे से कोई न हिला तो वह पैर पटकता हुआ भारी कदमों से बाहर चला गया।

गौरी ने पहले तो रसोई के पास सिमटकर बैठी हुई अपनी माँ को देखा और फिर दरवाजे की तरफ; पर अमरू की बात का आशय समझकर वह अवाक् रह गयी थी। मामा के साथ जाकर ज्वाला प्रसाद से मिलने के लिए उसकी माँ ने जो इन्कार कर दिया था, उस पर गौरी के हृदय मे अपकी माँ के प्रति प्यार उमड़ आया। गौरी ने इन भावनाओं की लहरों पर बहना आरम्भ ही किया था कि लक्ष्मी सहसा उठी, मानो अब तक वह मूर्छा मे रही हो, बोली, "बेटी, मैं अभी लौटकर आती हूँ। रसोई में खाना रखा है, खा लेना। डलिया मे रोटियाँ रखी है और हाँडी में से आम का अचार निकाल लेना।...और हाँडी मे दूध उबाल लेना।... उपले वहाँ रखे हैं।"

यह कहकर वह उठी और जल्दी-जल्दी आँगन से बाहर निकल गयी।

●●५

संध्याकाल की गरमी पसीने की बूंदों के रूप मे उसके माथे और गर्दन पर विराज रही थी जैसे जलती हुई लकड़ी पर ओस की-सी बूँदें

जमा हो जाती हैं ! ऑगन की तपती हुई धरती घोर निस्तब्धता मे लीन हो गयी थी और गौरी के शरीर के अन्दर जो आग धधक रही थी, उसने उसे अपनी गोद मे छुपा लिया था ।

गौरी के विचार भटकते-भटकते बचपन के दिनों मे जा पहुँचे, जब उसकी माँ उसे घर मे अकेला छोड़कर चली जाती थी और वह तीसरे पहर की चका-चौंध कर देने वाली धूप और रक्तिम आकाश पर डूबते हुए सूरज की पृष्ठभूमि पर बनने वाली बादलों की आकृतियों से भय-भीत होकर चुप पड़ी रहती थी । उस घर में अकेली और निस्सहाय तो वह हमेशा ही से थी, पर वह इतनी दुखी कभी नही हुई थी जितनी कि आज अमरू के क्रूर शब्दों के पीछे छुपे हुए निर्णयों को सुनकर हुई थी । बचपन मे कम से कम उसे यह तो आशा रहती थी कि माँ उसके लिए कोई मिठाई लेकर लौटेगी, पर इस समय तो उसे ऐसा लग रहा था जैसे किसी ने अन्दर ही अन्दर उसे खोखला कर दिया हो, क्योंकि वह जानती थी कि इस प्रतीक्षा का अन्त उसके लिए सर्वनाशक ही है ।

सहसा उसने फैसला किया कि वह यहाँ से निकल जायेगी, कही चली जायेगी । पर प्रश्न उठा, 'लेकिन कहा ?' उत्तर मिला, 'कहीं भी ।' पति के द्वारा घर से निकाल दिये जाने के बाद इतनी जल्दी वह अपने पति के पास तो जा नही सकती थी; पर शायद वह अपनी किसी सहेली के यहाँ, पारो के यहाँ जा सकती थी ।

वह अधिक सोच-विचार किये बिना जल्दी से उठ खड़ी हुई और वहाँ से भाग निकली जैसे किसी पहाड़ी की ढलान पर किसी अज्ञात नियति की ओर जा रही हो । पर अभी गली मे बीस कदम भी न गयी होगी कि उसे माँ वापस लौटती हुई मिली ।

गौरी ने आँख बचाकर उससे कतरा कर निकल जाना चाहा, मानो किसी हत्यारे से बचकर निकल रही हो ।

उसकी माँ ने पुकारकर कहा, "ठहरो !" और फिर कठोर दृष्टि से उसे घूरते हुए बोली, "घर चलो, सब ठीक है । मैं सेठ ज्वालाप्रसाद के

यहाँ नहीं जाऊँगी। मैं अमरू को नहीं पकड़ सकी इसलिए मैंने वापस लौट आने का फ़ैसला किया। उसे जाकर ख़ाक छानने दो।"

गौरी के निष्कपट हृदय में यह विश्वास फिर लौट आया कि सब ठीक हो जायेगा। वहाँ से भाग निकलने की तीव्र उत्कंठा दूर हो गयी और उस घृणित स्त्री, अपनी माँ, को सामने देखकर और उसकी घृणास्पद उदारता को देखकर, उसके हृदय में एक हल्का-सा रोष उत्पन्न हुआ। पर जब उसने आँखें उठाकर लक्ष्मी के भयभीत चेहरे को देखा तो उसका सारा क्रोध ठंडा हो गया और उसने सहज ही इस बात को स्वीकार कर लिया कि सब ठीक है।

वह अपनी माँ के आगे आगे घर की ओर चल दी।

माँ ने उसे खाना दिया पर गौरी ने खाया नहीं। लक्ष्मी ने भी खाना नहीं छुआ। बड़ी देर तक दोनों चुप बैठी रहीं।

बड़ी देर बाद बुढ़िया ने कहना आरंभ किया :

"बेटी, तुझे नहीं मालूम कि तेरे बाप के मरने के बाद से मैंने कितने दुख उठाये हैं। जब वह थे तब भी मेरा जीवन कुछ ज्यादा सुखी नहीं था। वह काम से जी चुराते थे और दिन भर बैठे हुक्का पिया करते थे। मुझे गृहस्थी चलाने के लिए दूसरों के घर जाकर काम करना पड़ता था। एक बीघा जमीन थी, वह भी तुम्हारे बाप ने गिरवी रख दी थी और कर्जे का सूद न अदा कर सकने के कारण वह जमीन भी हमसे छिन गयी थी। जितनी भी गायें मैंने पाली हैं, वह सब मैंने अपने इन हाथों से कमाये हुए पैसों से खरीदी थीं। चूंकि अमरू मेरी मदद करता था इसलिए तुम्हारे बाप को इससे जलन होने लगी। गाँव में बात का बतंगड़ बनाने वालों की कोई कमी तो थी नहीं, उन्होंने कहना शुरू किया कि अमरू से मेरी आशनाई है। इससे बात और बढ़ गयी। और यह भी सरासर झूठ है कि अमरू के कहे में आकर मैंने उन्हें जहर दे दिया। यह भी सच नहीं है कि तुम्हारे बाप यह समझते थे कि तुम अमरू की बच्ची हो। मैं कसम खाकर कहती हूँ कि यह सब बात सच नहीं है!...मगर तुम्हारे

बाप के स्वभाव में ही शंका थी, इसलिए उन्होंने तुझे कभी अपना स्वीकार नहीं किया। अगर तुम्हारे स्थान पर लड़का होता तो शायद वह उसे पसंद करते क्योंकि हम लोगों में तो बेटों और बेटों के बेटों को ही सब कुछ माना जाता है, लड़कियाँ तो मनहूस होती हैं !"

"लेकिन माँ," गौरी ने उसे बीच में टोककर पूछा, "तुमने यह सब बातें मुझसे पहले क्यों नहीं बतायी ?" इन बातों को पहली बार सुनकर उसके चेहरे का रंग पीला पड़ गया।

"बेटी, बात यह है कि मैंने यह सब बातें तुझे इसलिए नहीं बतायीं कि इसके बाद मैंने जो कुछ किया वह एक विधवा को नहीं करना चाहिए। लेकिन अब तुम बड़ी हो गयी हो, अब तुम यह समझ सकती हो कि मेरे लिए एक मददगार के बिना रहना कठिन था। मैं कोई पत्थर की तो हूँ नहीं। बिना पैसों के मैं तुम्हें पाल-पोस भी नहीं सकती थी। और मेरे पास इतना दूध तो होता नहीं था कि उसे बेचकर मैं दोनों का पेट पालने भर को पैसे कमा सकती।...अमरू लाख बुरा सही, पर उसने मेरे साथ भलाई की। उसके बिना मेरा काम बिल्कुल भी न चलता। अब इस सूखे के जमाने में चन्दरी बिल्कुल भी दूध नहीं दे रही है। और वह डरता है कि तुम भी पेट से हो, इसलिए हमारे सर पर नया बोझ आ पड़ेगा..."

"सौतेला बाप भी बिल्कुल सौतेली माँ की तरह होता है," गौरी ने कटुता से कहा।

"तुम जो कह रही हो वह सच है, पर आदमी की गरज बावली होती है। मैं जानती हूँ कि अमरू यह नहीं चाहता कि मैं फिकर से बूढ़ी हो जाऊँ, लेकिन मैं यह भी जानती हूँ कि तुम मेरी बेटी हो। मुझे तुम दोनों का ख्याल रखना पड़ता है और मैं यह फैसला नहीं कर पाती कि किसे पहला स्थान दूँ। इसीलिए मैं उसके साथ सेठ ज्वालाप्रसाद की दूकान पर नहीं गयी, तुम्हारे पास लौट आयी।"

"तो फिर तुम मुझे यहाँ से चला जाने दो, सारा झगड़ा दूर हो जायेगा। मैं उसके पास तो वापस जा नहीं सकती क्योंकि उसने मुझे

निकाल दिया है, लेकिन मैं पारो के साथ रह कर लोगों के यहाँ कुछ काम करके अपना पेट पाल सकती हूँ।"

"लोग क्या कहेंगे ? हम उनकी बातें कैसे सहेंगे ?" लक्ष्मी ने तर्क करते हुए कहा, "अगर तुम जाना ही चाहती हो तब तो बात अलग है। अभी तो तुम सो जाओ, सबेरे देखेंगे क्या होता है ? मै अमरू से बात करूँगी।"

गौरी आँगन मे पड़ी हुई चारपाई पर उसी तरह गठरी बनकर लेट गयी जैसे वह 'कोप भवन' मे लेटा करती थी।

उसकी सहेलियाँ, जिनसे उसने रात को मिलने का वादा किया था, उसके घर आयी और उन्होने रूपा को उसे बुला लाने के लिए अन्दर भेजा। आँगन मे छायी हुई निस्तब्धता से रूपा समझ गयी कि कुछ गड़-बड़ जरूर है। और जब लक्ष्मी ने उसे डाँटा तब तो उसकी शंका बिल्कुल ही दूर हो गयी। "जा चुड़ैल ! इन लड़कियों को बस खेत मे जाकर लड़कों को देखकर खी-खी करने के अलावा और कुछ सूझता ही नहीं है ! जा, भाग जा, गौरी का जी अच्छा नही है !"

गौरी अपने आप मे इतनी खोयी हुई थी कि वह सर उठाकर रूपा से कुछ कह भी न सकी।

●●७

आँगन मे चारपाई पर ऊँघते हुए उसके विचार भटकने लगे।

पंछी की धुँधली-सी आकृति उस पर झुकी खड़ी थी और उससे कह रही थी—'मेरे पास आ जाओ'; वही भर्राई हुई कानाफूसी की आवाज थी जिससे कि वह लजायी हुई चुप्पी को भंग करके हमेशा उसे बुलाता था, उसे अपना बना लेने के लिए।

और अब, जब कि वह जानती थी कि वह उसके पास नहीं है तो

अपने शर्मीलेपन के कारण वह अपने-आप को अपराधी समझने लगी कि जब कभी उसने अपनी दोनों बाहें फैलाकर उसे बुलाया भी था तब भी वह ऐंठी हुई अलग ही पड़ी रहती थी। आखिर उन मौकों पर उसने सहर्ष अपने आप को उसके सुपुर्द क्यों नहीं कर दिया था...लेकिन उसने अगर ज्यादा मुहब्बत दिखायी होती तो वह उसे इस प्रकार घर से न निकाल देता।... उसे ऐसा लगा कि वह फिर उसे बुला रहा है : 'रानी,...मेरे पास आ जाओ...'

इन सुखद विचारों से उसके शरीर मे अनायास ही एक अस्पष्ट-सी गरमी पैदा हुई जिसमे वह पूरी तरह विलीन हो गयी। उसकी उदासी पर एक आवरण-सा पड़ गया। उसके होठों पर भगवान से प्रार्थना के शब्द आकर रात्रि के बढ़ते हुए अन्धकार में खो गये और नीद ने उसकी पलकों को मूँद दिया और उसका यौवनमय शरीर उसी तरह दमकने लगा जब वह इसी ऑगन मे पंछी के पीछे-पीछे आग के चक्कर लगा रही थी। पर पसीना सूख जाने पर उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि उसकी खिची हुई नसे, विशेष रूप से उसकी दोनों छातियों के बीच मे और नाभि के पास झुलसी जा रही हैं। नाभि के पास तो उसे ऐसा लगा जैसे चीटियों का एक दल रेंग रहा हो; वहाँ पर उसके बडी जलन हो रही थी। वह करवट के बल लेटी थी, बिल्कुल वैसे ही जैसे वह रूठकर अपने घर पर लेट जाती थी। नाभि के पास जलन के कारण वह अजीब ढङ्ग से मुँह बना रही थी।

उसने यह सोचकर करवट ली कि शायद इस प्रकार लेटने से उसे गहरी नींद आ जाये, क्योंकि चित लेटे-लेटे तो उसे नीद नहीं आयी थी। उसने अपनी बाईं हथेली पर अपना बॉया गाल रख लिया, पर ऐसा प्रतीत होता था कि वह हथेली पर अपना गाल नहीं रखे है बल्कि आहों की एक शृङ्खला को सहारा दिये हुए है जो लाख दबाने पर भी बरबस उसके होठों तक आ जाती थीं।

उसने सुन रखा था कि गोधूलि वेला मे गॉव के प्रवेशद्वार से घर

वापस लौटते हुए मवेशियों को अगर कोई गिन ले तो उसे नींद आ जाती है; यह सोचकर उसने अपनी कल्पना की दृष्टि गाँव के गन्दे पोखर के किनारे वाली कच्ची सड़क पर केन्द्रित कर दी, क्योंकि गाँव में जाने का रास्ता वहीं सबसे पतला था। सड़क सूखी थी और वहाँ से उड़कर धूल ने क्षितिज पर इस प्रकार एक धुँधला-सा परदा डाल दिया था जैसे आँधी आनेवाली हो। फिर भी ढोर उसे दिखायी दे रहे थे और उनमें उसने चन्दरी को पहचाना; गन्दे पानी के पोखर की तरफ जाते हुए मोटे-ताजे भैंसे उसे ठेल रहे थे। ढोरों को सीधे रास्ते पर रखने के लिए चरवाहे की पाटदार गूँजती हुई आवाज भी उसे सुनायी दे रही थी। वह अपना दुःख भूल गयी; उसने देखा कि आकाश पर अंधकार बढ़ता जा रहा है और चन्दरी मौका पाकर आगे निकल गयी है और फिर उसने पाँच ढोरों को एक-दूसरे के पीछे आते देखा।

एक क्षण के लिए उसके हृदय में यह भय समा गया कि ये आगे बढ़ते हुए ढोर उसे कुचल देंगे। फिर उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि भय के कारण उसका मस्तिष्क निद्रा में डूबता जा रहा है; चारों ओर अँधेरा छा गया।

अस्थायी मृत्यु की तरह नींद ने उसे आ दबोचा।

●●८

बहुत रात गये गौरी को ऐसा लगा जैसे किसी के भारी हाथ उसके शरीर को झिंझोड़ रहे हैं। वह चौंक पड़ी; उसके सामने उसका मामा अमरू खड़ा था। सूखे हुए गोबर की बास उसकी नाक में आयी और उसकी नींद से भरी हुई अधखुली आँखों को केवल चन्दरी का श्वेत शरीर दिखाई दे रहा था। वह अन्धेरे में चुपचाप बैठी हुई जुगाली कर

रही थी। गौरी आँखें मलकर नींद में झूमती हुई उठ बैठी, मानो नशे में हो। उसने बालों में उँगलियाँ फेरी और रसोई की तरफ नजर दौड़ाकर देखा कि उसकी माँ और अमरू चटाई पर पास-पास बैठे हुए हैं।

" उठो बेटी, उठो," उसकी माँ बड़बड़ायी।

"अरी, भलीमानस, भगवान की दुहाई देना छोड़ दे," अमरू ने लक्ष्मी को डाँटा—"तेरे इन करोड़ों भगवानों ने हमारे लिए क्या किया है; तू जाकर मंदिर में मालपुए चढ़ाती रही और तेरा भगवान हमारी मुसीबतों पर हँसता रहा !..."

" अच्छा हमारे ऊपर न चिल्ला !" लक्ष्मी बीच मे बोल उठी, "तुझे क्या मालूम कि माँ का दिल कैसा होता है ? आ बेटी गौरी, मेरी बात सुन...!"

गौरी समझ गयी कि जब वह सो रही थी तब वे दोनो उसी के बारे मे बहस कर रहे थे। गौरी मुड़ी और पाँव जमीन पर लटकाकर उनकी तरफ मुँह करके बड़े आज्ञाकारी भाव से बैठ गयी।

कुछ देर तक वे सब चुप बैठे रहे। गौरी को बाहर झींगुरों का निरन्तर एक ही स्वर में गाना और पास के किसी घर की छत पर से दमे से पीड़ित किसी किसान के खाँसने की आवाज सुनायी दे रही थी।

काफी देर की खामोशी के बाद अमरू ने प्रहार आरंभ किया :

"छोकरी, तू ब्याह होने के कुछ ही महीनों के अन्दर बढ़कर पूरी औरत बन गयी है।... मैं जानता हूँ कि लड़कियाँ बहुत जल्दी जवान होती हैं। मगर वह तेरा पति पूरा बदमाश निकला।"

लक्ष्मी अलग ही अपने-आप बड़बड़ कर रही रही थी, "मैंने तो समझा था कि मेरी दुःखभरी पुकार सुनकर भगवान का पत्थर का कलेजा पिघल जायेगा।"

"अरी भलीमानस, चुप भी रह ! मै कहता हूँ, मुझे गौरी से बातें करने दे।" अमरू ने बुढ़िया को झिड़क दिया—"वह समझदार लड़की है..."

पर इस क्रोधावेश के बाद अमरू कुछ ऐसा उलझ गया कि बड़ी देर तक वह अपनी बात फिर शुरू न कर सका।

"हाय!" लक्ष्मी ने फिर आह भरकर कहा। माँ के हृदय मे जो द्वन्द्व मचा हुआ था, उसे दबाना असम्भव था।

"अच्छा तो फिर तुम्ही उससे बात कर लो!" अमरू ने चिल्लाकर कहा और अपनी जगह पर पहलू बदल कर बैठ गया।

उसका गुस्सा देखकर लक्ष्मी चुप हो गयी तो उसने फिर अपना हमला शुरू किया। वह बड़े अनुभवी, व्यवहारकुशल व्यक्ति की तरह बात कर रहा था और बड़ी देर से वह बात को इसी ढर्रे पर लाने की कोशिश कर रहा था।

"बेटी, इस बेवकूफ को तो बकने दे, तू मेरी बात सुन! देख, तू इस अत्याचारी पंछी के पंजे से सही-सलामत बचकर निकल आयी है।... उसका बस चलता तो वह तुझे मार ही डालता। तू बड़ी अशुभ घड़ी मे पैदा हुई थी, तेरे ग्रह खराब है।"

"मेरी मत क्यों खराब हुई थी कि मैंने अपनी कोख से ऐसी बच्ची जनी। मगर वह मेरी बेटी है, मैंने अपना खून देकर उसे पाला है, मै उसके बारे में तेरी तरह नही सोच सकती!"

"मगर, मूरख औरत, तू यह क्यों नही देखती कि तेरे घर मे एक दाना भी नहीं है।...अगर तू मेरी फसल पर भरोसा किये बैठी है तो मै अभी से बता दूँ कि अगर पानी बरस भी गया तो सूद चुकाने के बाद मेरे पास एक दाना अन्न का नहीं बचेगा। और तेरे पास भी पैसा जुटाने का कोई रास्ता नहीं है इसलिए चन्दरी को, जिसे तूने गिरवी रखा है, ज्वालाप्रसाद हाँक ले जायँगे!"

आँगन के सिरे पर बँधी हुई गाय ने एक खर्राटा भरा, मानो उसने अपने भाग्य के निर्णय की बात सुन ली हो और उसे समझ भी गयी हो।

"डराते-धमकाते बहुत हो, पर दिल ही दिल में तुम डरते हो," लक्ष्मी ने व्यंग्य किया—"औरतों को डराने के लिए ही लाल-लाल आँखें

दिखाते हो ! उस ज्वालाप्रसाद के आगे कैसी भीगी बिल्ली बन जाते हो। जैसे अबसे पहले किसी ने अपनी जमीन जायदाद गिरवी रखी ही नहीं है। जब उनके अच्छे दिन फिरे हैं तब उन्होने पाई-पाई चुकायी भी है।"

"अरे पागल औरत ! महाजन के पंजे मे फँसकर कोई छूटता नहीं, जब तक उसकी पाई पाई चुका न दे !"

लक्ष्मी अपना सर इस तरह हिला रही थी कि जैसे उसके हृदय मे एक तूफान मचा हो।

अपनी माँ की निराशा और उदासी के बावजूद गौरी को ऐसा लग रहा था कि अमरू अपनी बात पूरी करके ही रहेगा। वह सिमटकर बैठ गयी और अपनी भावनाओं को छुपाने के लिए उसने अपना मुँह आधा छुपा लिया।

"कुछ नुकसान ऐसे भी होते हैं जिनसे कभी-कभी फायदा भी हो जाता है," अमरू ने बड़े दार्शनिक भाव से रोब के साथ कहा—"गौरी बड़ी अच्छी लड़की है, वह तुम्हारी मदद कर सकती है अगर तुम..."

"मैं क्या मदद कर सकती हूँ ?" गौरी ने प्रतिरोध करते हुए कहा। वह ताड़ गयी थी कि अगर उसने बात को इस दिशा में और आगे बढ़ने दिया तो उसका सर्वनाश निश्चित है।

"कल की छोकरी और गुस्सा कैसा दिखाती है," अमरू ने अधीर होकर कहा—"मैं तुझे कोई मार थोड़े ही डालूँगा ! मैं तो बस..."

गौरी अपने बचाव के लिए बोली, "शुरू में एक बार नही कर देने से आदमी सत्तर मुसीबतों से बच जाता है।"

"नही, नहीं, नहीं—तू तो हमेशा से बस यही एक बात कहती आयी है !"

यह डाँट सुनकर गौरी का रवैया भी सख्त हो गया और उधर अमरू भी उसके पहले शब्द सुनते ही बिल्कुल अपनी बात पर अड़ गया था।

फिर निस्तब्धता छा गयी। बीच बीच में बस रात की गूँज और आँगन के घुटे हुए वातावरण की भयानक 'हूँ-हूँ !' सुनायी देती थी।

अमरू को सहसा ऐसा प्रतीत हुआ कि गरमी के कारण वह अभी फट जायगा। अपने-आप को वश में रखने की बहुत कोशिश करते हुए वह बोला :

"बेटी गौरी, पंछी ने तुझे घर से निकाल दिया है। इससे पहले कि गॉववालों को इसका पता लगे और हमारी बदनामी हो, मै तो समझता हूँ कि तुझे होशियारपुर भेज देना ही अच्छा होगा।..."

लक्ष्मी ने भी साहस बटोरकर कहा, "यह तो सच है कि लोग तरह-तरह की बातें करेंगे; वह यही कहेंगे कि तू बड़ी मनहूस घड़ी में पैदा हुई थी।"

अपनी मॉ को यह कहते सुनकर गौरी के हृदय को इतना आघात पहुँचा कि वह प्रतिरोध भी न कर सकी। अपनी अबोधता और शील-स्वभाव की पृष्ठभूमि में उसने केवल उसकी बात का अभिप्राय मालूम करने और उसे समझने का प्रयत्न किया।

"पंछी के साथ तेरी जोड़ी ऐसी ही थी जैसे किसी सीधी-सादी बछिया को एक उद्दण्ड सॉड़ के साथ बाँध दिया गया हो," अमरू ने चापलूसी करते हुए कहा—"हमे क्या मालूम था कि वह लड़का ऐसा बदमाश निकलेगा..."

पर गौरी के सर पर तो इनकार का भूत सवार था। वह अमरू की इस दिखावटी नरमी को अपने पास भी नही फटकने देना चाहती थी। वह नहीं चाहती थी कि वह इन चिकनी-चुपड़ी बातों से प्रभावित होकर उसके पंजे में फँस जाये।

"तू रो क्यों रही है," अमरू ने कड़क कर कहा—"हम कोई तुझे हलाल थोड़े ही कर देंगे! हम तो तेरे ही सुख के लिए यह सब कर रहे हैं। देख, कैसी जगह हम तेरी बात पक्की कर रहे हैं—यह तस्वीर देख, कैसा भला आदमी है! कोई दूसरी लड़की होती तो यह सुन कर गद्‌गद् हो जाती कि एक धनवान साहूकार उससे ब्याह करना चाहता है!..."

"हाँ गौरी, जरा तस्वीर को देख ! इक सा विच सौ साँसाँ..."[1]

गौरी की आँखे जल्दी-जल्दी झपकने लगी और अपनी माँ के इस विश्वासघात पर उसका खून खौल उठा। उसके हृदय मे तीव्र प्रतिरोध भड़क उठा, जैसे कोई भयभीत पक्षी अपने पख फड़फड़ा रहा हो। उसने सर हिलाकर इनकार कर दिया और फिर पहलू बदल कर चुपचाप सिमट कर बैठ गई ! बीच-बीच में बस उसके नाक सुड़कने की आवाज आती थी।

"अरे पगली, कम से कम तस्वीर तो देख ले !" अमरू ने उसे तस्वीर दिखाने के लिए लालटेन उठाकर, चिल्लाकर कहा।

गौरी ने तस्वीर की तरफ नही देखा बल्कि अमरू को ऐसी आँखों से घूरकर देखा जिसमे व्यथा के आँसुओं और धुएँ के पीछे अवज्ञा की तीव्र ज्योति जगमगा रही थी।

अमरू की आँखे भी इस छोकरी के प्रति घृणा और तिरस्कार की कठोरता से चमक रही थी। इसकी इतनी मजाल कि वह उसकी आज्ञा का उल्लंघन करे, जिसे अपने व्यवहारकुशल होने का घमंड था; और आखिरकार उसने अपने पुरुषत्व के बल की हिंसक शक्ति से गौरी को दबा लिया। उसके दीवानों जैसे चेहरे से प्रतिकार की भावना और दुष्टता झलक रही थी। गौरी ने हार मानकर अपनी नजरें झुका ली।

लेकिन नजरें फेरते हुए उसने अमरू के पैरों के पास पड़ी हुई तस्वीर देख ली। उसकी धुँधलायी हुई आँखों ने देखा कि उसके सर पर एक बड़ी-सी पगड़ी थी और वह भरे हुए गोल चेहरे और बड़ी-बड़ी मूँछोंवाला एक बूढ़ा आदमी था। वह एक घायल चिड़िया की तरह निर्जीव होकर सिमट कर बैठ गयी।

अमरू ने देख लिया था कि गौरी ने कैसे आँख बचाकर तस्वीर पर एक नजर डाली थी। उसने फौरन तस्वीर उठाकर गौरी की आँखों के सामने लाकर कहा :

---

१. एक श्वास में सौ साँसें।

"बिल्कुल राजा लगता है; अरे इस भाग्यवान की सूरत तो देख ले! बड़ा धनी आदमी है, चाहे तो पूरा होशियारपुर खरीद ले।"

उस चित्र के आगे, जिसके द्वारा उसके भावी पति की कल्पना जबरदस्ती उसपर थोप दी गयी थी, गौरी बिल्कुल लाचार थी। उसने इतना जरूर देखा कि उस राजा की बड़ी-बड़ी मूछे और घनी भवें खिजाब से रंगी गयी थीं, क्योंकि चित्र मे उसके कुछ सफेद बाल चमक रहे थे। गौरी ने अपना मुँह फेर लिया और दबे स्वर में अपनी माँ से बोली :

"माँ, मैं यहाँ जब तक रहूँगी तब तक तुम्हारा बहुत ज्यादा नहीं खाऊँगी और इसके अलावा मैं किसी के यहाँ काम कर लूँगी।"

"देख लक्ष्मी, तू ही देख!" अमरू ने चिल्लाकर कहा, "कहाँ तो जाकर यह रानी की तरह राज कर सकती है, और कहाँ यह नौकरों की तरह जाकर काम करना चाहती है! यह भी कैसी अभागी है!"

"मैंने भी शनि देवता को प्रसन्न करने के लिए क्या नहीं किया, नाई को तेल चढ़ाया, बाम्हन खिलाये पर इसके भाग्य का खोट न दूर हुआ! हाय!..." लक्ष्मी ने करुण स्वर में कहा।

गौरी मन ही मन प्रार्थना करने लगी कि कोई ऐसा चमत्कार हो कि 'वह' यहाँ आकर उसे इस विपदा से उबार लें। परन्तु जब कुछ क्षण बीत जाने पर भी 'वह' नहीं आये तो वह पूरे संसार के प्रति उदासीन हो गयी।

इतने मे सेठ ज्वालाप्रसाद के खाँसने की आवाज आयी और उन्होने घर में प्रवेश किया।

"सेठजी, गौरी की चिन्ता न करो," लक्ष्मी ने विनीत भाव से कहा—"वह इतने लाड़-प्यार में पली है कि उसे अपने माँ के घर से जाते डर लगता है। और फिर उसे पंछी का जो अनुभव हुआ, वह भी कुछ अच्छा नहीं है।"

"मैं तो हमेशा से जानता था कि वह लड़का बदमाश है!" सेठ ज्वालाप्रसाद ने कहा। "लेकिन अब तुम लोगों ने इसे समझा दिया

है न कि अब उसे कोई तकलीफ नहीं होगी !"

अमरू ने कई बार सर हिलाकर संकेत से सेठजी को मना किया और फिर गौरी की तरफ मुड़ा। इस समय उसके स्वभाव की कठोरता के विपरीत उसके चेहरे पर एक खिसियाई हुई हँसी थी।

"गौरी बेटी, उठ जा...तुझे होशियारपुर ले जाने के लिए घोड़ा तैयार खड़ा है।"

गौरी जिस प्रकार सिमटी हुई लेटी थी, उससे उसका इनकार स्पष्ट था। उसकी सिसकियाँ टूटे-फूटे शब्दों के रूप मे उसके होठों से निकलकर गूँज रही थीं और उसकी लम्बी कराहों की 'हूँ-हूँ-हूँ' की आवाज आ रही थी। बीच-बीच में सहसा वह अपने दबे हुए प्रतिरोध और हृदय में छुपे हुए क्रोध के कारण काँप उठती थी।

"बेटी, पड़ोसी क्या कहेंगे ?" लक्ष्मी ने उसे फुसलाते हुए कहा— "उठ भी जा, ऐसा हठ नहीं करते ! हम तुझे कोई मार थोड़े ही डालेंगे।"

"मार नहीं रही हो तो और क्या कर रही हो !" गौरी ने गला फाड़कर इतने जोर से कहा कि सारी दुनिया सुन ले। अपनी यह चुनौती देने के लिए जब उसने अपना मुँह ऊपर उठाया तो उसका चेहरा चमक रहा था और उसकी आँखों से चिनगारियाँ-सी निकल रही थीं—"यह हत्या नही तो और क्या है ? जब भगवान के सामने तुम्हे इसका जवाब देना पड़ेगा तब पछताओगी।...अब भी मान जाओ, ऐसा न करो !... माँ, तुम मेरी माँ हो, मैं तुमसे भीख माँगती हूँ !" उसने लक्ष्मी के सामने हाथ फैला दिये।

बुढ़िया ने उसके पास जाकर उसे गले से लगा लिया और फिर अमरू के पैरों पर गिरकर कहने लगी, "रहने दो इसे ! छोड़ दो इसे ! सेठ जी, यह अगर नहीं जाना चाहती है तो इसे छोड़ दीजिये। मैं अपने सफेद बालों की दुहाई देती हूँ। आपके पैरों पड़ती हूँ !"

"चुप रह !" अमरू ने चिल्लाकर कहा; उसका सारा शरीर काँप रहा था। उसने लक्ष्मी को धक्का देकर हटा दिया।

"अगर यह इतनी जिद्दी है तो..." सेठ ज्वालाप्रसाद ने कहना आरम्भ किया।

"नहीं, सेठ जी, वह ठीक हो जायेगी," अमरू ने सेठजी को आश्वासन दिलाया—"औरत की जात भी अजीब होती है...पहले नहीं-नहीं करती है, बाद में हाँ-हाँ करने लगती है। ये आजकल की लड़कियाँ सब खराब हो गयी हैं!"

गौरी का साहस फिर लौट आया था। उसने डुपट्टे से अपने आँसू पोंछकर कुछ देर के लिए रोना बन्द कर दिया था। पर उसके हृदय की कटुता बढ़ती ही जा रही थी, उसका चेहरा क्रोध से लाल होता जा रहा था और उसकी भावनाएँ उग्र रूप धारण करके दृढ़ प्रतिरोध का रूप धारण करती जा रही थी।

उसे इतनी स्फूर्तिमय देखकर अमरू गलती से यह समझा कि उसने उसकी दुष्ट योजना को स्वीकार कर लिया है और वह उसे बाँह पकड़ कर उठाने का प्रयत्न करने लगा।

वह चारपाई पर फिर गिर पड़ी और गठरी बनकर लेट गयी। "चले जाओ यहाँ से, पापियो! नरक में जाओ तुम लोग...! पिशाच कहीं के!...मुझे न सताओ!"

यह सुनकर अमरू की इज्जत को ठेस लगी। उसने डपटकर कहा :

"चल, हट पगली कहीं की! तुझे चलना ही पड़ेगा।"

"हाय, हाय री, मैं क्या करूँ?" लक्ष्मी अपनी बेटी को गले लगा कर रोने लगी।

पर अमरू ने उसे हाथ बढ़ाकर इस तरह उठा लिया जैसे कोई मुसाफिर जल्दी में अपनी गठरी बगल में दबा लेता है। उसने अपने बाँये पैर से लक्ष्मी को इतने जोर से ठोकर मारी कि वह मुँह के बल चारपाई पर गिर पड़ी।

पर गौरी का हठ भी अमरू के अभिमान से कम नहीं था। उसकी पकड़ से अपने को छुड़ाकर वह दूर जा खड़ी हुई और फिर चकरा कर फौरन बान की चारपाई पर गिर पड़ी।

इस अपमान पर अमरू क्रोध से पागल हो उठा और उसने उसकी चोटी पकड़कर उसे चारपाई से नीचे खींच लिया। उसके बालों की जड़ों में इतनी पीड़ा हो रही थी कि उसकी सारी शक्ति खत्म हो गयी। वह बिल्कुल निर्जीव-सी हो गयी। अमरू उसे उसकी इच्छा के विरुद्ध जमीन पर घसीटता हुआ ले चला और वह हाथ-पैर पटकती रह गयी।

"हाय !" लक्ष्मी ने बेबसी से रोते हुए कहा—"अगर वह नहीं जाना चाहती तो उसे मजबूर न करो। उस पर इतना अन्याय न करो। चाहो तो मुझे मार डालो मगर उसे छोड़ दो।"

"चिल्ला, और जोर से चिल्ला !" अमरू ने पागलों की तरह चीखकर कहा—"मैं अभी तुझे ऐसा ठीक किये देता हूँ कि फिर कभी तू दूसरों के सामने मेरी बेइज्जती न कर सके !"

"अरे माँ, तू खड़ी देख रही है और यह मुझे काँटों में घसीट रहा है।" गौरी ने रोते-रोते कहा।

व्यथा की इस करुण चीत्कार से लक्ष्मी का हृदय फटा जा रहा था। उसने अपनी आँखों पर दोनों हाथ रख लिये और मुँह छुपाकर चारपाई पर लेटकर रोने लगी।

पर अमरू के हृदय में बिल्कुल दया नहीं थी। भयानक क्रूरता के साथ वह गौरी के सुकुमार शरीर पर अपनी पकड़ और तेज करता गया। वह एक शिकारी चिड़िया की तरह कभी उसकी बाँहों पर चुटकी काटता था और कभी उसके शरीर पर। आखिरकार उसने उसे उठाकर अपनी पीठ पर लाद लिया और बाहर खड़े हुए घोड़े तक पहुँचा दिया।

पास-पड़ोस के कुछ लोग कौतूहलवश छतों पर खड़े देख रहे थे या नीचे आकर अपने दरवाजों पर खड़े कानाफूसी कर रहे थे। अमरू के क्रोध के भय से किसी को बोलने का साहस नहीं हो रहा था। पर अमरू समझ रहा था कि वे उसे निन्दा की दृष्टि से देख रहे हैं इसलिए उसने कहा :

"यह पागल लड़की बीमार है पर होशियारपुर के अस्पताल जाने को किसी प्रकार तैयार नहीं होती।"

"अमरू, तुम्हें भी साथ चलना पड़ेगा !" सेठ ज्वालाप्रसाद ने कहा, "उसे साथ ले जाने के लिए कोई होना चाहिए न।"

गौरी अभी तक सिसक-सिसककर रो रही थी यद्यपि उसका हौसला बिल्कुल पस्त हो गया था और उसका शरीर निढाल पड़ा था। उसने अपनी हार स्वीकार कर ली थी।

पाँच

●●१

थोड़ी देर तक उखड़ी नींद सोने के बाद जब उसकी आँख खुली तो उसने अपने-आपको होशियारपुर के एक घर के कोठे पर पड़ा पाया। उसका शरीर बुखार से तप रहा था और वह बार-बार अँगड़ाइयाँ और जम्हाइयाँ ले रही थी। बड़ी बड़ी सफेद मूँछोंवाले एक आदमी ने—जिसकी आँखों के नीचे की खाल लटक आयी थी और जिसके माथे का तिलक उसके कुलीन होने की साक्षी दे रहा था और जिसके नंगे-स्थूल शरीर पर एक जनेऊ शोभायमान था—गौरी के ऊपर झुककर उसके माथे पर हाथ फेरा था और कुछ प्यार-भरी बातें कहकर उसे ढाढ़स बँधाया था। गौरी समझी थी कि शायद वही आदमी उसे वहाँ लाया होगा। पर उसकी धर्मात्माओं जैसी इन बनावटी बातों पर झुँझलाहट के सिवा उसने और कुछ भी अनुभव नहीं किया था। कारण यह था कि अमरू के क्रोध के भय से वह गाँव में ही बिल्कुल बेजान हो चुकी थी और इस आशा से, क्योंकि पंछी के वापस आने का चमत्कार तो हुआ नहीं था, उसने स्वयं को भाग्य पर छोड़ दिया था कि यदि पंछी कतई न आया तो वह बूढ़े से फिर कभी ब्याह करने का वादा करके उसे टालती रहेगी और किसी प्रकार घर की नौकरानी रहकर अपने सतीत्व की रक्षा करेगी।

कमरे की तीन दरवाजों जैसी खिड़कियों से धूप आकर उसके पलंग पर पड़ी रही थी और उसके पसीने में नहाये हुए शिथिल शरीर को और भी तर कर रही थी। उसकी हड्डियाँ टूटी जा रही थी और प्यास के मारे उसका गला सूख रहा था। उसने कराह कर मन ही मन विवाह न करने का निश्चय किया और उसकी ठोड़ी अपने-आप ही ऊपर को उठ गयी।

बेचैनी के कारण उसके पसीना छूट रहा था; वह फूट-फूटकर रो रही थी। वह इस तरह तड़प उठी जैसे बलात्कार के बाद की वेदना का यह अन्तिम ज्वार हो।

जिस समय वह इस प्रकार अन्तर्द्वन्द्व में उलझी हुई थी, अमरू ने चुपके से कमरे में प्रवेश किया और चारपाई पर उसके पास आकर बैठ गया। गौरी की हालत से वह कुछ घबरा-सा गया था और उसका दिमाग कुछ ठंडा हो गया था। क्योंकि ऐन उस वक्त पर जब कि उसके बदले में मिलने वाली रकम से इस अकाल के जमाने में उसको और लक्ष्मी—दोनों को काफी पैसे मिल सकते थे, वह नहीं चाहता था कि कोई ऐसी-वैसी बात हो जाये जिससे गाहक गौरी को लेने से इन्कार कर दे या वह लड़की खुद अपने हठ पर इतनी देर तक अड़ी रहे कि सेठ जी डरकर उससे हाथ खींच लें।

"बेटी गौरी!" उसने बनावटी प्यार दिखाते हुए कहना आरंभ किया।

सहसा गौरी का जैसे खून जम गया, उसने तड़पना और कराहना बन्द कर दिया पर बोली कुछ नहीं। उसकी आँखों में भरे हुए आँसू इस तरह चमक रहे थे मानो उसकी आत्मा के बन्दीगृह को प्रकाशमान कर रहे हों। वह अपनी आत्मा के अंधकार में विलीन हो गयी और सोचने लगी कि उसके प्रश्नों का क्या उत्तर दे। अमरू के घृणास्पद व्यक्तित्व और उसकी सहानुभूति दिखाने की धृष्टता के कारण वह बिल्कुल मूक हो गयी थी। उसने अपने होठों से चटकारी ली फिर उन्हें अपनी जीभ से चाटा और इस तरह हाँपती रही जैसे उसकी साँस न समा रही हो।

उसके होठों को देखकर अमरू समझ गया कि वह प्यासी है।

"मैं अभी तेरे लिए पानी लाता हूँ!" उसने कहा और जाकर सुराही से पीतल के गिलास में ठंडा पानी ले आया।

गौरी उठकर बैठ गयी और गिलास लेकर पानी के लम्बे-लम्बे घूँट पीने लगी।

"इतना न पियो !" उसने उसे समझाया क्योंकि उसने सोचा कि बुखार में ठंडा पानी नुकसान पहुँचायेगा।

लेकिन गौरी ने गिलास खाली कर दिया और फिर लेट गयी। उसे चैन पड़ गया था, पर पानी पीने में उस पर इतना जोर पड़ा था कि वह थक गयी थी।

अमरू खिसियाया हुआ कनखियों से उसे देखता रहा। जानबूझकर गौरी उसके साथ उपेक्षा का जो बरताव कर रही थी, उससे वह समझ गया कि वह उसे अपना शत्रु समझती है। वह यह भी समझ गया कि अब वह उसके साथ चाहे जितनी नरमी से पेश आये, पर वह उसके हृदय की कटुता को दूर नही कर सकता था। उसने अपना सर झुका लिया और काफी देर तक उसके पास इसी तरह चुपचाप बैठा रहा।

"गौरी, यहाँ हम दोनो के अलावा और कोई नही है। तुम मुझसे डरो नही। मैं बहुत बुरा हूँ, पर अब मै तुम्हे और दुःख नही दूँगा। मुझे जितनी बुराई करनी थी वह मै कर चुका। अब तुम यहाँ आ गयी हो। अब तुम्हे यह समझ लेना चाहिये कि तुम सेठ ज्वालाप्रसाद की हो चुकी हो। हम गरीब लोगों के लिए इसके अलावा और कोई चारा ही नही है। ...जहाँ तक मेरा सवाल है, मै तो दिन-ब-दिन और बुरा होता जाऊँगा क्योंकि यही एक तरीका है जिससे मैं अपनी जमीन और तेरी माँ की गाय बचा सकता हूँ। ये बनिये खून चूसनेवाली जोंके है। हम छोटे लोग है, इन सेठों के दास है !"

गौरी बीच में बोल उठी, "मुझे तो ताज्जुब इस बात पर होता है कि मेरी माँ ने मुझे कैसे बेच दिया ? अगर उसे बड़ा होने पर मुझे इसी तरह मार डालना था तो उसने पैदा होते ही मेरा गला क्यों नहीं घोट दिया था।"

उसने यह बात बच्चों जैसे भोले स्वर मे कही थी। यह उसके हृदय की निर्जनता से आनेवाली प्रतिरोध की आवाज थी; डर के मारे साफ बात न कहने के कारण उस निर्जनता मे उसके अस्तित्व की वास्तविकता

का लोप हो गया था। इस समय चूँकि वह साफ-साफ शब्दों में समाज के चिरस्थापित बंधनोंके खिलाफ अपने विचार व्यक्त कर रही थी, जिनमे उसकी कटुताके कारण और भी जोर पैदा हो गया था, इसीलिए उसके शब्दों द्वारा व्यक्त होनेवाला सत्य अमरू की चेतना पर हथौड़े मार रहा था, उसके कान फटे जा रहे थे।

आश्चर्य की बात तो यह थी कि वह उसकी इन बातों पर क्रुद्ध नहीं हुआ बल्कि अपने अपराधों को और भी स्पष्टरूपसे स्वीकार करने लगा : "बेटी, मैंने जब से होश सँभाला, तब से मै ऐसा ही हूँ। मैंने कभी यह समझने की कोशिश भी नहीं की कि तुम क्या सोचती हो। मै अपने बल के घमड मे रहा। हर किसान अपने शरीर के बलपर भरोसा करता है। मगर मैं अखाड़े मे किसी बुराई की इच्छा से नहीं बल्कि केवल अपने शरीर को बलवान बनाने की इच्छा से कसरत करने जाता था। फिर शराब...और औरतें...और फिर...मैं जानता हूँ कि अच्छे बोल बोलना और अच्छे काम करना खाली सुख या मुनाफे की लालसा मे रहने से कही अच्छा है, मगर फसलों के खराब होने के कारण ही मै ऐसा हो गया हूँ। चोर-बजारवालो को कोई रोक-टोक नही है...अमृतसर के कम्मू पहलवान को ही देख लो, जो पहले डाकू था, अब वह गरीबों को कम्बल बाँटता है क्योंकि उसके पास पैसा है...मै भी किसी दिन धर्मशाला की मठिया को भैरो की एक मूरत दान कर दूँगा...मैं जानता हूँ कि मै जानबूझकर तुम्हे दूसरे के हाथ में सौंप रहा हूँ...कि वे तुम्हारे साथ... मैं अभागा हूँ..." गौरी चाहती थी कि उठकर बैठ जाये और उसे आँखें फाड़-फाड़कर घूरे। अगर उन दोनों की आँखे चार हो जाती तो गौरी की आँखों से ज्वालाएँ निकलने लगती, पर वह अपनी नजरें फेरे बैठा था, इसलिए गौरी को उसपर बड़ा तरस आने लगा। पर उसके हृदय मे जो क्रोध छुपा हुआ था उसे रोकना किसी प्रकार सम्भव न था :

"तुमने जिन्दगी भर केवल अपना स्वार्थ देखा है।...तुमने मेरी माँ की जिन्दगी बरबाद की और कौन जाने मेरे बाप को जहर भी तुम्ही ने

दिया हो..."

गौरी का अग-अग उत्तेजना से फड़क रहा था और ऐसा मालूम होता था कि वह अभी फट जायेगी। पर अपने पिता की याद आते ही उसकी आँखों में आँसू आ गये और सहसा उसे यह आभास हुआ कि वह उसके परिवार का एक अग ही है। उसमें विनम्रता, आज्ञापालन और आत्म-बलिदान की वह सारी झूठी भावनाएँ सहसा जाग्रत हो उठी जो उसके बड़े बूढ़ों और पुरोहितों ने उसमें कूट-कूटकर भर दी थीं। उसे अपने मामा पर केवल तरस आ रहा था क्योंकि वह उम्र मे उससे बडा था। तमाम पूजा-पाठ और धर्म की शिक्षाओं ने गौरी को कुछ ऐसी चीजों पर भी विश्वास करना सिखा दिया था, जिन्हे वह बिल्कुल झूठ समझती थी और यही विश्वास उसके अस्तित्व की आधार-शिला बन गया था। और इसी विश्वास के कारण उसने बिना सोचे-विचारे झूठी भावुकता की वेदो पर अपने जीवन के सरल सत्य को बलि चढ़ा दिया...

उसने उसकी तरफ से मुँह फेर लिया और अपनी इस नैतिक विजय के उल्लास मे लीन हो गयी। वह इतनी चुप और शान्त लेटी थी, जितनी वह पिछले दो दिनो मे कभी न हुई थी।

बड़ी देर तक जब कोई न बोला तो अमरू को उलझन-सी होने लगी और उसने उठते हुए कहा :

"अच्छा तो मैं अब चलता हूँ और..."

गौरी ने कोई उत्तर न दिया और सेठ ज्वालाप्रसाद की आगे बढ़ती हुई आकृति को देखती रही। वह उसी समय ऊपर कमरे मे आये थे। उसकी जलती हुई आँखें साहूकार की आँखों के नीचे की लटकी हुई खाल पर केन्द्रित हो गयी, मानो वह उनके बुढ़ापे के इस ज्वलंत प्रमाण को, उनकी निर्बलता की इस निशानी को, भली-भाँति अपने हृदय-पट पर अंकित कर लेना चाहती हो, क्योंकि इसी के साथ तो उसका ब्याह होना था। लेकिन वह उन्हे अच्छी तरह देख भी न पायी थी कि सेठजी सीधे

अमरू की तरफ बढ़े और बोले :

"बीबी का बुखार उतरा ?"

"हाँ सेठजी," अमरू ने उत्तर दिया, "अब मैं इसे आप के हाथों मे सौंप कर जा रहा हूँ। मुझे मालूम है कि आप को किसी ऐसे आदमी की जरूरत है जो आप का ख्याल रख सके। और गौरी बड़ी सेवा करने वाली लड़की है; वह सब कुछ सह लेगी और कभी कुछ नहीं कहेगी। बड़ी नेक लड़की है !..."

"अमरू भैया, जब से मेरी घर वाली मरी तब से मुझे एक क्षण के लिए भी चैन नहीं मिला। मेरी तन्दुरुस्ती बिगड़ती जा रही है। मुझे नींद नहीं आती। इसीलिए ब्यौपार को भी धक्का पहुँचा है !...अब घर मे यह बीबी आ गई है...भगवान की कृपा से मै बड़ा भाग्यवान हूँ ...!" फिर वह गौरी की तरफ मुड़ा और उसे धीरज बंधाने लगा; "बीबी डाकदर साहब आ रहे है।...तुम जल्दी ही अच्छी हो जाओगी।...मै तुम्हारे मामा को पहुँचा आऊँ ?..."

"अच्छा, बेटी गौरी, तो मैं अब जाता हूँ," अमरू ने सहसा मुड़ते हुए कहा, "जल्दी अच्छी हो जाना। मै तुम्हे सेठ ज्वालाप्रसाद जी के हाथों मे सौंपे जाता हूँ !"

गौरी ने अपनी आँखे बन्द कर ली थी, उस कबूतर की तरह जो बिल्ली को आता देखकर आँखे बन्द कर लेता है और समझता है कि अगर वह अपने शत्रु को नहीं देखेगा तो उस पर कोई आँच नहीं आयेगी।

●●२

जैसा कि गौरी को डर था, सेठ ज्वालाप्रसाद अमरू को छोड़ने के बाद फौरन उसके पास लौट आये। गौरी कुछ-कुछ ऊँघ रही थी पर उसे उनके वहाँ आने का ज्ञान हो गया था, इसलिए वह मुँह फेरकर लेट गयी और

यह कोशिश करने लगी कि उसके दिमाग में उनका विचार भी न आये। उनकी स्थूल आकृति को अपनी आँखों से दूर रखने के लिए उसने जान-बूझकर आँखें बन्द कर लीं। उसने अनुभव किया कि उसका शरीर चेतनाहीन होता जा रहा है।

सेठ ज्वालाप्रसाद की समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करें? वह बड़ी देर तक खड़े, उसके सौन्दर्य और शरीर की गढ़न को कनखियों से देखते रहे कि कहीं घूरते हुए पकड़ न जायें और एक निराश प्रेमी की तरह, जो सब कुछ हार जाने के बाद भी हिम्मत नहीं हारता, वहाँ बैठ गये। वे बहुत पछता रहे थे कि उन्होंने बड़ी गलती की कि पंडित राम-नरायन से उसकी जन्मपत्री दिखवा कर यह न मालूम कर लिया कि उसके ग्रह उनसे मेल भी खायेंगे कि नहीं। उनका दिल बेचैन था, उसमें एक आग-सी लगी हुई थी। उन्होंने बिना सोचे-समझे उसे बुलवा भेजा।

उसके नितम्बों की वह भरी हुई गोलाइयाँ उनकी आँखों के सामने पहाड़ के उभार की तरह नाच रही थीं; उनका हृदय उन नितम्बों के स्पर्श के लिए लालायित था। और उसकी वे सुडौल जाँघें!...न जाने कितने जमाने बाद उन्होंने ऐसे गठे हुए गोल नितम्ब देखे थे!...उन नितम्बों की खातिर वह उसकी सारी उपेक्षा को भूल जाने को तैयार थे।...यदि केवल एक बार वह उसे अपनी टाँगों के नीचे दबा सकते तो वह साबित कर देते कि वह इतने बूढ़े और बेकार नहीं थे, जितना कि वह समझती थी।...कितना गंदा विचार था! उन्हें अपने बुढ़ापे का विचार कभी अपने दिमाग में भी नहीं लाना चाहिए, नहीं तो वह भी निश्चय ही ऐसा सोचने लगेगी। पुरोहित जी ने ही तो कहा था कि कुछ विचार होते हैं जो एक व्यक्ति के दिमाग से दूसरे व्यक्ति के दिमाग में पहुँच जाते हैं और यह बात सर्वथा तर्कसंगत थी कि अपने बुढ़ापे के बारे में उनका भय अपनी उग्रता के कारण गौरी के दिमाग में भी समा जाये! फौरन कुछ करना अनिवार्य हो गया था। डाक्टर को बुलाया जाये। पहले वह अच्छी हो जाये तब ही कुछ छेड़-छाड़ की जा सकती है।

"बीवी, मै जाकर डाक्टर महेन्द्रा को बुलाये लाता हूँ," सेठजी ने कहा, "तुम डरो नहीं।"

गौरी उनकी तरफ पीठ किये पूर्ववत् लेटी रही। बल्कि उसने जानबूझ कर अपना दम भी साध लिया ताकि उसकी साँस से भी पता न चले कि उसने उनकी बात सुनी थी या उसे उनकी बात में दिलचस्पी थी या वह उसे चंगा करने की उनकी योजनाओं की परवाह करती थी।

गौरी पर अपनी बात का कोई असर होता न देखकर सेठजी अधीर हो उठे। उन्हें अपनी आँखों के आगे सन्नाटा असह्य हो गया और वह दिल कड़ा करके 'ईश्वर ! ईश्वर ! परमात्मन् !' कहते हुए उठ खड़े हुए। वह सोच रहे थे कि शायद भगवान का नाम लेने से किसी चमत्कार के द्वारा गौरी का दिल उनके प्रति कुछ नरम पड़ जाये।

कुछ कदम जाने के बाद उन्होंने मुड़कर उसे देखा। वह अभी तक हठ किये लेटी हुई थी; यह देखकर सेठजी को भगवान की सहायता पर जो भरोसा था, वह भी जाता रहा। उनकी आँखे सिकुड़कर बिल्कुल तीर की तरह पतली हो गयी और उनके चारों तरफ की झुर्रियाँ और भी टेढ़ी हो गयीं। सेठजी को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनके शरीर में जान न रह गयी हो, वह गिरे जा रहे हों। उनके मस्तिष्क में यह विचार बिजली की तरह कौंध गया कि यह उन्हे शायद पिछले पापों का दण्ड मिल रहा था; शायद इसलिए कि उन्होंने अपनी पत्नी के साथ बड़ी बेरुखी का बरताव किया था।

"ओम् ! हरिओम् ! ईश्वर ! परमात्मन् !" वह बार-बार अन्धविश्वास के साथ भगवान का नाम ले रहे थे। उनके हृदय में यह आशा छुपी हुई थी कि यदि उन्होंने भगवान के प्रति अपना विश्वास बनाये रखा तो उनके सारे पापों को क्षमा कर दिया जायेगा। डाक्टर को बुलाने जाना स्वतः एक ऐसा पुण्य-कार्य बन गया जो उनके हृदय की निष्कलंकता और निःस्वार्थ भावना को सिद्ध कर देगा, क्योंकि गौरी ने उनके साथ असीम उपेक्षा का जो बरताव किया, उसके बावजूद उनकी यह कोशिश

कि वह अच्छी हो जाये, सचमुच एक उदात्त ध्येय था। कौन जाने धर्म के सिद्धान्तों के प्रति आस्था के इस प्रदर्शन के पुरस्कार-स्वरूप उन्हें उसका थोड़ा-सा प्यार भी मिल जाये।

●●३

गौरी लेटी-लेटी छज्जे पर लटके हुए तुलसी के वृक्ष को देख रही थी, जिसमें सेठ ज्वालाप्रसाद बड़ी भक्ति के साथ प्रतिदिन पानी डालते थे। बुखार के कारण उसका सर भारी हो गया था। कटु भावनाओं के प्रवाह में बहते हुए सेठजी द्वारा भगवान के नाम का स्मरण, उसके कानों में प्रतिध्वनित हो रहा था। उसे वह घटना याद हो आयी जब एक दिन वह अपनी माँ की तरफ से मन्दिर मे प्रसाद चढ़ाने गयी थी और पण्डित भोलानाथ ने उसे अपनी काम-वासना का शिकार बनाना चाहा था। उस समय वह लड़की ही थी; पर तभी से उसके दिमाग में यह बात बैठ गयी थी कि धर्म का दम भरना केवल काम-वासनाओं को छुपाने के लिए एक परदा है। वह न तो उस पुरोहित को दोष देती थी, जिसने उसका कौमार्य नष्ट करने का प्रयत्न किया था, न उस बूढ़े को दोष देती थी जिसने उसे खरीदा था...दोनों ही ने इस बलात्कार को पवित्र श्लोकों के द्वारा एक पुनीत कर्म सिद्ध करना चाहा था, पर वह उनके इस आचरण के पीछे छुपी हुई धूर्तता को समझ गयी। वह पूरी तरह जाग चुकी थी और खिड़कियों से आती हुई सूरज की तेज धूप उसके शरीर को झुलसाये दे रही थी। उसकी नजर कमरे के दूसरे सिरे पर रखी हुई गणेशजी की मूर्ति पर पड़ी, जिसके गले मे ताजे फूलों की माला पड़ी हुई थी और उसका दबा हुआ प्रतिरोध फूट निकला। उसने क्रुद्ध होकर अत्यन्त निष्कपट भाव से कहा, 'यदि भगवान इन कुत्तों का पक्ष लें तो भगवान हमेशा के लिए मिट जायें!'...यह शब्द अभी उसके होठों से

निकले ही थे कि उसके हृदय में फिर वैसा ही भय समा गया जैसा कि उस दिन पीपल के पेड़ के पास भैरों की मूर्ति के पास खड़े-खड़े उसे लगा था। उसे भय हुआ कि अभी उसने जो नास्तिक विचार प्रकट किया था, उसके कारण कहीं वह भगवान के कोप का शिकार न हो जाये! जल्दी से उसने देवताओं के विरुद्ध अपना वह प्रतिरोध वापस ले लिया। कमरे में सूरज की भरपूर रोशनी आ रही थी, फिर भी उसे ऐसा लग रहा था कि जैसे वह कारावास में पड़ी हो। क्रोधावेश में कहे हुए शब्दों का प्रायश्चित्त करने के लिए अपने अन्धकारमय हृदय में वह भगवान से प्रार्थना करने लगी। उसका भगवान बिल्कुल ही निराला—अपरिचित भगवान था, जिसे आज तक किसी ने नहीं जाना था। वह देवताओं से बुदबुदा कर प्रार्थना कर रही, यद्यपि उसे मालूम नहीं था कि वे महान देवता कौन-से हैं: "हे परमेश्वर, मुझे क्षमा कर दो, मुझे क्षमा कर दो, मुझे क्षमा कर दो!"

जीने पर किसी के कदमों की आहट सुनकर उसका यह एकान्त वार्तालाप बन्द हो गया और उसने वह सफेद चादर, जो उसने उतार फेंकी थी, फिर ओढ़ ली।

खाकी फौजी कमीज, खाकी पतलून और साहबों जैसी खाकी धूप की टोपी पहने हुए एक व्यक्ति कमरे में आया। उसके हाथ में चमड़े का एक थैला था और उसके पीछे-पीछे सेठ ज्वालाप्रसाद आ रहे थे।

वह समझ गयी कि यही डाक्टर है, इसलिए उसने अपने बाल कुछ ठीक कर लिये ताकि वह बहुत ज्यादा भद्दी न दिखायी दे।

आगन्तुक ने आगे बढ़ते हुए उसे इस प्रकार घूरा मानो उसे आँखों ही आँखों में निगल जायेगा।

"बीबी, घबराओ नहीं," आगन्तुक ने शिष्टता से आँखें झुकाकर कहा, "मैं डाक्टर..."

"करनैल महेन्द्रा साहब!" सेठ ज्वालाप्रसाद ने उस पर रोब डालने के लिए जल्दी से कहा।

गौरी पर इस नाम का काफी रोब पड़ा। पर उसके चेहरे पर जो लाली छायी हुई थी, उससे तो यह समझना कठिन था कि यह उसके शात रहने के प्रयत्न के कारण है, बल्कि मालूम यह होता था कि उसे हिस्टीरिया का दौरा पड़ गया है।

कर्नल महेन्द्रा ने बड़े नपे-तुले ढग से उसकी कलाई हाथ मे लेकर उसकी नब्ज देखी, फिर उसके माथे पर हाथ रखकर बुखार देखा और फिर बहुत ही दिखावटी ढंग से बोलचाल की साधारण पंजाबी मे कहा :

"तूने अपने-आप को बीमार डाल लिया है। है ना ?"

गौरी ने कोई उत्तर नहीं दिया, पर डाक्टर की इस बात की सच्चाई से खिसियाकर उसका चेहरा लाल हो गया।

"सेठजी," कर्नल महेन्द्रा ने साहूकार साहब को सम्बोधित करके कहा, "आप थोड़ी देर के लिए जरा बाहर चले जाइए, मैं इन्हे देख लूँ।"

सेठजी बड़ी विनम्रता से हाथ जोड़कर फौरन बाहर चले गये।

डाक्टर ने गौरी से कुरते के बटन खोलने को कहा और उसके दिल के पास अपना आला लगाकर सुनने लगे। फिर उन्होने उसकी बॉह खोलकर उसपर रबर की एक पट्टी बॉधी और फिर उसमे हवा भरकर रबर की नलियॉ कान मे लगाकर सुनने लगे।

"बीबी जरा पेट के बल तो लेट जाओ," उन्होने सख्त आवाज मे कहा। उनके माथे पर बल थे, पर उनके होंठों पर एक रूखी-सी मुस्कराहट भी थी, जो माथे के बलों को झुठला रही थी। डाक्टर साहब ने उसकी पीठ पर आला लगाकर फिर देखा।

"अच्छा," उन्होंने पहले की अपेक्षा कोमल स्वर मे कहा और फिर शरमाकर अपनी ऑखें उसकी तरफ से फेरकर बोले, "कोई बात नहीं है ...बस थोड़ा-सा बुखार है। मगर तुम ज्यादा फिकर न करना !"

गौरी के लिए इससे अच्छा अवसर और क्या हो सकता था ? वह डाक्टर की बात सुन रही थी पर खुद भी कुछ कहने के लिए बेताब थी।

क्या वह कह दे ?...शायद डाक्टर साहब उसे छुड़ा लें।...नहीं !... डाक्टर साहब तो बहुत ही रोबदार व्यक्ति थे; वह उसे अपने से बहुत दूर नजर आये। वह उनकी कौन होती है ?...लेकिन फिर भी जुआ है !... यह तमाम विचार एक क्षण मे बिजली की तरह उसके दिमाग में कौंध गये। अन्तिम आशा से प्रेरित होकर उसने साहस बटोरकर कहा :

"मेरे रिश्तेदारों ने मुझे सेठजी के हाथ बेच दिया है और..." इतना तो वह आवेश मे आकर कह गयी, पर इसके आगे उसके मुँह से एक शब्द न निकला। उसे अपने-आप पर तरस आ रहा था। "मैं पेट से हूँ और मेरे पति पिपलाँखुर्द मे हैं।"

"हूँ," डाक्टर साहब ने गम्भीरतापूर्वक सर हिलाकर कहा। यद्यपि उनका चेहरा लाल हो उठा था, पर वह मुड़े और अपना सामान लेकर बिना कुछ कहे, चल पड़ने को तैयार हो गये।

हैट उठाकर चलते हुए उन्होंने केवल इतना कहा :

"मैं तुम्हारे लिए दवा भेज दूँगा।...मगर तुम जब तक खुद नहीं चाहोगी तब तक अच्छी नहीं हो सकती।"

इतने मे सेठ ज्वालाप्रसाद आ गये और डाक्टर साहब ने अपनी बात खत्म कर दी।

"हाँ, डाक्टर साहब, इसे जरा अच्छी तरह समझा दीजिये कि जल्दी अच्छी होने की कोशिश करे। गरीबपरवर, मेरे यहाँ इसकी देखभाल करनेवाला कोई नहीं है। आप तो जानते ही है कि कुछ महीने पहले मेरी बीवी मर गयी थी।...मैने सोचा था कि यह लड़की आकर मेरा खाना पका दिया करेगी।...मगर अब यह बीमार पड़ गयी है और मुझे उल्टे उसकी देखभाल करनी पड़ती है।"

"किसी को मेरे दवाखाने से दवा ले आने के लिए भेज दीजियेगा।" कर्नल महेन्द्रा ने बड़े सपाट ढग से कहा और जीने की तरफ चल दिये।

सेठ ज्वालाप्रसाद ने पन्द्रह रुपये उनके हाथ मे रख दिये। डाक्टर साहब ने रुपये जल्दी से अपनी कमीज की जेब में डाल लिये, मानो उन्हें

रुपये लेने मे बड़ी शर्म लग रही हो, और वह फौजी डग भरते हुए जल्दी से सीढ़ियों पर से नीचे उतर गये।

●●४

दोपहर के करीब जब सूरज की गरमी पीड़ाग्रस्त गौरी के लिए असह्य हो गयी थी, उस समय सेठ ज्वालाप्रसाद हाँपते-काँपते, पसीने मे नहाये हुए वापस लौटे। उनके हाथ में कई बंडल थे।

गौरी ने मुँह फेर लिया। उसने सोचा था कि शायद इस प्रकार वह घड़ी टल जाये क्योंकि सेठजी एक बार फिर उससे वही चीज माँगेगे, जिसके लिए उन्होंने पैसे चुकाये थे। पर मुँह फेर लेने के बावजूद वह अनायास ही काँप उठी, क्योंकि यद्यपि बाहर से तो वह हर चीज के प्रति उदासीन बनी हुई थी, पर वह एक ऐसी भावना की धारा मे वही जा रही थी जिसका कोई नाम नहीं था। पंछी की बेवफाई पर उसका गम, अपनी माँ और मामा के खिलाफ उसका गुस्सा और इस अजनबी के प्रति उसकी घृणा—ये सभी भावनाएँ उस एक अज्ञात भावना के भँवर मे मिल गयी थी।

उन्होंने उसे एक गिलास पकड़ा दिया, उसमे शीशी से एक खुराक दवा उँडेली और उनके बीच संकोच की जो खाई बाधा बनी हुई थी, उसे दूर करने के विचार से वे बोले :

"दवाखाने के बाहर मुझे कितनी देर इंतजार करना पड़ा, कितने मरीज जमा थे वहाँ !"

दवा की कड़वाहट से उसका मुँह विकृत हो गया और उसने चेहरे पर अरुचि का वही भाव लिये हुए मुस्करा कर उनके पसीने में नहाये हुए चेहरे का निरीक्षण किया; फिर भी उसमें नौकरानियों वाली वह स्वाभाविक विनम्रता थी !

सेठजी ने गौरी को उपहार देने लिए यही मौका सबसे उचित समझा, बोले, "बीबी, मैं चाहता हूँ तुम जल्दी से अच्छी हो जाओ, फिर तुम यह बनारसी साड़ी पहनना, मै तुम्हारे लिए लाया हूँ .और ये गहने।...ये गहने हमारे परिवार मे कई पीढ़ियों से चले आ रहे है!... जब से बेचारी सेठानी का स्वर्गवास हुआ तबसे नीचे तिजोरी मे ही रखे थे।..." इन बीती बातों को दोहराते हुए उनकी आवाज भर्रा गयी और एक क्षण बाद उनकी आँखे सजल हो आयी। अपने पुरुषत्व के कारण उन्होंने आँखे दूसरी तरफ फेर ली, यद्यपि उनके गले से अस्पष्ट-सी आवाजे निकलती थी, जिनसे उनकी व्यथा साफ झलकती थी।

गौरी बैठी उन्हे स्तम्भित आँखों से घूरती रही। वह बुरा आदमी नही है...उसने भले ही उसे दासी के रूप मे खरीदा हो, पर वह उससे प्रेम तो जता रहा था। शायद वह व्यवहारकुशल था। वह सेठजी को कनखियों से देखती रही; उसे अब उन बड़ी-बड़ी मूँछों मे एक आकर्षण-सा प्रतीत होने लगा था, खिजाब की आड़ मे उनकी सफेदी अब और भी बढ़ गयी थी; उससे भी ज्यादा जितनी कि उस समय लगी थी, जब उसकी माँ ने उसे वह चित्र दिखाया था। कुछ भी हो, अपनी मृत पत्नी की याद मे एक बूढ़े आदमी का इस प्रकार रोना बहुत ही दयनीय लग रहा था।

सेठ ज्वालाप्रसाद को ऐसा लगा जैसे उसके निचले होंठ पर उन्हे दया का एक भाव दिखायी दिया हो और अचानक उनके दिमाग मे यह विचार उठा कि यह पिछली बातों को उसके सामने साफ-साफ मान लेने नतीजा है। इसलिए वे अपनी सारी दास्तान सुनाने लगे :

"बीबी, जबसे यशोदा का स्वर्गवास हुआ है तबसे मैं बिल्कुल अकेला हूँ। खाना पकाने और कपड़ा सीनेवाला भी कोई नहीं रह गया है। और तन्दूर का खाना तो बस...! इसके अलावा मै चाहता हूँ कि इस घर मे एक लक्ष्मी आ जाये, जिससे मेरे भाग्य चमक उठें।...परमात्मा की कृपा से मेरे पास सब कुछ है मगर आजकल बाजार मन्दा है। किसी

के पास कुछ खरीदने को पैसा ही नहीं है। और यह सूखा ऐसा पड़ा है कि गाँवों में ही नहीं बल्कि होशियारपुर ऐसे शहर में भी सब लोग जैसे सूख गये हैं। मैं दिन भर दूकान में बैठा राह देखता रहता हूँ कि कोई गाहक आ जाये, पर किसी की सूरत भी दिखायी नहीं देती।...मैं यहाँ तीसरे पहर अकेला पड़ा-पड़ा अपनी उस बेचारी स्वर्गवासी सेठानी की याद किया करता था।.. रात को मैं छत पर सोता था...मेरे पाँव दबाने के लिए मेरी घरवाली नहीं थी।...तुम नहीं जानती कि जब आदमी बूढ़ा होने लगता है तब उसे कैसा लगता है।"

"मैं आपके घर मे एक अच्छी नौकरानी की तरह काम करूँगी!" गौरी ने रुक-रुककर कहा। अपनी मृत पत्नी के बारे मे जिस प्रकार वह शोक प्रकट कर रहे थे, वह गौरी के लिए असह्य हो उठा क्योंकि वह एक दूसरी औरत के बारे मे बाते कर रहे थे। उसके मरने के बाद उन्हे जिस चीज का रंज था वह केवल यह था कि अब उन्हे वह आराम नहीं मिलता था।

"गौरी, तुम इस घर मे नौकरानी नहीं, देवी बनकर रहोगी। मै तुम्हारे लिए एक बहुत कीमती कश्मीरी चादर लाया हूँ...मै शायद बहुत बूढ़ा हो गया हूँ इसलिए हिन्दू धर्म की रीति-रस्मों के अनुसार तो शायद तुमसे विवाह न कर सकूँ पर अगर तुम यह चादर ओढ़कर मेरी पत्नी बन जाओगी तो..."

"नही!" गौरी ने चिल्लाकर कहा, और दोनों हाथों से अपना मुँह ढक लिया। उस व्यक्ति की क्रूरता और अत्यन्त दीन भावना पर वह झुँझला उठी—उनकी आँखों के नीचे की लटकी हुई खाल, जिसे वह कभी भूल नहीं सकती थी, वह शब्द 'कीमती' और चादर ओढ़कर पत्नी बनने का प्रस्ताव!

"अच्छा, बीबी, मै कुछ नही कहूँगा," सेठजी ने बौखलाहट में कहा—उनकी समझ मे नहीं आ रहा था कि गैरकानूनी ढंग से शादी कर लेने के अलावा उन्होंने ऐसी कौन-सी बात कही थी जिसका वह

बुरा मान गयी थी। उन्होंने इस मास के लोथड़े को प्राप्त करने के लिए, जो उनके सामने पड़ा था, कितनी मुसीबत उठायी थी, यह सोचकर वह अधीर होकर काँपने लगे। पर उसे खरीदकर उन्होंने जो पाप किया था, उसे स्वीकार करके सेठजी ने अपनी भावनाओं पर काबू पा लिया और उसके हठ को दूर करने के लिए वह उसके सर पर हाथ फेरने के लिए आगे बढ़े।

उनके हाथ के स्पर्श से ही गौरी का सारा शरीर अकड़ गया। उसे ऐसा प्रतीत हुआ जैसे किसी ने उसके साथ बहुत बड़ा अत्याचार किया हो! उसने सेठजी का हाथ इतने जोर से झटक कर अलग कर दिया कि बुढ़ऊ उसकी इस धृष्टता पर हक्के-बक्के रह गये। अनायास ही उनके मुँह से निकल गया, "चुड़ैल!"

गौरी घोर निराशा में डूबी आहें भर रही थी, "हाय माँ! हाय मेरी माँ! तुमने मुझे कहाँ भेज दिया!..." सेठजी को बहुत गुस्सा आ रहा था, पर इस डर से वह अपना गुस्सा रोक गये कि बाजार में या नीचे दूकान मे किसी ने सुन लिया तो सबको मालूम हो जायेगा कि उन्होंने एक औरत को खरीदा है और सारा होशियारपुर शहर उन पर हँसेगा। वह जानते थे कि जो लोग धन-दौलत के मामले मे उनके जितने भाग्यशाली नही थे, वे उनसे जलते थे और इसीलिए बाजार मे उनका तरह-तरह की बातों के लिए मजाक उड़ाया जाता था। लोग उन पर हँसते थे और बाजार मे किसी को उनसे सहानुभूति नही थी।

"बीबी, नही...इतने जोर से न चिल्लाओ। लोग सुन लेंगे।"

पर वह करवटें बदलती रही। सेठजी यह सोचकर एक गिलास मे पानी ले आये कि थोडा-सा पानी पीकर उसका मिजाज ठण्डा हो जायेगा। "लो, पी लो," उन्होंने पलंग के पास खड़े होकर उससे विनीत भाव से कहा, "मैंने जो कुछ कहा, सब वापस लेता हूँ।"

गौरी ने जोर-से सर हिलाकर इनकार किया और चादर में मुँह छुपाकर रोने लगी। उसने अपने होंठ कसकर भींच लिये ताकि कमरे से

बाहर उसकी आवाज न सुनायी दे।

सेठजी उसके शरीर को एकटक देख रहे थे, पर गौरी उनकी ओर बिल्कुल भी ध्यान नही दे रही थी। उसके सामने कितना ही उदार, कोमल या यथार्थपूर्ण भाव क्यों न व्यक्त किया जाये, उस पर कोई प्रभाव होनेवाला नही था। बच्चों की तरह लगातार अपनी माँ की दुहाई देने से सेठजी कुछ घबरा-से गये थे। और सहसा उनके हृदय मे यह विचार उठा कि शायद उनके लिए वह बहुत ही छोटी है, पर यह विचार आते ही वह बड़े अभिमान से अपनी गरदन टेढ़ी करके वहाँ से हट गये और बोले :

"मैंने तेरे लिए पैसे दिये है, कम-से-कम उसका एहसान मानना चाहिए तुझे !"

● ●५

तीसरे पहर तक सेठजी लौट कर नही आये और गौरी उखड़ी-उखड़ी नीद मे सोती रही। भूख, थकान और रोने के कारण उसकी नस-नस मे मौत की-सी मुर्दनी समा गयी थी। शाम के करीब जब उसकी आँख खुली तो उसने देखा कि उसी चौकी पर, जिस पर तोहफे रखे थे, दूध का एक गिलास रखा है। उसने जल्दी से गिलास उठा लिया और कुछ घूँट गले से उतार कर गिलास रख दिया कि कहीं कोई उसे अपना हठ भंग करते न देख ले, जिस पर वह अड़ी हुई थी; मानो कोई नाटक खेल रही हो। फिर उसने सर के नीचे से तकिया निकाला और उसे दोहरा करके अपने सीने के नीचे दबा लिया और बाहर छज्जे की तरफ देखने लगी।

सूरज की अन्तिम किरणें बिदा हो चुकी थीं, बाहर हल्का-हल्का अंधकार छाता जा रहा था। बाजार मे लोगों के कदमों की आहट तेज हो गयी थी; खोमचेवालों और भिखारियों की आवाजें दूर से आती हुई

सुनायी दे रही थी और बीच-बीच मे पास के किसी घर के छज्जे पर से एक तोते की तेज आवाज सुनायी दे रही थी। उसकी आँखें कुछ धुँधलायी हुई और बोझिल थी। वह भावहीन चेहरे से गोधूलि वेला देखती रही; उस समय उसे अन्धकार के अलावा और किसी चीज का ज्ञान नहीं था। उसने बाहर घूरकर देखा और खिड़की से आकाश का जो टुकड़ा दिखायी दे रहा था, उस पर बाहर के कोलाहलमय चौक मे लगे हुए पेड़ के ऊपर उसे बादल मँडलाते हुए दिखायी पड़े। बड़ी देर तक उसकी निगाहे भटकती रही और वह जिस चौबारे मे लेटी हुई थी उसके सामने वाले मकान के लकड़ी के खम्भों और गदी चूने की पुताई को देखती रहीं, जिनपर धूप और वर्षा का प्रभाव साफ दिखायी दे रहा था। न जाने क्यों बाहर काली-काली घटाएँ उसे अजीब-सी लग रही थीं। इतने मे पास ही किसी बड़ी सी घड़ी ने सात बजाये और उसे याद आया कि मामा अमरू ने उसके भाग्य को कितना सराहा था कि वह एक ऐसे घर में रहने जा रही है जो होशियारपुर के घंटाघरवाले फाटक के बिलकुल पास ही है। बाहर चौक की तरफ से हटकर ज्यों ही उसकी निगाह चौकी पर रखे हुए सोने के जगमगाते हुए गहनों पर पड़ी, सेठ ज्वालाप्रसाद की मृत पत्नी का भय उसे सताने लगा। उसकी चेतना पर इस भय का प्रहार होते ही वह एकाएक जैसे यमलोक में पहुँच गयी, जहाँ जीवन और मृत्यु के रहस्य और भले और बुरे कर्मों के कारण प्रेतात्माओं के विभिन्न रूपान्तर तरह-तरह की विचित्र शक्लों में दिखायी दे रहे थे। कुछ घबराकर वह फिर लेट गयी। इस विचार को दूर भगाने के लिए, जो उसके सरपर भूत की तरह सवार हो गया था, वह जोर-जोर से अपना सर झटकने लगी। परन्तु वह जानती थी कि कर्म-गति के नियमों के अनुसार उसे दण्ड देने के लिए सेठजी की पहली पत्नी इन गहनों के कारण अवश्य ही वहाँ आयेगी, क्योंकि मृत लोगों की प्रेतात्माएँ इसी भयानक घड़ी में बाहर निकलती हैं। उसने चादर से अपना मुँह ढँक लिया और सेठ ज्वालाप्रसाद की पत्नी की कफन में लिपटी हुई प्रेतात्मा का धुँधला-सा चित्र उसकी

आँखों के आगे से दूर हो गया।

शायद सेठजी की पहली पत्नी का देहान्त इसी पलंग पर हुआ हो! लेकिन नहीं, यह नहीं हो सकता क्योंकि हिन्दुओं में तो मरते हुए आदमी का दम निकलने से पहले उसे जमीन पर उतार दिया जाता है।...मगर वह मरी तो इसी कमरे में होगी, क्योंकि सेठ और सेठानी इसी घर में रहते थे!...अब मुँह पर चादर ओढ़ लेने से भी कोई फायदा नहीं था क्योंकि भूत तो हर जगह मौजूद था, वह अपने पंजे कहीं भी फैला सकता था। गौरी ने अपने चेहरे के चारों तरफ सुरक्षा के लिए जो किला बना रखा था, वह भी ढह गया। लोग कहते थे कि भूतों के हाथ पीछे की तरफ होते हैं और औरत के भूत के तो पैर भी पीछे की तरफ मुड़े होते हैं। डर के मारे उसका चेहरा और गरदन पसीने से तर हो गये थे और उसका दिल गाँव के ढिंढोरा पीटनेवाले के ढोल की तरह धड़क रहा था।

वह चाहती थी कि सेठजी आ जायें। उनकी घृणास्पद उपस्थिति भी इस सन्नाटे से अच्छी होगी।...या वह किसी तरह, किसी भी तरह यहाँ से निकल जाये!...वह घर चली जायेगी!...वह ऐसा अनुभव कर रही थी कि बुखार, बीमारी की कमजोरी और भूख के बावजूद वह सारी रात पैदल चलकर अपने घर—पंछी के पास पहुँच सकती थी। उसे देखकर पछी को इतना आश्चर्य होगा कि वह फौरन उसे स्वीकार कर लेगा। और जब वह उसे बतायेगी कि उसे किस प्रकार बेच दिया गया था और वह कैसे वहाँ से भाग निकली, तो वह इन लोगों पर कितना गुस्सा होगा और हमेशा उसकी रक्षा करेगा। निश्चय ही उसका जी जाहेगा कि जाकर इन सब लोगों को मार डाले।

दूर आकाश में बादलों की गड़गड़ाहट और ठण्डी हवा के झोंकों से उसकी सारी कल्पनाएँ भंग हो गयीं। फिर उसने जीने पर किसी के कदमों की आहट सुनी।

वह बनकर लेट गयी, जैसे बहुत गहरी नींद में सो रही हो: लेकिन चादर के नीचे उसकी आँखें खुली हुई थीं।

सेठ ज्वालाप्रसाद कमरे में आये, एक नजर उसकी तरफ देखा और उसे सोता पाकर दबे पॉव कमरे के सिरे पर पूजावाले कोने मे चले गये। माचिस जलाकर उन्होंने गणेशजी की मूर्ति के नीचे मिट्टी का एक दिया जला दिया। फिर वह उसके बिस्तर की तरफ बढ़े और बिजली की रोशनी का बटन दबा दिया। उन्होंने देखा कि गौरी बिल्कुल काठ की तरह पड़ी है। सेठजी कान लगाकर सुनने लगे कि उसका दिल भी धड़क रहा है कि नहीं।

गौरी ने एक गहरी सॉस ली। बूढ़े सेठजी अपना सर हिलाते हुए धीरे-धीरे कदम रखते कमरे से बाहर चल दिये और जाते-जाते बिजली बुझाते गये।

गौरी को दिये की लौ के रूप मे उस कमरे मे मानो एक साथी मिल गया और वह अपने बचपन के वह दिन याद करने लगी जब ऐसे ही दिये की रोशनी मे वह अपनी मॉ के घर बीमार पड़ी रहती थी। उसके आवाज देते ही मॉ फौरन भागी हुई आती थी। उसका जीवन कितना सुखद था—रंग-बिरंगे कपड़े, मेलों-ठेलों में जाना...

सहसा बादलों की गरजन, बिजली की चमक तथा कड़क ने उसकी एकान्तिकता को भंग कर दिया। बिजली लगातार ऐसे चमक रही थी मानो होशियारपुर के घरों को आग लगा देगी। पर क्षणभर बाद ही पानी बरसने लगा। वह निश्चल लेटी थी जैसे किसी ने उस पर जादू कर दिया हो। पानी की बूँदे प्रति क्षण बड़ी होती जा रही थीं और शीघ्र ही मूसलाधार वर्षा होने लगी। नीचे गली मे लोग पानी से शरण लेने के लिए चिल्लाते हुए इधर-उधर भाग रहे थे।

गौरी के हृदय मे भी जैसे एक बिजली-सी कौंध गयी; उसे ऐसा लगा जैसे वह मुक्त हो गयी हो। वह जानती थी कि वर्षा का स्वागत करने के लिए पंछी भागकर घर से बाहर निकल आया होगा। काश, इस समय वह भी उसके साथ होती !...उसे इस वर्षा की कितनी प्रतीक्षा थी; यदि वर्षा हो गयी होती तो उसके खेतों का भाग्य ही पलट गया होता और

तब शायद उसने उसे घर से निकाला भी न होता।

बौछार छज्जे पर तूफान के थपेड़ों की तरह लग रही थी और थोड़ी ही देर मे पानी के छींटे उसके चेहरे पर आने लगे। कमरे में, दूर कोने में रखे हुए दिये की मन्द ज्योति हवा के झोंकों से काँप-काँप जाती थी। अब कमरा सेठजी की पहली पत्नी के भूत से सुरक्षित था। अब तो उससे भी बड़ा द्वन्द्व मचा हुआ था : इन्द्र देवता की सेनाएँ अकाल के दैत्यों के खिलाफ लड़ रही थीं और उन्हे परास्त कर रही थीं। गुफाओ की तरह अन्धकार से भरे उस कमरे मे, दिये की क्षीण ज्योति मे अनायास ही वह मन-ही-मन भगवान से प्रार्थना करने लगी कि वह पछी के खेतों मे अच्छी फसल पैदा कर दे।

बाहर मूसलाधार वर्षा की सुमधुर ध्वनि से उसकी आत्मा को शान्ति मिल गयी और वह फिर ऊँघ गयी। वर्षा उसके हृदय मे जिन विचारों, भावनाओं और आशाओं को जागृत कर रही थी, उन्हे उसने पछी के लौट आने के समय तक के लिए स्थगित कर दिया।

●●६

वह शायद वर्षा की शीतल हवा मे बहुत गहरी नींद सोती रही थी, क्योंकि उसने सेठजी के आने की आहट नही सुनी; उसे उनके सामीप्य का आभास उस समय हुआ, जब वह आकर उसके पास लेटने लगे।

चौंककर वह एक तरफ को सरक गयी और जितना संभव था, उनके शरीर से दूर हट गयी; जैसे बहेलिये के हाथ से चिड़िया फड़फड़ाकर उड़ जाती है। और अधिक सुरक्षा के लिए उसने अपने शरीर को पास पड़े चादर और कम्बल में कसकर लपेट लिया। पर उसने अनुभव किया कि कमरे में रोशनी नहीं है; लाख रोकने पर भी उसका दिल तेजी से धड़कने लगा और उसकी साँस उखड़ी-उखड़ी-सी आने लगी। उसे

सेठजी की साँस का स्वर साफ सुनाई दे रहा था, जिससे वह और भी झुँझला उठी। फिर सेठजी ने भर्राई हुई आवाज मे धीरे से कहा :

"बीबी, घबराओ नही।"

गौरी ने कोई उत्तर नही दिया बल्कि उनकी इस सात्वना के उत्तर मे वह और भी जड़ हो गयी। वह नही जानती थी कि वह क्या करेगे पर उसने यह फैसला कर लिया था कि वह आखिरी दम तक अपनी रक्षा करेगी; वह अपने चारों तरफ अभेद्य दीवारे खड़ी कर लेगी। उस समय ऐसा मालूम होता था कि वह लम्बे-लम्बे घूँटों मे उस अँधेरे को निगल रही हो।

"बीबी !" सेठ ज्वालाप्रसाद ने फिर भर्राई हुई आवाज मे धीरे-से पुकारा।

गौरी अभी तक मंत्रमुग्ध खरगोश की तरह लेटी हुई थी। वह सोच रही थी कि शायद वह किसी और इच्छा से नही बल्कि केवल उसका हालचाल पूछने आये हों, जैसे वह तीसरे पहर दवा, कपड़े और गहने लेकर आये थे।

"बीबी, लो मै तुम्हारे लिए पान लाया हूँ, खा लो," और यह कहकर सेठजी उसकी तरफ झुके और चाँदी के बरक मे लिपटा हुआ एक खुशबू-दार पान उसके मुँह की तरफ बढ़ा दिया।

इस तरह पान का बीड़ा देने का तरीका तो प्रेमियों का होता है, इसलिए गौरी ने सेठजी का हाथ झटककर दूर कर दिया, न बहुत कड़ाई से और न बहुत नरमी से।

हाथ के झटकते ही सेठजी के मुँह से एक कराह-सी निकल गयी; कुछ तो वह पागल हो उठे थे और कुछ उन्हें अपने आप पर तरस आ रहा था। वह सोच रहे थे कि मैं तो इस पर सब कुछ न्यौछावर करने को तैयार हूँ, और यह है कि मुझे इस तरह ठुकराती है। वह बड़ी देर तक सोच में डूबे हुए निर्जीव-से पड़े रहे। वह इस बात के लिए तड़प रहे थे कि वह उन्हें स्वीकार कर ले। पर उन्हें गुस्सा भी आ रहा था। अपनी

पत्नी के साथ तो वह जो चाहते थे, कर लेते थे; पर यह लड़की ! यह तो टस से मस न होती थी और उन्हें दूर ही ढकेलती जाती थी। अच्छा होता अगर उन्होंने अमरू को पैसे न दिये होते, उस दशा में वह खुशी से वहाँ से जा सकती थी। वह उसे कभी न रोकते।... उस पहाड़ी इलाके में ऐसी औरतों की कोई कमी तो थी नहीं जो सेठ-ज्वालाप्रसाद के घर जाने को अपना सौभाग्य समझतीं और खासतौर पर यदि ऐसा करके उनके माँ-बाप अपनी जमीन-जायदाद बचा सकते।... मगर एक बात जरूर थी कि यह लड़की जवान थी और उसकी छातियाँ तो मानो उसका कुरता फाड़कर बाहर निकली आ रही थीं।...

उसकी छातियों का विचार आते ही सेठजी अपने-आप को काबू में न रख सके।

उन्होंने करवट लेकर वासना के आवेश में पागल होकर अपनी बाँह से उसे जकड़ लिया।

गौरी ने सेठजी का हाथ पागलों जैसी ताकत के साथ जोर से झटक दिया और जड़वत् लेट गयी। उसने सेठजी को इतने जोर से झटका दिया था कि उनका स्थूल शरीर एक तरफ को लुढ़क गया।

सेठजी आगबबूला हो उठे और अपने पराजित शरीर में पुरुषत्व की रही-सही ताकत बटोरकर वह एक दैत्य की तरह फिर पलटे और उन्होंने अपनी दोनों बाँहों में गौरी को कस लिया। उसे पान खिलाने के लिए वह अपना हाथ उसके मुँह तक ले गये।

गौरी अब अपनी पूरी शक्ति के साथ गाँव की लजीली स्त्री की तरह विरोध कर रही थी, वह अपने हाथ-पैर और पूरे शरीर का जोर लगाकर सेठजी का मुकाबला कर रही थी।

सेठजी ने अपने भारीपन और मोटापे का फायदा उठाकर उसे काबू में कर लिया। गौरी का दम घुटा जा रहा था, पर साथ ही सेठजी को अपनी तोंद के कारण कठिनाई भी बहुत हो रही थी।

गौरी ने एक जोर का झटका देकर उन्हें नीचे फर्श पर ढकेल दिया।

पर गौरी का दम फूल रहा था और वह डर रही थी कि सेठजी कहीं फिर न उठ आयें। क्रोध के कारण उसका शरीर भी अकड़ गया था, फिर भी वह रो रही थी और इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि सेठजी अब क्या करते हैं।

"मैं तो तुम्हें बस पान खिला रहा था!" सेठजी ने अपनी झेंप मिटाने के लिए कहा। उन्होंने सोचा कि इस धर-पटक को एक प्रेमी के व्यवहार का रूप देकर वह अपनी नाक ऊँची रख सकते हैं। अपने इस बहाने को अधिक वास्तविक रूप देने के लिए वह खिसियानी-सी हँसी हँस दिये। क्योंकि अपनी अहंकार की भावना के कारण वह अभी तक यह समझते थे कि यदि उनकी इस टक्कर को उन दोनों के शरारों और आत्माओं का अन्तिम संघर्ष न समझ लिया जाये, तो इस आक्रमण के असफल हो जाने पर भी शायद कोई दूसरी तरकीब काम कर जाये।

परन्तु गौरी तो बिलकुल ही निश्चल पड़ी थी, वह अपनी साँस तक रोके हुए थी। यह देखकर सेठजी बौखला गये। उनके लिए यह जानना आवश्यक था कि गौरी इस विषय में क्या सोचती थी। इस घटना को वह अपने ऊपर एक आक्रमण समझती थी या वह यह मानने को तैयार थी कि सेठजी उसे केवल पान खिलाने का प्रयत्न कर रहे थे।

"बीबी!" उन्होंने पुकारा।

गौरी अपनी सभी चेतनाओं को सजग रखकर अगले संघर्ष के लिए तैयार थी। उसने तै कर लिया था कि अगर सेठजी ने उसकी तरफ एक कदम भी बढ़ाया तो वह शेरनी की तरह उन्हें चीर-फाड़ डालेगी। न जाने क्यों, बार-बार मतली होने पर गौरी को जब अपने गर्भ के बच्चे का विचार आता था तो उसका यह संकल्प और भी दृढ़ हो जाता था।

सेठजी कुछ फैसला नहीं कर पा रहे थे कि अब क्या करें? कुछ देर तक वह वहाँ इसी तरह मँडराते रहे, जिसके कारण वहाँ के वातावरण का तनाव पूर्ववत् बना रहा। फिर वह इस भय से वहाँ से हट गये कि यदि वह फिर गौरी की तरफ गये तो वह उन्हें कभी माफ न करेगी। अब तो

कोई बहाना भी नहीं रह गया था; इस झगड़े में पान भी उनके हाथ से गिर गया था। वहाँ से जाते-जाते भी उन्होंने बुदबुदाकर कहा :

"मैंने तो बस यह सोचा था कि..."

गौरी उनके वहाँ से चले जाने की प्रतीक्षा करती रही। यद्यपि उसे कमरे में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, फिर भी वह आँखें फाड़े देख रही थी। उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो उसका सारा शरीर आग की तरह जल रहा हो। उनकी यह मजाल कैसे हुई कि सुबह और तीसरे पहर के प्रेम-प्रदर्शन के प्रति उसकी अरुचि को देखकर भी उन्होंने उसके पास आने का प्रयत्न किया।

'पान का बहाना करता है, पाजी कहीं का।' उसने बुड़बुड़ाकर कहा, 'मैं यहाँ नहीं रहूँगी।'...

●●७

मगर वह वहाँ से भाग न सकी। सुबह तक उसका बुखार और भी तेज हो गया। इतना बुखार तो उसे उस समय भी नहीं था जब वह यहाँ आयी थी। वह निढाल पड़ी थी; पसीना छूट रहा था, बड़ी कमजोरी मालूम हो रही थी और प्यास बहुत लग रही थी। बार-बार मतली हो रही थी।

सेठ ज्वालाप्रसाद में शायद इतनी शरम बाकी थी कि इस तिरस्कार के बाद उन्होंने तब तक फिर सूरत नहीं दिखायी जब तक कर्नल महेन्द्रा नहीं आ गये। सेठजी डाक्टर साहब के पीछे-पीछे बड़े हीन भाव से हाथ जोड़े हुए आये।

डाक्टर साहब ने सेठजी को वहाँ से चले जाने का इशारा किया और गौरी की तरफ बढ़े। गौरी को डाक्टर साहब वैसे ही लग रहे थे जैसे कल लगे थे। उनके माथे पर वैसे ही बल पड़े हुए थे, मानो बहुत

सोच मे डूबे हुए हो, और होंठों के कोनो पर वही हल्की-सी मुस्कराहट, मानो वह दुनिया की सारी चीजों को अविश्वास की दृष्टि से देखते हों; पर आज वह नयी धुली हुई कमीज और पतलून पहने थे। वह कूकदार खिलौने की तरह चलते थे; उन्होंने अपनी घड़ी मे चाबी दी और सुनने के आले से पिछले दिन की तरह ही निरीक्षण किया। गौरी ने चुपचाप उन्हें नजर उठाकर देखा। उसने देखा कि वह मुँह फेरे बैठे थे। आज भी वह उसी गंभीर मुद्रा के साथ उठे और शरमाकर अपना मुँह फेरते हुए चुनौती के ढंग मे बोले :

"आज तुमने अपनी बीमारी कल से भी ज्यादा बढ़ा ली है। ऐसे काम नही चलेगा।"

"अगर मैं यहाँ रही तो मै मर जाऊँगी," गौरी ने दबी आवाज मे कहा।

"हूँ," डाक्टर साहब ने गभीरतापूर्वक अपना सर हिलाकर कहा और उनके चेहरे का पक्का रंग और भी गहरा होकर बिलकुल ही काला हो गया।

चलते हुए अपना हैट उठाने से पहले डाक्टर साहब ने पुकारा :

"सेठ ज्वालाप्रसाद !"

सेठजी फौरन हाथ जोड़े हुए डाक्टर साहब के सामने आ खड़े हुए।

"इस औरत को तो फौरन यहाँ से ले जाना होगा ! अस्पताल पहुंचा दीजिये या मेरे नर्सिग-होम मे। यहाँ यह अच्छी नहीं हो सकती। इसकी अच्छी तरह देख-भाल और दवा-दारू करने की जरूरत है।"

सेठ ज्वालाप्रसाद ने अपना सिर झुका लिया और कनखियों से गौरी और डाक्टर साहब को देखने लगे। उन्हें शंका थी कि आज उन दोनों में कोई बातचीत जरूर हुई है। इस प्रकार की शंका तो उन्हें कल भी हुई थी, पर उन्हें प्रश्न करने का साहस नही हो रहा था, इसलिए वह चुप रहे।

डाक्टर साहब भी बिल्कुल चुप्पी साधे हुए थे, क्योंकि वह यह जाहिर

नही करना चाहते थे कि उन्हे उस लड़की से कोई सहानुभूति है। वह हैट उठाकर चलने को तैयार हो गये और चलते-चलते उन्होंने खुशामदी सेठजी पर एक तिरस्कार-भरी दृष्टि डाली। डाक्टर साहब के इस रोबदार रवैये से सेठजी की चुप्पी भंग हुई और उन्होंने कहा, "डाक्टर साहब, आप जो हुक्म देंगे वह पूरा होगा। मैं तो बस यह चाहता हूँ कि आप गौरी बीबी को अच्छा कर दे ताकि वह एक अच्छी घरवाली की तरह मेरे साथ रहे।..."

सेठजी बहुत चालक थे, उन्होंने यह आखिरी बात इसलिए कह दी थी कि अगर डाक्टर महेन्द्रा के दिमाग मे किसी प्रकार का संदेह हो तो वह दूर हो जाये। उसका ख्याल था कि सभव है गौरी ने उनके दिमाग मे ये शंकाएँ पैदा की हों।

"मैं नर्गिस-होम से अभी ऐम्बुलेन्स भेजे देता हूँ।" यह कहकर कर्नल महेन्द्रा चल दिये।

सेठ ज्वालाप्रसाद ने डाक्टर साहब के हाथ मे पन्द्रह रुपये रख दिये, उन्होने कल ही की तरह रुपये जल्दी से अपनी खाकी कमीज की जेब मे रख लिये।

फीस देने के बाद सेठजी यह समझने लगे कि अब उनका पलड़ा भारी है। इसलिए वह कर्नल साहब के पीछे-पीछे हाथ जोड़े हुए जीने से नीचे उतरे और नीचे उतरकर उन्होंने साहस बटोरकर पूछा :

"डाक्टर साहब, आप तो जानते है कि हमारी तरफ इस तरह का ब्याह होता है। जैसे ही उसकी तबीयत ठीक होगी, मै उसके सिर पर चादर उढ़ा दूँगा। और आपकी कृपा से मेरी जिदगी इस बुढ़ापे मे सुख से बीत जायेगी। घर में खाने-पकाने, सीने-पिरोने और मेरे हाथ-पाँव दबाने के लिए तो कोई हो जायेगा।...अब तो मेरे हाथ-पाँवों में दम नहीं रहा।..."

कर्नल महेन्द्रा के चेहरे पर एक ऐसी मुस्कराहट दौड़ गयी जैसी कभी-कभी खास मौकों पर कोई बहुत कामयाब आपरेशन करने के बाद ही

देखने मे आती होगी। पर उन्होंने कहा कुछ नही और सेठ ज्वालाप्रसाद उनकी इस मुस्कराहट का कुछ भी अर्थ न समझ पाये। उनके हृदय मे शंकाओं के कारण एक तूफान मचा हुआ था।

डाक्टर साहब को बिदा करने के बाद सेठजी धीरे-धीरे भारी कदमो से ऊपर आये। वह सोच रहे थे कि इस संकटमय परिस्थिति मे वह गौरी के साथ किस तरह पेश आयें। सबसे पहले तो उनके जी मे यह बात आयी कि उससे साफ-साफ कह दे कि उन्होंने उसके लिए एक बहुत बड़ी रकम अदा की है, इसलिए उस पर उनका पूरा अधिकार है, अगर उसने त्रिया-चरित्र से काम लिया तो वह बड़ी मुसीबत मे फँस जायेगी। पर जैसे ही वह कमरे के निकट पहुँचे, उन्हे याद आया कि कल रात की लड़ाई मे गौरी ने कितने शारीरिक बल का प्रमाण देकर उनका मुकाबला किया था! इसलिए उन्होंने फैसला किया कि वह उसका गुस्सा फिर नहीं भड़कायेगे, बल्कि उसकी दया की भावना जागृत करने का प्रयत्न करेंगे।

कमरे में घुसते ही उन्होंने कहना आरंभ किया, "बीबी, तुमने सुन लिया, डाक्टर साहब ने क्या कहा है?...अब मेरी इज्जत तुम्हारे हाथ है। इस शहर में बड़े सेठ खटारिया को छोड़कर किसी दूसरे की साख मेरे इतनी नहीं है। और मेरे व्यौपार का सारा दारोमदार मेरी इसी नेक-नामी पर है। और कल रात जो कुछ हुआ है उसे याद रखना। होता यह है कि 'किसी का घर जले और कोई तापे।' मै तुम्हे अच्छा करने के लिए जी खोलकर जरूरत भर पैसा खर्च करूँगा।...और बीबी, इतने दिन में तुम्हे भी सोचने का मौका मिलेगा कि मैं तुम्हारा जीवन कितना सुखी बना दूँगा—परमात्मा की कृपा से यहाँ किसी चीज की कोई कमी नहीं है।"

●●८

डाक्टर महेन्द्रा के नर्सिंग-होम मे पहुँचकर गौरी बहुत जल्दी अच्छी

हो गयी। दो दिन मे उसका बुखार उतर गया और तीसरे दिन वह उठ-कर चलने-फिरने लगी और बिना किसी के कहे ही वहाँ की मैट्रन मिस-क्लेर यंग का हाथ भी बँटाने लगी। मिस क्लेर यग एक अधेड़ उम्र की ईसाई महिला थी और उस छोटे-से अस्पताल का सारा कारोबार, जिसमे बीस मरीजों के लिए इलाज का प्रबंध था, उन्हीं के सहारे चलता था। पेट मे दो महीने का बच्चा होने के कारण उसे कभी-कभी मतली होती थी, पर अभी तक वह गर्भवती स्त्रियों की तरह बीमार नहीं थी।

कर्नल केशव महेन्द्रा को ज्यादा बात करने की आदत नही थी। वह रोज सबेरे आकर गौरी को देख जाते थे, पर कुछ कहते नही थे। उसके इलाज के संबंध में उन्हे जो कुछ कहना होता था वह मिस यंग को बता देते थे। गौरी ने उनके मुँह से और कोई बात नही सुनी थी।

मगर दूसरे छोटे डाक्टर मेजर रतनचन्द बातरा ने, जिनके साथ कर्नल महेन्द्रा की साझेदारी थी और जो नर्सिंग-होम मे स्थायी रूप से रहते थे, गौरी के प्रति ज्यादा दिलचस्पी दिखायी थी और उसके साथ ऐसे संबंध स्थापित करते का प्रयत्न किया था, जिन्हे एक रोगी और डाक्टर के संबंध नही कहा जा सकता। उसकी नब्ज देखते समय वह उसका हाथ कुछ ज्यादा ही मुहब्बत के साथ पकड़े रहते थे और उसके साथ सेठ ज्वाला-प्रसाद के बारे मे हँसी-मजाक भी करते थे, जिससे यह पता चलता था कि उन्हे किसी प्रकार उस परिस्थिति का ज्ञान हो गया था, जिसमे वह फँसी हुई थी। डाक्टर बातरा काफी खूबसूरत थे और उनकी उम्र केवल पैंतीस साल की थी, पर उनके शरीर की बनावट कुछ भारी थी। गौरी को उनकी चाल-ढाल मे अपने पति से समानता दिखाई देती थी और उसने उनके हास-परिहास को सहज भाव से स्वीकार कर लिया था। फिर भी वह सावधान रहती थी। उसे अपने निष्कलंक होने और अपने नैतिक आचरण पर विश्वास था, इसलिए वह उनसे खुलकर हँसती-बोलती थी। नर्सिंग-होम एक हिन्दुस्तानी ढंग के बँगले की नीचे की मंजिल में था और ऊपर की मंजिल पर मेजर बातरा अपनी पत्नी के साथ रहते थे।

वार्ड में तेजी-से दाखिल होते हुए मेजर बातरा कहते, "मेरी गौरी की तबीयत अब कैसी है ?" गौरी की समझ में न आता कि इतने बड़े आदमी की ऐसी खुशामद-भरी बातों पर क्या कहे, पर वह इस हँसमुख डाक्टर को मुस्करा कर देखती। वह यह जान गयी थी कि उन्हे उसके बारे मे इससे भी ज्यादा मालूम था कि सेठ ज्वालाप्रसाद ने उसे खरीदा था और उसे यह आशा थी कि वह उसकी मदद करेगे। परन्तु दो-तीन बार उसने यह बात देखी थी कि उसका निरीक्षण कर चुकने के बाद वह कुछ देर इस प्रतीक्षा मे खड़े रहते थे कि वह उनके साँवले चेहरे पर नाचती हुई मुस्कराहट को देख ले, और न जाने क्यों गौरी के दिमाग मे भी उनके इस सहृदयतापूर्ण व्यवहार की याद हरदम मँडराती ही रहती थी। तीसरे दिन शाम को मजाक में गौरी ने उन्हें आँख मारते देखा और लजाकर उसने अपनी आँखे फेर लीः इस बात से उसे कुछ भय भी हुआ कि उसके रोगी होने का डाक्टर साहब बेजा फायदा उठा रहे थे। मिस यंग ने भी मेजर बातरा को गौरी की ओर शरारत भरी नजरों से ताकते हुए देख लिया थाः उसने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से केवल इतना कहा, "कुछ बूढ़े तो लालची होते ही हैं पर कुछ नौजवान भी कभी-कभी बड़े बदमाश होते हैं।" गौरी उस समय से सतर्क हो गयी।

जब चौथे दिन सबेरे सेठ ज्वालाप्रसाद उसे लेने आये तो कर्नल महेन्द्रा के दफ्तर मे एक अच्छा-खासा बखेड़ा खड़ा हो गया, और इस पूरे झगड़े मे मेजर बातरा ने जिस तरह गौरी का पक्ष लिया, उसके कारण गौरी उन्हें अपने हृदय मे स्थान देने पर मजबूर हो गयीः कम-से-कम उसे अब उनसे कोई विरोध नही रह गया। सेठजी ने अभी एक शब्द भी नही कहा था कि मेजर बातरा ने गौरी को वापस ले जाने के उनके इरादों पर पानी फेरते हुए कहा :

"सेठजी, मैंने सुना है कि आपने पैसे देकर इस लड़की को इसके रिश्तेदारों से खरीदा है। मैं तो इस मामले की शिकायत पुलिस मे करूँगा..."

"मगर डाक्टर साहब !" सेठ ज्वालाप्रसाद ने कहना आरम्भ किया।

"इसका क्या सबूत है !" कर्नल महेन्द्रा ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा, यद्यपि सारी बाते उन्हें खुद मालूम थी।

यह सुनते ही बातरा साहब को जोश आ गया।

"सबूत यही है कि सेठजी इस लड़की को लेने आये है। अगर इनका यह कहना है कि यह इनकी बीवी है तो लड़की का कहना यह है कि इनके साथ उसका ब्याह कभी हुआ ही नही, अगर इनका कहना यह है कि वह इनकी नौकरानी है तो उसका कहना है कि वह इनके यहाँ काम करना नही चाहती !..."

"मगर डाक्टर साहब ! आप मुझसे ऐसी बाते क्यो कर रहे हैं ?" सेठजी ने प्रतिरोध करते हुए कहा, "मैं आपको इस लड़की के इलाज की फीस दे रहा हूँ। और वह यहाँ आयी तो मेरे ही घर से थी।..."

"मगर कानून शायद आपकी इस दलील को न माने !" कर्नल महेन्द्रा ने डाक्टर बातरा से कहा, "आपको कोई ज्यादा पक्का सबूत देना पड़ेगा।"

"महेन्द्रा साहब, बातरा साहब भी अजीब बातें करते हैं," सेठ-ज्वालाप्रसाद ने फिर प्रतिरोध करते हुए कहा, "मैंने इस लड़की को घर बिठा लिया है और इस तरह इससे ब्याह कर लिया है।"

"आप यह सब पुलिस के सामने साबित कीजियेगा !" बातरा ने कहा, "मैं पुलिस मे रिपोर्ट लिखा दूँगा, क्योंकि यह लड़की नर्सिंग-होम से आप के घर जाने को कतई तैयार नही है।"

"पुलिस मे कुछ लोगों से मेरी भी जान-पहचान है, मेजर साहब," सेठजी ने डींग मारते हुए कहा। बातरा साहब के शब्दों में जो अपमान छुपा हुआ था, उसके सामने सेठजी को अपनी साख का सहारा लेना पड़ा था।

"तो फिर अपने उन्हीं दोस्तों के पास जाइए।" बातरा ने कहा।

"मालूम होता है आप दोनों ने मेरे खिलाफ मोर्चा जमा रखा है,"

सेठ ज्वालाप्रसाद ने अपनी हार स्वीकार करते हुए कहा, "आप लोग पढ़े-लिखे लोग हैं और मैं ठहरा..."

"मेरे ख्याल से यह कहना ठीक नही है कि मैं आपके खिलाफ मोर्चा जमाये हूँ," कर्नल महेन्द्रा ने कहा, "लेकिन अगर यह लड़की खरीदी गयी है तो मैं यही मुनासिब समझता हूँ कि इसे इसके शौहर के पास वापस भिजवा दिया जाये।"

"सेठजी निरे बनिये है और उन्हे अपने पैसे का बड़ा घमड है!" बातरा साहब ने कहा और जोर से हँस पड़े, मानो अपने इस मजाक पर बहुत खुश हों।

कर्नल महेन्द्रा ने अपने साथी की इस हरकत पर भवें चढ़ाकर उन्हे देखा क्योंकि उन्होंने बड़ी बेतुकी बात कही थी।

"आप बाबू लोग हैं, मालिक हैं, जितना चाहे मेरा मजाक उड़ा सकते हैं, मगर आपके सामने मैंने कभी गरूर नही किया..."

"अभी तक!" बातारा साहब ने अपना प्रहार जारी रखते हुए उन्हे बीच ही में टोक दिया।

"डाक्टर बातरा, उन्हे अपनी बात तो कह लेने दीजिए!" कर्नल महेन्द्रा ने कहा।

"हाँ करनैल साहब, मै तो आपका सेवक हूँ," सेठजी अपनी बात जारी रखते हुए बोले और बड़े तुच्छ भाव से कर्नल महेन्द्रा के सामने हाथ जोड़कर खड़े हो गये, "मै बूढ़ा हो चला हूँ, मैं चाहता हूँ कि कोई मेरे घर को देखनेवाला हो। इसीलिए मैंने इस लड़की को खरीदा है। मैं यह बात आप से बिल्कुल साफ-साफ बता दूँ ..आप बड़े लोग हैं, आपको हमारी यह रीत पसन्द नहीं, मगर काँगड़ा में ऐसा होता है। मैं उसे घर ले जाना चाहता हूँ। वह मेरे लिए देवी है! मै उसकी देख-भाल करूँगा।..."

"पहले उससे हाथ-पाँव दबवाकर और फिर उसके साथ सो कर!" मेजर बातरा ने उसी क्रूरता के साथ कहा।

"कहीं आप की नीयत खुद तो उस पर खराब नहीं हो गयी है !" सेठ-ज्वालाप्रसाद ने जलकर पूछा। उनकी इस स्पष्टवादिता मे उतना ही गरूर घुला हुआ था जितना कि उस नौजवान डाक्टर की अश्लीलता में।

"निकल जाओ यहाँ से !" बातरा साहब ने बनमानुस की तरह अपने पंजों के बल खड़े होकर चिल्लाकर कहा। महाजन की इस धृष्टता पर वह क्रोध से पागल हो उठे थे।

"छोड़िये इस बात को, इसके बारे मे हम बाद में बातें करेगे," महेन्द्रा साहब बोले, "इस वक्त तो सवाल यह है कि क्या सेठजी इस लड़की को घर ले जा सकते हैं।...सबसे अच्छा तरीका यह है कि खुद उस लड़की से पूछ लिया जाये। क्यों सेठजी ? यह बात ठीक है ना..."

"मगर करनैल साहब !" सेठ ज्वालाप्रसाद ने प्रतिरोध किया। इन तमाम दलीलों से वह बिल्कुल बौखला गये थे, क्योंकि वह जानते थे कि गौरी कभी अपनी राय उनके पक्ष मे नही देगी।

"हॉ !" बातरा साहब बोले और उन्होंने बाहर चपरासी को आवाज दी, "सन्तू, गौरी को यहाँ ले आओ।"

गौरी के आने की प्रतीक्षा मे वहॉ के वातावरण मे काफी तनाव रहा। एक तरफ तो सेठजी को बहुत बड़ा अपमान सहना पड़ा था, उन्होंने खुद स्वीकार किया था कि वह दास खरीदते हैं, और दूसरी तरफ उनके बड़े डाक्टर के सामने बातरा साहब की कामुकता का भंडा फूट गया था। कर्नल महेन्द्रा एक छोटे-मोटे देवता की तरह गभीर मुद्रा बनाये बैठे थे और इस घृणित नाटक के कारण उनके हृदय मे जो खलबली मची हुई थी, उसे शान्त रखने के लिए वह ब्लाटिंग-पैड से खेल रहे थे। उनके दिल मे इस बात से सख्त नफरत पैदा हुई कि एक बूढ़ा आदमी उस लड़की को खरीदे और इसीलिए उन्होंने सेठ-ज्वालाप्रसाद के खिलाफ गौरी का पक्ष लिया था और इसीलिए वह उसे नर्सिंग-होम में लाने पर राजी हो गये थे। परन्तु इसके साथ ही यद्यपि मेजर बातरा के कामुक स्वभाव का उन्हें ज्ञान तो था, पर यह बात उनके ध्यान

से उतर गयी थी और उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि वह इस लड़की पर लट्टू हो जायेंगे। अब उनकी आँखों के आगे एक भयानक विनाशकारी घटना का दृश्य नाचने लगा, क्योंकि जिस प्रकार मेजर बातरा ने सेठजी के खिलाफ गौरी का पक्ष लिया, उसमें केवल साहूकार वर्ग के प्रति उनका वैमनस्य का भाव ही नहीं टपकता था, इसके अलावा भी कोई बात थी। कर्नल महेन्द्रा वासना-प्रेमियों के कुछ ऐसे दुश्मन भी नहीं थे, बल्कि अपने साथी की इस कमजोरी को वह बर्दाश्त करते थे, पर एक नर्सिंग-होम के प्रधान होने के नाते उन्हें इसका भी ध्यान रखना पड़ता था कि दुनिया क्या कहेगी ?

गौरी अपना दुपट्टा माथे तक सरकाये, शरमाती हुई आकर खड़ी हो गयी। वह इस तरह काँप रही थी जैसे कोई मुजरिम अदालत के सामने खड़ा हो। वह जानती थी कि उसके लिए फैसला करने का यही आखिरी मौका है। यद्यपि वह भली-भाँति जानती थी कि दोनों डाक्टर उसके पक्ष में हैं, फिर भी वह यह सोचती थी कि सेठ ज्वालाप्रसाद, जिन्होंने गहने-कपड़ों का लालच दिलाकर और खुशामद करके उसे अपने चगुल में फँसाने का प्रयत्न किया था, वही सेठजी जब यह देखेंगे कि उन्हें अपने पैसे भर माल नहीं मिल रहा है तो वह जमीन-आसमान एक कर देंगे।...

"डरो नहीं," कर्नल महेन्द्रा ने गौरी को ढाढ़स बँधाने के लिए कहा, "हम लोग तुमसे एक सीधा-सा सवाल पूछना चाहते हैं। अच्छी तरह सोचकर जवाब दो ! तुम सेठ ज्वालाप्रसाद के घर वापस जाना चाहती हो या नहीं ?"

काफी देर हो गयी पर कोई उत्तर नहीं मिला। गौरी सर झुकाये खड़ी थी।

"बोलो !" बातरा ने जोर देकर पूछा।

"मैं अपने पति के पास जाना चाहती हूँ।"

"नहीं, नहीं," कर्नल महेन्द्रा ने अधीर होकर कहा, "मेरे सवाल का सीधा जवाब दो। तुम बाद में क्या करना चाहती हो, क्या नहीं,

उसे अभी रहने दो। सबसे पहले मेरे सवाल का जवाब दो! तुम सेठ-ज्वालाप्रसाद के घर वापस जाना चाहती हो या नहीं?"

गौरी एक क्षण तक चुप रही फिर उसने इन्कार करते हुए सर हिलाया।

"बोलो, आखिर बोलती क्यों नहीं, लड़की!" महेन्द्रा साहब ने डपटकर कहा।

"नहीं, मैं वहाँ नहीं जाना चाहती!" गौरी ने आखिरकार उत्तर दिया।

"मैं तो जानता था कि यह यही कहेगी!" बातरा साहब ने विजयोल्लास से कहा।

"तो यही तुम्हारा फैसला है?" महेन्द्रा साहब ने कहा और वह सेठ-ज्वालाप्रसाद की तरफ मुड़कर बोले, "सेठजी, मैं आपको यही सलाह दूँगा कि अब आप इससे हाथ धो लें। आपके घर में अगर अब और कोई झगड़ा हुआ तो उसका नतीजा आपकी इज्जत के लिए खराब होगा। मान लीजिए, आप इसे जबर्दस्ती ले भी गये और इसने आत्महत्या कर ली या कोई और ऐसी-वैसी बात हो गयी तो आप हमेशा के लिए बरबाद हो जायेंगे!"

बातरा साहब ने ऊपर से एक धमकी और जड़ दी :

"मैं तो पुलिस मे शिकायत जरूर कर दूँगा अगर..."

"डाक्टर साहब, मुझे बार-बार पुलिस की धमकी न दीजिए।" सेठजी ने कहा, "उन सबसे मैं निबट लूँगा। उनको कोई ऐसी बहुत ज्यादा तनख्वाह नहीं मिलती है। बस जहाँ..."

"लेकिन यह लड़की, सेठजी, इस लड़की का आप क्या करेंगे?" कर्नल महेन्द्रा ने बात काटते हुए कहा, "आप किसी औरत को उसकी मरजी के खिलाफ क्यों बाँधना चाहते हैं।"

"क्योंकि इन्होंने इसे खरीदा है और क्यों?" बातरा साहब ने व्यंग्य किया।

"डाक्टर साहब, आप डाक्टर होंगे तो अपने घर के," सेठजी ने जल भुनकर कहा, "मगर मैं अपना अपमान इस तरह बर्दाश्त नहीं कर सकता।"

"और न मै इसे यहाँ इस नर्सिंग होम से जाने दूँगा। अगर जायेगी तो पुलिस भी साथ होगी!" बातरा साहब ने भी गरम होकर कहा।

"तुम मिस यग के पास जाओ।" कर्नल महेन्द्रा ने गोरी से कहा।

गौरी शर्मीली थी, पर इस समय उसे उत्सुकता भी बहुत थी। वह एक क्षण खड़ी रही, वह कुछ कहना चाहती थी; लेकिन कर्नल महेन्द्रा की कठोर मुद्रा देखकर उसने वहाँ से चले जाने मे ही कुशल समझी।

फिर कर्नल साहब उन दोनो प्रतिद्वन्द्वियो की तरफ मुड़े, मानो घर का कोई बड़ा-बूढ़ा परिवार का कोई झगड़ा निबटाने बैठा हो, यद्यपि इस उम्र मे उनकी यह भूमिका शोभा नही देती थी। वह बोले :

"गौरी ने मेरे सवाल का बिल्कुल साफ-साफ जवाब दे दिया है और मैं नहीं चाहता कि यहाँ कोई झगडा-फसाद हो।...अंग्रेजी ढंग से काम करने के कारण यहाँ के डाक्टरो मे और इस छोटे-से शहर के दूसरे लोगों में मेरे यूँ ही बहुत से दुश्मन हो गये है।...मैं इसे यहाँ काम दे दूँगा। जब तक इसके पति को बुलाकर इसे उसके हवाले न कर दिया जाय तब तक वह यहाँ की नर्स मिस यग का हाथ बँटायेगी।"

कर्नल महेन्द्रा की दो टूक बात और उनके स्वर की दृढ़ता ने बहस की कोई गुंजाइश नही छोड़ी थी। इसके अलावा उनकी रोबदार-गंभीर मुद्रा के आगे ओछेपन का भी मौका बाकी नही रह गया था।

सेठ ज्वालाप्रसाद समझ गये कि अमरू के साथ उनके सौदे के खिलाफ कर्नल साहब ने नैतिक सदाचार की जो अभेद्य दीवार खड़ी कर दी थी, उसे तोड़ना असंभव था।

मेजर बातरा अपनी विजय के गर्व मे बड़ी शान से गरदन टेढ़ी किये बैठे थे। सहसा उन्होंने उठकर चिक उठायी; यह सेठजी के लिए बाहर चले जाने का संकेत था और इस प्रकार बातरा साहब यह भी जता देना

चाहते थे कि यह विजय मुख्यतः उनकी अपनी विजय थी।

●●९

इसके बाद कुछ दिनों में गौरी के जीवन का तूफान कुछ शान्त हो गया; यद्यपि नर्सिंग-होम में आने से पहले की उस छोटी-सी अवधि में उस पर जो कुछ बीती थी, उसके कारण वह कुछ खोयी-खोयी रहती थी। दो बार तो ऐसा हुआ कि वह मिस यंग का हाथ बँटाने के लिए जो औजार पकड़े हुए थी वह उसके हाथ से छूट गये और एक बार तो वह खौलते पानी से जलते-जलते बची। वह सदा यही सोचा करती थी कि अब क्या होगा? अब कौन होगा?

आकाश पर काले-काले बादल छाये थे और तीन बार पानी बरस चुका था। उसकी आँखों के सामने यही दृश्य नाचता रहता था कि पंछी खेतों की जुताई करके फसल बो रहा होगा और वह एक स्वप्न-सा देखती रहती थी कि वह अपने किये पर पश्चाताप करता हुआ उसे वापस ले जाने के लिए आ रहा है।

कुछ भी हो, कम-से-कम सेठ ज्वालाप्रसाद के घर जाने का भय तो अब दूर हो गया था।

दुर्भाग्यवश, एक बात थी जो कभी-कभी उसकी इन सुखद कल्पनाओं में बाधा डालती रहती थी और वह थी मेजर बातरा की आँखों की वह चमक, जिसके बारे में मिस यंग कभी-कभी उसे उलहना दिया करती थीं कि 'उनकी इस दया दृष्टि से बचकर ही रहना!'

एक बार गौरी ने सोचा भी कि डाक्टर महेन्द्रा से कहकर अपने पति को खत लिखवा दे कि आकर उसे ले जाये, पर फिर उसकी हिम्मत न हुई क्योंकि बड़े डाक्टर साहब तो बिल्कुल भगवान् के समान थे, जिनके पास तक पहुँचना भी कठिन था। इसके अलावा उसने यह भी

सोचा कि अगर पंछी को यह मालूम हो गया कि उसे एक साहूकार के हाथ बेच दिया गया था और वह दो रात उसके यहाँ रही भी थी तो वह और भी गुस्सा होगा, उस पर और ज्यादा शका करने लगेगा—उस समय से भी अधिक, जब कि उसने उसे घर से निकाला था।

दूसरी तरफ मेजर बातरा, जो बहुत ही उच्छृखल और उद्दण्ड स्वभाव के व्यक्ति थे, उसके साथ ज्यादा मेलजोल बढ़ाने के लिए बेचैन थे ताकि वह उसके हृदय मे अपने लिए जगह पैदा कर सके। लेकिन उनके बारे मे तरह-तरह की बातें उड़ती रहती थी और कर्नल महेन्द्रा तथा सेठ ज्वाला-प्रसाद के सामने उन्होने कुछ हद से आगे बढ़कर ही अपनी योजनाओ को जाहिर कर दिया था; इसलिए वह अपने जोश को दबाये हुए थे। उन्होने इस बार हमेशा की तरह बेधड़क कदम बढ़ाने का साहस नही किया। अब तक उनका विश्वास यह रहा था कि किसी औरत को हथियाने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि सीधे उसके पास पहुँच जाये, और उसके साथ सोने की इच्छा प्रकट करके अपने रूप पर उसके अभिमान की भावना को जागृत करे; इस तरकीब से अधिकाश मौकों पर शिकार पक्के फल की तरह टपककर हाथ मे आ जाता है। लेकिन कुछ ही दिन पहले एक वारदात हो चुकी थी। स्थानीय कालेज की एक अध्यापिका के साथ उनके प्रेमालाप का पता उनकी पत्नी को चल गया था और वह अमृतसर, अपने मायके चली गयी थी। उनके पिता वहाँ किसी कालेज के प्रिंसिपल थे। उन्होंने पूर्वी पंजाब के शिक्षा विभाग द्वारा जोर डलवाकर उन अध्यापिका की बदली चंडीगढ़ करवा दी थी। इसलिए गौरी पर हाथ मारने से पहले डाक्टर बातरा कुछ सतर्क थे और उचित अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे।

इसके अलावा नर्सिंग-होम के किसी रोगी के साथ या किसी ऐसी स्त्री के साथ, जो वहाँ इलाज कराने के लिए रह चुकी हो, प्यार के पेंग बढ़ाने के परिणामों से उन्हे डर भी लगता था। बात यह थी कि कर्नल महेन्द्रा. जिनकी पहली बीवी कछ साल पहले मर चकी थी. कभी सदाचार

के पथ से नहीं डिगे थे, यद्यपि वह दूसरों की वासनातुष्टि पर कोई आपत्ति नहीं करते थे। पर उन्नत विचारो पर आस्था रखने के कारण उनका दृष्टिकोण वास्तविकताओं के अनुकूल होता था, पर वह अपनी डाक्टरी के क्षेत्र मे कड़ा अनुशासन कायम रखते थे। कार्यकुशल बड़े डाक्टर साहब यदि मेजर बातरा की बेजा हरकतों को देखकर भी टाल जाते थे तो इसका कारण यह था कि शल्य-चिकित्सा के इस अस्पताल और नर्सिंग-होम मे उन दोनों का बराबर पैसा लगा हुआ था। पर वह छोटी-सी इमारत जिसमे अस्पताल कायम था, छोटे डाक्टर साहब की निजी सम्पत्ति थी। साथ-साथ डाक्टरी करने के पहले पॉच वर्ष तक दोनो डाक्टरो की अच्छी तरह निभती रही क्योकि उनके नये प्रयास को बहुत सफलता प्राप्त हुई थी और उन्हे दूसरे डाक्टरो तथा अन्य लोगो के मुकाबले मे, जो ईर्ष्या के कारण उन्हे जरूरत से ज्यादा विलायती साबित करना चाहते थे और उनकी जड़ खोदने पर उतारू थे, एक सयुक्त मोर्चा बनाये रखना आवश्यक था; क्योंकि जो मनुष्य अपने प्रयास मे निष्फल हो जाता है उसकी यह आदत होती है कि बजाय अपनी तरफ से कुछ निर्माण करने के वह सफल मनुष्य को नष्ट करने का प्रयत्न करता है। लेकिन दोनों के स्वभाव मे अन्तर होने के कारण बाद मे झगड़े होने लगे। बड़े डाक्टर साहब मान-मर्यादावाले आदमी थे और छोटे डाक्टर साहब अपने उच्छृंखल स्वभाव के कारण तरह-तरह की वासनाओं के शिकार थे। इन झगड़ों के कारण उनकी आपस की सुहृदयता कुछ कम हो गयी और वह दोनों एक दूसरे से कुछ झेपने लगे थे। ज्यादातर वे सिर्फ काम की ही बातें करते थे। रोग-निदान और शल्य-चिकित्सा मे उनकी मानी हुई निपुणता के कारण बातरा साहब के दिल मे कर्नल महेन्द्रा की जितनी इज्जत थी वह भी कुछ कम हो गयी। कर्नल महेन्द्रा बहुत सादे ढग से रहते थे और दूसरों के साथ उनका बरताव बहुत निष्कपट था। उनके श्यामवर्ण शरीर मे कही एक विलक्षण, रहस्यमयी आत्मा छुपी हुई थी। इन्हीं गुणों के कारण छोटे डाक्टर साहब कर्नल महेन्द्रा से बहुत प्रभावित

थे और उनकी अटल सिद्धान्तपरायणता के कारण वह उनसे कुछ डरते भी थे, क्योंकि स्वयं बातरा साहब इस गुण से वंचित थे। बड़े डाक्टर साहब स्वभावजन्य नैतिक सदाचार के अतिरिक्त पैसे के लोभ से मुक्त थे। उनके दिमाग में छोटे शहरों के निम्न-मध्यम-वर्ग के अफसरों और व्यापारियोंवाली संकीर्ण धारणाएँ भी न थीं। भय तो उन्हें छू भी नहीं गया था और दुनिया के माया-मोह से तो वह बिलकुल ही विरक्त रहते थे। यही कारण था कि जब वह अस्पताल से माडल-टाउन के बाहर आधी मील की दूरी पर, एक कच्ची सड़क पर बने हुए, अपने पक्के बंगले की ओर जाते थे तो ऐसा मालूम होता था कि कोई देवता अकेला इस पृथ्वी पर चल रहा है, जहाँ और सब लोग एक पिटी हुई लीक पर ही चल रहे थे। वे रोज इतनी पाबंदी से आते-जाते थे कि उन्हें देखकर यह बताया जा सकता था कि समय क्या हुआ है। उनकी शराफत और नियमित दिनचर्या के कारण तथा रोगियों के साथ सद्भावनापूर्ण व्यवहार के कारण उनको समाज मे ऐसा पद प्राप्त हो गया था कि सभी लोग उनकी बात मानते थे और उनका आदर करते थे।

कर्नल महेन्द्रा ने यह जता दिया था कि उन्हें गौरी की तरफ मेजर बातरा के झुकाव का पता चल गया था। अपने विशिष्ट ढंग से वह बिना कुछ कहे या किसी प्रकार का संकेत दिये बिना ही यह जाहिर कर देते थे कि उन्हें सब कुछ मालूम है। छोटे डाक्टर साहब अजीब दुविधा मे फँसे हुए थे; वह गौरी के मामले मे आगे बढ़ना चाहते थे पर बढ़ नहीं पाते थे।

और फिर सेठ ज्वालाप्रसाद के साथ उस दिन के झगड़े के बाद इसका भी तो ख्याल रखना था कि वह बनिया न जाने क्या कर बैठे? वह साहूकार क्या करनेवाला है, इसके बारे मे कुछ ज्यादा तो पता नहीं चला, मगर बार मे और क्लब में कुछ लोग मेजर बातरा को इस तरह देखते थे मानो उन्होंने कोई बुरी बात की हो। एक दिन प्रोफेसर रामनाथ-शर्मा के चेहरे पर इसी प्रकार का निन्दा का भाव देखकर मेजर बातरा

उनसे पूछ ही तो बैठे, "आप की नजरों मे मै एकाएक इतना गिर क्यों गया हूँ ?" प्रोफेसर साहब बड़ी देर तक उन्हे कड़ी नजरों से घूरते रहे, फिर कुछ विस्मित होकर उन्होंने कहा, "आपकी आत्मा आपको किसी बात पर धिक्कारती तो नहीं रहती है, जिसकी वजह से आप तरह-तरह की बातें सोचते रहते हैं!" मेजर बातरा ने होशियारपुर के समाज के इन पुराने आधार-स्तम्भ से माफी माँगकर किसी तरह पीछा छुड़ाया और फिर अपनी पत्नी को भी उन्हे समझाना-बुझाना पड़ा कि इधर अस्पताल मे काम ज्यादा होने के कारण उनके दिमाग मे अजीब गंदी बाते आने लगी थीं। लेकिन इस सबकी कोई जरूरत नही थी क्योंकि मिसेज बातरा ने उनसे कोई सफाई देने को कहा ही नही था और पिछले कुछ दिनों मे उन्होंने अपने पति के व्यवहार मे ऐसी कोई बात देखी भी नही थी जिससे उनके मनमे शंका होती।

इस घटना के बाद और मेजर बातरा के चोर की दाढ़ी मे तिनका वाले रवैये के कारण उनकी पत्नी बहुत सतर्क हो गयीं। अपने साथ बहुत बड़ा दहेज लाने के कारण वह अपने पति पर काफी रोब रखती थी, पर साथ ही एक बात और भी थी कि वह उस अंग्रेजी ढंग के जीवन की आदी नहीं थीं, जो उन पर थोप दिया गया था। उन्हे कुछ इसी प्रकार के खतरे की संभावना दिखाई देने लगी जैसी कि उस अध्यापिका के चक्कर में उनके पति के फँस जाने के समय पैदा हो गयी थी, इसलिए उनके कान कुछ खड़े हो गये। शीघ्र ही उन्होंने पता चला लिया कि उनकी शंका का कारण वह पहाड़िन गौरी है, जिसे कर्नल महेन्द्रा ने अपने नर्सिंग-होम में नौकर रख लिया था। बातरा साहब जान-बूझकर कई बार उसका जिक्र कर चुके थे कि उसके आ जाने से उन्हे काम में कितनी मदद मिलने लगी थी। श्रीमती सावित्री बातरा ने मिस क्लारिबेल एम० यंग से बात करके अपनी इस शंका की पुष्टि कर ली। मिस यंग ने उन्हें सारा किस्सा बता दिया कि यह पहाड़िन नर्सिंग-होम में कैसे आयी।

इसके बाद परिस्थितियों का वह गोरखधंधा, जिसमें मेजर बातरा गौरी

के प्रति अपनी भावनाओं को साकार रूप देने का प्रयत्न कर रहे थे, इतना जटिल हो गया कि वह अक्सर झुँझलाकर जोर-जबदस्ती से काम लेने लगे; जिनके कारण संकट, या यह कहना चाहिए कि संकटो का पूरा क्रम पैदा होना निश्चित था।

आनेवाले तूफान का पता सबसे पहले प्रोफेसर शर्मा ने दिया।

प्रोफेसर रामनाथ शर्मा की समझ मे न आता था कि आखिर बातरा-साहब ने एकाएक उस दिन वह बात क्यो पूछी थी। उन्हे सारे किस्से का पता लगा लेने मे कुछ अधिक समय न लगा कि गौरी को पहले सेठ-ज्वालाप्रसाद ने खरीदा था और वहाँ से कर्नल महेन्द्रा अपने चालाक सहकारी की सहायता से उसे 'उड़ा ले गये।' पक्के हिन्दू और उस पर ब्राह्मण होने के कारण उनका विश्वास था कि यदि सेठ ज्वालाप्रसाद खाने-पकाने और सीने-पिरोने के लिए घर मे एक पत्नी को रखना चाहते थे तो इसमे कोई बुराई नही थी। और चूँकि सेठजी ने उन्हे अपनी बिस्कुट की फैक्टरी का, जो वह खोलने जा रहे थे, एक डायरेक्टर बना देने का लोभ दे रखा था, इसलिए वह इस बात की ओर कोई ध्यान नही देना चाहते थे कि सेठजी ने उस लड़की को किन हथकंडो से हासिल किया था। पंजाब की पहाड़ियों मे स्त्रियों को खरीदने और बेचने की प्रथा तो बहुत पुरानी थी। सेठजी का इरादा नेक था और वह उसे चादर उढ़ाने को तैयार थे। और दहेज मे उसे बहुत से गहने-कपड़े भी देने को तैयार थे। प्रोफेसर शर्मा ने फौरन अपने इन विचारों की चर्चा नही की। होशियारपुर समाज के केवल दो प्रतिष्ठित सज्जनों को ही उन्होंने यह बात बतायी थी—एक थे 'सायको थेरेपी सोसायटी' के डाक्टर हशमत-राय। महेन्द्रा-बातरा गुट से उनकी दुश्मनी होना स्वाभाविक ही था, और दूसरे थे बैरिस्टर सरदार दिलजीत सिंह; इनकी भी उसी अध्यापिका मे दिलचस्पी थी जिसे डाक्टर बातरा ने फँसा लिया था और इस पर सरदार-जी को बहुत दुःख हुआ था। इसी लड़की की खातिर अपनी सूरत को अधिक आकर्षक बनाने के लिए उन्होंने अपनी दाढ़ी भी मुँड़ा दी थी।

सेठ ज्वालाप्रसाद ने प्रोफेसर शर्मा को अपना सारा किस्सा बताते समय अपनी इज्जत के ख्याल से उनसे मना कर दिया था कि जब तब उस लड़की को घर वापस लाने की कोई तरकीब न निकल आये तब तक वह किसी को इसके बारे मे न बतायें। इसलिए इन तीन महानुभावों ने सारी परिस्थित पर बहस की थी और वे सेठजी की सहायता करने की कोई ऐसी तरकीब ढूँढ़ निकालना चाहते थे जिससे कम-से-कम शुरू मे यह बात और लोगों के कानों तक न पहुँचने पाये।

उनकी यह खिचड़ी धीरे-धीरे पक रही थी, अभी तक उसमे उबाल नही आया था। मगर मेजर बातरा ने अपनी पत्नी के हृदय मे जो तूफान खड़ा कर दिया था उसके कारण होशियारपुर जैसे छोटे-से शहर के गन्दे ठहरे हुए पानी मे एक हलचल-सी पैदा हो गयी और इसके साथ ही उन तीनो लोगो के षड्यंत्र ने भी जोर पकड़ा।

एक दिन रात को मेजर बातरा ब्रिज मे बहुत बड़ी रकम हारकर क्लब से वापस लौट रहे थे। रास्ते मे शराब पीने के लिए वह अपने पुराने लँगोटिया यार ठेकेदार हरदीन सिह के यहाँ रुक गये। रात को एक बजे के करीब जब वह घर लौटे तो उस समय हमेशा से ज्यादा ही नशे मे चूर थे। उनकी पत्नी सावित्री ने देखा था कि इधर कुछ दिनों से वह बहुत ज्यादा पीने लगे थे, पर उन्होने इस ओर अधिक ध्यान नही दिया था, क्योंकि ऐसा तो अक्सर होता ही रहता था। नौकर ने खाना पकाकर रख दिया था, वह ठडा हो गया था। वह चौके मे बैठी खाना गरम कर रही थी और साथ ही बुड़बुड़ाती जा रही थी। यह देखकर मेजर बातरा समझ गये कि वह उन्ही को बुरा-भला कह रही होगी। वह ताव मे उठे और बाल पकड़कर उन्हे ड्राइंग रूम मे घसीट लाये और बुरी तरह पीटने लगे; खाने के बरतन, उन्होने कुछ कमरे मे और कुछ खिड़की के बाहर फेंक दिये। नर्सिंग-होम के सभी लोग जाग गये और नशे में चूर छोटे डाक्टर साहब का हंगामा सुनते रहे।

गौरी को भी अन्दाजा हो गया था कि क्या नया संकट पैदा होने-

वाला है। शहर में लोग जो बातें कर रहे थे उसके बारे में भी उसे मिस-यंग से मालूम हो चुका था। पहले कुछ दिन तक तो गर्भ के कारण अक्सर उसकी तबीयत खराब हो जाया करती थी, फिर उसे हरदम यह भी आशंका रहती थी कि बातरा साहब न जाने क्या कर बैठें ? पर इन दोनों बातों के बावजूद उसकी आत्मा मे एक ज्योति-सी जगमगा उठी थी—एक तो सेठ ज्वालाप्रसाद से छुटकारा पा जाने के कारण और दूसरे अपने पति के पास लौट जाने की आशा से ; जो सहसा उसके हृदय मे गहराई से बैठ गयी थी। उसे लगता था कि उसके शरीर के अन्दर एक विचित्र-सी खलबली मची रहती थी और जब उसका जी बुरा होता था तब भी वह खुश रहती और सचमुच गाय की तरह ही हर-दम उसे नींद-सी आती रहती थी। पर उसके अन्दर जो आग जल रही थी उससे उसे दिन भर लगातार काम करते रहने के लिए काफी शक्ति मिल जाती थी।

परन्तु जब ऊपर डाक्टर बातरा के कमरे में झगड़े के शोर-गुल से नर्सिंग-होम की शान्ति भंग हो गयी तो डर के मारे उसके पेट मे भी खलबली-सी मच गयी और बौखलाहट के मारे उसका सारा शरीर काँपने लगा। वह समझी कि यह पित्त की खराबी के कारण हो रहा है इसलिए उसने मुँह में उँगली डालकर कै करने की कोशिश की।

मेजर बातरा के इस पागलपन से मिस यंग की आँख खुल गयी थी और वह लेटी किसी बहुत बड़े सर्वनाश की प्रतीक्षा कर रही थी। इतने मे उन्हें बगलवाले कमरे से गौरी के कै करने की आवाज सुनाई दी। वह जल्दी से उठकर उसके कमरे में गयी, अभ्यस्त हाथों से उसकी पीठ को थपका, मुँह साफ करने के लिए थोड़ा-सा पानी पिलाया और कुछ बताती रहीं।

"ऊपर जो झगड़ा हो रहा है वह तुम्हारे ही बारे में है, जानती हो ? वह पापी बातरा सीधे नरक में जाने की तैयारी कर रहा है और वह नरक तुम ही हो। मुझे यकीन है, कल उनकी बीवी मायके चली जायेंगी और वह तुम्हारी तरफ रुख करेंगे। मैं तुमसे यही कहूँगी कि तुम यहाँ से

भाग कर अपनी माँ के घर चली जाओ !"

यह कहकर मिस यंग अपने कमरे में वापस चली गयी। यों तो इस नर्स के बोलने का ढंग हमेशा से ही कुछ सख्त था, पर इस समय उसने जिस स्वर में गौरी से बात की थी, वह गौरी को कुछ असाधारण रूप से सख्त मालूम हुआ। बातरा साहब के खिलाफ मिस यंग ने जो जहर उगला था, उससे वह गॉव की लड़की समझ गयी थी कि वह किसी बात पर छोटे डाक्टर साहब से जली बैठी है। शायद उन्होंने उसके साथ भी कुछ छेड़छाड़ की हो ? मगर मिस यंग के भद्दे-बेडौल शरीर को देखते हुए इसमें सन्देह ही था, बल्कि ज्यादा सम्भावना इस बात की थी कि उसी के दिल मे उस खूबसूरत नौजवान के लिए प्रेम उत्पन्न हुआ हो।

गौरी बिस्तर पर लेटी थी; उसे नोद नही आ रही थी। वह मिस-यंग की सलाह पर अमल करने के लिए आवश्यक इच्छा-शक्ति जुटाने का प्रयत्न कर रही थी। पर बाहर रात के अंधकार के कारण उसने इन सब विचारों को स्थगित कर दिया। उसकी आत्मा इस समय अपनी माँ के घर से बहुत दूर कही विचर रही थी और उसने उस बुढ़िया और गौरी के बीच एक अलंघनीय खाई खोद दी थी। उसके हृदय में एक तीव्र अभिलाषा हुई, मन ने कहा कि यदि वह सचमुच पैदल चलकर अपने पति के गॉव पहुँच जाये तो वह उसकी श्रद्धा और भक्ति से प्रभावित होकर उसे फौरन अपने सीने से लगा लेगा। गौरी को विश्वास था कि उसकी यह मुसीबत उसके सब पापों के लिए प्रायश्चित-स्वरूप हो जायेगी, क्योकि अच्छे कर्मों से मनुष्य का भविष्य उज्ज्वल हो जाता है। मगर उसे कुछ भी तो मालूम नही था कि वह गॉव कितनी दूर है, किधर को है और रास्ते में उसे न जाने कैसे-कैसे भयानक जंगलों से होकर गुजरना पड़ेगा, जिनमें उसे जहरीले साँप, जंगली रीछ और शेर मिलेंगे, वह इनका मुकाबला कैसे करेगी ? और फिर राक्षस भी तो मिल सकते हैं, जिनके सर पर सींग होंगे, बड़े-बड़े दाँत निकाले हुए उसे रास्ते में पकड़ लेने की कोशिश करेंगे। वह कुछ फैसला नहीं कर पा रही थी; बेचैनी से सर

इधर-उधर पटक रही थी।

इतने मे उसके पेट मे जहाँ पीड़ा होती थी; उसके नीचे ही किसी जगह एक लहर-सी उठी, जिससे अँधेरे मे उसकी आँखें चमकने लगीं। वह नौजवान डाक्टर कुछ ऐसा बुरा तो था नही। और वह उसके पीछे पागल ही होगा तभी अपनी बीवी तक से लड़ बैठा। यह विचार आते ही गर्व से उसके चेहरे पर एक गरमी-सी दौड़ गयी और उसका अग-अग इसी गर्व की भावना से जगमगा उठा। 'मगर पगली, तू यह कैसी बाते सोच रही है?' उसकी लाज की भावना ने उससे निःशब्द स्वर मे कहा। उसने आँखे बन्द करके अपनी आत्मा पर एक परदा-सा डाल लिया। वह सिमटी हुई लेटी थी और बुरी तरह काँप रही थी। अपने दाँतों को जोर से भीचकर उसने अपने-आपको बाहर की हर चीज के प्रति कठोर बना लिया था, मानो कोई कुआँरी लड़की प्रत्येक पुरुष अस्वीकार कर रही हो! परन्तु उसके अन्दर सहसा जो काम-वासना उत्पन्न हुई थी, वह इतनी आसानी से नही मिटी, वह करवट बदलकर अपनी छातियों और पेट के बल लेट गयी। उसका शरीर जितना कोमल और यौवनमय था, उसकी भावनाएँ उतनी ही कठोर थी। धीरे-धीरे उसके एक तरफ को झुके हुए सर ने उसकी पलकों पर निद्रा की श्वेत लहरें दौड़ा दी।...

●● १०

दूसरे दिन वही हुआ जो मिस यंग ने कहा था। श्रीमती सावित्री-बातरा अमृतसर चली गयी और जवानी के नशे मे चूर डाक्टर बातरा बड़ी बेहयाई से खुले-आम पागलों की तरह गौरी पर डोरे डालने लगे। अस्पताल के वार्ड में रोगियों के देखते समय बीच-बीच मे सहसा वह ऐसी बात कह बैठते थे जिससे रोगियों की परिचर्या मे बाधा पड़ती थी और गौरी बौखला उठती थी। मिस यंग इस बात पर बहुत लाल-पीली होती थीं।

एक बुढ़िया की खोपड़ी के जख्म पर पट्टी बाँधते हुए एक दिन वह फिल्मी गीत की वह पंक्ति गुनगुनाने लगे, "चली राधे रानी, अँखियों मे पानी, अपने मोहन से मुखड़ा मोड़के।" उन्होंने जान-बूझकर यह मौका इस गीत के गाने के लिए चुना था, जिसमे सुननेवालो को यह भी प्रतीत हो सके कि यह बात उन्होने मजाक मे उस बुढ़िया को संबोधित करके कही थी, क्योंकि उसने सचमुच उनकी तरफ से मुँह फेर लिया था। लेकिन डाक्टर साहब ने जानबूझकर कैंची बड़े जोर से उस ट्रे मे डाली जिसे गौरी लिये खड़ी थी और उसके लजाये हुए मुखड़े को बहुत देर तक इस प्रकार देखते रहे जैसे राजकपूर नरगिस के सामने खड़ा हो।

आखिरी रोगी की मरहमपट्टी हो जाने के बाद औजारों को साफ करने के लिए जब वे दोनों गरम पानी लेने गयीं तो मिस यंग ने चुपके से गौरी के कान मे कहा, "वह नशे मे चूर है।"

गौरी ने मिस यंग की इस बात पर सर हिला दिया। अपना काम करते समय औजारों की ट्रे लेकर वह काठ की तरह खड़ी रहती; जब भी डाक्टर साहब उसके बहुत निकट आने का प्रयत्न करते, वह दूर हटकर खड़ी हो जाती।

थोड़ी देर बाद एक मर्द रोगी को देखते समय, जो बुरी तरह आतशक से पीड़ित था, उन्होंने अपना काम खत्म करके बनावटी हँसी हँसते हुए कहा :

"जो मर्द एक बीवी का होकर रहता है वह सन्यासी होता है..."

वह रोगी पहले तो मुस्करा दिया, फिर मुँह बनाकर तकिये का सहारा लेकर लेट गया। उसकी समझ मे नही आ रहा था कि इस मजाक पर वह बुरा माने या हँसे।

इसी बीच में कार्यकुशल और अल्पभाषी मिस यंग ने मुँह फेरकर गौरी से कहा :

"तुम जाओ, प्राइवेट वार्ड के बाकी रोगियों का काम तुम रहने दो!

मैं डाक्टर साहब के साथ हूँ !"

गौरी जैसे ही जाने को हुई, मेजर बातरा ने उसकी बाँह पकड़ कर कहा :

"नहीं, तुम न जाओ ! जब कोई कोढ़ी मरता है तो उसे एक साथी की जरूरत होती है और मिस यंग की नजरों में हम दोनों पापी हैं, इन्हे हमसे दूर रहना चाहिये। इन्ही को जाने दो !"

मिस यंग ने आँखें तरेरकर उन्हे देखा पर उनकी इस धृष्टता के रवैये को बदल न सकीं क्योंकि वह जबान निकालकर बच्चों की तरह उसे मुँह चिढ़ाने लगे। इसके बाद मिस यंग फुरती से एड़ियों के बल पीछे घूमी और आँसू भरे, गुस्से से खौलती हुई आँधी की तरह बाहर चली गयी। अपने गुस्से को वश मे रखना उनके लिए संभव नही था, इसलिए दरवाजे पर पहुँचकर उन्होंने चीखकर कहा :

"इसके बारे मे आपको कर्नल महेन्द्रा से मालूम होगा। या तो आप ही यहाँ रहेंगे या मैं ही रहूँगी। वह दोनों मे से जिसे चाहे रख लें।"

"अच्छा, अच्छा !" मेजर बातरा ने शराबियों जैसी भारी आवाज मे उत्तर दिया और हँसने लगे—"और यह लड़की...यह तो..." वह फिर हँसे और गौरी पर अपना अधिकार जताने के लिए अपना बाँया हाथ उसकी कमर में डाल दिया। अपने शरीर को जोर का एक झटका देकर गौरी अपने आपको डाक्टर साहब की पकड़ से छुड़ाकर दूर जा खड़ी हुई। वह भय से काँप रही थी। उसका सर एक आज्ञाकारी सेवक होने के नाते झुका हुआ था।

नशे में डाक्टर बातरा के गर्व को गौरी के इस व्यवहार से एक ठेस-सी लगी। पहले तो वह जोर से हँसे, फिर प्रेम का अधिकार जमाते हुए बोले, "मै तुम्हे मार थोड़े ही डालूँगा ! और फिर उसकी तरफ बढ़कर वह मुँह बनाकर एक पिटा हुआ फिल्मी गीत गाने लगे : 'आ री गोरी गोरी, ओ री, बाँकी छोरी !'

इतने में कर्नल महेन्द्रा कमरे में दाखिल हुए; मिस यंग उनके पीछे-

पीछे थी। मेजर बातरा ने गौरी के साथ अपना प्रेमालाप बन्द कर दिया।

अपने साझेदार और नर्स के सामने इस तरह अपना भंडा फूटते देखकर मेजर बातरा का चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

उन्होंने जोर से फर्श पर अपने पाँव जमाकर दाँत पीसते हुए मिस यंग से कहा, "खबीस बुढ़िया, तेरे अरमान पूरे नहीं हुए तो अब उसका बदला ले रही है!"

"बस, बस, जाने दीजिये, मेजर साहब!" कर्नल महेन्द्रा ने अपने साझेदार के गले मे हाथ डालकर उन्हे वार्ड से बाहर ले जाते हुए कहा।

●● ११

इस दुर्घटना के बाद नर्सिंग-होम पर एक अजीब सन्नाटा छाया रहा। प्रायः सभी रोगियों को सुबहवाली घटना का पता चला गया था। उनका इससे कोई सम्बन्ध नही था, फिर भी जवानी के जोश मे डाक्टर-साहब ने अपनी मूर्खता के कारण वहाँ जो वातावरण पैदा कर दिया था, उससे वे सभी चिन्तित थे। उन्हे पूरा विश्वास था कि कर्नल महेन्द्रा वहाँ का वातावरण पहले की तरह ही शान्त बना देंगे और वहाँ की दिन-चर्या पहले की ही तरह सुचारुरूप से चलने लगेगी, जिसके लिए यह नर्सिंग-होम पूरे जिले में प्रख्यात था। पर कुछ लोगों ने, तीसरे पहर जब उनके रिश्तेदार उनसे मिलने आये, तो उनसे सुबह की सारी घटना बता दी और शाम होते-होते बात सारे शहर में फैल गयी। सेठ ज्वालाप्रसाद और महेन्द्रा-बातरा गुट के दुश्मनों के दिल मे नयी उम्मीद पैदा हुई।

सुबह तमाम वक्त रोते रहने के कारण तीसरे पहर गौरी अपने कमरे मे जाकर थोड़ी देर के लिए सो गयी। मिस यंग के लाख धीरज बँधाने पर भी उसे शान्ति नहीं मिली क्योंकि वह नर्स उसके सर पर हाथ फेरकर तसल्ली देने के साथ ही उसे नसीहत भी देती जाती थी, जिसका आशय

यह था कि सारा दोष उसके सुन्दर और कामोत्तेजक शरीर का ही था। अपने इस दोष का आभास होते ही गौरी जैसे बिल्कुल निष्क्रिय हो गयी। सूरज की चमक से बचने के लिए वह सब खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द करके, परदे खींचकर चुपचाप लेटी रही; बिल्कुल उसी प्रकार जैसे वह 'कोप-भवन' में अपनी खटिया पर रूठकर लेट जाया करती थी। जब दिन ढलने लगा तो न उसका सर्वशक्तिमान् आया, जिससे उसने प्रार्थना की थी और न कर्नल महेन्द्रा और न मिस यंग ही, बल्कि उसे इस विपदा से उबारने के लिए आया कौन—वही बातरा। मूर्खतावश गौरी ने दरवाजे की चिटखनी नही लगायी थी। डाक्टर बातरा दरवाजा खोलकर लड़खड़ाते हुए अन्दर आ गये। उन्होंने भर्राई हुई आवाज मे चुपके से कहा :

"मेरी पहाड़िन, मेरे पास आ जा ! आ जा ना !..."

एक क्षण के लिए तो गौरी ने सोचा कि यह केवल एक स्वप्न है, केवल उसका भ्रम है। इसलिए उसने विश्वास करने के लिए आँखे खोलकर गौर से देखा।

पर सहसा बातरा साहब के गठे हुए युवा शरीर का बोझ उसके शरीर पर पड़ने लगा। वह अपने दाहिने हाथ से उसके शरीर को कसकर दबोचे हुए थे और बायें हाथ से उसका मुँह बन्द किये थे। गौरी के मुँह से एक चीख निकलते-निकलते रह गयी।

गौरी ने अपनी टाँगों और शरीर के निचले भाग की सहायता से जो अभी तक मुक्त था, उन्हे ढकेलने का प्रयत्न किया पर वह अपनी टाँगें फैलाकर उसे दबाये हुए थे।

और अब वह नशे मे उससे न जाने कैसी उल्टी-सीधी बाते कर रहे थे।

"ओह मेरी जान, मेरी प्यारी !"

गौरी परास्त हो चुकी थी। वह अनुभव कर रही थी कि उनका उत्तेजित मास अँधेरे मे बड़ी होशियारी से उसकी टाँगों के बीच कुछ

खोज रहा था। उसका दम घुट रहा था; पर शरीर की किन्हीं अन्तरतम गहराइयों से उसमें प्रतिरोध की तीव्र भावना जागृत हुई: इसी भावना के वश उसने सेठ ज्वालाप्रसाद का मुकाबला किया था। अर्धचेतन अवस्था में उसने पीड़ा से विह्वल होकर अपनी सारी शक्ति बटोरकर करवट ली। बातरा साहब के शरीर का शिथिल भार एक तरफ को लुढ़क गया और वह मछली की तरह उनके हाथ से निकल गयी।

"नही !" उसने चिल्लाकर कहा। सहसा जैसे उसकी सारी शक्ति गायब हो गयी, उसने आत्म-समर्पण कर दिया, पर मुँह पर हाथ रखे रोती रही। उसकी सिसकियों की आवाज लगातार तेज होती जा रही थी।

मिस यंग जल्दी से दरवाजा खोलकर अन्दर आयी और आस-पास के कुछ रोगी भी उनके पीछे जमा हो गये।

डाक्टर बातरा को अब अपनी लज्जाजनक स्थिति का आभास हुआ और वह अँधेरे में दुबक गये। उन्होने घबराकर उठने का प्रयत्न किया और गिरते-गिरते बचे।

"शैतान !" मिस यंग भय से चिल्ला पड़ी।

बातरा साहब मिस यंग की तरफ मुड़े और आगे बढ़कर उन्होंने उसके मुँह पर एक तमाचा जड़ दिया।

यह सब कुछ पलक मारते हो गया। मिस यंग को इसकी आशंका नहीं थी, क्योंकि उसे (डराते-धमकाते रहने के बावजूद डाक्टर बातरा उससे हमेशा डरते थे।

"हट जाओ मेरे रास्ते से" वह अधीर होकर चिल्लाये।

मिस यंग पीछे हट गयी और अस्पताल के चपरासी को आवाज देने लगी।

चपरासी अस्पताल के किसी दूसरे हिस्से में था, पर अस्पताल के अन्दर यह शोर-गुल सुनकर एक सिख पुलिस वाले के कान खड़े हुए और वह भागा हुआ अन्दर आ गया।

मिस यंग घबरायी हुई थीं, उनके आँसू बह रहे थे। उन्होंने डाक्टर की तरफ इशारा करके पुलिसवाले से कहा :

"यह है, नशे में चूर ! शराबी ! शैतान !"

डाक्टर बातरा के डील-डौल से पुलिसवाला काफी रोब खा गया, वह चुपचाप खड़ा रहा। पर डाक्टर साहब ने अपने घमंड में उसे गाली देकर बाहर निकल जाने की आज्ञा से खुद मुसीबत मोल ले ली।

सिख पुलिस वाले को ताव आ गया।

"होश में रहिए नही तो...आप चाहे जितने बड़े डाक्टर हों, मुझे इसकी जरा भी परवाह नहीं है !" पुलिसवाला बोला।

"निकल जाओ ! फौरन निकल जाओ, मेरे अस्पताल से !" डाक्टर बातरा ने चिल्लाकर कहा और उसे बाहर निकाल दिया।

"मैं आपको पूरा मजा चखाऊँगा !" पुलिसवाले ने रिपोर्ट लिखाने के लिए थाने की तरफ जाते हुए कहा।

"जा अपनी माँ की..." बातरा साहब ने उसके पीछे जोर से कहा।

मरीज आपस में कानाफूसी कर रहे थे कि डाक्टर साहब के इस व्यवहार का नतीजा कितना खतरनाक होगा।

●●१२

जहाँ तक पुलिस का सम्बन्ध था, जब तक मिस यंग शिकायत न करतीं तब तक मेजर बातरा पर मारपीट का जुर्म लगाने का कोई सवाल ही नहीं था। परिस्थिति को खतरनाक होते देखकर मिस यंग कुछ शान्त हो गयी थी और जब सब-इन्स्पैक्टर खुशीराम कांस्टेबल सूचासिंह के साथ आये तो उन्होंने शिकायत नही लिखायी। उन लोगों को मिस यंग ने कर्नल महेन्द्रा के पास भेज दिया। अस्पताल के चपरासी के हाथ उन्होंने इस घटना की खबर पहले ही वहाँ भिजवा दी थी।

आमतौर पर कर्नल महेन्द्रा सात बजे के बाद नर्सिंग-होम के काम में हाथ नही डालते थे और न उसके बाद शहर में कहीं मरीजों को ही देखने जाते थे। चपरासी से सारा हाल सुनकर वह उदास तो जरूर हुए पर खैरियत यह थी कि वह अभी नहाने के बाद ताजा होकर आये थे। उन्होंने चपरासी से नर्स को समझा-बुझाकर शान्त करने को कहा और यह भी कहा कि वह सुबह आकर सब ठीक-ठाक कर देंगे।

पर चपरासी के जाने के थोड़े ही देर बाद सब-इंस्पैक्टर खुशीराम वहाँ आये, वह बड़े आदर के साथ कर्नल महेन्द्रा से मिले, मानो वह किसी सरकारी काम से नही बल्कि यों ही मिलने चले आये हों। लेकिन वह इसी घात मे थे कि कर्नल साहब कोई ऐसी बात कर बैठें कि उनका नर्सिंग-होम पुलिस के दबाव मे आ जाये।

उनकी नजर हमेशा से इस नर्सिंग-होम पर थी क्योंकि उन्होंने सुन रखा था कि यहाँ एक भगायी औरत रहती है और गर्भ गिराने का काम खुले-आम होता है, इसलिए वह समझते थे कि यहाँ से रिश्वते काफी मिल सकती हैं।

कर्नल महेन्द्रा ने बड़ी शिष्टता से उनका स्वागत किया, पर उनका व्यवहार औपचारिक था। उन्होंने दरोगा साहब से पूछा कि वह किसी सरकारी काम से आये हैं?

"कुछ बातें करनी थी आप से," दरोगा साहब ने बड़ी चुस्ती से सलाम झाड़ते हुए कहा।

"अच्छी बात है," कर्नल महेन्द्रा ने दरवाजे पर ही खड़े खड़े कहा, "अगर बातें करनी है तो कल दफ्तर मे होगी, क्योकि मैं तो दफ्तर खत्म करके आया हूँ, लेकिन आप शौक से आकर बैठिये; कुछ पीने-पिलानेका सिलसिला रहेगा?"

सब इंस्पैक्टर साहब कर्नल साहब के रवैये मे यह खिचाव और व्यंग्य देखकर कुछ सिटपिटा गये पर सूचासिह कास्टेबल को बाहर रुकने को कहकर वह अन्दर बढ़े।

कर्नल महेन्द्रा दरोगा साहब को अपने दो कमरोंवाले बँगले के बरामदे के सामनेवाले छोटे-से आँगन मे ले गये। वहाँ से उन्होंने अपने बावर्ची-खानसामा को आवाज दी, जिसकी कोठरी अहाते मे एक तरफ को बावर्चीखाने के पास थी।

"धनीराम, सोडा !"

धनीराम मशीन की तरह वहाँ आ पहुँचा और सोडे की बोतल खोलने लगा। उसके कपड़े साफ थे और वह अपने काम में बहुत होशियार मालूम होता था।

डाक्टर साहब ने दरोगा साहब के लिए ह्विस्की का एक तेज पेग तैयार किया और अपने लिए अपेक्षाकृत कुछ हल्का। उनका नौकर सोडा डाल रहा था।

इस अंग्रेजी ठाठ-बाट का सब-इंस्पैक्टर साहब पर बहुत रोब पड़ा क्योंकि वह खुद भी बड़े साहबों की नकल करते थे और वह डाक्टर के प्रभाव मे आ गये थे। जब कर्नल साहब ने गिलास उठाकर उन्हे शुरू करने का संकेत किया और उन्होंने जवाब मे अपना गिलास उठाकर एक घूँट चढ़ाकर डकार ली, तब भी उनका सर झुका हुआ था।

इसके बाद एक भयावह निस्तब्धता छायी रही। दो परस्पर-विरोधी धाराएँ आपस मे टकरा रही थी, पर उनमे से कोई भी दूसरे को अपनी थाह देने के लिए तैयार नही था। पर अन्त में विजय उसी की हुई जो उम्र में बड़ा था, ज्यादा मान-मर्यादावाला था और अल्पभाषी था, क्योंकि पहले सब-इंस्पैक्टर खुशीराम ने ही अपने दिल की बात कही :

"हुजूर, आपको मालूम है...आपके अस्पताल मे आज कुछ गड़बड़ हुई थी। मैंने सुना है कि झगड़ा तो सब आपस के समझौते से रफा-दफा हो गया है मगर करनैल साहब, मैं आपसे यही कहने आया था कि अगर आइन्दा इस किस्म की वारदात न हो तो अच्छा है !...खैर जब तक हमारे पास कोई शिकायत लेकर न आये तब तक हमे तो किसी पर जुर्म लगाने का हक नही है। लेकिन शहर में अस्पताल के बारे में तरह-तरह

की बातें कही जा रही हैं। मैं एक दोस्त की हैसियत से आपको इसकी इत्तिला दे देना चाहता हूँ..."

"लाला खुशीराम, मुझे बड़ी खुशी है कि आप एक दोस्त की हैसियत से बात कर रहे हैं।" कर्नल महेन्द्रा बीच मे बोल उठे, "हमारे अन्दरूनी झगड़ों को हम तक ही रहने दिया जाये तो अच्छा है। और जहाँ तक इसका ताल्लुक है कि लोग क्या कहते है, तो वह जो कहते हैं, उन्हे कहने दीजिये..."

कर्नल महेन्द्रा के स्वर में जो रुखाई थी, उससे कस्बे की टुच्ची और घृणास्पद बातचीत के प्रति उनकी झुंझलाहट और तिरस्कार की भावना का भी पता चलता था। दरोगा साहब इस तरह माफी माँगने लगे मानो उन्होंने कोई बहुत बड़ा अपराध किया हो :

"करनैल साहब, माफ कीजियेगा कि ऐसी छोटी छोटी बातो का जिक्र करके मैने आप जैसे बड़े आदमी का वक्त खराब किया।"

"कोई बात नही है," कर्नल साहब ने अधीर होकर उत्तर दिया, "मैं जानता हूँ, लोग क्या कहते हैं!"

"नहीं साहब, आपको सब बाते नहीं मालूम। यहाँ के लोगो का सोचने का ढग ही बेहद गन्दा है। मिसाल के तौर पर कुछ लोग कहते है कि आपके अस्पताल मे हमल गिरवाये जाते है। और..."

"और? हाँ हाँ कहिये।"

"यही कि अस्पताल में एक भगायी हुई औरत को रखा गया है..."

सब-इस्पैक्टर साहब जी-हुजूर करते-करते भी चालाकी से अपनी बात कह जाने मे बहुत होशियार थे। वह इशारों-इशारों मे ऐसी बातें कह डालते थे जिन्हे वह अपनी निम्न-मध्यम-वर्ग की हैसियत के कारण शहर के बड़े-बड़े लोगों और शरीफों के सामने साफ-साफ नहीं कह सकते थे।

"तो फिर कोई इन बातों को साबित करने की हिम्मत क्यों नहीं करता?" कर्नल महेन्द्रा ने यह बात इतने सीधे तौर पर कही थी कि उनकी बात में एक दृढ़ता भी आ गयी और उनके स्वर से यह भी

जाहिर हो गया कि वह अब इसके आगे कुछ सुनना नहीं चाहते, ताकि अब इस विषय पर और ज्यादा बहस न हो सके। उन्होंने एक घूँट में बाकी ह्विस्की चढ़ा ली। अब तक वह आराम कुर्सी पर निश्चिन्त भाव से बैठे थे, पर अब इस तरह बैठ गये जैसे उठनेवाले हों।

सब-इंस्पैक्टर साहब गिलास हाथ में लिये बैठे थे। वह कोई ऐसी तरकीब सोच रहे थे जिससे कर्नल साहब को नाराज करने का प्रायश्चित हो सके। पर डाक्टर साहब के श्याम वर्ण चेहरे और चढ़ी हुई त्योरियों से जिस भाव का पता चलता था, उसे देखकर कुछ कहने का साहस नहीं होता था। पर बेवकूफों की तरह खुशीराम ने चतुरता दिखाने की कोशिश की और इस तरह गिड़गिड़ाकर माफी माँगने लगे कि महेन्द्रा-साहब साफ समझ गये कि यह सब दिखावे की बातें हैं। सब-इंस्पैक्टर साहब उनसे कह रहे थे, "सरकार, अगर मुझसे कोई गलती हुई हो तो माफ कीजियेगा, लेकिन पुलिस अफसर होने के नाते यह मेरा काम है कि तमाम गैरकानूनी कार्रवाइयों की जानकारी रखूँ !..."

"बस काफी है, सब-इंस्पैक्टर साहब !" कर्नल महेन्द्रा ने कुर्सी से उठकर फौजी ढंग से खड़े होकर कहा; लड़ाई के दिनों की कुछ आदतें उनमें अब तक बाकी थीं। यद्यपि उनका कद कुछ ऐसा लम्बा नहीं था, पर वह इतने बड़े लगते थे कि अच्छे-अच्छे उनका रोब खा जायें।

इस महान् विभूति को अपने सामने खड़ा देखकर सब-इंस्पैक्टर खुशी-राम बिल्कुल भीगी बिल्ली बन गये। उन्होंने गिलास मेज पर रख दिया और बची हुई शराब को, जिसे वह बिना पिये छोड़े जा रहे थे, हसरत-भरी निगाह से देखकर, कमर झुकाये हुए कुर्सी से उठे, तनकर कर्नल साहब को सलाम झाड़ा और चल देने को तैयार हो गये।

कर्नल महेन्द्रा अटेन्शन की मुद्रा में अकड़कर खड़े हुए थे; उनका सर आगे को झुका हुआ था और नजरें जमीन पर गड़ी हुई थीं। उनके होंठ मजबूती से भिचे हुए थे। वह अपना गुस्सा रोकने की कोशिश कर रहे थे, क्योंकि वह एक तुच्छ पुलिस अफसर पर अपना गुस्सा उतारना

नहीं चाहते थे। उनका गुस्सा तो सचमुच होशियारपुर समाज के उन असंख्य ठेकेदारों के खिलाफ था, उन नौदौलते वकीलों, डाक्टरों, अफसरों और व्यौपारियों के हास्यास्पद समूह के खिलाफ—जो लोग बड़े रोब से डिनर-पार्टियों मे सीना तानकर ऐंठते फिरते थे और एक-दूसरे से बड़े तपाक से हाथ मिलाते थे, यद्यपि दिल-ही-दिल मे वे एक-दूसरे से जलते थे और उनकी इस ईर्ष्या का कारण उनकी पत्नियाँ थीं, जो अपने पतियों की आमदनी की डीग हाँककर एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करती थीं। इन असभ्य लोगों के जीवन की निरर्थकता पर उनका चेहरा क्रोध से आग की तरह तमतमा उठता था। वह इस बात पर लज्जित थे कि उनके सहकारी के दुष्कर्मों के कारण लोगों की उँगलियाँ उस नर्सिग-होम की तरफ उठने लगी थी, जिसमें वह साझेदार थे। वह जाकर डाक्टर बातरा से कहेगे कि वह अस्पताल के कर्मचारियों के साथ ठीक से पेश आया करे और अपने असंतुष्ट जीवन के बावजूद शराब कम पिया करें, और यदि वह नर्सिग-होम को कायम रहने देना चाहते हैं तो कुछ समय के लिए वह अपने तथाकथित मित्रों से मिलना-जुलना छोड़ दें।

"धनीराम, इस वक्त मेरे लिए खाना न पकाना," उन्होने बावर्चीखाने की तरफ मुडकर आवाज दी, "तुम खाना खाकर मेरा बिस्तर लगा देना और सोना। मैं जरा अस्पताल जा रहा हूँ।"

●●१३

गौरी के कमरेवाली घटना के बाद से मेजर बातरा काफी गम्भीर हो गये थे। और किसी समय वह इतने गम्भीर नही रहे थे। लेकिन बिस्तर पर लेटे-लेटे वह 'वाट-६९' के पेग पर पेग चढ़ाये जा रहे थे और वह भी बगैर कुछ मिलाये हुए। उनके दिमाग में इस समय बारीकियों पर विचार करने की क्षमता नहीं रह गयी थी, फिर भी उन्हें परिस्थिति की मोटी

रूप-रेखा स्पष्ट दिखाई दे रही थी। वह सफेद छत को, जो बिजली की रोशनी में जगमगा रही थी, एकटक घूर रहे थे। उनके दिल और दिमाग में एक खलबली मची हुई थी, पर शराब के असर से उनके शरीर की सारी शक्ति सिमटकर उनकी इच्छा-शक्ति मे परिणत हो गयी थी। वह गौरीवाली घटना को, अपने उस निर्लज्ज व्यवहार को भूल जाना चाहते थे। उन्हे लग रहा था कि उनकी चालाक, कंजूस और बदसूरत बीवी, जो समाज की तितली थी, उन्हे कुछ भी न करने देगी। वह अपने सारे गहने और कपड़े लेकर चली गयी थी, पर दहेज के रुपये तो उन्ही के पास थे। अगर वह लौटकर न भी आती तब भी उन्हे कोई परवाह न थी। औरतें दो-दो टके को मिल सकती थी। यदि वह पहाड़िन चिल्लायी न होती तो उसके यौवनमय-सुडौल शरीर से वह कितना आनन्द प्राप्त कर सकते थे। पर उसने उन्हे जिस बुरी तरह ठुकरा दिया था, उससे तो यही पता चलता था कि उनके मुकाबले मे उसकी इच्छा-शक्ति अधिक शक्तिशाली थी। यद्यपि मन-ही-मन वह उसकी प्रशंसा कर रहे थे, पर यह विचार उनके लिए असह्य था कि उसने उन्हे इस प्रकार ठुकरा दिया था, उसने उनका गर्व चूर कर दिया था और उन्हे दूसरों के सामने अपमानित किया था। उनकी आत्मा खौल रही थी और वह अपनी सारी इच्छा-शक्ति बटोरने का प्रयत्न कर रहे थे ताकि फिर कभी मौका मिलने पर वह अपना जाल बिछाये और उसे वश मे कर लें। इस तुच्छ पहाड़िन से वह हार मान जाये? भला यह कैसे हो सकता था! जहाँ तक उस कुतिया नर्स मिस यंग का सवाल था, जो हर बात मे अपनी टाँग अड़ाती थी, और इधर की बाते उधर लगाती रहती थी, उसे यहाँ से जाना ही होगा। वह उसके बारे मे कर्नल महेन्द्रा से बात करेंगे; वह योरप की जिंदगी देख चुके हैं, इसलिए वह गौरीवाले मामले पर आपत्ति नहीं करेंगे; लेकिन इस मनहूस और मक्कार ईसाइन को तो, जो हर बात में पाप ही ढूँढ़ा करती है, यहाँ से जाना ही होगा।

तभी किसी ने दरवाजा खटखटाया। डाक्टर बातरा को ऐसा लगा

कि कोई बड़ी देर से दरवाजा खटखटा रहा हो, पर वह नशे मे इतने धुत थे कि उन्होंने ठीक से सुना नही।

"अन्दर आ जाइए," पर उन्होने जोर से कहा।

कर्नल महेन्द्रा कुछ नाटकीय ढंग से अन्दर दाखिल हुए। अपने साथी को नशे मे चूर देखकर वह अपनी फौजी चाल-ढाल छोड़कर शरारत-भरे ढंग से मुस्कराने लगे। मेजर बातरा के लिए यह पहला मौका नही था जब उन्होंने अकेले बैठकर शराब पी हो। वह अक्सर ऐसा करते थे, विशेषतः अपनी बीवी से झगड़ा हो जाने के बाद, क्योकि उनके और उनकी बीवी के अन्तर्विरोध, उन्हे असंतोष और अन्य निराशाओ से मुक्त होने के लिए ताश और ह्विस्की का सहारा लेने पर बाध्य कर देते थे। परन्तु इसके साथ ही बहुधा यह भी होता था कि अपने साझेदार की मुस्कराहट और उदार स्वभाव के आगे उनका नशा उतर भी जाता था।

"डाक्टर साहब, लाइए जरा आपका टेम्प्रेचर तो देखूँ!" कर्नल-साहब ने जानबूझकर बातरा साहब की बीमारी का बहाना खड़ा करते हुए कहा, ताकि उन्हे सीधे-सीधे उनको डॉटना न पड़े। उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना उन्होंने नब्ज देखने के लिए बातरा की कलाई अपने हाथ मे ले ली।

"नब्ज तो ठीक है," उन्होंने थोड़ी ही देर के बाद कहा। फिर वह बोले, "आप मेरे साथ एक दौर शराब का और पियें और जाकर सो जायें। मालूम होता है आपको कुछ चिन्ता है..."

"आपको मालूम है कि इस मामले मे आपकी राय मेरी राय से मेल नही खाती है!" बातरा साहब ने अपनी सफाई देते हुए नशीली आवाज मे कहा।

"देखिए मै एक रोगी की तरह आपका इलाज कर रहा हूँ," महेन्द्रा साहब ने पलंग के किनारे पर बैठते हुए कहा, "आप बीमार हैं।"

"मैं बीमार नहीं हूँ।"

"हाँ, कुछ तो जरूर भटक गये हैं।" कर्नल महेन्द्रा व्यंग्य करना नही

चाहते थे और वह अपने शरीर को बहुत स्थिर किये बैठे थे।

"डाक्टर साहब, नसीहत नही चाहिए मुझे!" बातरा साहब ने उत्तर दिया, "मुमकिन है कि मैं अधःपतन की सीमा को पहुँच गया हूँ, पर मैं उपदेश सुनना नही चाहता।"

"अधःपतन की सीमा नही, डाक्टर बातरा, बल्कि छिन्न-भिन्न होने की सीमा।"

"लेकिन मैं मनोविश्लेषण भी नही चाहता।...एक बात तो यह है कि आपने नर्सिंग होम के इन सब नौकरों को इतनी छूट दे रखी है कि वह किसी का रोब मानते ही नहीं—उस नर्स मिस यंग को तो निकालना ही पड़ेगा!...अगर नौकर मेरा हुक्म नही मान सकते...क्योंकि आप हमेशा उनकी तरफदारी करते हैं और उनके बचाव के लिए पहुँच जाते हैं, तो बेहतर यही है कि नर्सिंग-होम बन्द कर दिया जाये!"

"मैं ऐसा कोई काम नहीं करूँगा जिससे नर्सिंग-होम बन्द हो जाये," महेन्द्रा साहब ने खड़े होकर बाहर देखते हुए कहा। वह नही जानते थे कि अस्पताल को और जवानी के नशे मे चूर डाक्टर बातरा को, जिनमे बहुत ही ज्यादा दम्भ था, सर्वनाश से कैसे बचाया जाये। इसलिए उन्हें कुछ गुस्सा आ गया, वह बोले, "अगर हमने नासमझी से काम लिया तो अस्पताल आप ही बन्द हो जायेगा।"

"जहाँ इतने बेवकूफ लोग जमा हों वहाँ समझदारी से काम कैसे ले सकता है कोई!"

कर्नल महेन्द्रा सोचने लगे कि उन्हे यहाँ आना ही नही चाहिए था। क्योंकि नशे की हालत मे बातरा साहब से बहस करना बेकार था; वह बस अपनी ही बात कहते थे, सुनते किसी की नहीं थे। बातरा साहब गुस्से से भरे हुए थे और मरने-मारने पर तैयार थे, क्योंकि स्पष्टतः दोष उन्हीं का था। उनका पहला दोष तो यह था कि उन्होंने अपनी बीवी से झगड़ा किया था और दूसरा यह कि उन्होंने गौरी और मिस यंग के साथ बदसलूकी की थी। इसलिए कर्नल महेन्द्रा अपना गुस्सा पीकर चुप

रह गये। उन्होंने अपने साझेदार की आखिरी बात पर, जो उन्होंने जान-बूझकर गुस्सा दिलाने के लिए कही थी, कोई ध्यान नहीं दिया कि कहीं वह भड़ककर और उल्टी-सीधी बातें न करने लगें। पर डाक्टर बातरा का गुस्सा तो किसी तरह ठंडा होने को नहीं आता था; शायद अपनी बीवी से कई सप्ताह तक असन्तुष्ट रहने का ही यह नतीजा था।

"मिस यंग तो अब यहाँ नहीं रह सकती! उसे हम लोगों के बारे में जरूरत से ज्यादा बातें मालूम हैं। और वह हम लोगों में फूट डालती है।"

"आपकी जैसी मर्जी, डाक्टर बातरा," कर्नल साहब ने अपनी इच्छा के विरुद्ध उत्तर दिया, "लेकिन अगर हम कोई ऐसी बात करें ही नहीं जिसे छुपाना जरूरी हो, तो अगर वह जान भी जाये तो इसमें हर्ज ही क्या है? और हमें..."

"मैं आप से साफ बता दूँ कि मैं कोई महात्मा नहीं हूँ!" बातरा साहब ने चीखकर कहा, "जैसा कि आप जानते हैं, शायद मैं बहुत ही बुरा आदमी हूँ। लेकिन मैं यह नहीं बरदाश्त कर सकता कि लोग हर वक्त मुझ पर नजर रखें। मै जितना बुरा हूँ उससे ज्यादा बुरा इस मिस यंग के कारण हो जाता हूँ। इस लड़की की तरफ मेरा रवैया बहुत अच्छा था, पर मुझे हमेशा निन्दा की दृष्टि से देखने के कारण मिस यंग ने मुझे उसके साथ पशुता का व्यवहार करने पर मजबूर कर दिया। डाक्टर साहब, एक नौजवान लड़की से प्रेम करना कोई पाप तो नहीं है। लेकिन यह चुड़ैल बुढ़िया हमेशा बीच में मजहब लेकर कूद पड़ती है और कमीनी हमेशा यह साबित करना चाहती है कि मैं एक नीच हूँ, पापी हूँ।...शायद वह खुद मर्दों को फाँसना चाहती है। मुझे उसके इस मजहब से नफरत है!...उसका तो यह हाल है कि अंगूर नहीं मिले तो खट्टे! ये औरतें बहुत चालाक, कमीनी और गंदे विचारों-वाली होती हैं और बनती हैं बहुत पाक! काम-वासना की भूखी!"

"आप शायद नीत्शे की किताबें पढ़ते रहे हैं!" कर्नल महेन्द्रा ने चालाकी से मुस्कराते हुए कहा।

"कौन ?" बातरा साहब ने पूछा; उनकी समझ में कुछ नहीं आया था।

"यह जर्मन भी आप ही की जैसी बातें करता था," महेन्द्रा-साहब ने समझाया, "लेकिन शायद आप बगैर जाने हुए ही गद्य में बोलते हैं।"

बातरा साहब में संस्कारों की इतनी कमी थी कि अपने साझेदार की बातें सुनते हुए उनका चेहरा उतर गया। महेन्द्रा साहब की यही बात उनके लिए असह्य थी—हर चीज के बारे में उनका वृहद् ज्ञान! जिसके कारण उनमें स्वभावतः एक श्रेष्ठता का भाव पैदा हो जाता था। इस भय से कि कर्नल साहब अपने ज्ञान का रोब झाड़कर उन्हें दबाने की कोशिश न करें, बातरा साहब ने कहा :

"छोड़िए इन बातों को, कुछ काम की बातें करें। हमें अस्पताल में कुछ सुधार करने पड़ेंगे।"

"हाँ," कर्नल महेन्द्रा ने उत्सुकता से उत्तर दिया; वह यह समझ गये थे कि उनकी बातों से बातरा साहब को कुछ उलझन हो रही थी।

"मिस यंग को निकाल दिया जायगा।"

"हाँ, और उस लड़की गौरी को भी जाना पड़ेगा।...लेकिन इन फैसलों में हमें जल्दी नहीं करना चाहिए। पहले खूब सोच-विचार कर लें।...हर काम को करने का एक ढंग होता है।"

यह सुनते ही बातरा साहब के हृदय के घाव फिर हरे हो गये। गौरी को अपने वश में करने के लिए ही तो वह मिस यंग को निकलवाना चाहते थे। पर कर्नल महेन्द्रा की झुँझला देनेवाली यथार्थवादिता पर, उनके इस रवैये पर कि जैसे वह बहुत न्यायप्रिय और दूध-का-दूध पानी-का-पानी कर देनेवाले हों, बातरा साहब को बहुत गुस्सा आता था। बातरा साहब का गुस्सा और भी बढ़ गया और उन्होंने पक्का फैसला कर लिया कि जो भी उनके रास्ते में आयेगा, वह चाहे उनके साझेदार कर्नल महेन्द्रा ही क्यों न हों, उसका वह डटकर मुकाबला करेंगे। आखिर

तो उन्होंने अपनी बीवी तक की परवाह नहीं की थी। मगर इस अड़ियल-पने का मुकाबला वह कैसे कर सकते थे ?

"इसका फैसला उस लड़की पर छोड़ दिया जाये।" बातरा साहब ने अपनी न्यायप्रियता का प्रमाण देते हुए कहा, क्योंकि वह जानते थे कि इस प्रस्ताव का कर्नल महेन्द्रा के पास भी कोई जवाब नहीं रह जायेगा।

"अच्छा," कर्नल साहब ने बहुत सोच कर उदारता से जवाब दिया, लेकिन साथ ही यह भी जोड़ दिया, "लेकिन डाक्टर बातरा, आप एक क्षण के सुख के लिए पागल न बनिए। बाद में चलकर सबकी आँखें खुल जाती हैं।"

"यह सब मै जानता हूँ। डाक्टर साहब मुझे उपदेश न दीजिए," बातरा साहब ने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया, जिसमे एक चुनौती भी छुपी हुई थी।

कर्नल महेन्द्रा के पास अब अपना-सा मुँह लेकर वहाँ से चले जाने के अलावा और कोई चारा ही नहीं रह गया था।

●●१४

मेजर बातरा के खानसामा ने नर्सिंग-होम के चपरासी से कहा और उसने मिस यंग को बताया और उससे गौरी को मालूम हुआ कि छोटे डाक्टर साहब ने कुछ सुधार करने के प्रस्ताव रखे थे, जिनमे सबसे मुख्य यह था कि मिस यंग को निकाल दिया जायेगा और इस सुझाव के जवाब में कर्नल महेन्द्रा ने कहा था कि गौरी भी वहाँ नहीं रह सकती। यह उड़ती-उड़ती खबर सुनने से बहुत पहले ही, वास्तव में उससे पिछली रातभर गौरी बड़ी बेचैनी से उस जगह को छोड़ देने की योजनाएँ बनाती रही थी, क्योंकि उसने अपने दिल में यह अच्छी तरह समझ लिया था कि

वही सारी बुराइयों की जड़ है। मुँह पर तमाचा खाने के बाद मिस यंग ने तो यह फैसला कर ही लिया था कि वह लुधियाना मे सेन्ट जैवियर्स-कालोनी चली जायेगी, जहाँ के पुण्यात्मा पादरी शायद उसे कही और नया जीवन आरम्भ करने में सहायता दे सकें।

उस दिन नर्सिंग-होम का कार्यक्रम हमेशा की तरह ही आरम्भ हुआ। कर्नल महेन्द्रा ने ठीक साढ़े आठ बजे अस्पताल मे प्रवेश किया। लेकिन उन्होंने देखा कि आज इलाज कराने के लिए बाहर से आये हुए रोगियों की संख्या हमेशा से कम थी और आधे घंटे मे उन्हे छुट्टी मिल गयी। इसलिए वह अस्पताल में पड़े हुए रोगियों को देखने के लिए वार्ड में गये। उन्होंने अनुभव किया कि पूरे वार्ड पर एक गम्भीर वातावरण छाया हुआ है। गौरी और मिस यंग के बारे मे तो वह पहले से ही जानते थे कि उनका मुँह चढ़ा हुआ होगा, लेकिन इस बात पर उन्हे आश्चर्य हो रहा था कि सब रोगी इस तरह चुप क्यों थे; कुछ लोगों का चुप रहना तो समझ में आ सकता था कि सम्भव है, उन्होंने पिछली रात की घटना देखी हो। लेकिन जब वह प्राइवेट कमरों मे गये तो उन्हे मालूम हुआ कि गौरी के कमरेवाली घटना का प्रभाव और भी भयानक हुआ है, क्योंकि उन चार रोगियों के रिश्तेदार, जिन्हे विशेष सुविधाएँ प्राप्त थी, अपने सगे-सम्बन्धी रोगियों का सामान बाँधकर वहाँ से चल देने को तैयार थे। जब उन्होंने एक लड़की के ससुर से, जिसके पेट की रसौली का आपरेशन हुआ था, जाने का कारण पूछा तो वह सज्जन, जो किसी बीमा कम्पनी के डायरेक्टर थे, बड़ी विनम्रता से मुस्कराये और साफ झूठ बोल गये कि प्राइवेट वार्ड मे रोगी को रखने का खर्चा बहुत आता है और इतना खर्च बरदाश्त करने की उनकी हैसियत नहीं है। एक दूसरी छोटी लड़की के रिश्तेदार ने, जिसे पीलिया था, ज्यादा ईमानदारी के साथ कह दिया कि उनकी साली, यानी लड़की की माँ ने कहा था कि लड़की को फौरन वहाँ से हटा लिया जाये क्योंकि वह अस्पताल बहुत संदेहजनक किस्म की जगह समझा जाता था। एक अधेड़ उम्र की फैशनेबुल महिला ने,

जिनकी बेटी के चार दिन पहले बचा हुआ था, बिल्कुल ही साफ-साफ कह दिया और कर्नल महेन्द्रा को नोटिस दे दिया कि उनकी बेटी वह अस्पताल छोडकर डाक्टर जगन्नाथ के क्लीनिक में जा रही है, क्योंकि उन्हें कल रात की गौरी के कमरेवाली घटना के बाद पक्का यकीन हो गया था कि वहाँ भगायी हुई औरतें लाकर रखी जाती थीं और उन्हे वेश्यावृत्ति के लिए चकलों मे भेज दिया जाता था।

कर्नल महेन्द्रा भगवान नीलकठ की तरह इन तमाम बातों का जहर पी गये; उनके गले पर भी एक नीला-सा रंग दौड़ गया, उनके चेहरे का रंग भी कुछ काला पड़ गया। लेकिन पूरे आत्म-संयम के साथ, जो उनके शान्त स्वभाव की सर्वोच्च विशेषता थी, वह अब अपनी छोटी हिलमैन-मिक्स मोटर पर शहर में रोगियों को देखने जाने के लिए तैयार हुए तो मिस यंग ने सर्जरी के पास उन्हे रोककर आँखों में आँसू भरे हुए उनसे कुछ देर बात करने की इजाजत माँगी। कर्नल महेन्द्रा एक खिसियाई हुई हँसी हँस दिये और मिस यंग से बोले कि शहर मे रोगियों को देखने के बाद वह नर्सिंग-होम लौटकर आयेंगे, तब उसकी बात सुनेंगे।

रोगियों के देखने के दौरान में उन्होंने अनुभव किया कि वह तो कम बोलने के आदी थे ही, पर उन रोगियों के रिश्तेदार तो बिलकुल ही चुप्पी साधे हुए थे और उन्हे पूरा यकीन हो गया कि नर्सिंग-होम वाली मेजर बातरा की हरकत की खबर जरूर उस छोटे से शहर भर में फैल गयी है और इसका नतीजा उन दोनों के लिए बहुत बुरा होगा। पर बाजार मे लोग उनके साथ काफी इज्जत के साथ पेश आये, पास से गुजरते वक्त उन्हे सलाम किया। उन्होंने सोचा कि बातरा साहब ने जिन 'सुधारों' का प्रस्ताव रखा है, उनको पूरा कर देने के बाद परिस्थिति ठीक हो जायेगी।

इसलिए जब वह नर्सिंग-होम में लौटकर आये और मिस यंग ने आकर उनके सामने अपना इस्तीफा रख दिया तो वह बिल्कुल शान्त भाव से बैठे रहे, न उन्होंने उसका विरोध किया, न उसे समझाने-बुझाने

का प्रयत्न ही किया, बल्कि उसका इस्तीफा लेकर वह लिफाफा खोलनेवाली प्लास्टिक की छुरी से खेलते रहे। मिस यंग की ईमानदारी के आगे उनका सर लज्जा से झुक गया, जबान पर ताला पड़ गया। फिर उन्होंने शरमाते हुए कनखियों से उसे देखा और उसकी आँखों में आँसू देखकर उन्हें परिस्थिति की शोचनीयता का अभास हुआ। उन्होंने बड़ा प्रयत्न करके अपनी गंभीर मुद्रा भंग करते हुए सहानुभूति प्रदर्शित करने की कोशिश की, पर स्वयं उनकी आँखें सजल हो गयी।

"मिस यंग, मालूम नही मैंने क्या किया है, लेकिन अपने मित्र और साझेदार पर मेरा कोई बस नहीं चलता।...जो कुछ हुआ है उसका मुझे बहुत अफसोस है। शायद इसका कारण और भी गहरा है। डाक्टर-बातरा अभी जवान हैं और मेरा ख्याल है कि अपनी बीवी के साथ वह सुखी नही हैं। तुम तो औरत हो और इस को समझ भी सकती हो कि एक उम्र मे आदमी के लिए वासनातृप्ति ही सब-कुछ बन जाती है। और यदि इसकी तृप्ति न हो तो मनुष्य अश्लीलता की ओर बढ़ जाता है..."

"कर्नल साहब, इसीलिए मेरे मजहब मे इसे पाप समझा जाता है कि..."

"मिस यग, मजहब से मुझे कोई मतलब नही। मै तो इसकी बात कर रहा हूँ कि लोगों को क्या हो जाता है! शायद डाक्टर बातरा भी उसी निराशा के शिकार हैं जिसमें हमारे अधिकांश देशवासी गिरफ्तार हैं, जिनकी शादियाँ उनके माँ-बाप तै करा देते हैं और चूँकि वह अपनी बीवी से संतुष्ट नही हैं इसलिए वह दूसरी बातों मे संतोष ढूँढ़ते हैं। संभव है उन्होंने तुम्हे कष्ट पहुँचाया हो, पर वह तरस खाने के लायक है..."

कर्नल महेन्द्रा के शरीर में, जो बाहर से देखने में पत्थर की तरह कठोर था, कोमलता की धारा प्रवाहित हो रही थी, जिसके कारण बोलते समय उनकी जबान लड़खड़ा रही थी।

मिस यंग पहले-पहल जब इस अस्पताल मे आयी थी, उस समय डाक्टर बातरा ने उसका जो तिरस्कार किया था, उसके लिए वह उन्हे कभी माफ नहीं कर सकी थीं। और अब प्रति दिन के तिरस्कार के साथ उसके मुँह पर तमाचा मारकर तो उन्होंने जले पर नमक छिड़क दिया था और वह इतना बुरा मान गयी थी कि उसकी आत्मा बिलकुल अंधी हो गयी थी।

"डाक्टर साहब, आप नही जानते, उन्होंने मेरे साथ कैसी बेरहमी का बरताव किया है।" मिस यंग ने कहा, "वह मुझे बिल्कुल कचरा समझते हैं और मेरे मजहब पर हँसते है और उसका मजाक उड़ाते हैं।... रोज मेरे साथ झगड़ा करते हैं।...इतने दिन तक कभी मैंने आपसे शिकायत नही की लेकिन..." और इतना कहकर वह फूट-फूटकर रोने लगी।

कर्नल महेन्द्रा ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "मुझे यकीन है कि वह अपनी इस हरकत पर जरूर शर्मिन्दा होंगे। हर आदमी की आत्मा होती है। और इतना बुरा तो कोई भी नही होता कि उसमें कुछ अच्छाई हो ही नही..."

"डाक्टर साहब, मेरे मजहब में इससे बिल्कुल ही अलग बात सिखायी जाती है! इसके बदले वह नरक की आग मे झुलसेगा!..."

यह सुनकर कर्नल महेन्द्रा के चेहरे पर मुस्कराहट दौड़ गयी, जिसे उन्होंने फौरन रोकने का प्रयत्न किया।

"डाक्टर साहब हँसिए नही!" उसने कहा, "उसके ऐसे पापियो को तो नरक की आग मे ही जलना नसीब होगा।"

"मैं बदला लेने में विश्वास नही करता," कर्नल महेन्द्रा ने बेचैनी से अपनी कुर्सी पर पहलू बदलकर बैठते हुए कहा, क्योंकि मिस यंग जिन नैतिक सिद्धान्तों मे विश्वास करती थी वे किसी प्रकार भी उनकी समझ में नहीं आते थे। और वह सर्जरी के अपेक्षाकृत अन्धकारमय वातावरण में गौरी की समस्या को हल करने का कोई रास्ता ढूँढ़ रहे थे। उन्होंने

मन-ही-मन गौरी को मिस यंग के साथ लुधियाना के मिशन मे भेज देने का फैसला कर लिया था, ताकि गौरी का कोई उचित ठिकाना हो जाये। लेकिन इसका अनिवार्य परिणाम यह होता कि गौरी को कैथोलिक ईसाई मत का अनुयायी बना लिया जाता और इस दशा में उनकी उदार आत्मा इस बात के लिए तैयार नही थी कि गौरी एक ऐसे धर्म के प्रतीकों और रीति-रस्मों का शिकार होने के लिए छोड़ दी जाये, जिन्हे वह शायद समझ भी न सके और जिन्हें वह स्वयं भी बहुत कठोर समझते थे।...

"अच्छा, मिस यंग," उन्होंने अपनी बात जारी रखते हुए कहा, "मैं उम्मीद करता हूँ कि तुम्हें फौरन कोई अच्छा काम मिल जायेगा। तुम बहुत होशियार नर्स हो और मुझे यकीन है कि लोग तुम्हारे काम से खुश रहेंगे।...मैं तुम्हे पिछले महीने की तनख्वाह के अलावा एक महीने की तनख्वाह और दूँगा और तुम्हे एक सर्टीफिकेट भिजवा दूँगा..." यह कहकर वह उठ खड़े हुए और उसे विदा करने के लिए अपना हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिया।

"तो डाक्टर साहब, मैं उस लड़की को अपने साथ लेती जाऊँ?" मिस यंग ने कर्नल महेन्द्रा की तरफ ढीलेपन से अपना हाथ बढ़ाते हुए पूछा, "शायद मै उसे बचा सकूँ।"

कर्नल महेन्द्रा उसकी इस बात का उत्तर देने से पहले बड़ी देर तक सोचते रहे फिर उन्होंने सख्ती से उसकी तरफ देखकर कहा :

"अगर तुम मुझसे वादा करो कि जब तक वह खुद अपनी मर्जी से अपना धर्म बदलना न चाहे तब तक तुम उसे धर्म बदलने पर मजबूर नहीं करोगी।"

"कर्नल साहब, क्या आप को इस बात का अन्दाज है कि अगर वह मेरे साथ नहीं गयी तो वह कितने बड़े खतरे में फँसी रहेगी!" मिस-यंग ने प्रतिरोध करते हुए कहा, "क्या आप जानते हैं कि उसके पेट मे बच्चा है? और हमें यह भी नही मालूम कि उस बच्चे का बाप कौन है। हमारा मिशन उसकी देखभाल करेगा और उसे नर्स का काम सिखायेगा

और उसके बच्चे को अनाथाश्रम भेज दिया जायेगा।"

"हाँ, लेकिन उसकी आत्मा की कुछ जिम्मेदारी मुझ पर भी है," कर्नल महेन्द्रा ने कहा, "क्योंकि उसे मैं यहाँ लाया था। मुझे उससे पूछना पड़ेगा कि वह क्या चाहती है!"

"वह बाहर कमरे मे है, जहाँ रोगी बैठकर प्रतीक्षा करते है। मैं उसे बुलाये लाती हूँ।" इतना कहकर मिस यंग ने चिक से बाहर सर निकालकर पुकारा, "गौरी, गौरी...गौरी!"

गौरी ने सर्जरी के शीतल अंधकार में मुँह लटकाये हुए प्रवेश किया। उसके चेहरे पर एक ऐसी मुर्दनी छायी हुई थी, जिससे पता चलता था कि उसे इस बात का पूरा विश्वास है कि वह पापों की गठरी है। वह सहमी और सिकुड़ी हुई खड़ी थी, उसे कुछ भी मालूम नही था कि अब उसका भाग्य उसे कहाँ ले जायेगा, यद्यपि मिस यंग के दबाव में आकर, जिन्होंने उसके साथ बड़ा नेकी का बरताव किया था, उसने उस नर्स के साथ लुधियाना के बड़े मिशन मे जाने के सुझाव पर सर हिलाकर अपनी सहमति प्रकट कर दी थी।

कर्नल महेन्द्रा उसकी दुविधा को समझ गये थे। अपनी नजरें ऊपर उठाये बिना उन्होंने पहाड़ी बोली मे कहना आरभ किया :

"हमारी तरफ एक कहावत मशहूर है ; आदमी अपने पड़ोसियों की मर्जी बिना चैन से नही रह सकता। यह हमारा दुर्भाग्य है कि यहाँ सारा शहर हमारा दुश्मन मालूम होता है। इसमें कुछ तो हमारा अपना कसूर है और कुछ लोग हमसे जलते भी हैं। इस अस्पताल का तो बस अब चल-चलाव है, इसमें तुम्हारा कुछ दोष नही है। तुम्हारे आने से पहले भी मुझे मालूम था कि कुछ गड़बड़ चल रही है, और उसका कारण था मेरे साझेदार की चंचलता।...जो होना था वह हो गया,.अब मैं तुमसे यह जानना चाहता हूँ कि तुम क्या करना चाहती हो?"

गौरी के दिमाग में यह बात अच्छी तरह बैठ गयी थी कि उसके आने के कारण ही अस्पताल बंद हो रहा था, इसलिए वह अपने

उपकारक को जवाब देते झिझक रही थी। वह कमरे में बिछे हुए कालीन की धारियों को देखती रही; वह जिधर भी देखती थी, उसे नयी आशंकाये और विपदायें ही दिखायी देती थी। उसके दिल में यह बात बैठ गयी थी कि वह अपनी नियति के वश में थी, जो उसके जीवन के साथ खिलवाड़ कर रही थी और उसके पिछले कुकर्मों के बदले उसके ऊपर मुसीबतों के पहाड़ ढा रही थी। यह विचार उसके हृदय पर पत्थर की तरह रखा हुआ था।

डर से इस प्रकार गौरी के चुप रहने के कारण का अंदाजा होते ही कर्नल महेन्द्रा के माथे पर बल पड़ गये। उन्होने उसे घूर कर देखते हुए कहा :

"भलीमानस, अगर तुमने अभी इस बात का फैसला न किया कि तुम सचमुच क्या चाहती हो तो तुम अपने लिए बेकार की मुसीबत मोल लोगी।"

"मैं अपने पति के पास वापस जाना चाहती हूँ," उसने इस प्रकार कहा मानो कोई मछली कॉटे में फँस गयी हो। उसे इस बात पर आश्चर्य हो रहा था कि उसने यह बात इतने खुलकर कैसे कह दी थी, पर एक बार भारतीय नारी की परम्परागत लज्जा को त्याग देने के बाद उसके चेहरे पर एक विचित्र-सा गंभीर भाव आ गया और वह साफ-साफ बोलने लगी, "मैं गर्भ से हूँ और यह बच्चा मेरे पति का है, इसलिए मैं उसके पास वापस जाना चाहती हूँ।"

कर्नल महेन्द्रा ने देखा कि उसके चेहरे पर से मुर्दनी गायब हो गयी है और उसके स्थान पर घबराहट के कारण लाली-सी छा गयी। कर्नल-साहब उसके पति के भाग्य को सराह रहे थे और भली-भाँति समझ रहे थे कि मेजर बातरा उस पर इतनी बुरी तरह लट्टू क्यों हो गये थे। यौवन से भरपूर इस पहाड़ी औरत की जवानी के मधुर रस का पान करने को किसका जी न ललचा उठता ?...सचमुच, अपने शरीर को पापों का स्रोत समझने के लिए उसे कैथोलिक मिशन में डाल देना उसके साथ

बहुत अन्याय करना था।

"मिस यंग," उन्होंने नर्स की तरफ मुड़ते हुए कहा, "लड़की ने साफ-साफ बता दिया है कि वह कहाँ जाना चाहती है। इसलिए मैं उसे तुम्हारे साथ नही जाने दे सकता। मैं उसे अपने नौकर धनीराम या किसी और के साथ उसके पति के गॉव भिजवा दूँगा।"

"मैं क्या कह सकती हूँ, सिवाय इसके कि यह बदनसीब मेरे अहसानों को भूल गयी है!" मिस यंग ने निराशा के क्रोध से लाल होकर कहा। उसे इस बात का गुस्सा था कि अपने धर्मका एक अनुयायी और बनाने का मौका उसके हाथ से निकल गया था यद्यपि उसने गौरी को चेतावनी दी थी कि उसका पापी शरीर नरक की आग मे जलेगा। मिस यंग तेजी से अपनी एड़ी पर घूमी और नरक के देवताओं की कसमे दिलाती हुई कमरे से बाहर चली गयी।

"अच्छा, तुम जाकर तैयार हो जाओ, मै धनीराम के साथ तुम्हे तुम्हारे घर भिजवा दूँगा।"

गौरी कुछ हिचकिचाई।

"क्या सोच रही हो?" डाक्टर साहब ने पूछा।

"अगर कोई ओरत मेरे साथ जाती तो मेरे पति ज्यादा आसानी मे मुझे स्वीकार कर लेते।" वह बोली।

"हमारे अस्पताल मे एक बुढ़िया दाई है—भागन। मै कोशिश करूँगा कि वह तुम्हारे साथ चली जाये। इस बीच मे तुम यहॉ के चपरासी के साथ मेरे घर चली जाओ, वहॉ धनीराम तुम्हारे खाने-पीने का इंतजाम कर देगा, तब तक हम तुम्हे भेजने का इंतजाम किये देते हैं।"

यह फैसला हो जाने के बाद वह एक कराह के साथ अपनी कुर्सी से उठे और अपनी उस प्रिय सर्जरी पर एक हसरत-भरी नजर डाली, जिसे उन्होंने एक साफ-सुथरी प्रकाशमय जगह बना दिया था, और एक गहरी-थकी हुई आह भरकर उन्होंने गौरी को वहॉ से चले जाने का इशारा किया।

कुछ काम करने के लिए, ऐसा जीवन व्यतीत करने के लिए, जिसका कोई उद्देश्य हो, मनुष्य कितनी मुसीबते उठाता है और वह सारा काम उसके चारों तरफ के लोगों की निराशा के फलस्वरूप पैदा होनेवाली ईर्ष्या, ओछेपन और नौदौलतों की अश्लील मनोवृत्ति के कारण कितनी जल्दी नष्ट हो जाता है ! यहाँ जीवन का राज कब होगा। नर्सिग-होम के इस शोचनीय अन्त पर लज्जा और क्रोध के कारण उनका चेहरा तमतमा आया था और वह बिल्कुल पागल हो उठे थे। उनका जी चाहता था कि वह अपने हाथों से सामने पड़ी हुई मेज को तोड़कर चकनाचूर कर दें...

फिर वह एक ऐसा अस्पताल बनवाने के स्वप्न के बारे मे सोचने लगे जहाँ हर रोगी को रहने के लिए मुफ्त जगह दी जाये। ऐसा अस्पताल बनवाने की उनकी इच्छा बहुत दिनो से थी। शायद इस अस्पताल के टूट जाने से उन्हे अपनी डाक्टरी से बचाये हुए पैसे से इस स्वप्न को पूरा करने का मौका मिले ! पर सहसा उनके दिमाग मे गौरी की वह चेतावनी आयी जो उसने सेठ ज्वालाप्रसाद के घर पर दी थी—"आशा और इच्छा-पूर्ति की उम्मीद मूर्खों का स्वप्न होता है।"

फिर भी वह जानते थे कि वह जीवन भर यह मूर्खता करते रहेगे। ...उन्होंने अपनी कलाई पर बँधी हुई घड़ी को देखा; जिन्दगी मे पहली बार उन्हे खाना खाने के लिए जाने में एक घटे की देर हो चुकी थी। वह जल्दी-जल्दी बाहर निकल गये। उन्होंने पहले सोचा था कि वह ऊपर जाकर अपने साझेदार मेजर बातरा से भी मिलेगे पर वह गये नही। उन्होंने सोचा कि नौकर उनकी प्रतीक्षा मे बैठा होगा।

●●१५

तीसरे पहर कर्नल महेन्द्रा अपने बरामदे में, अस्पताल जाने के लिए तैयार बैठे थे; इतने में उनका नौकर धनीराम भागन दाई को ढूँढ़कर

उनके पास ले आया।

"देखो भागन," उन्होंने अपनी कलाई पर बँधी हुई घड़ी को देखते हुए कहा, "मैं तुम्हें इस लड़की गौरी के साथ भेजना चाहता हूँ। तुम इसे ले जाकर पिपलाँखुर्द में इसके पति के पास छोड़ आओ।"

"हुजूर, जो आपका हुकुम!" भागन ने अपना झुर्रियोंदार खुर्राट चेहरा ऊपर उठाये बिना ही उत्तर दिया। उसकी नीचे झुकी हुई बाज की चोंच जैसी नाक और चौड़ी ठोड़ी को देखने से ऐसा मालूम होता था कि मानो वह धरती से बुद्धि प्राप्त कर रही हो।

कर्नल महेन्द्रा समझ गये कि वह इस समय किसी और विचार में डूबी हुई है। उन्होंने उसे घूरकर देखा मानो अपनी स्पष्ट बातों से उसपर जादू करना चाहते हों। पर वह एक अजीब नाटकीय ढंग से अपनी नजरें फेरे खड़ी थी, जैसे उसे किसी बात में दिलचस्पी ही न हो और वह अपनी मनोभावनाओं का निरीक्षण कर रही हो। कर्नल महेन्द्रा ने अपनी पैनी दृष्टि से उसके रवैये में एक विचित्र भाव देखा, जैसे वह कोई बात छिपा रही हो और उससे सीधे-सीधे पूछा :

"क्या बात है, भागन?"

"कुछ नहीं, हुजूर।...बस मैं यह सोच रही थी कि किसी प्रकार आपका और डाक्टर बातरा का यह सम्बन्ध टूटने न पाये।...आपके इसी अस्पताल से तो मुझे रोटी मिलती है।..."

"पिछले कुछ दिनों में जो कुछ हुआ है उसे देखकर तो मुझे यकीन नहीं है कि यह अस्पताल अब चल पायेगा! मगर जहाँ तक मेरा सम्बन्ध है, मैं तो ईमानदारी को और लगन के साथ काम करने को ही सबसे बड़ा गुण समझता हूँ। अब मुझे काम पर जाना है। तुम मेरा यह काम कर देना। आल राइट!..." उन्होंने यह आखिरी शब्द अंग्रेजी में इसलिए कहा था कि ऐसे मौकों पर पंजाबी में बोलते हुए कुछ अटपटा-सा लगता था। जब वह चलने को तैयार हुए तो सहसा उन्हें गौरी का ध्यान आया, उन्होंने पुकार कर कहा, "धनीराम, गौरी कहाँ है?"

"हुजूर, यहाँ बावर्चीखाने मे है।"

कर्नल महेन्द्रा बावर्चीखाने की तरफ चल दिये।

गौरी बाहर आयी; उसने माथे पर दुपट्टा सरकाकर अपना मुँह आधा ढक रखा था। उसके चेहरे पर उत्सुकता की लाली थी, पर उसकी आँखें न जाने क्यों नीचे झुकी हुई थी।

डाक्टर साहब ने आशीष देने के लिए उसके सर पर हाथ रखा।

इस स्पर्श से उसका धैर्य टूट गया, वह उनके पैरो पर गिर पड़ी और उस व्यक्ति के सामने हाथ जोड़कर आराधना के भाव से बैठ गयी जो उसे न्याय और दया का देवता मालूम हो रहा था।

साधारणतया, कर्नल महेन्द्रा इस तरह सामने घुटने टेकने को बहुत तुच्छता का व्यवहार समझते, पर इस समय वह कुछ न बोले। फिर भी अपने इस बुद्धिसंगत विश्वास के अधीन कि किसी की उपासना नहीं करनी चाहिए, उन्होंने अपनी मुद्रा कठोर बना ली और दया की उस ज्वाला को शान्त कर दिया जो धीरे-धीरे उनकी चेतना पर छायी जा रही थी, ताकि वह कहीं भावों के प्रवाह मे न बह जाये। सहसा वह एड़ी के बल पीछे घूमे और प्रायः तिरस्कार की भावना के साथ अपना सर ऊपर उठाये हुए वहाँ से चल दिये। चलते-चलते अपने नौकर से कहते गये :

"अरे भाई धनीराम, इन लोगों के रास्ते भर के लिए काफी खाना और खर्च के लिए कुछ पैसे दे देना।"

"जी हुजूर!" नौकर ने कहा और ऐसे खड़ा हो गया जैसे कुछ और कहना चाहता हो।

बाहर निकलते समय उन्होंने फिर भागन को घूरकर देखा, पर उसकी भूरी आँखों से उनकी आँखें चार न हो सकी, क्योंकि कर्नल साहब की हल्के भूरे रग की पैनी आँखों को अपने ऊपर केन्द्रित देखकर भागन ने अपनी आँखें फेर ली थी।

"धनीराम, डाक्टर साहब से कह दो कि मै अपने पति के नाम एक

पोस्ट कार्ड लिखना चाहती हूँ कि आकर मुझे ले जाये।" गौरी ने कहा, "मैं समझती हूँ कि भागन को तकलीफ़ देना ठीक नहीं है, खासतौर पर इसलिए कि डाक्टर बातरा के घर की देखभाल करनेवाला कोई नहीं है।"

कर्नल महेन्द्रा चुपचाप खड़े यह समझने का प्रयत्न कर रहे थे कि उसका अभिप्राय क्या है? वह जानते थे कि भागन उनके साझेदार के घर बहुत जाती थी, इसीलिए शायद गौरी को उस पर सन्देह हो रहा था।

"अच्छा!" उन्होंने बहुत देर तक चुप रहने के बाद कहा, "भागन, शायद यही ज्यादा अच्छा होगा कि वह अपने पति को ख़त लिख दे कि वह आकर ले जाये। इसलिए तुम जाओ..."

"मगर डाक्टर साहब, मैं तो बड़ी खुशी से चली जाऊँगी।...मैं तो समझती हूँ कि इस लड़की को, जिसके कारन हमारा अस्पताल बन्द हुआ है, यहाँ से जल्दी चला जाना चाहिए...मैं इसे अभी पहुँचा आऊँगी।"

"हाँ, मगर मैंने अपना इरादा बदल दिया है," कर्नल महेन्द्रा ने कहा।

शहर के अधबने बाहरी भाग की कच्ची सड़क की सूखी घास पर कदम रखते समय वह यह सोचकर काँप उठे कि भागन के मन में कुछ खोट जरूर था। धनीराम क्या कहना चाहता था? गौरी ने उसके साथ जाने से क्यों साफ़ इन्कार कर दिया था?...या उनकी ये शंकाएँ बिल्कुल निराधार थीं? पिछले कुछ वर्षों में उनके देखते-देखते होशियारपुर का सारा जीवन छिन्न भिन्न हुआ जा रहा था पर वह अपनी उसी सधी हुई चाल से चलते जा रहे थे, और उन्होंने अनुभव किया कि सबसे अच्छा यही है कि आदमी सदाचार पर अडिग रहे और चिन्ता न करे। अगर लोगों ने सदाचार का रास्ता छोड़ दिया तो षड्यन्त्र, ईर्ष्या और भय की मनहूस छाया में हर चीज़ नष्ट हो जायेगी। उन्हें इस बात का अस्पष्ट-सा

आभास था कि उन्होंने पहले ही क़दम उठाकर भागन की चाल को बेकार कर दिया था। उस लड़की को डाक्टर बातरा के चंगुल से छुड़ाने के लिए वह जो करने जा रहे थे, वह उसके लिए सबसे अच्छा था, परन्तु हर पहलू को देखते हुए कुछ देर तक और रुक जाना ही अच्छा था, चाहे इसके कारण उन पर सारे शहर में कितना ही मिथ्यारोपण क्यों न किया जाय कि उन्होने अपने घर में एक जवान लड़की को रख छोड़ा है।...

हे

●●१

मुँह-अँधेरे पिपलाँकलाँ की तरफ जाते हुए पंछी को उतना ही रोमाच हो रहा था जितना कुछ माह पहले लाला बीरबल के टट्टू पर बारात में जाते समय हुआ था। अन्तर केवल यह था कि अब वह टट्टू पर सवार नही था, इसलिए वह सूरमाओं जैसी मुद्रा धारण न कर सकता था; इसके अतिरिक्त उसका हृदय तरह-तरह के संदेहों तथा आशंकाओं से भरा हुआ था। उसकी उत्सुकता में हर्ष की अपेक्षा घबराहट ज्यादा थी। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता गया, सास से मिलने का विचार मन में उठते ही उसके हाथ-पाँव फूलने लगे, क्योंकि वह जानता था कि अपनी पत्नी को मायके भेज देने के अक्षम्य अपराध के लिए वह उसे जीता नहीं छोड़ेगी और जब उसने सड़क के दोनों ओर, वर्षा में नहाये हुए हरे-भरे खेतों को देखा तो वह गुस्से में गौरी को घर से निकाल देने की अपनी मूर्खता पर पछताने लगा। इस समय उसे जितना पछतावा हो रहा था उतना तो वर्षा आरंभ होने के बाद से कभी भी नही हुआ था। उस मनहूस दिन, जब उसकी चाची केसरो ने उसके दिमाग मे यह बात डाल दी कि गौरी 'और भी कई लोगों से नजरे लड़ाती है' और 'वह मनहूस लड़की किसी अशुभ घड़ी में पैदा हुई थी,' उसके सर पर न जाने कौन-सा भूत सवार हो गया था कि उसने गौरी को इतनी बुरी तरह मारा था। अब उसे अपने किये पर अपने-आप से घृणा हो रही थी।...और गौरी के भोलेपन की याद आते ही वह उसके लिए तड़प उठा। यदि वह इस समय उसे मिल जाती तो वहीं उसे अपनी भुजाओं में कसकर अपनी वासनाओं की तृप्ति कर लेता।

"अब पछताये होत क्या..." उसने अपने मन को समझाने के लिए पुरानी कहावत ओठों मे बुदबुदाई और उमंगों के उन तारों को छोड़ दिया जो सदा उसके अन्तर्तम मे सोये पड़े रहते थे।

ससुराल पहुँचकर पंछी ने लक्ष्मी के दरवाजे की कुंडी खटखटायी और उत्तर की प्रतीक्षा करने लगा, पर कोई उत्तर न मिला। उसने एक एक बार फिर और जोर से कुंडी खटखटायी, पर अन्दर से कोई आवाज सुनाई न दी। इतने मे लक्ष्मी की गाय चन्दरी यह सोचकर रँभाई कि शायद अमरू मामा उसे चराने ले जाने के लिए आये है। पंछी ने धक्का देकर दरवाजा खोल दिया, पर उसे न तो ऑगन मे कोई दिखार्यी दिया और न चौके मे। उसने ठिठककर बड़ी भीरुता से गली मे नजर दौड़ायी। घरों की दीवारों पर से गिर-गिरकर जो मिट्टी इधर-उधर जमा हो गयी थी, वह अब भी उसी प्रकार पड़ी थो जैसी उसने अपने विवाह के समय देखी थी और गली की खुली हुई नाली इस मिट्टी से प्रायः बिलकुल पट गयी थी। कोई भी चीज नही बदली थी। पर लक्ष्मी और गौरी कहॉ चली गयी थी? अगर लक्ष्मी कही काम से गयी थी तो कम-से-कम गौरी को तो घर पर होना चाहिए था; और अगर गौरी जगल गयी थी तो लक्ष्मी को घर पर होना चाहिए था, यद्यपि आम तौर पर औरतें अँधेरा छँटने से पहले ही जगल हो आती है।...

उसने अंदर जाकर प्रतीक्षा करने का फैसला किया। वह तीर की तरह अंदर घुसा और दरवाजा बंद करके बरामदे में चौकी पर जाकर बैठ गया।

गाय लगातार ऐसे रँभा रही थी जैसे रखवाली करनेवाला कुत्ता चोर को देखकर भूँकता है। वहॉ गोबर तथा गोमूत्र के कारण जो फिसलन और कीचड़ हो गयी थी, उसमे वह बराबर पैर पटक रही थी। उसका छोटा-सा बछड़ा, जो कीचड़ और गोबर में सना हुआ बैठा था, सहसा अपने कमजोर पैरों पर उठकर खड़ा हो गया और घबराकर इधर-उधर देखने लगा।

"अरी भलीमानस, सबर कर...तुझे लेने ही आ रहा हूँ।" अमरू की आवाज़ सुनायी दी। ज़ाहिर था कि उसे गाय की बेचैनी का अदांजा हो गया था, पर वह समझ रहा था कि उसकी यह अधीरता इस कारण है कि वह उसे चराने ले जाने के लिए देर से आया था।

गौरी या लक्ष्मी से मिलने से पहले अमरू से मिलने का विचार आते ही पंछी का रंग पीला पड़ गया। जब पंछी को अपने चाचा के हाथों बड़ी मुसीबतें उठानी पड़ रही थी, उस समय गौरी ने उसे अपने मामा के अत्याचारों के बारे में बहुत-कुछ बताया था और ब्याह के मौके पर जब वह थोड़े समय के लिए वहाँ रहा था, तभी पंछी समझ गया था कि अमरू बदमाश किस्म का आदमी है; और उसने यह भी देखा था कि वह कितने निर्लज्ज किस्म का बदमाश था; उसे अपने बदमाश होने पर घमण्ड था और इसके फलस्वरूप उसमें एक अकड़ आ गयी थी।

कुछ देर तक वहाँ शान्ति रही क्योंकि अमरू के आश्वासन पर गाय ने रँभाना और पैर पटकना बन्द कर दिया था। पंछी भी कुछ निश्चिन्त होकर बैठ गया, पर चारों तरफ जो खालीपन था उसके कारण उसे कुछ उलझन-सी हो रही थी। उसकी सास और गौरी के मामा के घर के बीच-वाली दीवार में सूरज की तेज किरनें तीर की तरह चुभी जा रही थी, उसने अनुभव किया कि उसकी गरदन और सारा शरीर पसीने में नहाया हुआ है। उसने चारों तरफ नजर दौड़ाकर देखा कि कहीं कोई पंखा मिल जाये; बगल ही में चौके में उसे एक पंखा दिखायी दिया। पंखा उठाकर वह झलने लगा। वह गर्म उसाँसें ले रहा था और अपने बालों-भरे सीने को हवा देने के लिए उसने सदरी के बटन खोल लिये थे।

इस प्रकार बैठे-बैठे उसका हृदय एक विचित्र निराशा में डूबा जा रहा था। खाली घर के विचित्र वातावरण में उसका दम घुटा जा रहा था। वह बहुत झुँझलाया हुआ था, उसके सारे शरीर से पसीना बह रहा था। इतने में उसे बाहर दरवाजे पर किसी अजनबी की आहट सुनायी दी और वह दम साधकर प्रतीक्षा करने लगा।

सहसा दरवाजा खुला और भीमकाय अमरू भीतर आया. उसकी घनी मूँछों के सिरे ऐंठे हुए थे और बरामदे की तरफ देखते हुए उसकी चमकदार आँखों में एक दीवानों की-सी भयानक हँसी गूँज उठी।

"मै हूँ...पंछी !" नवयुवक ने अमरू के विस्मय को दूर करने के लिए कहा।

"हैं, कौन ?...पंछी तुम ?"

अमरू की विस्मय तथा भय की मिश्रित भावना शीघ्र ही गायब हो गयी और वह बौखलाकर अटक-अटक कर कुछ कहने का प्रयत्न करने लगा; उसका चेहरा अनायास ही लाल हो गया।

"आओ, आओ, आओ जी !...मुझे क्या मालूम था कि चँदरी इसलिए रँभा रही थी कि हमारे घर मे पिपलाँखुर्द का एक चोर घुस आया था। हः ! हः !...चोर तो हो ही तुम, हमारी बेटी को, हमारी आँखों की ज्योति को चुरा ले गये।...शायद लक्ष्मी दूध लेकर बाजार गयी है, आती ही होगी।" इतना कहकर वह गाय की तरफ मुड़ा जो अब बहुत जोर से रँभा रही थी और रस्सी तुड़ाने के प्रयत्न में चक्कर काट रही थी। "अच्छा, अच्छा, भलीमानस, मै आ रहा हूँ !..." अमरू गाय की तरफ बढ़ा पर स्पष्टतः अपने और अपने भनैज दामाद के बीच की खाई को पाटने की दृष्टि से उसने अपनी बात जारी रखी। वह जान-बूझकर इस ओर कोई ध्यान ही नही दे रहा था कि पंछी पर उसकी बातों का क्या प्रभाव हो रहा है : "बेटा, पानी तो बरसा ! हाँ, क्यों न हो, भगवान बड़ा दयालु है।...इस साल गरमी तो बला की पड़ी और सूखे के कारण तो हम बिल्कुल मर ही गये थे।...मगर ईश्वर की कृपा से, अब पानी बरस गया है !...सच ही कहा है—कभी सम्पदा कभी विपदा ! कुछ दिन में फसल कट जायेगी और हम लोग जन्माष्टमी मनाने की तैयारी करने लगेंगे। और अगर फसल अच्छी हो गयी तो इस बछड़े को होशियारपुर के बाजार में बेच आऊँगा।...अच्छा यह तो बताओ, हवलदार मोलाराम और तुम्हारी चाची केसरो का क्या हाल है ? सब

अच्छे तो हैं ?"

"हाँ, मामाजी !" पंछी ने बड़े आदर से कहा। वह अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से इस गरजते हुए दानव की उज्ज्वलवर्ण, तमतमायी हुई तथा सुन्दर आकृति देख रहा था। पंछी के स्वर मे आशा की झलक थी।

"अच्छा, मै तो जरा खेत की तरफ जाता हूँ, यह गाय चरने जाने के लिए बेताब हो रही है। लक्ष्मी अभी आकर तुम्हारे लिए लस्सी बना देगी...।" उसने गाय की रस्सी खोलते हुए कहा और अधीरता के साथ बड़ी फुर्ती से आँगन पार करके गली मे निकलते हुए उसने बड़े नाटकीय ढंग से, मुँह खोले हुए, फटी हुई आँखों से पीछे मुड़कर देखा और बड़े व्यंग्यात्मक भाव से मुस्कराते हुए बोला, "वाह ! यह गाय तो खेत जाने के लिए बहुत ही बेताब है। मालूम होता है वहाँ जो मवेशी आते हैं उनमे किसी से आशनाई हो गयी है इसकी ! क्यों मादर...!" गाय की उछल-कूद पर बनावटी भय की भावना से दोनो हाथ ऊपर उठाकर वह उसके पीछे चल दिया। बेचारा छोटा-सा बछड़ा अकेले छूट जाने पर उदास होकर रँभाने लगा।

पंछी लपककर उठा और अमरू से यह पूछने के लिए कि गौरी कहाँ है, उसके पीछे भागा, पर उसने अभी आधा आँगन ही पार किया था कि उसे सहसा याद आया कि दामाद होने के नाते उसे इतनी बेहयाई से ओर साफ-साफ अपनी बीवी के बारे में नहीं पूछना चाहिए। वह अमरू को हाथ उठाये गाय को हाँककर ले जाते हुए देखता रहा; वह गाय को आगे बढ़ाने के लिए और राहगीरों को सचेत करने के लिए 'तक-तक' करता जा रहा था।

पंछी ने धीरे से दरवाजा बन्द किया और बरामदे के उसी खाली-खाली से वातावरण मे लौट आया। पर एक क्षण की निस्तब्धता के बाद, जिसे आखिरकार उस दुखी बछड़े ने भंग किया, यह विचार पंछी पर भूत की तरह सवार हो गया कि अमरू ने गौरी के बारे में तो कुछ

कहा नहीं और शायद वह गौरी के बारे मे किसी बहुत ही भयानक खबर को छुपाने के लिए ही और बातें करता रहा था। क्या वह मर गयी ? उसकी अन्तरात्मा मे बौखलाहट की लहरें उठने लगी और उसका दिल जोरों से धड़कने लगा। वह अपराध की एक अस्पष्ट-सी भावना मे डूबा हुआ बैठा रहा। एक निःशब्द प्रार्थना उसके गले में आकर रुक गयी और उसकी स्मृति मे गौरी के शील-स्वभाव की प्रतिध्वनि गूँजने लगी। जब वह उसके साथ सोती थी और सहसा अपनी बाँहों मे उसे कसकर भींच लेने के लिए उससे अनुरोध करती तो उसमे कितनी मिठास होती थी। पंछी की त्योरियों पर बल थे और वह आँगन मे चारपाई पर पड़ती हुई धूप को देख रहा था। उसे ध्यान आया कि वहाँ दो के बजाय एक ही चारपाई क्यों थी, क्योंकि यह तो असंभव था कि इस गर्मी मे माँ बेटी एक ही चारपाई पर सोती हों। वह यह देखने के लिए उठा कि कोठरी की छत पर तो कोई चारपाई नहीं पड़ी है। छत पर चढ़ने के लिए बरामदे की बगल मे ही बाँस की एक सीढ़ी रखी थी। छत पर कुछ भी नहीं था। वह घबराया हुआ लौटा, उसका चेहरा खिचाव के कारण तमतमाया हुआ था, जिसे व्यक्त करने का उसे कोई मार्ग नही मिल रहा था। हारकर वह कमर पर हाथ रखे आँगन मे खड़ा हो गया। चारों तरफ धूप फैली हुई थी; उसकी समझ मे नही आ रहा था कि किधर जाये। इतनी देर तक दुबिधा में पड़े रहने के कारण वह शिथिल हो चला था और उसके चेहरे तथा गरदन पर पसीना आ गया था।

इससे पहले कि वह दुबारा अपने-आपमें खो जाता और नयी शंकाओं तथा कल्पनाओं में डूब जाता, उसकी सास लक्ष्मी दरवाजा खोलकर अन्दर आयी। उसके मुँह से, सहसा भय की एक चीख निकल गयी : "हाय !" लेकिन वह शीघ्र ही सँभल गयी और उसने अपना रुख बदल दिया, फिर भी उसके चेहरे पर जो लाली आ गयी थी, वह दूर न हो सकी। वह बोली :

"अरे तू !...तू कहाँ से आ गया ?"

"माँजी, पाँयलागी !" पंछी ने परम्परानुसार अपनी सास का अभिवादन करते हुए बुदबुदा कर कहा।

बुढ़िया कनखियों से उधर देखती हुई, जहाँ गाय बँधती थी, रसोई की तरफ चल दी। बछड़ा अपनी माँ के प्यार के लिए विह्वल होकर जोर-जोर से रँभा रहा था।

"मालूम होता है अमरू गाय को ले गया। तुम्हारी भेंट हुई थी उसमे ?"

"हाँ माँजी !" पंछी ने सम्मानपूर्वक कहा।

लक्ष्मी ने पीतल की खाली गगरी चौके मे रख दी और बान की मचिया पर बैठ गयी। उसने मिट्टी की हाँड़ी खोलकर देखी, जिसमे उसने रात दही जमाने के लिए दूध रखा था और उसे मथकर मक्खन और छाछ निकालने के लिए मथानी ढूँढ़ने लगी।

पंछी आँगन में चुपचाप खड़ा था; बुढ़िया ने अपने सामने रखे हुए बरतनों पर से नजर उठाकर उसे देखा और बोली :

"बैठ जाओ, बेटा। तुम खड़ों के देस से तो नही आये हो न ?..."

पंछी फिर जाकर उसी चौकी पर बैठ गया, जिस पर वह अब तक बैठा था।

थोड़ी देर तक दोनों चुप रहे पर शीघ्र ही दही मथने और बछड़े के रँभाने की आवाज से खामोशी टूटी।

पंछी ने कुछ कहने के लिए मुँह खोला ही था, लेकिन इससे पहले कि उसके मुँह से एक शब्द भी निकलता, लक्ष्मी ने उसे आश्वस्त करने के लिए कहा :

"मैं लस्सी बना रही हूँ। तुम्हे प्यास लगी होगी..."

पंछी ने सिर हिला दिया और आँखें उठाकर उसे इस प्रकार देखने लगा मानो यह समझने का प्रयत्न कर रहा हो कि उस बुढ़िया में कौन-सी ऐसी बात थी जिसने उसे निःशब्द कर दिया था। उसकी कठोर मुद्रा को देखने के अतिरिक्त वह और कुछ भी नहीं समझ सका, इसलिए

वह स्वय अपने हृदय की गहराइयों में डूबकर प्रश्न पूछने के लिए आवश्यक साहस बटोरने का प्रयत्न करने लगा, जिसे पूछने के लिए वह इतनी दूर आया था।

बुढ़िया उसका अभीष्ट समझ गयी और अमरू की ही तरह सच बात को छुपाने के लिए उसने एक धोखे की टट्टी खड़ी करने का निश्चय किया :

"बेटा, तुम नहीं जानते, माँ के कलेजे मे कितनी पीर होती है। तुम तो जानते ही हो कि रीत के अनुसार तुम्हे मुकलावे[1] से पहले गौरी को कुछ महीनों के लिए हमारे यहाँ भेज देना चाहिये था, उसके बाद हम फिर उसे तुम्हारे पास भेज देते। तुमने हमे खबर भी नही भेजी कि तुम्हारा और उसका हाल कैसा है। बस, अमरू की जबानी मुझे इतना मालूम हुआ था कि तुम अपने चाचा मोलाराम से अलग हो गये हो और रफीक कुम्हार के घर मे रहते हो।...मुसल्लों के साथ खाते तो नहीं हो ना..."

"माँ," पंछी ने उसकी बकवास को बीच में ही रोककर कहा, "मगर गौरी कहाँ है?...मैंने उसे यहाँ भेजा था।"

बुढ़िया ने कोई उत्तर नही दिया, पर अपने चेहरे पर बेफिक्री का भाव लाने का लाख प्रयत्न करने पर भी उसकी आँखे झपकने लगी।

उसे आँखें चुराये चुप बैठा देखकर पंछी समझ गया कि गौरी के साथ कोई बहुत बुरी बात हो गयी है क्योंकि लक्ष्मी का चेहरा लाल पड़ता जा रहा था।

"क्यों?" उसने थाह लेने के लिए पूछा, "बताती क्यों नहीं, वह कहाँ है?" उसके लिए अब बैठा रहना असम्भव था, इसलिए वह उठ पड़ा और बिल्कुल उसके सिर पर जा खड़ा हुआ।

"उसे तुमने मारा था, तुम्हे यह भी मालूम होना चाहिये कि ऐसी बदनसीब औरतों का क्या होता है!"

---

१. 'मुकलावा' पंजाबी में गौने को कहते हैं।

"हॉ !" उसने पागलों की तरह गरजकर कहा, "मैंने तो उसे केवल इसलिए मारा था कि मेरी चाची केसरो ने कहा था कि वह 'अभागी' है। मगर मैंने उससे यहाँ आने को कहा था और यह भी कह दिया था कि जब अच्छे दिन आयेंगे तो फिर बुला लूँगा।...अब, वह कहाँ है ?..." उसने इस आशा से कि बुढ़िया इस तरह रास्ते पर आ जायेगी, जान-बूझकर गौरी को घर से निकाल देने की बात स्वीकार कर ली थी। पर लक्ष्मी इतनी आसानी से विचलित होनेवाली नहीं थी।

"भगवान न करे, कहीं उसने अपने प्राण न ले लिये हों," बुढ़िया ने जान-बूझकर बात को टालते हुए कहा।

"मगर बताओ तो वह है कहॉ ?"

पंछी बुढ़िया को मतलब की बात पर लाना चाहता था, इसलिए उसने उसकी सारी तिकड़मों की जड़ काट देने के लिए ही यह बात कही थी।

"जा रे जा !" बुढ़िया ने डपट कर कहा, "पहले तो उसे मारकर घर से निकाल दिया, अब आया है मुझ पर रोब झाड़ने। तू क्या समझता है वह कहीं गयी है ?...हम और करते भी क्या, अमरू ने कहीं और उसका ब्याह कर दिया है।...हम यह तो करने से रहे..."

"हाय, ब्याह कर दिया !" पंछी ने भय तथा विस्मय से अपने हाथ ऊपर उठा दिये।

"कम-से-कम सेठजी ने यह तो कहा कि वह उसे चादर उढ़ाकर..."

"चादर उढ़ाकर !...लेकिन यह कैसे हो सकता है ! वह मेरी ब्याहता स्त्री है !"

"तुमने तो उसे निकाल दिया था !"

"लेकिन..."

"लेकिन क्या ? हम उसे कहाँ से खिलाते ?"

पंछी इस आरोप को सुनकर अवाक् रह गया। उसका सर चकराने लगा। उसने अपने-आप को सँभालने का प्रयत्न किया और तीर जैसी

तेज नजरों से बुढ़िया को घूरते हुए चिल्लाकर बोला, "यह क्या धोखा है ! तुम..."

बुढ़िया चुप थी और यद्यपि पंछी की भीमकाय आकृति की छाया में वह काँप रही थी, पर वह एक पहेली बनी बैठी रही।

पंछी एक तरफ से दूसरी तरफ डोल रहा था और अपने-आप को वश में रखने का प्रयत्न कर रहा था। वह एक दैत्य की तरह रसोई के पास खड़ा था; सत्य और अपने निरपराध होने की भावना उसके हृदय में जागृत हो गयी थी। क्रोध से उसका सारा शरीर काँप रहा था।

"वह इस वक्त है कहाँ ? मैं पूछता हूँ तुमने कहाँ उसका ब्याह किया है ?"

"मुझे नहीं मालूम," बुढ़िया ने उत्तर दिया, "होशियारपुर में कहीं हुआ है...अमरू को मालूम है..."

"इसीलिए वह मुझे चरका देकर चला गया। मैं अच्छी तरह जानता हूँ...तुम दोनों को ! अगर उसे कुछ हुआ होगा तो मैं तुम्हारी जान ले लूँगा !..."

"अरे जा जा, धमकाना किसी और को जाके ! अपनी खैर मना, तूने गौरी को जो मारा है उसकी अमरू ऐसी खबर लेगा कि सब भूल जायेगा।"

बुढ़िया ने अपने और अमरू के दुष्कर्मों का सारा बोझ जिस प्रकार उसके मत्थे मढ़ दिया था, उस पर पंछी को आश्चर्य हो रहा था। वह चक्कर में पड़ गया, उसका हृदय तड़प रहा था कि वह बुढ़िया गौरी का पता कभी नहीं बतायेगी, इसलिए उसने सोचा कि वह खुद अमरू से जाकर पूछेगा और अगर जरूरत पड़ी तो उससे मारपीट भी कर लेगा। वह नहीं चाहता था कि गुस्से में आकर वह उसे कहीं मार ही न डाले और फिर बाद में फाँसी पर लटकना पड़े।

"मैं खुद जाकर अमरू से मालूम कर लूँगा !" उसने चुनौती देते हुए कहा।

"अरे जा जा, भाड़ मे जा !" लक्ष्मी ने बात खत्म करते हुए कहा, "जा यहाँ से, मनहूस !"

●●२

जब वह गली से होकर खेतों की तरफ भागा, उस समय क्रोध, भय और बौखलाहट से भरा हुआ था। उसे ऐसा लग रहा था जैसे कोई उसके पेट को मथे डाल रहा है। जब उसके अन्दर की अशान्ति तेज होती तब वह रुक जाता, कुछ कदम धीरे-धीरे चलता; पर अमरू को जल्दी पकड़ने की उत्सुकता मे कि कही वह गॉव से निकल न भागे, वह फिर भागने लगता और कल्पना करने लगता कि वह उस बदमाश से लड़ रहा है और उसने उसे उसी तरह परास्त कर दिया है जैसे महाभारत के महायुद्ध मे भीमदेव ने जरासंध राक्षस को मार गिराया था। उसे इस बात पर कुछ आश्चर्य भी हुआ कि उसने अपनी तुलना भीमदेव से की थी, पर वह मन-ही-मन इस बात को अच्छी तरह समझता था कि उसे बल की आवश्यकता है और अपने भोलेपन मे वह सोच रहा था कि भीम का विचारमात्र कर लेने से उसमे वह दैवी शक्ति आ जायेगी जिसके सामने पाप हवा की तरह उड़ जाता है। अपनी चेतना की ऊपरी तहों मे, जहाँ किसान के प्रतिदिन के सघर्ष का अन्धकार अज्ञान के घनघोर बादलों की तरह छाया हुआ था, वह भगवान् को खोजने लगा और उसके मुँह से अनायास ही निकल गया : "हे ईश्वर !" पगडंडी आगे चलकर एक मैदान मे जा निकली, जो एक तरफ ढलान के रूप में नीचे जाकर नीची-नीची पहाड़ियों की छाया मे बहनेवाली एक छोटी-सी नदी पर खत्म हो गया था। पंछी की जान में कुँछ जान आयी, पर अब भी वह अनुभव कर रहा था कि वह पिपलॉकलॉ के इस विस्तृत पहाड़ी इलाके में एक अजनबी था।

इतने में उसने एक लड़के को देखा जो ढोरों को नदी की तरफ जाने से रोकने के लिए उनकी तरफ भागा जा रहा था। पंछी ने उसके पीछे भागते हुए पुकारकर कहा :

"ओ !"

गड़रिये के लड़के ने सोचा, हो-न-हो जिस आदमी ने उसे ठहरने को कहा है वह वही किसान होगा जिसके खेत ढोरों ने गॉव से बाहर आते समय रौंद डाले थे, इसलिए वह ढलान पर तेजी से भागता हुआ नदी के किनारे पहुँचा और पीछा करनेवाले के चंगुल से बचने के लिए पानी में उतर गया।

पंछी लड़के की परेशानी को समझ गया और नदी के किनारे खड़े होकर उसे विश्वास दिलाने लगा :

"अरे, मैं तुझे खा थोड़े ही जाऊँगा।...बस इतना बता दे कि तूने कही अमरू को तो नही देखा है !"

लड़का अभी तक भयभीत था और नदी मे अपने पॉव जमाने का प्रयत्न करते हुए वह निर्वाक् खड़ा पंछी को देखता रहा।

"बता दे, मैं तुझे मारने नही आया हूँ।"

"अमरू मेरे पास एक भैंस और गाय छोड़कर कही चला गया है। मुझे मालूम नहीं कहाँ गया है।"

"उसके ढोर कहाँ हैं?"

लड़के ने गले-गले तक नदी के पानी मे खड़े-खड़े ही लाठी उठाकर एक तरफ को इशारा कर दिया।

पंछी यह सोचते ही पागल हो उठा कि अमरू को ढूँढने में अब बड़ा वक्त लगेगा। सहसा उसे उस लड़के पर तरस आने लगा जिसे पीछा करके उसने भयभीत कर दिया था। उसने अपनी सदरी की जेब से एक पैसा निकाला और उसे पुकारकर बोला :

"आ, यह ले ले, चने खरीदकर खा लेना। मैं यहाँ पत्थर पर रखे जाता हूँ।"

वह यह सोचता हुआ वहाँ से चल पड़ा कि लड़के को पैसा देने का उसे फल मिलेगा। भक्ति की भावना की तरफ उसका यह झुकाव उसपर मक्कारी का आरोप लगा रहा था कि अबसे पहले उसने कभी न तो भगवान को याद किया था और न दान-पुण्य की ही बात सोची थी। ईश्वर और पुण्य का विचार आते ही उसे आदमसिंह की याद आयी, जो एकमात्र सच्चा धर्मात्मा आदमी था, जिसे वह जानता था। आदमसिंह उसके पिता का मित्र था और उसी ने गौरी के साथ उसका ब्याह पक्का कराया था। और इस गाँव में शायद वही एक ऐसा आदमी था जो गौरी को वापस लाने में उसकी सहायता कर सकता था। पंछी ने आदमसिंह के यहाँ जाने का फैसला किया।

दूसरों के पास अपनी बीवी को ढूँढ़ते हुए जाने और उनके सामने यह स्वीकार करने का अपमान उसे खाये जा रहा था कि उसने उसे मारकर घर से निकाल दिया था। एक क्षण के लिए वह मन-ही-मन गौरी को बहुत बुरा-भला कहने लगा। वह गाँव में घुसा और अनायास ही हीर-राँझा की वह पंक्तियाँ गुनगुनाने लगा जो उसकी वर्तमान दशा पर पूरी तरह चरितार्थ होती थीं :

इश्क़ तेरे ने हीरे नि हीरे
दुनिया विच मैंनूँ डा-डा खार कीता

●● ३

पंछी को अपने पिता के मित्र आदमसिंह का घर ढूँढ़ने में कोई कठिनाई नहीं हुई। उनका घर उसकी ससुराल के पास की एक गली में था। वह डरने लगा कि कहीं किसी ने उसे वहाँ जाते देख न लिया हो। वास्तव में उसे पूरा विश्वास था कि जिन बच्चों से उसने रास्ता पूछा था,

उन्होंने उसे जरूर पहचान लिया होगा कि वह गौरी का पति है और वे शायद जरूर लक्ष्मी को बता देंगे कि वह कहाँ है।

उसने आदमसिंह के और आस-पास के घरों की गिरती हुई दीवारों पर एक नजर डालते हुए दरवाजे की कुंडी खटखटायी। आदमसिंह के बारे मे यह बात सभी लोग जानते थे कि वह एक ईमानदार किसान था, इसीलिए अब वह अपने बाप-दादों की तरह पैसेवाला किसान नहीं रह गया था और समाज मे उसका पद काफी नीचा हो गया था।

अंदर किसी के नंगे पाँव भागकर आने की आहट सुनायी दी और एक नौजवान लड़की ने आकर दरवाजा खोला। पहले तो एक अजनबी को खड़ा देखकर उसके भोले-से चेहरे पर संकोच का भाव झलकने लगा, पर शीघ्र ही उसे पहचानकर वह चिल्लायी :

"पंछी भैया !"

एक स्त्री होने के नाते उसके प्रति परम्परागत सम्मान प्रकट करने के विचार से पंछी शरमाकर उसके पैरो की तरफ ही देखता रहा।

"बापू तो घर पर नही है, मगर आप अन्दर आ जाइए !...कब आये आप ?"

पंछी अन्दर चला गया। पारो एक सादी-सी सफेद धोती पहने थी और जब वह जल्दी से झपटकर रसोई की तरफ भागी, जहाँ वह दोपहर के खाने के लिए तरकारी काट रही थी, तो उसकी चोटी झूमकर लहरा गयी। पंछी पारो के सौन्दर्य को निहार रहा था। और जब पारो ने मुड़कर उसे बैठने के लिए एक चटाई दी और स्वयं अपनी उसी चौकी पर जाकर बैठ गयी, तो पंछी ने देखा कि उसे देखकर पारो के चेहरे पर खुशी के मारे जो लाली छा गयी थी, उसके नीचे उसके कौमार्य का आकर्षण भी झलक रहा था। अपने हृदय की गहराइयों मे वह उन ठठोलियों को याद करने लगा जो पारो ने ब्याह की रात को उसके साथ की थी और वह अपनी पत्नी के कोमल मुखड़े की तुलना पारो के हृष्ट-पुष्ट चेहरे से करने लगा और वह पारो के पक्ष मे झुक भी गया, यद्यपि साथ ही

उसने यह भी सोचा कि गौरी का शील-स्वभाव और भक्ति एक ऐसा अनुपम उपहार था जो बहुत कम लड़कियाँ ही दे सकती थी।

"मैं आपके लिए लस्सी बनाये देती हूँ। आप पिपलॉखुर्द से धूप में पैदल चलकर आये होंगे। आप सबेरे ही क्यों नही आ गये? और..." लेकिन अपनी बात पूरी करने से पहले ही वह एक काँसे के कटोरे में हाँडी में से लस्सी उँडेलने लगी।

पंछी बरबस उसे घूरे जा रहा था; उसे अपनी इस खोज पर आश्चर्य हो रहा था कि वही पारो, जिसे उसने अभी कुछ माह पहले एक लडकी के रूप में देखा था, अब एक युवती हो गयी थी। पारो के हाथ से लस्सी का कटोरा लेते समय उन दोनो की आँखे चार हुईं और पारो भी समझ गयी कि वह उसके रूप को सराह रहा था। इस आभास के कारण कि पंछी उसे नजरें गड़ाकर देख रहा है, वह अपनी लज्जा को शब्दों की आड़ से छुपाने का प्रयत्न करने लगी :

"बापू आते ही होंगे। वह खाना पकाने के लिए थोड़ा-सा मीठा तेल लाने दुकान तक गये है। मगर अब वह बूढ़े हो चले हैं इसलिए चाल कुछ धीमी हो गयी है। पर रसोई के लिए जितना तेल आता है उसका बहुत बड़ा हिस्सा अब भी वह अपनी मूँछों को पिला देते है।..." यह कहकर वह खिलखिला कर हँस पड़ी। पर पारो ने फौरन ही अपनी नजरें फेर ली कि कही उसके इस अल्हड़पन का फायदा उठाकर पछी भी बेतकल्लुफ न हो जाये।

पंछी लस्सी पीने लगा। एक घूँट पीने के बाद उसने पूछा :

"तुमने गौरी को देखा...कब मिली थीं उससे?"

यह सुनकर पारो ने अपना सिर हिला दिया और अपना मुँह कसकर बंद किये रही कि कही सिसकी न निकल जाये, पर वह पंछी की आँखों से आँखें नहीं मिला पा रही थी। थोड़ी देर बाद वह अपनी धोती में मुँह छुपाकर सिसक सिसक कर रोने लगी।

"पारो, रोओ नही," बड़ी नरमी से उसने कहा, "बस मुझे इतना

बता दो कि उसे क्या हुआ है ?"

फिर भी पारो अपना सिर हिलाती रही और रोती रही। फिर बड़ा प्रयत्न करके उसने अपना सर उठाकर केवल ये शब्द कहे, "सुना है कि उन लोगों ने गौरी को होशियारपुर में किसी के हाथ बेच दिया है।" इतना कहकर उसने घुटनो के बीच अपना सर छुपा लिया।

यह सुनते ही पंछी को ऐसा प्रतीत हुआ कि क्रोध से उसकी नसें फट जायेंगी। वह सोचने के लिए भी नहीं रुका। उठकर वहाँ से जाने ही को था कि पारो उसके पैरों पर गिर पड़ी, "आप न जाइए ! गुस्से में कहीं कोई ऐसी-वैसी बात न कर बैठियेगा।"

"मैं जाकर उस बुड़िया का गला घोंट दूँगा। और अमरू को तो मैं ऐसा मजा चखाऊँगा कि उम्र भर याद रखेगा।" पंछी ने गरजकर कहा, "बेहया, दलाल कही के ! झूठे ! मैं सारी दुनिया के सामने उनका मुँह काला कर दूँगा !..."

"भैया, मैं तुम्हें यह कुछ नही करने दूँगी !...जरा गुस्सा ठण्डा कर लो तब मैं तुम्हे जाने दूँगी।"

पारो नही चाहती थी कि वह लक्ष्मी और अमरू से बदला ले क्योकि वह डरती थी कि यह तो पता चल ही जायेगा कि गौरी के बारे मे पंछी को सारी बातें उसी से मालूम हुई होंगी और तब उन दोनो का सारा गुस्सा उसके पिता पर उतरेगा। और फिर उसका पिता भी उसी पर नाराज होगा कि उसने यह सारी बातें पंछी को क्यों बतायीं।

इसी समय आदमसिंह ने ऑगन मे प्रवेश किया। यह दृश्य देखकर उसका गर्वोन्नत सिर कुछ झुक गया और उसकी ऐंठी हुई सूरमाओं जैसी मूँछों की नोकें उसे मुँह चिढ़ाने लगी। वह रसोई मे गया और किसानों के सहज चातुर्य के कारण सारी परिस्थिति समझ गया, उसने पंछी के कंधे को धीरे से थपका और एक चौकी पर बैठ गया।

पारो शरमाकर अलग हट गयी। पंछी आदमसिह की तरफ मुड़ा और सर झुकाकर खड़ा हो गया। वह अपने गुस्से को रोके हुए था,

यद्यपि उसका शरीर एक ऐसी प्रबल शक्ति का केन्द्र बना हुआ था जो हर चीज को नष्ट कर सकती थी।

निस्तब्धता पूर्ववत् बनी रही। थोड़ी देर बाद आदमसिंह ने एक गहरी आह भरी।

"तो चाचाजी, क्या यह बात सच है कि उन लोगों ने गौरी को होशियारपुर मे किसी के हाथ बेच दिया है?" पंछी ने कटु भाव से पूछा।

आदमसिह ने गम्भीरतापूर्वक अपना सिर हिलाते हुए कुछ देर रुक कर यह कहावत सुनायी : मगर बेटा 'मनोबल ही सर्वोच्च गुण है।"

"चाचा, मेरे जले पर नमक न छिड़को ! किसी का घर जले और कोई तापे !..."

"बैठ जाओ बेटा, बैठ जाओ," आदमसिह ने कहना आरम्भ किया, "तुम मेरे बेटे के समान हो, इसीलिए मैने पारो का ब्याह तुमसे न करके गौरी से तुम्हारा ब्याह तै कराया। पारो तो तुम्हारी बहन है। यह तुम अच्छी तरह जानते हो।...पर तुम्हारा गुस्सा करना भी ठीक ही है। उन लोगों ने बिल्कुल कंजड़ों जैसी हरकत की है, दलालों जैसी।...मगर गुस्से में आकर अगर तुम उन्हें मार डालोगे तो होगा केवल यह कि जो दण्ड उन्हें मिलना चाहिए वह तुम्हे भुगतना पड़ेगा। अगर तुमने ऐसा किया तो मैं हमेशा अपने-आपको इस बात का अपराधी समझूँगा कि मैने एक जीती-जितायी बाजी को हरवा दिया।"

अपने पिता की बात सुनकर पारो को कुछ ढाढ़स बँधा, वह उठकर बैठ गयी और आदमसिंह के लिए लस्सी निकालने लगी।

पंछी भी अपने मन को शान्त करने के लिए बैठ गया और अपनी दहकती हुई आँखों से घूरता हुआ आदमसिह के बल को आँकने का प्रयत्न करने लगा। उसे शंका थी कि कही यह वयोवृद्ध सज्जन केवल अपनी कायरता के कारण ही धीरज धरने की बात न कर रहे हों। आदमसिंह की मुद्रा से इतना आत्मविश्वास झलकता था कि पंछी उसकी वास्तविक शक्ति का अनुमान न लगा सका।

"आपने मुझे बताया क्यों नहीं कि उन लोगों ने यह किया है ?" पंछी ने फिर पूछा।

"बेटा, हम लोगो को भी तभी मालूम हुआ जब उस लड़की को बेचा जा चुका था। और जब यह खबर फैली तो तुम्हे बताने के बजाय मैंने थानेदार गण्डासिह को रिपोर्ट लिखा दी थी। मैने सोचा था कि यह सूचना देकर तुम्हारे हृदय को आघात पहुँचाने के बजाय लड़की को वापस बुलाकर तुम्हारे पास भिजवा देने के लिए ज्यादा अच्छा होगा।... दुर्भाग्यवश पुलिस अमरू से डरती है और उन लोगों ने अभी तक कुछ किया नही है।"

"मै जाकर सीधे अमरू से ही इसका जवाब माँगूगा !" पंछी ने चिल्लाकर कहा, उसका हृदय उससे कह रहा था कि यदि उसने अपने मन को शान्त हो जाने दिया तो उसका क्रोध ठण्डा पड़ जायेगा और फिर कोमल शब्दो से अमरू कभी दबाव मे नही आयेगा।

आदमसिंह इस अदम्य दानव को लाचारी से देखता रहा। उसे और अधिक रोकने का उसका जी नहीं हो रहा था, फिर भी वह जानता था कि यदि पंछी और अमरू जैसे दो क्रोधियों की टक्कर हो गयी तो परिणाम बहुत बुरा होगा। उसने सोचने का प्रयत्न किया कि क्या जाये, पर चूँकि वह पंछी की कुछ भी सहायता न कर सकता था, इसलिए उसका साहस टूट गया। उसने हाथ बढ़ाकर पारो के हाथ से लस्सी से भरा हुआ काँसे का कटोरा ले लिया, लेकिन सहसा उसे यह भय हुआ कि इस झगड़े मे कही किसी का खून न हो जाये, इसलिए वह लस्सी का कटोरा रखकर पंछी के पीछे हो लिया। पारो भी जल्दी-जल्दी अपने पिता के पीछे चल दी।

●●४

अमरू के घर के बाहर छै-सात कदम की दूरी पर पंछी ने दो

आदमियों को चारपाई पर बैठे देखा।

"अमरू घर पर है ?" उसने पूछा।

"अगर अपनी जान प्यारी है तो सीधे अपने गॉव लौट जाओ।" उसमे से एक ने कहा। वह दुबला-पतला छरहरे बदन का आदमी था, जिसके नुकीली-सी दाढ़ी थी; वह लाठी से पंछी का रास्ता रोके खड़ा था।

"तुम कौन होते हो ?...हट जाओ मेरे रास्ते से !" पंछी ने अपने बायें हाथ से लाठी को हटाते हुए चिल्लाकर कहा।

ज्यादा कुछ कहे-सुने बिना, उस दाढ़ीवाले के साथी ने; जो एक तगड़ा-सा, घनी मूँछोवाला व्यक्ति था, पछी के मुँह पर एक थप्पड़ रसीद कर दिया और उस छोटे कदवाले दाढ़ीवाले ने लाठी उठाकर अधाधुन्ध वार करना शुरू कर दिया; लाठी पंछी के माथे से बिछलती हुई नीचे आ लगी।

अपनी चोट की परवाह किये बिना पंछी दाढ़ीवाले से गुथ गया और स्वयं उस पर वार करने के लिए उसकी लाठी छीनने का प्रयत्न करने लगा। इसी बीच में उस तगड़े आदमी ने उसके कई लाठियॉ जड़ दी।

"आओ, तुम लोगो की सारी पहलवानी निकाले देता हूँ !" पंछी चिल्लाया, "मै तुम दोनों के लिए काफी हूं !..."

लेकिन यह पंछी का भ्रम था क्योंकि ज्यों ही पंछी चीते की तरह दाढ़ीवाले पर झपटा, उस तगड़े आदमी ने उसे पीछे से पकड़ लिया।

"अरे ! अरे !" आदमसिह ने बीच-बचाव करने के लिए आगे बढ़ते हुए रुऑसी आवाज मे कहा, "अरे ऊधो ! क्या करते हो, छोड़ दो !"

शोर सुनकर औरतें और बच्चे गली में अपने घरों के दरवाजे पर आकर खड़े हो गये।

ऊधो को आदमसिह की सलाह की अपेक्षा अपने भुजबल पर अधिक

विश्वास था। उसने दाढ़ीवाले को पंछी की पकड़ से छुड़ाकर फौरन अलग कर लिया और फिर अपने सिर के ऊपर उठाकर उसे गिरे हुए मकान के खडहर में फेंक दिया।

"अरे!" आदमसिंह ने दाढ़ीवाले से कहा, "अगर तुम बाज नही आओगे तो कत्ल के जुर्म मे तुम्हे फाँसी हो जायेगी।"

"जा जा, अपने घर जा, अपनी माँ की उसमे!" दाढ़ीवाले ने गाली दी। उसी का नाम माधो था।

इस पर आदमसिंह जैसे सन्त आदमी को भी गुस्सा आ गया और वह लाल-लाल आँखें किये हुए आगे बढ़ा और माधो के मुँह पर एक भरपूर हाथ रसीद कर दिया।

इस पर माधो ने आदमसिंह को पकड़कर नाली मे गिरा दिया और उसकी पसलियों में घूँसे मारने लगा। आदमसिंह ने अपने भारी-भरकम शरीर की सहायता से माधो को उलट दिया और उसे ढकेलकर दीवार से सटा दिया। उसके राजपूती खून मे जोश आ गया था और वह माधो पर चढ़ा बैठा था।

पारो, जो अब तक वहाँ पहुँच चुकी थी, अपने पिता को मार खाते देखकर रोने लगी। वह दुहाई देती हुई इस गुत्थमगुत्था के बीच मे घुस गयी और रो-रोकर कहने लगी :

"बापू! बापू!"

पंछी ने देखा कि वह तगड़ा आदमी ऊधो, उसे गिराकर सीने पर चढ़ बैठना चाहता है।

पंछी ने बड़ी चालाकी से ऊधो को टँगरी मारकर गिरा दिया और उसके सीने पर चढ़ बैठा। फिर उसने उसका गला इतना कसकर दबोच लिया कि उसका दम घुटने लगा।

अमरू हाथ में नारियल की गुड़गुड़ी लिये हुए अपने घर के दरवाजे से बाहर निकला और अपने गुर्गों को मुसीबत में फँसा देखकर चिल्लाया :

"यह क्या हल्ला-गुल्ला मचा रखा है?"

पंछी झपटकर उठा और उसे ललकार कर बोला :

"मेरी बीवी को तूने बेच दिया है, उसे लौटा दे नहीं तो मैं तेरी जान ले लूँगा।"

"जबान सँभाल कर बात कर, हरामी !" अमरू ने गरजकर कहा और अपनी गुड़गुड़ी फेंककर उससे लड़ने के लिए आगे झपटा। यद्यपि अमरू धौंस-बट्टे से काम लेने का आदी था, पर वह कायर नहीं था; मूलतः उसने अपनी साख जमाने के लिए ही तो बदमाशी का रास्ता अपनाया था।

इस समय तक ऊधो उठ खड़ा हुआ था और अपने अपमान का बदला लेने के लिए कि उसे जमीन चटा दी गयी थी, उसने लाठी उठाकर पंछी पर भरपूर वार किया। लाठी बिछलती हुई पछी के सर पर पीछे की तरफ लगी; घाव में से खून बह निकला और पंछी चक्कर खाकर वहीं गिर पड़ा।

आदमसिंह माधो को छोड़कर पंछी की तरफ भागा और पारो ने गली में खड़ी औरतों से पानी लाने को कहा।

ऊधो और माधो को जिस काम के लिए पैसे दिये गये थे, उसे पूरा करके वे रफूचक्कर हो गये।

"अपनी औरत को मारकर घर से निकाल देने के बाद अगर वह यहाँ आकर हमे गाली देगा तो उसका यही नतीजा होगा", अमरू चिल्लाया और अपनी गुड़गुड़ी उठाकर पीने की कोशिश करने लगा।

"मगर वह तुम्हारा दमाद है।" भीड़ में खड़ी हुई किसी औरत ने कहा।

"हाँ री, हाय ! हाय ! जान पड़ता है उसे जान ही से मार दिया।"

"अरी नहीं ! हाय ! भगवान न करे कि मर गया हो !" लक्ष्मी ने अपने दमाद की तरफ भागते हुए कहा और उसके शरीर पर गिरकर फूट-फूटकर रोने लगी। इस दुर्घटना से वह सचमुच आतंकित मालूम हो रही थी। वह यह तो जानती थी कि अमरू ने पंछी की रोकथाम के

लिए कोई प्रबन्ध करने का फैसला किया था, पर वह यह नहीं जानती थी कि वह उसे पिटवा देगा। "आदमसिंह," वह पूछती रही, "मरा तो नहीं है ?"

"नहीं, बस बेहोश हो गया है, मगर वे गुण्डे..." आदमसिंह ने कहना आरम्भ किया पर वह इतना उत्तेजित था कि आगे कुछ न कह सका।

पारो एक गिलास में पानी ले आयी और लक्ष्मी ने गिलास उसके हाथ से लेकर पंछी के मुँह से लगा दिया।

पंछी ने आँखें खोल दीं, तब जाकर बुढ़िया की जान में कुछ जान आयी।

" पी लो, बेटा, पी लो !"

"मेरी बीवी मुझे लौटा दे !" पंछी ने चिल्लाने का प्रयत्न करते हुए बड़ा जोर लगाया, पर उसके ये शब्द बहुत ही क्षीण स्वर में निकले। उसने हाथ से बुढ़िया को एक तरफ ढकेल दिया।

"बेटा, सब्र करो, ज्यादा गुस्सा अच्छा नहीं !" आदमसिंह ने उसे समझाया।

"लाओ मुझे दो, मैं पानी पिला दूँगी," पारो ने लक्ष्मी के हाथ से गिलास छीन लिया और पंछी के शरीर पर झुककर गिलास उसके मुँह से लगा दिया। लक्ष्मी गिलास पंछी के मुँह के पास किये थी, पर उसे पानी नहीं पिला पा रही थी।

पंछी ने पारो को देखा और पानी पी लिया। वह अपने पिट जाने पर कुछ झेंप रहा था।

"चाचा आदमसिंह, पुलिस को बुलवाओ !" उसने अपनी आँखें खुली रखने का प्रयत्न करते हुए कहा, उसके सिर के घाव से खून अभी तक बह रहा था।

"हाय ! हाय !" पंछी के सिर के पास जमीन पर खून देखकर लक्ष्मी अपनी छाती और माथा पीट-पीटकर चिल्लाने लगी।

"सब्र करो, बेटा !" आदमसिंह ने कहा, "थोड़ा-सा पानी और पी लो।"

"अब बड़ी धर्मात्मा बन के रो रही है," पछी ने जलकर कहा, "लेकिन इसने और इसी के भाई ने मिलकर मेरी बीवी को बेचा है।... इसे मेरी आँखों के सामने से हटा ले जाओ...नहीं तो मैं इसे मार डालूँगा। मुझे फाँसी पर भी चढ़ा दिया जाये तो कोई परवाह नहीं .. मगर मैं इन दोनों को मार डालूँगा...इसे और उस सुअर अमरू को !...मुझे ज़रा उठने तो दो !" लेकिन वह उठ न सका।

"यह बेचारा मेरा दमाद है," लक्ष्मी ने सिपाहियों को आते देखकर गिड़गिड़ाकर कहा, "अचक्के मे इसे चोट लग गयी है !"

"बुढ़िया, तू चुप रह, हम सब पता लगा लेंगे। तू क्यों हाय-हाय कर रही है ?" गण्डासिंह ने कहा।

"ऊधो और माधो ने इसे मारा है," आदमसिंह ने सूचना दी।

"यह सब कुछ वहाँ थाने मे बताना !" गण्डासिंह ने रोब के साथ कहा।

"बापू सच कह रहे हैं," पारो बीच मे बोल उठी, "इन लोगों ने पंछी की बीवी को होशियारपुर मे किसी के हाथ बेच दिया है और यह यहाँ उसे ढूँढ़ने आया था। इन लोगों ने इसे गुण्डों से घिरवाकर पिटवाया, यह बच गया, नहीं तो मर ही जाता।...अब आप ही इन्साफ़ कीजिए। अमरू और उस बुढ़िया से पूछिए कि इन लोगों ने गौरी को कहाँ बेचा है !..."

"चुप रह, छिनाल !" अमरू अपने दरवाजे से चिल्लाया।

उस लड़की के भाषण की अविराम बौछार के आगे गण्डासिंह अवाक् रह गये।

"हाँ, हाँ !" भीड़ मे खड़ी हुई औरतो ने हामी भरी। "अरे देखो तो, कैसा अन्धेर है !...इस अमरू को तो देखो, उस लड़की को गाली दे रहा है !...उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे !"

"सिपाहियों, घायल को कन्धे पर उठाकर थाने ले चलो।... और आदमसिंह, तुम गवाही के लिए थाने चलो !" गण्डासिंह ने आज्ञा दी,

"और बुढ़िया तू और अमरू भी !"

"जा जा, अपने रास्ते जा ! मेरे खिलाफ कोई वारंट है तेरे पास !" अमरू ने उत्तर दिया, "मुझे कुछ नहीं मालूम इसके बारे में..."

"झूठे !" आदमसिंह ने चिल्लाकर कहा, "भगवान तुझे मौत दे ।"

"आओ, आओ चलो !" गण्डासिंह ने आदमसिंह और बुढ़िया लक्ष्मी को गली की तरफ ठेलते हुए कहा, "अगर इसके खिलाफ सबूत होगा तो मैं वारंट निकलवा दूँगा ! मगर लक्ष्मी की गवाही जरूरी है ।"

"लक्ष्मी मत जा तू थाने !" अमरू चिल्लाया, "हम लोगों को इस झगड़े से क्या लेना-देना ?"

बुढ़िया झिझककर खड़ी रह गयी ।

"वह यहाँ थी इसलिए उसे गवाही देनी पड़ेगी," सरदार गण्डासिंह ने कहा, "और गवाह तो तुम भी हो । सोच लो, खुशी-खुशी चले आओ, नही तो मुझे हथकड़ी डलवाकर बुलवाना पड़ेगा ।"

"जा जा, अपना काम कर जाके !" अमरू ने धृष्टता से कहा, "जा, ले आ हथकड़ी ! मगर वारंट भी साथ लाना !"

थानेदार साहब उस बदमाश की इस कानूनी बहस के सामने लाचार हो गये और बाकी लोगों को साथ लेकर वहाँ से चल दिये ।

आदमसिंह ने बेटी को धीरज दिलाते हुए कहा, "पारो, अब हमने अमरू से वैर मोल ले ही लिया है तो वह कुछ भी कर सकता है इसलिए तू घर जा ।"

●●५

थाने जाते हुए रास्ते भर बुढ़िया थानेदार साहब की मिन्नत-चिरौरी करती रही; वह बार-बार हाथ जोड़कर उनके सामने सामने माफी माँगती हुई आ खड़ी होती थी । बाजार में इस जुलूस का तमाशा देखने

के लिए लोग झुड बॉधकर जमा हो जाते थे। लोगों को एकत्रित देखकर बुढिया चुप हो जाती थी, पर ज्यों ही वह देखती थी कि कोई देख नहीं रहा है वह फिर अपनी वही रट शुरू कर देती थी—"थानेदारजी, माफ कर दो!" थाने के छायादार अहाते मे पहुँचते-पहुँचते बुढ़िया बिलकुल धीरज खो बैठी। सामने आकर उसने रास्ता रोक लिया और गंडासिंह के पैरों पर गिरकर घुटने टेककर प्रार्थना करने लगी :

"मेरे इन सफेद बालों का ख्याल करो सरदारजी, मैंने जो कुछ भी अपराध किये हैं माफ कर दो। मेरी ऑखों में उस लड़के के लिए मॉ का प्यार है।...मैं गुरु के नाम पर तुमसे भीख माँगती हूँ...भगवान मेरे पाप का फल मुझे देगा..."

"गुरु और भगवान की दुहाई न दे," गंडासिंह ने रुखाई से कहा, "वे तो तेरे खिलाफ ही गवाही देंगे। गुरु ने कहा है : जिसने भाँति-भाँति के अलग-अलग नाम के प्राणी बनाये है उसीने यह नियम भी बनाया है कि तेरा इन्साफ तेरे विचारों और कर्मों के अनुसार होगा; क्योंकि भगवान न्यायी है और वह न्याय ही करता है..."

सिख थानेदार साहब के इस धर्मोपदेश ने लक्ष्मी को उनकी वर्दी से भी ज्यादा भयभीत कर दिया ओर इसके बाद वह पूरा घटनाक्रम, जिसके अन्त में यह वारदात हुई थी, उसे घिनौना मालूम होने लगा।

उसने बहुत उदासचित्त होकर अपना सर हिलाते हुए कहा, "बेटा, तुम नही समझ सकते, मेरे सामने गौरी और अपनी गाय में से एक को छोड़ने का सवाल आ गया था..."

"बेहया कहीं की!" आदमसिंह उस पर बरस पड़ा।

"अरे भैया, तो उस वक्त तुम मुझे सलाह देने क्यों नहीं आये!"

"तेरे ऊपर तेरे भाई अमरू का जितना असर है उतना किसी और का थोड़े ही हो सकता है!" आदमसिंह ने चुटकी ली।

इतनी देर में पुलिसवालों ने पंछी को बेहोशी की हालत मे थाने के दफ्तर में पहुँचा दिया था।

"इसके सिर पर पट्टी बाँधकर डाक्टर साहब को बुला लाओ !" थानेदार साहब ने अपने आदमियों को आज्ञा दी।

"हाय, भगवान करे इसे जल्दी होश आ जाये।" बुढ़िया ने ममता दिखाते हुए कहा।

"चल, परे हट बुढ़िया, गवाहों की शहादत लिखने दे मुझे !"

पर लक्ष्मी रोती-गिड़गिड़ाती हुई उनके पैरों पर गिर पड़ी और उसकी टाँगों को अपनी बाँहों मे जकड़ लिया।

"वह बदमाश ऊधो और माधो तो कभी पकड़े जायेंगे नही !" आदमसिंह ने कटु अविश्वास के साथ कहा, "और वह, जिसने यह सारी मार-पीट करवायी है, वह चैन से घर पर बैठा है। इसलिए गवाही लिखवाने से क्या फायदा ? इससे अच्छा तो यही होगा कि इस बुढ़िया से कहा जाये कि इसने उस लड़की को जहाँ बेचा है वहाँ से वापस लाये और पंछी को लौटा दिया जाये !..."

"क्या इसने सचमुच उसे बेच दिया है ?" थानेदार गण्डासिंह ने इस तरह पूछा मानो उन्हें इस बात पर विश्वास न आ रहा हो।

"सरदारजी, खुद ही इससे पूछ लो !" आदमसिंह ने कहा।

"बता छिनाल, क्या तूने सचमुच बेचा है ?" थानेदार साहब ने गरज कर कहा, "तुम पहाड़ियों ने अभी अपनी पुरानी आदतें छोड़ी नहीं हैं !...बता दे सच-सच, नहीं तो मैं तुझे अभी हवालात मे बंद कर दूँगा !"

"हाँ, सरदारजी, हाँ," लक्ष्मी रोने लगी, "मुझसे गलती हुई। घर में कुछ था नहीं, मैं गौरी को किस सहारे रखती ? इसीलिए..." उसकी आँखों से आँसुओं की धार बह निकली और उसका सारा शरीर झोंके खाने लगा। वह पश्चातापवश दोनों हाथों से अपना माथा पीट रही थी, मानो अपने-आपको यातना पहुँचाकर अपने अपराध का प्रायश्चित् कर रही हो।

"तो तुमने लड़की को बेचा है ?" गंडासिंह ने धमका कर पूछा।

"हाँ ! हाँ ! हाँ !" बुढ़िया ने जोर-जोर से सर हिलाकर चीखकर

कहा। उसका सारा शरीर हिचकोले खा रहा था और वह बुड़बुड़ाकर अपने-आप को कोस रही थी, "मालूम नहीं। न जाने क्या हो गया था मुझे !...हू ! हू !...मैं तो अभी यहीं मर जाऊँ तो अच्छा है।..."

"मुझे सीधा सीधा जवाब दे !" थानेदार साहब ने गरज कर कहा, "तूने उसे बेचा है ?"

"हाँ, मैंने उसे सेठ ज्वालाप्रसाद के हाथ बेचा है," उसने उत्तर दिया, "मैंने यह पाप किया है इसके लिए मेरा भाग्य फूट जाये !...मालूम नहीं मेरी गौरी को क्या हुआ होगा !..."

"बुढ़िया, अब पछताये का होत..." आदमसिंह ने जलकर अपने शब्दों को चबाते हुए कहा।

"हाय, अरे मेरा कलेजा पत्थर हो गया है," अब लक्ष्मी अपने अपराध को स्वीकार कर चुकने के बाद ज्यादा स्पष्ट रूप से रो-रोकर कह रही थी, "बेटा, तुम्हीं लोग बताओ, मैं क्या करूँ ?"

बड़ी देर तक निस्तब्धता छायी रही। स्पष्ट था कि सरदार गंडासिंह पुलिस के रजिस्टर में गवाहों की शहादत और पंछी की रपट लिखने से पहले आगा-पीछा सोच रहे थे, क्योंकि अमरू और उन गुंडों के डर से वह मामले को अदालत में नहीं ले जाना चाहते थे और फिर इसमें तो कुछ पैसेवाले लोगों पर भी आँच आती थी।

आदमसिंह उनकी दुविधा को ताड़ गया। उसने अर्थपूर्ण दृष्टि से गंडासिंह को देखते हुए कहा, "मगर सेठ लोगों पर तो उँगली उठायी ही नहीं जा सकती क्योंकि उनके पास पैसा है !"

"नहीं, यह बात नहीं है," गंडासिंह साफ झूठ बोल गये, "मगर उन बदमाशों—ऊधो और माधो का पता लगाने में महीनों लग जायेंगे।...और अगर इस बुढ़िया के खिलाफ इस्तगासा दायर भी कर दिया गया तो मुकद्दमे का फैसला होने में साल भर के लगभग तो लग ही जायेगा, खासतौर पर इसलिए कि दूसरी तरफ से पैसे की कोई कमी नहीं रहेगी। इसलिए अगर यह बुढ़िया शराफत से जाकर अपनी बेटी

को वापस ले आये तो सभी लोगों के हक मे यह अच्छा होगा।"

आदमसिह के लिए थानेदार साहब के इस सुझाव का समर्थन करना कठिन था, यद्यपि वह जानता था कि इस प्रकार की उल्टी दलीले देना उनके लिए ठीक ही है। वह इस बात पर आश्चर्य कर रहा था कि एक बार पुलिस में जाने के बाद मनुष्य मजबूर होकर किस हद तक मक्कार हो जाता है—वह जापजी के मंत्र पढ़ता है मगर धर्मग्रंथ में जो कुछ कहा गया है, उसका बिलकुल उल्टा करता है। वह चाहता तो यही था कि इस मामले का फैसला अदालत मे हो जाये, और अमरू के गुंडों के हाथो पंछी के पीटे जाने के बाद उसकी यह भावना और भी प्रबल हो गयी थी, उसने देखा कि यह सारा झगड़ा बहुत ही गन्दा है, इसीलिए उसने यह अनुभव किया कि लक्ष्मी का यह पछतावा ही उसके लिए काफी सजा है।...शायद, जैसा कि हिन्दू मत में कहा गया है, अमरू की आत्मा भी उसे धिक्कार रही होगी।

"अच्छा, अगर तुम कसम खाकर कहो कि तुम जाकर अपनी बेटी को वापस ले आओगी और उसे उसके पति को लौटा दोगी तो मै तुम्हे अदालत मे नही ले जाऊँगा," गंडासिह ने कहा, "मगर याद रखना, अगर तूने उसे लाकर वापस नही दिया तो मै तेरा झोंटा पकड़ कर जेल में बन्द करवा दूँगा।"

"हुजूर, आप जैसा हुकुम देंगे वैसा ही करूँगी! मैं कसम खाकर कहती हूँ, अपनी इज्जत की कसम!..."

"तेरी इज्जत और शरम है कहाँ!" आदमसिह ने कहा, "अगर गौरी को तू वापस ले आयी तो तेरे मुँह की कालिख कुछ पुँछ जायेगी। नही तो तू अपनी बदचलनी और दल्लाली के कारण नरक की आग मे जलेगी। अब तक तो तू अमरू के अलावा और किसी से डरी नहीं, मगर अब तो यमराज से डर!"

बुढ़िया अब तक हाथ जोड़े खड़ी थी। अब वह अपने हाथों पर सर रखकर थानेदार साहब के पैरों पर गिर पड़ी। उसके मुँह की लार और

आँसू पुलिस के इस अफसर के जूतों को साफ कर रहे थे।

"चल, हट अब यहाँ से," गंडासिंह ने उसे ठोकर से अलग करते हुए कहा, "जा, जाकर लड़की को वापस ले आ।"

वह उठीं खड़ी हुई पर उससे खड़ा नही हुआ जा रहा था।

आदमसिंह ने आगे बढ़कर उसे सहारा दिया और कहा :

"चल मैं तुझे घर पहुँचा दूँ; तू अपनी गठरी बाँधकर होशियारपुर जा।...इतना ही नही, तेरी इज्जत बचाने के लिए मैं भी तेरे साथ चलूँगा।..."

सात

●●१

लक्ष्मी और अमरू ने गौरी को जिस आदमी के हाथ बेचा था उसके यहाँ जब लक्ष्मी और आदमसिंह गौरी को वापस लेने पहुँचे, उस समय सेठ ज्वालाप्रसाद का चौकीदार सेठजी की गद्दी के पास रखी हुई गणेशजी की पीतल की मूर्ति के सामने धूप जला रहा था।

"अभी दुकान खुली नहीं है," चौकीदार ने साहूकार के रखवाली के कुत्ते की तरह धृष्टतापूर्ण रुखाई के साथ कहा। शक्ल-सूरत से वह पहाड़ी था, इसलिए नवागन्तुकों को उसकी इस रुखाई पर आश्चर्य हुआ।

परन्तु उन्होंने कुछ कहा नहीं, काँच की अलमारियों के आगे बाहर को निकले हुए लकड़ी के तख्तों पर थकान दूर करने के लिए बैठ गये। काँच की इन्हीं अलमारियों के बीच सेठजी की गद्दी की सीमा थी—एक तरफ बाजार था और दूसरी तरफ ऊपर घर मे जाने का रास्ता।

कुछ देर बाद आदमसिंह ने उस पहाड़ी की तरफ देखा और उसके साफ-सुथरे तेल से चिकनाये हुये चेहरे पर आत्म-विश्वास का भाव देखकर उसके हृदय में उस पहाड़ी के प्रति ईर्ष्या का भाव जागृत हुआ। उसकी सूरत से साफ जाहिर था कि वह किसान था और फौज मे रह चुका था और अब पेंशन पाने के बाद सेठजी के यहाँ चौकीदार हो गया था और छोटे-मोटे सभी कामों मे उनकी सहायता करता था।

"अरे भाई, सेठजी कब नीचे आयेंगे?" लक्ष्मी ने पूछा। लक्ष्मी मे फिर वही फुर्ती लौट आयी थी जिसे देखकर आदमसिंह को पिपलाँकलाँ से होशियारपुर तक की सात मील की यात्रा मे बहुत आश्चर्य हुआ था। वह बुढ़िया चलने और बात करने में बिल्कुल मशीन की तरह थी। बस, इतना

जरूर होता था कि जब वह थक जाती थी तब उसके चेहरे पर झुर्रियाँ कुछ अधिक हो जाती थी, नही तो वह हमेशा इतनी स्फूर्तिमय और चिन्ता-विमुक्त रहती थी मानो आत्मा नाम की कोई चीज उसके पास हो ही नही और अपने सारे जीवन मे उसने कोई पाप न किया हो।

"सेठजी खाना खाने से पहले नीचे नही आयेंगे, आने में अभी बहुत देर है। अभी तो मै धर्मशाला पर जाकर नहाऊँगा, तब दुकान से उनके लिए थाली लाऊँगा..."

"है! वह क्या दुकान का खाना खाते हैं?" लक्ष्मी ने कहा और आशंका से अपने होठों पर उँगली रखकर आदमसिह की तरफ देखा।

आदमसिंह बहुत थका हुआ था; उसने लक्ष्मी के चेहरे पर फैले हुए चिन्ता के भाव की ओर कोई ध्यान नही दिया और चुपचाप बैठा रहा। थकान से उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसकी कुछ भी करने की इच्छा नही हो रही थी।

"क्या सेठजी की बीवी उनके लिए खाना नहीं पकाती?" लक्ष्मी ने चौकीदार से पूछा और उसके चेहरे को अपनी कंजी आँखों की पैनी दृष्टि से बेधने लगी।

"उनके बीवी है ही कहाँ," चौकीदार ने बहुत धीमे से कहा। हाल ही मे उसके मालिक का जो अपमान हुआ था, उसके बारे मे वह सब कुछ जानता था, पर वह जान बूझकर सच बात छुपा रहा था।

"लेकिन मेरी बेटी गौरी जो है? अभी एक महीने पहले ही तो मैंने उसका ब्याह उनके साथ किया है! हाय!" वह मौत का शब्द न कह सकी, क्योंकि अपने अधविश्वास के कारण वह समझती थी कि इस शब्द का प्रयोग मात्र कर देने से कभी-कभी सचमुच मौत आ जाती है।

चौकीदार के हाथ से डंडी में बँधा हुआ झाड़न छूट गया। वह आश्चर्य से मुँह फाड़े उस बुढिया को देखता रहा, पर उसके मुँह से कोई आश्चर्यसूचक शब्द न निकल पाया।

"तुम आखिर बोलते क्यों नही? अरे निकम्मे, बताता क्यों नही कि

हुआ क्या है ? कहीं सेठजी ने उसे निकाल तो नहीं दिया ?" लक्ष्मी ने कहा, उसका चेहरा चिन्ता के कारण लाल हो रहा था।

चौकीदार का चेहरा उतर गया, सिर नीचे झुक गया, मानो जो रहस्य वह छुपाये हुए था वह बहुत अरुचिकर था।

"अरे जवाब दे ?" आदमसिंह ने अपनी थकान और शिथिलता को दूर करके क्रोध की मुद्रा धारण करते हुए कहा ताकि चौकीदार पर उसकी बुजुर्गी का पूरा रोब पड़ सके।

"मुझे मालूम नहीं," चौकीदार ने उत्तर दिया, "मैं सेठजी के मामलों में दखल नहीं देता।" और वह फिर गहनों की अलमारियों और तिजोरियों पर रखने के लिए अपने हाथ की अगर की बत्तियाँ जलाने लगा।

"मगर तुमने अभी कहा ना कि तुम सेठजी के लिए दुकान से खाना लाते हो ?...तुम एक थाली लाते हो कि दो" लक्ष्मी ने अधीर होकर पूछा, "भले आदमी, बता भी दे।"

चौकीदार चुप रहा, मानो उसका इस बात से कोई सम्बन्ध ही न हो, परन्तु उसका चेहरा उलझन के कारण लाल हो रहा था क्योंकि उसे अच्छी तरह मालूम था कि सच बात क्या है, पर उसे इतनी देर तक चुप रहकर उस सत्य को छुपाना पड़ रहा था।

"हाय हाय ! दुहाई है ! मैं मर जाऊँ। मेरी बेटी को न जाने क्या हो गया ? भगवान न करे वह बीमार हो या मर गयी हो !..." इस बार लक्ष्मी ने वह निषिद्ध शब्द भी कह ही दिया और फिर अपने दोनों हाथ उठा-उठाकर वह अपना माथा पीटने लगी।

"भाई, यहाँ सवेरे-सवेरे हंगामा न करो !" चौकीदार ने बनावटी सख्ती के साथ कहा, यद्यपि अन्दर ही अन्दर वह बहुत खिसिया रहा था।

"जा, जाकर अपने मालिक को बुला ला ! चंडाल, तू यहाँ बैठा-बैठा देख रहा है और मेरे प्राणों पर बनी हुई है।...जा-जा ! उठ, जा !" बुढ़िया के स्वर में जो रोब छुपा हुआ था उसने चौकीदार पर जैसे जादू कर दिया और वह चुपचाप उठ खड़ा हुआ।

जब तक वह अलमारियों की पाँत के पार नहीं पहुँच गया तब तक लक्ष्मी उसे घूरती रही। इस समय उसकी आँखें डबडबायी हुई थीं।

चौकीदार यह देखने के लिए रुका कि दुकान में कोई ऐसी चीज खुली तो नहीं पड़ी है जो चुरायी जा सके और उसे लगा कि ऊपर जाने से वह चौकीदारी के उत्तरदायित्व का उल्लघन करेगा। परन्तु साथ ही उसने बुढ़िया की आँखों की वह चमक भी देखी जिसके भय से वह जाने को बाध्य हो रहा था।

"अरे, जा जा!" आदमसिंह ने अपना जोर भी लगाया।

और वह पहाड़ी झिझकता-हिचकिचाता हुआ ऊपर चल दिया।

आदमसिंह ने लक्ष्मी को संबोधित करके कहा, "मुझे तो डर है कि यह मामला तै होने मे बड़ी कठिनाई का सामना होगा।"

लक्ष्मी ने भय से संकुचित होते हुए कहा, "मुझे तो नरक की तीन आगों में जलना होगा—एक तो पुलिस के दूतों की मार होगी, दूसरे अमरू के क्रोध और प्रतिशोध की ज्वाला होगी क्योंकि मैंने उसका भडा फोड़ दिया है और तीसरे पंछी का क्रोध होगा, जिसे मेरे कारण इतनी मार पड़ी कि वह मरते मरते बचा।...हाय, अगर मैं अमरू के कहे में न आयी होती तो अच्छा था। जब से गौरी को होशियारपुर भेजा गया है, तभी से मेरी आत्मा दुखी रहती है।"

आदमसिंह बिलकुल चुप्पी साधे था। उस पर बुढ़िया के पश्चात्ताप का कोई असर नही हो रहा था। वह जानता था कि वह जो कुछ कह रही है वह अधिकाश सही है परन्तु उसे इस कारण उस पर बिल्कुल भी तरस नहीं आ रहा था कि उसने अमरू के चक्कर मे आकर अपनी बेटी को बेच दिया था। यदि वह अपनी पारो को बेच दे तो भला वह बाप कहलाने का अधिकारी रह जायेगा? और ऐसा नहीं था कि लोगों ने उसे इस प्रकार के लालच न दिये हों।...वह वहाँ अपने अभिमान को ऊँचा किये चुप बैठा था; उसे इस आशंका के कारण कुछ परेशानी जरूर थी कि अगर गौरी सेठजी के घर पर न हुई तो क्या कठिनाइयाँ उठानी पड़ेंगी।

दूसरी तरफ वह यह भी सोचता था कि अगर सेठजी ने उसे घर से निकाल दिया हो या गौरी जो देखने में बहुत सीधी और भोली होने के बावजूद अन्दर ही अन्दर बहुत ही साहसी लड़की थी, स्वयं भाग गयी हो तो अच्छा ही है। क्योंकि फिर उस पर कोई कलंक नही रह जायेगा।...

चौकीदार चोरो की तरह खिसियाता हुआ नीचे आया और बोला :

"सेठजी पूजा कर रहे हैं, मै उनकी पूजा मे विघ्न नही डाल सकता।"

"अरे, नमकहराम !" बुढ़िया ने चिल्लाकर कहा, "उनकी दौलत चोर ले जाये !...मै मर रही हूँ, और उन्हे पूजा-पाठ से छुट्टी नही।... चलो, अगर वह मुझे मेरी बेटी नही लौटायेगे तो मैं भी उनको सारा पूजा-पाठ बता दूँगी।" यह कहकर वह ऊपर जाने के लिए उठ खड़ी हुई। चौकीदार उसका रास्ता रोककर दरवाजे मे खड़ा हो गया।

बुढिया पर अब तक क्रोध का भूत सवार हो चुका था, और उसे चौकीदार की कोई परवाह नही थी। अपने चाँदी के भारी कड़ों से उसके हाथों पर चोट करती हुई वह चिल्लायी :

"निर्दयी ! तू मरे ! मुझे जाने दे—साहूकारजी के पास ! वह मुझे अपनी बेटी से मिलने से कैसे रोक सकते है !"

चौकीदार उसके इस प्रहार से भी टस से मस न हुआ तो उसने नाखूनों से उसका मुँह नोच लिया और चिल्लायी :

"अगर तू मुझे अपनी बेटी के पास नही जाने देगा तो मै तुझे जिन्दा खा जाऊँगी !...हाय लोगो ! दुहाई है ! हाय, हाय !..."

उसका चीखना-चिल्लाना सुनकर पास-पड़ोस की दूकानों के मालिक अपनी खिड़कियों पर आ खड़े हुए। सेठजी के पूजा-पाठ मे नीचे दुकान के शोर-गुल से पहले ही विघ्न पड़ चुका था और अब तो उनका ध्यान बिल्कुल ही भंग हो गया। वह जीने से नीचे उतरे, पर सुरक्षा के विचार से चौकीदार के पीछे कुछ दूर पर सीढ़ियों पर बीच ही मे रुक गये और वहीं से पहाड़ी-चौकीदार के कंधों के ऊपर से बुढ़िया को सम्बोधित करके

बोले :

"क्यों भलीमानस, क्या चाहती है ?"

"मैं भलीमानस नहीं हूँ !" लक्ष्मी ने ऊँचे स्वर मे तड़ाक से जवाब दिया, जिसे सुनकर सेठजी की त्योरियों पर बल पड़ गये। "मैंने अपनी बेटी आपको दे दी ! मैं उसे वापस चाहती हूँ !"

"हॉय !" सेठजी ने कहा। लक्ष्मी का कर्कश स्वर सुनकर क्षोभ और क्रोध के कारण सेठजी का चेहरा तन गया था और उस पर अन्धकार-सा छा गया था।

"देखो मुझसे 'हॉय, हॉय' न करो। मै अपनी बेटी वापस चाहती हूँ। मुझे ऊपर जाने दो, मैं उसे ले आऊँगी...नहीं तो पुलिस तुम्हे, मुझे और अमरू—तीनों को पकड़ ले जायगी !"

पुलिस का नाम सुनते ही सेठ—जी के चेहरे का रंग पीला पड़ गया।

"सेठ ज्वालाप्रसाद जी," आदमसिह ने कहना आरम्भ किया, "लड़की हमे लौटा दीजिये तो यह बुढ़िया चुपचाप मेरे साथ पिपलॉकलॉ वापस चली जायेगी।...हम कोई झगड़ा करने तो आये नहीं हैं !"

"मगर...भलेमानसो," सेठजी बौखलाकर बोले, "लड़की तो यहॉ है ही नहीं। वह तो भाग गयी।...बीमार थी, और वह...मुझे मालूम नहीं। जो डाक्टर साहब बीमारी मे उसे देखने आते थे, वह उन्ही के अस्पताल गयी थी..."

"वह अब कहाँ है ?" लक्ष्मी ने चीखकर कहा, "बताते क्यों नही ? तुम जब उसे लाये थे तो उसकी ख़ैर-ख़बर भी रखना चाहिये थी !"

"माई, सब्र करो ! सुनो तो, वह लड़की मेरी एक बात भी नही मानती थी ! मैंने उसके लिए जितना पैसा चुकाया था वह सब डूब गया। ...और सारे शहर में मेरे नाम पर जो बट्टा लगा सो अलग।...तुम लोगों को तो नाम-इज्जत का कोई ख्याल होता नहीं, तुम क्या समझोगे इस बात को।"

"देखो सेठजी, सीधे-सीधे आकर बता दो कि गौरी कहाँ है, नहीं तो

मैं अच्छी तरह तुम्हारा नाम ऊँचा कर दूँगी, समझे !" लक्ष्मी ने चुनौती दी।

"बहन, मै तुमसे कह जो रहा हूं, कि मुझे मालूम ही नहीं कि वह इस वक्त है कहाँ ! मगर जब मैं उसे अस्पताल से लेने गया था तो उसने मेरे साथ आने से इंकार कर दिया था, हालाँकि मैने डाक्टर साहब की फीस चुका दी थी।...मैने सुना था कि डाक्टर साहब ने उसे अपने यहाँ नर्स के काम पर रख लिया है। तुम्हारी ही तरह वह भी..." मगर सेठजी ने अपनी बात अधूरी ही छोड़ दी। वह भिड़ों के छत्ते को छेड़ना नहीं चाहते थे— भिड़ों का छत्ता तो थी ही लक्ष्मी !

"अरे कोढ़ी, तूने खबर क्यों न भिजवा दी !" बुढ़िया अपनी बात पर अड़ी रही, "हाय, मेरी बेटी न जाने कहाँ चली गयी होगी !... हाय, अगर वह न मिली और मुझे जेल जाना पड़ा तो मैं मर जाऊँगी !"

"सेठजी को भी तो उसे खरीदने के जुर्म मे जेल जाना पड़ेगा," आदमसिंह ने योग दिया।

"वह तो बेशरम बनिया है, पैसे-वैसे खिलाकर छूट जायेगा। मै गरीब ठहरी..."

"मुझसे इतना पैसा लेने के बाद अब तो गरीब नहीं रहीं।" सेठजी ने अपना बचाव करते हुए व्यंग्य किया।

"चंडाल ! बूढ़े ! खूसट ! साठ बरस की उम्र में मेरी गौरी को खरीदते तुझे लाज न आयी।...पैसे की बात करता है ! तूने मुझसे इतना बड़ा पाप कराया और अब तू ही पैसे की बात करता है ! पापी कही का।... सबेरे से उठकर पूजा-पाठ में लग जाता है।...सत्तर चूहे खाके बिल्ली अब तीरथ को चली ! नीचे आ, चल मेरे साथ अस्पताल !"

"जा, जा ! मुझे न तुझसे कुछ मतलब है न तेरी बेटी से ! जा, जाके डाक्टर महेन्द्रा के अस्पताल में ढूँढ़ उसे ! भाड़ में जा, मेरी बला से। पुलिस आयेगी तो मैं निबट लूँगा उससे ! छिनाल कहीं की !..."

"हाय !" लक्ष्मी जोर से चीखी और जोर से झटके के साथ पहाड़ी

चौकीदार का हाथ हटा कर, उससे आगे निकल कर उसने सेठजी के मुँह पर एक थप्पड़ रसीद कर दिया। "नामरद, बदमाश कही का ! पहले अपनी पहली बीवी की जान ली तूने और फिर मेरी बेटी को बीमार डाल दिया ! तेरी इतनी मजाल कि मुझे छिनाल कहे ! बेशरम !"

बुढ़िया का गुस्सा अब आग की तरह भड़क उठा था। आदमसिंह को भय हुआ कि कही पुलिस आकर मामले को और न बिगाड़ दे। उसने लक्ष्मी को घसीट लिया और उसे समझाने-बुझाने लगा :

"आ, आ, लक्ष्मियाई ! चल, अस्पताल चलते हैं ! शायद भगवान ने यह अच्छा ही किया। गौरी वहाँ खैरियत से होगी।..."

उसने लक्ष्मी को जबर्दस्ती अपनी बाँईं भुजा की लपेट मे ले लिया और उसे बाजार मे ले आया। बुढ़िया अभी भी सड़क पर चलते-चलते चिल्लाती जा रही थी। वह सेठजी के रहे-सहे नाम को भी मिट्टी मे मिला देने पर तुली हुई थी।

● ● २

डाक्टर महेन्द्रा के अस्पताल की खोज मे वे दोनों जब बाजार से होकर चले तो उस समय भगवान भास्कर का रथ उनके पास से होकर भाग रहा था; सारा नगर अपनी निद्रा से जाग चुका था और दुकानदार दिन की गरमी के विचार से कुछ भयभीत और परेशान थे। होशियारपुर की छोटी-छोटी घुटन से भरी हुई गलियों में पसीने के कारण उन्हे जो परेशानी हो रही थी वह तो थी ही, इसके अतिरिक्त उस बुढ़िया और उसके साथी को देहाती होने के कारण इस तिजारती शहर की भूलभुलैयों में और एक घुटन का आभास हो रहा था, जहाँ अँग्रेजी अक्षरों मे लिखे हुए बड़े-बड़े साइनबोर्ड और फिल्मों के बड़े-बड़े पोस्टर थे, जिनमें हीरो और हीरोइन

डाकुओं और नर्तकियों के भेष में दिखाये गये थे। आदमसिंह कुछ पढ़ा-लिखा था, उसने एक फिल्म का नाम जोर से पढ़ा–'पापी'—जिसे सुनते ही लक्ष्मी पर बहुत भयानक प्रभाव हुआ। एक ऐसे व्यक्ति के करुण स्वर में, जिसकी आत्मा उसे धिक्कार रही हो।

इससे पहले कि उसके हृदय का तूफान पश्चात्ताप के निराशापूर्ण प्रदर्शन की सीमा से बाहर निकलने पाता, आदमसिंह ने उसे एक हलवाई की दुकान के बाहर तेल से चिकनी बैंच पर ले जाकर बिठा दिया और लस्सी बनाने को कहा।

हलवाई ने उन्हें चालाक नगरवासी के सशंकित नेत्रों से देखा और आदमसिंह जिस प्रकार लक्ष्मी की जरा-जरा सी बात की ओर ध्यान दे रहा था, उसे देखकर और लक्ष्मी के रंग-बिरंगे कपड़ों से उसने ताड़ लिया कि उन दोनों की आशनाई है और वे सैर को निकले है।

इस पर लक्ष्मी और भी सिटपिटा गयी और उसने व्यंग्य में अपने को निर्दोष सिद्ध करने का प्रयत्न करते हुए कहा :

"खाज और खाँसी छुपायी नहीं जा सकती !"

"यह तो हम अच्छी तरह जानते है !" हलवाई ने चोट की, "तुम गाँववालों के मुँह पर आतशक की निशानी होती है।"

"हम कहते हैं भगवान की, वह सुनते है शैतान की !" लक्ष्मी ने पलट कर चोट की।

"हाँ, भाई, सब पापड़ बेलने के बाद भगवान की बात करना बड़ा आसान है !"

आदमसिंह को बड़ा आश्चर्य हो रहा था कि यह हलवाई लक्ष्मी के चाल-चलन के बारे में कैसे जान गया। वह सोच रहा था कि इसकी नजर बहुत ही गहरी है और इसीलिए उसने पूछा :

"तुम्हें लक्ष्मी के पाप का पता कैसे चला ?"

"अरे, इसमें कौन बड़ी बात है, मुझे उसकी कंजी आँखों में खुशी दिखाई देती है !" हलवाई ने उत्तर दिया और फिर किंचित् वासनात्मक

भाव से चटकारी लेकर और अपनी झुकी हुई मूँछों पर ताव देकर उसने कहने का साहस किया, "तुम्हारी रखैल है ? अब जवानी ढल गयी तो बात और है, मगर अब भी अच्छी है !"

"अरे जा !" लक्ष्मी ने कहा। आश्चर्य की बात तो यह थी कि हलवाई की बात सुनकर लक्ष्मी को अपने रूप पर और भी अभिमान हो रहा था, इसीलिए वह सख्त बात कहते हुए भी मुस्करा दी। उसने हाथ बढ़ाकर आदमसिंह के हाथ से लस्सी का गिलास ले लिया जो हलवाई ने उसे दिया था।

लस्सी पीने से पहले आदमसिंह ने बुढ़िया की ओर देखा और उसने अनुभव किया कि यद्यपि उसकी आँखों के नीचे झुर्रियाँ पड़ गयी थीं, फिर भी सचमुच उसमे एक आकर्षण था। उसमे वासनाओं को जागृत करने के जिस गुण की ओर हलवाई ने सकेत किया था, वह उसके व्यक्तित्व का इतना स्वाभाविक अंग था कि उसके सामने आदमसिंह को अपना बनावटी नैतिक आचरण बिल्कुल भद्दा और अस्वाभाविक मालूम होने लगा था। आखिर उसने शुरू मे या उसके पति के मर जाने के बाद लक्ष्मी से ब्याह करने की बात क्यों नही सोची ? अमरू ने अपनी चचेरी बहन से जो आनन्द लूटा था, उससे वह वंचित रह गया था क्योकि इसमे तो कोई सदेह ही नही था कि उन दोनों के सम्बन्ध अनैतिक संभोग के सम्बन्ध थे।...लेकिन वह कौन होता था उसे अपराधी ठहरानेवाला, क्योंकि इस समय वह स्वयं भी तो उसे वासनामय दृष्टि से देख रहा था। बुढ़िया ने नीति-अनीति पर कभी विचार ही नही किया था और वह समझती थी कि कोई भी पति हो, इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता—अपने लिए और अपनी बेटी के लिए भी।

"जिस पहाड़ी इलाके की मैं रहनेवाली हूँ," लक्ष्मी हलवाई को समझाने लगी, "वहाँ औरतें हमेशा मरदों को सिखाती आयी हैं। मेरी एक चाची ने एक साथ तीन भाइयों को पति बना रखा था। बस जो अन्दर जाता था वह अपना जूता बाहर छोड़ जाता था कि दूसरा अन्दर न

आये, जैसे पॉच पाडवों के बीच द्रौपदी थी, वैसे ही हमारे यहाँ के मरद भी मिलकर एक औरत से ब्याह कर लेते थे। लेकिन तुम ब्यौपारियों ने जब रुपये-पैसे का जाल फैलाया तो तुमने हमारे पहाड़ के मरदों को भी लड़कियाँ बेचना और खरीदना सिखा दिया।...मुझे इस बात से लाज नहीं आती कि मैं कई मरदों के साथ सो चुकी हूँ, मगर मुझे शरम इस बात पर आती है कि मैंने अपनी बेटी को बेच दिया।"

यह साफ-साफ बातें सुनकर आदमसिंह के रोंगटे खड़े हो गये। उसकी इन निर्लज्ज बातों से उसे इतना आघात पहुँचा कि वह लक्ष्मी के बारे में कोई फैसला न कर पाया कि वह किस प्रकार की औरत है। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वह उसके मनोभावों को समझ गयी है क्योंकि वह कहती रही :

"तुम मरद लोग क्या जानो कि औरत को किन-किन आगों में झुलसना पड़ता है। तुम लोग तो अपने मतलब के वक्त बस उनसे आनन्द लेना भर जानते हो, इसीलिए तुम अँधेरे में आते हो! फिर तुम दूसरी औरतों को छिनाल समझ कर उनके पास भी जाते हो; और फिर तुम लोग बिना यह पूछे कि वे क्या अनुभव करती है, वहाँ से भाग खड़े होते हो।...ऊपर से तुम लोग इस तरह का इन्साफ करने बैठ जाते हो कि वे पराये मरदों को न ताकें। एक जमाना था जब कि कॉगड़ा की पहाड़ियों में औरत हर उस आदमी की माँ और पत्नी होती थी जिसे उसकी जरूरत हो, जैसे धर्मशाला के मन्दिरवाली काली है!.. "

हलवाई, जो उसे छिनाल समझ बैठा था, उसकी ये खरी-खरी बातें सुनकर दंग रह गया। अब वह अपनी गद्दी पर बैठा उसकी बातें नहीं सुन रहा था बल्कि उसे सराह रहा था और पछता रहा था कि इस जीवन में उसने अपने-आपको कितनी बातों से वंचित रखा है, और यह अपमान-जनक विचार उसे सता रहा था कि अपनी घरवाली के साथ उसने कितनी बार अन्याय किया है।

"कैसी अजीब बात है!" जैसे ही लक्ष्मी जाने को उठी, हलवाई ने

उसकी तरफ आँख मारते हुए बुदबुदाकर कहा मानो उसने लद्दाख की किसी सुन्दरी को देखा हो और फिर अनुरोध करने लगा, "रुको, मै तुम्हारे लिए एक गिलास लस्सी और बनाये देता हूँ।"

"नही," लक्ष्मी ने जादू भरी मुस्कराहट के साथ कहा, "मैं अगर और रुकी तो तुम मुझे खा जाओगे।"

"अब मैं समझा," हलवाई ने कहा, "कि लोग यह क्यों कहते हैं कि पहाड़ी औरते रूपमयी राक्षसियों की तरह होती हैं, जो आदमी पर जादू कर देती हैं!"

आदमसिह ने लस्सी के पैसे दिये और लक्ष्मी को लेकर चल दिया। वह अपने विचारों को बदलकर अपने हृदय मे लक्ष्मी के प्रति क्षमा का भाव लाने का प्रयत्न कर रहा था, क्योकि उसने देख लिया था कि वह कितनी निष्कपट और विश्वासमयी नारी थी। उसकी अपनी पत्नी बहुत शर्मीली, दब्बू और भीरु स्वभाव की थी और अपनी पत्नी के प्रति उसका बिल्कुल वही रवैया था जैसा कि लक्ष्मी ने मरदों के बारे मे बताया था। जीवन का महत्व इससे अधिक न उसके लिए ही था और न उसकी पत्नी के लिए ही, जो मर चुकी थी!...न भावनाओं का आवेग, न एक-दूसरे को समझना! और उसके पास दुनिया को दिखाने के लिए एक बेटी के अतिरिक्त और कुछ भी न था। वह लक्ष्मी जैसी औरत के साथ सोकर जीवन का आनन्द लूटने को कहीं बेहतर समझता, बजाय इसके कि वह यह जताये कि वह अपनी पत्नी के साथ जो कुछ करता है वह सुख-भोग के लिए नही बल्कि कर्तव्य समझ कर करता है। अब लक्ष्मी नही बल्कि वह स्वयं लज्जित था। क्योंकि यद्यपि लक्ष्मी को दुष्ट कहा जाता था पर वह एक ज्वाला के समान थी, जिसमे सारी धूर्तता और अवास्तविकता जलकर भस्म हो जाती है।

●●३

होशियारपुर के छोटे से शहर में चूँकि सभी लोग एक-दूसरे को जानते थे इसलिए उन लोगों को डाक्टर महेन्द्रा के अस्पताल का पता लगाने मे ज्यादा कठिनाई नहीं हुई। पर बँगले पर पहुँचकर चपरासी ने बताया कि महेन्द्रा साहब ने अब अस्पताल आना छोड़ दिया था और उनके साझेदार बातरा साहब अमृतसर गये हुए थे और वह औरत गौरी, अस्पताल को तोड़-ताड़कर कही चली गयी थी।

अपनी बेटी के विरुद्ध यह आरोप सुनते ही लक्ष्मी उस चपरासी पर बरस पड़ी :

"हाय, लेकिन गौरी ने अस्पताल कैसे तोड़ा ? हथौड़े से ! या अपने खाली हाथों से ?"

"वह लड़की खूबसूरत है ना !" चापरासी ने बड़े अर्थपूर्ण ढंग से उत्तर दिया।

"और तुम सब लोग उसके फेर मे रहने लगे !" बुढ़िया ने अधीर होकर कहा।

चपरासी ने अपना सर झुका लिया।

इस पर लक्ष्मी को क्रोध आ गया, वह बरस पड़ी :

"मक्कार कही के, तुम्हे किसी औरत की इजत आबरू लेते खुद शरम नहीं आती और बाद मे जताते यह हो कि उसने तुम्हे मोहकर तुम्हारा चालचलन खराब कर दिया।"

"मेरा तो उससे कोई मतलब नही था," चपरासी ने सिटपिटाकर जबाब दिया, "डाक्टर बातरा साहब उस पर लट्टू हो गये थे। इस पर उनका अपनी बीवी से झगड़ा हुआ।..."

"मै यह नही पूछती कि गौरी से कौन फँसा रहा था—तुम या तुम्हारे डाक्टर बातरा ! तुम सब मरद एक जैसे ही होते हो, हमेशा औरतों को ही दोष देते हो !... मैं जानना यह चाहती हूँ कि मेरी बेटी गयी

कहाँ ?"

"लक्ष्मी, जरा सबर कर !" आदमसिह ने उसे धीरज बँधाया और चपरासी को संबोधित करके पूछा :

"वह यहाँ से कहाँ गयी ?"

"करनैल महेन्द्रा साहब के यहाँ।"

"हम वहाँ जाकर पता करेंगे," आदमसिह ने उस आलीशान दो-मंजिले बँगले को किचित् भय के साथ देखते हुए कहा।

"हाँ, मगर करनैल साहब अजकल किसी से मिलते नहीं। उनकी तो बड़ी मुसीबत हो गयी है। इस अस्पताल के दुश्मनों ने तुम्हारी बेटी को लेकर उनके खिलाफ न जाने क्या-क्या बातें कही है !"

"तो क्या उनका उससे सम्बन्ध था ?"

"नहीं, वह बड़े भले आदमी है !"

"हूँ !" लक्ष्मी ने शंका-भरे स्वर मे कहा।

"सब लोग उनकी नेकी के कारण ही उनके पीछे पड़ गये है। वे लोग उन पर कोई न-कोई दोष लगाना चाहते थे, बस इसलिए कि वह बहुत ईमानदार आदमी हैं। तुम्हारी बेटी और उनके बारे मे कोई भी बात साबित नहीं कर सके। इसलिए अब उन्होंने दूसरा बहाना गढ़ लिया।...उन्हे एक रोगी को देखने के लिए बड़े अस्पताल मे बुलाया गया, किसी पैसेवाले की बेटी थी। उन्हे कुछ और रोगियों को देखना था, वह वहाँ देर से पहुँचे, लड़की मर गयी। अब लोग कहते हैं उन्होंने उसे मार डाला।"

"इसमें ताज्जुब की क्या बात है कि शैतान की औलाद दूसरे को पापी ठहराये," बुढ़िया ने कहा, "बड़े डाक्टर साहब के बारे मे तुमने जो कुछ बताया है उससे तो मुझे आशा है कि वह मेरी मदद करेंगे !"

"वह बड़े विचित्र जीव हैं," चपरासी ने कहा, "उनका सारी दुनिया से अलग ही कानून है। अगर हमारे डाक्टर बातरा साहब ने इतनी बेवकूफी न की होती तो..."

"बिलकुल भगवान का अवतार मालूम होते हैं !" आदमसिंह ने बीच ही मे कहा ।

पर लक्ष्मी की आँखें जिस तरह चल रही थी, उससे पता चलता था कि आदमसिंह की इन लम्बी-चौड़ी आदर्शवादी बातों से वह उकता रही थी ।

"वह बातरा कहाँ है, मै उससे जरा दो-एक बाते पूछती !" लक्ष्मी ने सहसा प्रश्न किया ।

"भाई अब जाओ," चपरासी ने कहा, "हमारे डाक्टर साहब जैसे हैं, अच्छे हैं, मैं उनका नमक खाता हूँ ।"

"हाँ, तुम पहाड़ी जो हो, नामरद ! तुम तो नमकहलाली करते-करते मर जाओगे !" लक्ष्मी ने जलकर कहा ।

"अच्छा, आओ हम डाक्टर साहब के पास चले !" आदमसिंह ने दबी जवान में कहा, "अगर उन्होने भगवान का पता लगा लिया है तो वह हमें गौरी का पता लगाने का रास्ता भी बता देंगे ।"

"अच्छा हमे उस मन्दिर का रास्ता तो बता दो जहाँ यह महात्मा रहते हैं !" लक्ष्मी ने व्यंग से पूछा ।

चपरासी बाहर अहाते मे निकल आया और छोटे से बाजार के पार उजाड़ मैदान के सिरे पर एक छोटे-से लाल रग के पक्के मकान की तरफ इशारा करके बोला, "वह जो जमीन पड़ी है, जहाँ खेमे लगे हैं, वहाँ वह अपना अस्पताल बनवायेंगे ।"

उन दोनों देहातियों ने डाक्टर साहब के घर की तरफ इस तरह देखा जैसे दो भैंसे, जिन्हें नारद मुनि ने स्वर्ग मे भरपेट सानी की आशा बँधायी हो, आकाश की तरफ देख रहे हों ।

वे बाजार से होकर जा रहे थे, जहाँ गन्दी खाने-पीने की चीजों और हलवाइयों की बहुत-सी टूटी-फूटी दुकाने और रिक्शों का एक अड्डा था । आदमसिंह जरा शौक पूरा करने के लिए पान-बीड़ी की दुकान पर सिगरेट का पैकेट लेने चला गया । लक्ष्मी आगे निकल गयी थी, सहसा उसे

आभास हुआ कि वह अकेली रह गयी है और वह चौंककर पीछे लौट आयी।

उसने चिल्लाकर कहा, "मेरा तो डर के मारे दम ही निकल गया था ! मैं तो समझी कि तुम मुझे छोड़कर चले गये।"

आदमसिंह ने केवल पान बीड़ी की दूकान की तरफ संकेत करके संतोष कर लिया और बड़े रोब के साथ चुपड़े हुए बालोंवाले दुबले-पतले दूकानदार से सिगरेटें माँगते हुए बोला, "जरा सिरगेट देना !"

"कौन-सी !" उस फुर्तीले दुकानदार ने पूछा, "कप्सटन, गोल-फ्लिक, कैंची, चार मीनार ?"

"मैं तो भाई हुक्का पीता हूँ," आदमसिंह ने बड़े भोलेपन से कहा, "मुझे तो कोई अच्छी सिरगट दे दो, जो सबसे सस्ती हो !"

पान-बीड़ीवाले ने उसकी तरफ झुमकर देखा मानो वह उसकी असलियत समझ गया हो और फिर शहरवालों के ढंग से, जो बात को बहुत जल्दी समझ जाते हैं, मुस्कराकर बोला :

"लो, यह चार मीनार है ! हैदराबाद का निज़ाम भी यही पीता है !"

आदमसिंह कपड़े का बटुआ निकालने के लिए अपने पैजामे का इज़ारबन्द ढीला कर रहा था; इतनी देर पान-बीड़ीवाला बड़े गौर से उसे और उसके साथवाली औरत को देखता रहा, बोला :

"मालूम होता है देहात से आये हो ! कहाँ के रहनेवाले हो ?... मालूम होता है किसी और की जोरू को भगा लाये हो ! वह पान नहीं खायेगी ?..."

वह अधेड़ उम्र का किसान मुस्कराकर बोला :

"दो सादे पान लगा दो हमें।"

"अरे, थोड़ी-सी तम्बाखू डाल दूँ, पान में मजा आ जायेगा। तुम भी निरे बुद्धू ही मालूम होते हो। अरे थोड़ा-सा नशा आ जायेगा तो अच्छा रहेगा, खास तौर से जब यह मस्त राँड़ तुम्हारी बगल में है !"

दुकानदार का दूसरा तुक्का ठीक बैठ गया था।

"तुमने कैसे जाना कि मै रॉड़ हूँ ?" दुकानदार की बात पर गरम होकर लक्ष्मी ने पूछा, उसकी कंजी आँखों मे चमक आ गयी थी।

"क्यों यार भगतू !" उसने पास खड़े हुए एक गाहक से पूछा, जो बारीक मलमल की कमीज पहने हुए था, "तुम्हीं बताओ, यह पहाड़िन भला सूरत से रँगीली रॉड़ नही मालूम पड़ती ?"

भगतू छेड़छाड़ के अन्दाज से लक्ष्मी की तरफ झुका।

आदमसिंह को पानवाले की बातों से कुछ झुँझलाहट हो रही थी इसलिए वह जल्दी से उसके पैसे देने के लिए बटुआ हाथ मे लिये हुए आगे बढ़ा।

पानवाले ने रुपये का नोट ले लिया और बाकी पैसे गिनकर वापस कर दिये, फिर नाली मे पीक थूकते हुए उसने भगतू को आँख मारी। आदमसिंह को बातों मे फँसाने के लिए वह उसकी तरफ मुड़ा :

"लो, यह रही तुम्हारी सिगरेटें। किधर जा रहे हो ?"

"भैया, कुछ पूछो नही !" आदमसिंह ने बटुआ कुर्ते की जेब मे डालते हुए उत्तर दिया और सिगरेट लेने के लिए दोनों हाथ बढ़ा दिये।

पानवाले ने चालाकी से लक्ष्मी को भी बातों मे फँसाये रखा।

"बहना, इस आदमी पर कौन-से दुःख का इतना बोझ है ? क्या तुम इसके लिए इतना बड़ा बोझ हो ? अगर ऐसा है तो वह तुम्हें यहाँ छोड़ दे। तुम हमारी यह दुकान चलाना।"

इन चिकनी-चुपड़ी बातों पर लक्ष्मी मुस्करा दी, यह सोचकर उसका चेहरा खिल उठा कि यद्यपि वह बूढ़ी हो गयी थी, पर अब भी उसमे आकर्षण बाकी था।

जिस समय आदमसिंह सिगरेट लेने के लिए आगे बढ़ा था, भगतू ने बड़ी सफाई से, बाये हाथ से उसके कुर्ते की जेब से बटुआ निकाल लिया था और पानवाले की तरफ मुड़कर पान के लिए दाहिना हाथ बढ़ा दिया था। भगतू और पानवाले की साठ-गाँठ थी, जितनी देर मे उसने हाथ की सफाई दिखायी, उतनी देर पानवाला लक्ष्मी को बातों में उलझाये रहा :

"किसी के हाथ उसके अपने पेशे से गंदे नही होते, वह पेशा कितना ही नीच क्यों न हो ! तुम गॉव के लोग किसानी को सबसे अच्छा समझते हो मगर फिर भी भूखे मरते हो। लेकिन अगर तुम लोग अपना ढर्रा छोड़कर शहर में आ जाओ, रिक्शा खीचने के लिए या दूसरों के घर मे नौकरी करने के लिए नही...बल्कि अब अपने को ही ले लो, तुम्हारी जैसी औरत, ऐसी चमकदार आँखोंवाली ! तुम्हारी तो तकदीर चमक उठे यहॉ आकर !"

पानवाले की इस ढिठाई पर आदमसिह का सारा शरीर क्रोध से कॉप उठा। वह लक्ष्मी को अपने संरक्षण की छाया मे लिये खड़ा था। उसका भारी-भरकम शरीर इस प्रकार हिल रहा था मानो उस पर कोई बोझ लदा हो। आम तौर पर शहर के सभी रहनेवालों से उसे नफरत थी, क्योंकि उनकी चालाकी और उनका वाक्चातुर्य गॉववालों के भोलेपन और नेकी के लिए हमेशा एक चुनौती के समान होता था और इसी नफरत के कारण वह इस समय आग बबूला हो रहा था। पानवाले की बात का जवाब देने मे असमर्थ होने के कारण उसका क्रोध और भी बढ़ गया था, उसने लक्ष्मी के दुपट्टे का छोर पकड़कर सहसा उसे झटका दिया और साथ लेकर चल दिया।

गॉववालों को देखते हुए तो लक्ष्मी वैसे बहुत चालाक थी, पर शहर के हिसाब से वह बहुत ही भोली थी। इस प्रकार वहॉ से खीचकर ले जाये जाने पर उसे कुछ आश्चर्य भी हुआ और कुछ झुँझलाहट भी।

पर आदमसिंह वहॉ और अधिक रुके बिना चल पडा, उसे तम्बाकू का पान कुछ कडवा प्रतीत हुआ। उसने सोचा कि शायद सिगरेट पीने से स्वाद ठीक हो, इसलिए उसने कुर्ते की जेब मे हाथ डाला। उसे चार-मीनार का पैकेट तो मिल गया पर अपनी जेब कुछ हल्की-हल्की मालूम हुई। उसने जेब में और गहराई तक हाथ डाला; उसके चेहरे का रंग उड़ गया और वह मूर्तिवत् वही खड़ा रह गया। उसने दूसरी जेब में अपना बाँया हाथ डाला और कराहकर बोला, "अरे, मैं तो मर गया !"

"क्या हुआ ?" लक्ष्मी ने पूछा तो आदमसिंह ने सर हिला दिया, हाथ मलते हुए लड़खड़ाती निराश आवाज मे बोला, "मेरा बटुआ नही है, किसी ने मेरी जेब मार दी।"

"कैसे ? किसने लिया होगा ? चलो उस पान-बीड़ीवाले के यहाँ चलें ! वहाँ वह जो आदमी खड़ा था..."

निराशा की भावना ने उसे बिल्कुल चूर कर दिया था; उसके पाँव जवाब दे रहे थे, वह वहाँ से हिल न सका, स्तब्ध खड़ा रहा और हिल-हिलकर करुण स्वर मे कहता रहा, "सारा पैसा जो मैं लाया था ! पच्चीस रुपये !"

लक्ष्मी का हृदय अपने साथी की विपदा के कारण सहानुभूति से भर उठा और वह सोचने लगी कि अगर वह उसके साथ न आया होता तो उसका इतना नुकसान न होता। वह भागी-भागी पान-बीड़ीवाले के यहाँ गयी और चिल्लाकर बोली :

"चोट्टो ! बदमाशो ! डाकुओ ! आदमसिंह का बटुआ लौटा दो !"

दुकानदारों ने उस पर एक उचटती हुई नजर डाली मानो कोई कुतिया भूँक रही हो !

"क्यों रे, पानवाले ! वह तेरा भगतू कहाँ गया ? मुझे पक्का यकीन है कि उसीने आदमसिंह का बटुआ लिया है !"

"जा जा, मेरे गाहकों को गिरहकट बताती है ! दूर हो, चल यहाँ से ! कुतिया !...यहाँ ज्यादा हल्ला न मचा !"

"हाय री, देखो तो ! अन्धेर है ! और अभी मुझे रखने को तैयार था !"

"जा जा, नही तो मैं अभी पुलिस को बुलाऊँगा कि तू यहाँ आकर रंडियों की तरह गाहक फँसाती है !"

"अरे बड़ा आया रंडीवाला !" कहकर उसने दाहिने हाथ से अपना माथा पीट लिया। इस सारी घटना पर उसे क्रोध बहुत आ रहा था पर वह जानती थी कि वह कुछ भी नहीं कर सकती।

आदमसिंह लड़खड़ाता हुआ आया और चुपचाप उसकी बाँह पकड़ कर उसे वहाँ से ले गया।

लक्ष्मी ने भी अपने पाँव कस कर जमा लिये और वहाँ से किसी तरह भी हटने को तैयार न हुई, फिर चिल्लाकर बोली, "चोर कही के !"

"चल चल, भलीमानस !" आदमसिंह ने नरमी से कहा, "चोर तो चला गया और अगर तूने उसे दुबारा देख भी लिया तो चोर कभी अपनी चोरी को मान थोड़े ही लेगा !"

"मेरे कारण ही तुम पर इतनी मुसीबत आयी !" लक्ष्मी रो-रो कर कहने लगी। थोड़ी देर बाद वह बोली, "यह रकम मेरे ऊपर कर्ज है। मै पाई पाई चुका दूँगी, चाहे इसे चुकाने के लिए मेरी जान ही क्यों न चली जाये।"

आदमसिंह उसे बाँह का सहारा देकर आगे बढ़ा।

"गवाँर कही के ! होशियारी से जाना, नहीं तो पुलिस यह समझकर तुम्हे पकड़ लेगी कि तुम दोनों भागे हुए हो।..."

पानवाले ने गीले कपड़े से ढकी पीतल की पटरी पर सजे हुए हरे-हरे पानों पर लोटे से पानी छिड़कते हुए कहा।

पानवाले की ही ऐसी भावनाओ को प्रतिध्वनित करते हुए कुछ और दुकानदार उन दोनों पर फिकरेबाजी करने लगे।

"पाजी कही के !"

"जरूर वह उसे भगाकर लाया है !"

"देहाती गँवार ! शहर आते हैं तो इन्हे भी शौक चर्राता है, कचालू-मटर खाने का और सिगरेट पीने का !"

"देखो तो कैसे चिपटाये लिये जा रहा है !" पानवाले ने कहा और साथ ही अपने मुँह से एक कर्कश स्वर पैदा किया।

●●४

जिस घर के बारे में उन्हें बताया गया था कि वहाँ डाक्टर महेन्द्रा रहते हैं, उसका दरवाजा बहुत मामूली-सा था।

"मैंने सुना है कि मेरी बेटी यहाँ है," लक्ष्मी ने उस आदमी से कहा जो आदमसिंह के खटखटाने पर दरवाजे पर आया था।

डाक्टर साहब के खानसामा धनीराम ने उन दोनों व्यक्तियों की ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया, क्योंकि वहाँ दिन भर में ऐसे न जाने कितने लोग आते थे, जिनमें से अधिकांश नर्सिंग-होम में इलाज के लिए आये हुए रोगियों के रिश्तेदार होते थे। फिर उसने उनसे पूछा :

"क्या तुम्हारी बेटी बीमार है?"

"नहीं, बीमार तो नहीं है," लक्ष्मी ने उत्तर दिया, "पर मुझे बताया गया है कि वह यहाँ है।"

धनीराम समझदार आदमी था, वह फ़ौरन समझ गया कि वह बुढ़िया गौरी की माँ थी।

"करनैल साहब तो वहाँ मरीज़ देख रहे हैं। वह जो तम्बू लगे हैं, वही उनका नया अस्पताल है।" धनीराम ने एक तम्बू की तरफ संकेत करते हुए कहा। तम्बू के पास ही कई इमारतों की नींव पड़ी हुई थी और कुछ सिख मेमार वहाँ काम कर रहे थे। इन लोगों के आने का आशय समझकर उसने यह भी कह दिया कि डाक्टर साहब दोपहर से पहले तुम लोगों से नहीं मिल सकते।

लक्ष्मी डाक्टर साहब के घर की चौखट के सामने निराशा में डूबी बैठी रह गयी और यूँ ही एक चिर परिचित लोकगीत की पंक्तियाँ गुनगुनाने लगी :

'माँ, तूने अपनी बेटी बेची
तूने भी किया कमाल...'

"सबर करो! सबर करो!" आदमसिंह ने उसके सर पर हाथ फेरने

के लिए आगे बढ़कर उसे धीरज बँधाते हुए कहा।

"मैं बहुत फल भोग चुकी हूँ, क्यों न ?" लक्ष्मी ने आदमसिंह की तरफ देखकर कहा, "और फिर अपने को देखो ! मेरे कारण तुम क्यों मुसीबत उठा रहे हो ?"

धनीराम का दिल बुढ़िया का रोना सुनकर पसीज उठा। गौरी ने उसे अपनी माँ के बारे मे जो बताया था वह सच मालूम होता था; यही कि वह निर्दयी और पापिन थी और उसने उसे सेठ ज्वालाप्रसाद के हाथ बेच दिया था। पर गौरी ने उसे अपनी माँ की हिम्मत के बारे मे कुछ नहीं बताया था।

"तुम तो ऐसे बाते कर रही हो जैसे तुम्हारी बेटी मर गयी हो।" धनीराम ने कहा।

"पर वह है कहाँ ?" लक्ष्मी ने रोकर पूछा, "उसे लिये बिना मै गाँव नही वापस जा सकती..."

'माँ, तूने अपनी बेटी बेची
तूने भी किया कमाल !'

धनीराम ने उसी के गीत का यह टुकड़ा मानो उसे चिढ़ाने के लिए दुहराया। फिर वह घबराया हुआ सहसा दरवाजे पर से यह कहता हुआ भागा, "चौके मे सारा खाना तबाह हो जायेगा। मै सारे दिन यहाँ खड़ा-खड़ा तुमसे बाते थोड़े ही कर सकता हूँ।...जाओ, वहाँ तम्बू के बाहर जाकर इन्तजार करो। डाक्टर साहब तुम लोगों से जरूर मिलेंगे।"

लक्ष्मी को उसके इस नरमी भरे व्यवहार से कुछ धीरज बँधा। वह उठी और विनय-भरी नजरों से आदमसिंह को देखकर वहाँ से चलने का अनुरोध करनी लगी।

उस बड़े-से तम्बू की छाया मे लकड़ी की दो बैन्चों पर ग्यारह मरीज प्रतीक्षा मे बैठे थे। जब डाक्टर साहब एक-एक करके उन सबको देख चुके तब लक्ष्मी और आदमसिंह की बारी आयी। वे दोनों बड़े धैर्य-पूर्वक कुछ अन्य रोगियों के साथ, जो उनके बाद आये थे, जमीन पर

बैठे रहे। रोगियों की बातों से उन्हे कुछ-कुछ अन्दाजा हो गया था कि डाक्टर महेन्द्रा बहुत भले आदमी है और सबसे बड़ी बात तो यह कि बड़े हिम्मतवाले आदमी हैं; कि उस औरत के कारण, जिसने उनका पहले-वाला अस्पताल तुड़वा दिया था, लोगों से तरह-तरह की बातें सुनने के बाद भी उन्होंने अपना काम चलाने के लिए ऐसा अस्पताल खड़ा कर लिया था। पर किसी ने यह नहीं बताया कि 'वह औरत' थी कौन। पर लक्ष्मी और आदमसिंह दोनों ही को डाक्टर बातरा के चपरासी की बाते सुनने के बाद और डाक्टर महेन्द्रा के नौकर की बातो मे छुपे हुए संकेतो के बाद इसमें कोई भी संदेह नही रह गया था कि वह गौरी ही थी।

कौतूहल और बढ़ती हुई गरमी के कारण, जो तम्बू की छाया में भी असह्य होती जा रही थी, लक्ष्मी का चेहरा तमतमाया हुआ था। इसलिए जब उसकी बारी आयी और उसे तम्बू मे डाक्टर साहब के सामने ले जाया गया; उस समय वह बहुत घबरायी हुई थी।

और फिर उपर से वह भयंकर बात हो गयी जिसके लिए वह बिल्कुल भी तैयार नहीं थी। उसने अपनी बेटी गौरी को देख लिया। वह एक मामूली सफेद धोती पहने एक बीमार औरत को सहारा देकर दरवाजे की तरफ ले जा रही थी। एक क्षण तक तो वह स्तम्भित खड़ी रही और उसकी आँखें फटी की फटी रह गयी; फिर सहसा उसके मुँह से एक कराह निकल गयी, "हाय री...!" उसे चक्कर आ गया था, पर जिस नाटकीय ढंग से आँखें आधी मूँद कर वह मूर्छा का ढोंग कर रही थी, उतना आघात उसे सचमुच पहुँचा नहीं था।

जब वह डाक्टर साहब से मिलने आयी थी तब तो वह बीमार नहीं थी पर इस दुर्घटना के कारण उसे भी रोगियों के विशेषाधिकार मिल गये, क्योंकि इतने बड़े डाक्टर के अस्पताल मे इलाज कराना भी तो एक विशेषाधिकार था! उसे मूर्छा आते ही डाक्टर साहब ने अपने चपरासी और गौरी की सहायता से उसे उठाकर एक चबूतरे पर लिटा दिया, जिस पर वह अपने रोगियों का निरीक्षण करते थे। फिर उन्होंने अपने

सहायक से उस पर पखा करने को कहा और और खुद पानी का गिलास लेकर उसे पानी पिलाने लगे; साथ ही वह आदमसिंह की तरफ मुड़े।

"बहुत जल्दी घबरा जाती हैं यह। और मालूम होता है अपनी बेटी को एकाएक देखने का इनके स्वास्थ्य पर कोई अच्छा असर नहीं पड़ा, क्यों?"

"मैं पानी पिलाये देती हूँ," गौरी ने डाक्टर महेन्द्रा के हाथ से गिलास लेते हुए कहा।

"डाकदर साहब, अब यह अपने किये पर बहुत पछताती है," आदमसिह ने साहस करके कहा।

"हॉ," डाक्टर महेन्द्रा ने कहा। लक्ष्मी के शर्मिन्दा होने में उन्हे कुछ सन्देह ही था। "शायद शर्मिन्दा तो उतनी नही हैं जितना यह समझने लगी हैं कि इन्होंने पाप किया है।"

"बिलकुल, डाकदर साहब, मैं भी यही बात कहता हूँ," आदमसिह ने हॉ मे हाँ मिलाते हुए कहा। डाक्टर साहब जैसी महान् विभूति के सामने वह बड़ी विनम्रता से सर झुकाये खड़ा था।

ठंडे पानी के छीटों और पंखे की हवा ने लक्ष्मी को चंगा कर दिया और उसने ऑखे खोल दी।

डाक्टर साहब ने उसके पास जाकर उसकी नब्ज देखी, साथ ही वह घड़ी भी दखते जा रहे थे। एक क्षण बाद वह अपना सर हिलाकर बोले :

"थकन है और कोई बात नही! कुछ दिल भी कमजोर है।"

लक्ष्मी ने उन्हें अपनी कंजी आँखों से देखा; उसकी ऑखों में वही चमक थी जिसने उसे जादूगरनी बना दिया था। वह उस चबूतरे से नीचे उतरी और दोनों बाँहें फैलाकर अपनी बेटी की तरफ बढ़ी।

गौरी सहसा वहाँ से चली गयी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था और उसका शरीर उसके वश में नही था। उसको कुछ भी नहीं मालूम था कि उस पर अब क्या बीतेगी।

लक्ष्मी आकर बिल्कुल महेन्द्रा साहब के पैरों के पास बैठ गयी, जहाँ आदमसिंह पहले से ही बैठा हुआ था।

डाक्टर महेन्द्रा के गंभीर स्वभाव के कारण, जिसे वह बहुत समय के प्रयत्न के बाद बना पाये थे, तम्बू के अन्दर शान्ति का वातावरण इतने स्थायी रूप से स्थापित था कि आदमसिंह को वहाँ एक-एक क्षण एक युग के समान प्रतीत होने लगा। आखिरकार उस किसान ने अपनी तुच्छता की भावना को त्याग कर, जो वह डाक्टर साहब के सामने उसमें उत्पन्न हो गयी थी, हाथ जोड़कर कहा :

"इसे माफ कर दीजिये, डाकदर साहब, और इसकी बेटी को इसके साथ वापस भेज दीजिये।"

"इसने मेरा क्या बिगाड़ा है जो मैं इसे माफ कर दूँ," डाक्टर महेन्द्रा ने सख्ती से जवाब दिया; माफ कर देने की बात सुनकर उन्हें गुस्सा आ गया था।

"मुझसे गलती हुई, डाकदर साहब, मेरी गलती माफ..." आदमसिंह ने कहना आरंभ किया।

"फिर वही !" डाक्टर महेन्द्रा ने उसकी बात काटकर कहा, "माफ कर दीजिये...यह माफी क्या होती है ?...मेरी समझ में नही आता ! सामुदायिक योजनाओं और काग्रेस सरकार के बाद भी तुम गाँववालों मे कोई तबदीली नही हुई है..."

"डाकदर साहब, मेरा मतलब था..."

"मैं जानता हूँ तुम्हारा मतलब क्या था," यह देखकर कि उनकी यह अप्रत्याशित डाँट सुनकर आदमसिंह ने पहले की तरह बात करने के ढंग को छोड़ दिया था, डाक्टर महेन्द्रा ने नरमी से कहा, "मै न तो तुम्हे धौंस देकर दबाना चाहता हूँ और न उस औरत को। मैं अपनी गंभीर मुद्रा से मजबूर हूँ। मेरी सूरत तो बच्चो के उस मजाक पर पूरी उतरती है कि : भाई रोते क्यों हो ? नही, रोता नही हूँ मेरी सूरत ही ऐसी है !"

आदमसिंह मुँह खोले उस विद्वान् डाक्टर को देख रहा था, क्योंकि

वे कृपापूर्वक जो कुछ कह रहे थे उसका वह एक शब्द भी नहीं समझ रहा था।

डाक्टर महेन्द्रा को इस बात का अंदाजा हुआ कि वह उनकी बात नही समझ रहा है इसलिए उन्होंने अपनी बात को उसके ढंग से कहने का प्रयत्न किया :

"पहाड़ों मे एक कहावत मशहूर है : सूरज को सबेरे देखो और सितारो को रात में, इसके बीच में जो वक्त मिले उसमे काम करो, खेलो-कूदो, खाओ-पिओ, सोओ, प्यार करो और ईश्वर से न डरो ! इसके बजाय हम सब लोग करते क्या हैं ? हम सोने-चाँदी के अम्बार लगाते जाते हैं; जितना बन पड़ता है उतने बैल और गायें-भैंसे अपने दरवाजे पर बाँधते चले जाते है और अपनी बेटियों तक को पैसे के लालच मे बेच देते हैं..."

"मगर हुजूर, गरीबी के आगे गरीबों का कोई बस चलता है भला !" लक्ष्मी ने साहस करके कहा।

"बुढ़िया, मैं तुम्हें दोष नही देता ! मै तो सिर्फ यह कह रहा था कि इन सेठियों ने, जो माल बेचते और खरीदते है, गाँव के जीवन को तबाह कर दिया है। पुराने जमाने मे भी अक्सर तंगी होती थी पर चूँकि जमीन का कोई मालिक नही होता था इसलिए पच किसी भी ऐसे आदमी को, जो उनके पास यह शिकायत लेकर आता था कि उसकी जमीन बंजर है, उपजाऊ जमीन दे देते थे। चराई की सारी जमीन पर सबका बराबर का कब्जा होता था। दूध, घी, दही की कोई कमी नहीं थी।...अब हर किसान अपनी जमीन का मालिक होता है और उसे बेच सकता है। और चूँकि उस पर सेठजी का कर्ज होता है इसलिए होता यही है कि वह जमीन बेचकर शहर में जाकर मेहनत मजदूरी करने लगता है। अब पैसे की कदर जमीन से ज्यादा हो गयी है, इसलिए चारों तरफ विपदा और मुसीबत है। इसी का नतीजा है कि अमरू बदमाश हो गया है और इस बुढिया ने अपनी गाय को बचाने के लिए अपनी बेटी को बेच दिया..."

"पुराना जमाना अच्छा था," आदमसिंह ने डाक्टर साहब से सहमति प्रकट करते हुए कहा।

"हाँ," डाक्टर महेन्द्रा ने उत्तर दिया, "लेकिन जो बीत गया सो बीत गया, अब वह लौटकर तो आने का नहीं। हमे तो अपनी आज की हालत सुधारने की फिकर करना चाहिये।"

"डाकदर जी, मैने बड़ा पाप किया," लक्ष्मी ने दुपट्टे मे अपना मुँह छुपाते हुए कहा, "लेकिन मै करती भी क्या, वह ज्वालाप्रसाद मेरी गाय ले जाता।"

डाक्टर महेन्द्रा ने चिल्लाकर कहा, मैं दूसरी ही बात कर रहा हूँ। मैं तुम्हे दोष नही दे रहा। मै तो इन काँग्रेसवालों से नाराज हूँ जो सर्वोदय और ग्राम-सुधार की लम्बी-चौड़ी बाते बघारते हैं।...मै इन ग्राम-सेवकों को जानता हूँ। इन्हे सरकार की तरफ से इस काम के लिए तनख्वाह मिलती है लेकिन गाँव मे रहकर काम करने के बजाय ये शहरो के चक्कर लगाते रहते है। छोटे-छोटे शहरों की जिंदगी की रंगीनियों पर इनके मुँह मे पानी आ जाता है। जिस तरह इनके बाप-चचा अँग्रेजी सरकार से रायबहादुरी का खिताब पाने के लिए नाक रगड़ते थे, उसी तरह ये भारतरत्न की उपाधि पाने के स्वप्न देखते रहते हैं।...मंत्री लोग आते हैं और फूलों के हार पहनकर वापस लौट जाते हैं और लोगों को खुश रखने के लिए किसी का छोटा-मोटा काम भी करवा देते हैं, ताकि अगले चुनाव मे उन्हे फिर वोट मिले और उनकी गद्दी सलामत रहे। एक जमाने मे गाँधीजी के साथ रहकर जेल क्या हो आये है कि समझते है, रामराज्य की कम्पनी मे हिस्सा खरीद लिया है, जिसका मुनाफा इन्हे उमर भर मिलना चाहिये। सब नेहरू के नाम का फायदा उठाते है। और नेहरू को, जो कॉग्रेस के नेता होने से भी बढ़कर जनता के हीरो हैं, यह पता भी नहीं कि उनके चेले-चाँटों में कैसे-कैसे गीदड़ और बन्दर भरे पड़े हैं। यह सब देखकर मेरा तो जी जल जाता है क्योंकि लोगों की मुसीबत और मुफलिसी मे तो कोई फर्क हुआ नही है!"

"डाकदर साहब," आदमसिह ने कर्नल महेन्द्रा का गुस्सा शान्त करने के विचार से कहने का साहस किया, "गाँववाले अच्छी तरह जानते हैं कि कौन हाकिम नेक है और कौन अत्याचारी है। ..हम लोग तो सड़कें, कुएँ, स्कूल और अस्पताल बनवाने मे पूरी मदद देने को तैयार हैं लेकिन सरकार हमारी तरफ ध्यान ही नहीं देती। चंडीगढ़ के झगड़ों से किसे फुरसत है? हमारी तरफ तो विनोबाजी ने भी आने की कृपा नही की, मुझे तो यकीन है कि उनके कहने पर अमीर लोग अपनी जमीन गरीबों को दान कर देगे। बस उनके ऐसे लोग और कुछ ईमानदार नौजवान ही कुछ कर सकते हैं।"

"अरे, क्या तुम सचमुच यह समझते हो कि ये महाजन विनोबाजी के कहने से अपनी दौलत दान कर देगे? इतने भोले न बनो! तुम्हारे ये सेठ लोग तो कर्ज का सूद न अदा करनेवाले को भी अधर्मी ठहरा देते हैं। मैं कहता हूँ, ये मक्कार काग्रेसिये और पुरोहित सब एक ही थैली के चट्टे-बट्टे है। कुत्ते कही के!"

आदमसिह जैसे धर्मपरायण और नेक आदमी के लिए इस बात को सुन लेना कठिन था।

"हुजूर, आप ऐसी बाते कह सकते है, हम नही कह सकते! हमारा धर्म..."

"अरे नासमझ!" डाक्टर महेन्द्रा ने कहा; उन्हे अपने-आप पर कुछ झुँझलाहट भी हो रही थी कि वह अपनी बात को साफ-साफ शब्दो मे समझा नही पा रहे थे। लेकिन सुखी जीवन के बारे मे उन्होंने जो अपना सिद्धान्त बनाया था; पूर्व और पश्चिम के ज्ञान के मिलने से और कई देशों के रीति-रिवाजों और आचार-व्यवहार के अनुभव से ही उन्होंने यह सिद्धात निर्धारित किया था फिर बोले, "खूब है तुम्हारा धर्म! एक सामुदायिक योजना मे हिन्दुओं के तीन वर्ण अछूतों के हाथों के काटे हुए पत्थरों से सड़क बनाने से इनकार कर दें, यह धर्म है! खूब..."

"हाँ, हुजूर, माई-बाप! यह तो सच है!"

"तुम्हे इस बात से नहीं डरना चाहिये कि लोग क्या कहेंगे और तुम्हे डंके की चोट पर इन बुराइयों की निंदा करनी चाहिये। कौटिल्य ने कहा है : हमेशा सरकार की शिकायत करो—उसे चौकस रखने का यह सबसे अच्छा तरीका है।"

"डाकदर साहब, मेरी समझ मे तो आप की बात आती नही," आदमसिह ने हाथ जोड़कर कहा, "बात यह है कि मैं भी उन्ही गाँववालों जैसा हूँ जिनसे आपको इतनी नफरत है। मैं जानता हूँ लोग मुझे अच्छा इसीलिए कहते है कि मैं मन्दिर मे जाता हूँ, अपना कर्ज वक्त पर चुका देता हूँ और मेहनत से काम करता हूँ।"

"अरे, मैं गॉववालों से नफरत नही करता।" महेन्द्रा साहब ने कहा, "मै तो तुम लोगों की पूजा करता हूँ।...परतु मै तो अपने इस अभागे देश मे सुखी जीवन देखने के लिए बेचैन हूँ। धन-दौलत और जमीन-जायदाद को पहले गोरे साहबों ने जो महत्व दे रखा था और अब हमारे ऐसे काले साहबों ने जो महत्व दे रखा है, उसके कारण आज हर चीज दूषित हो गयी है। मैं तो यह जानता हूँ कि मनुष्य के अलावा कोई दूसरा देवता है ही नही—वही दरिद्रनारायण है!"

आदमसिह और लक्ष्मी डाक्टर साहब का मुँह इस तरह ताक रहे थे मानो वे पिपलॉकलॉ मे बरगद के पेड़ के नीचेवाले चबूतरे पर बैठे हुए किसी साधु की बाते सुन रहे हों।

"तो डाकदर जी, आप कर्मयोगी हैं, क्यों न!" आदमसिह ने बड़े विनम्र भाव से साहस करके कहा।

"मैं यह तो नही जानता कि मै क्या हूँ," महेन्द्रा साहब बोले, "लेकिन मैं इतना जरूर जानता हूँ कि मै इस तम्बू में इसलिए बैठा हूँ कि इस होशियारपुर शहर के पैसेवालों ने और धर्म के ठेकेदारों ने मेरा वह अस्पताल नष्ट कर दिया जो मै अपने साझेदार के साथ चलाता था। उन लोगों के कानों में यह बात पड़ी कि मेरे साझेदार गौरी से प्रेम करते हैं। यह तो ठीक है कि बातरा साहब को वासना का शिकार होने से

पहले यह मालूम कर लेना चाहिये था कि वह लड़की भी राजी है कि नहीं, पर उन्होंने कोई ऐसा बहुत बड़ा पाप नही किया था। शहर के लोगों की बातों ने हमारी साझेदारीं भंग कर दी, लेकिन उन्होंने हमारा जो बायकाट किया है वह पूरी तरह सफल नही हुआ है, क्योंकि रोगी अब तक मेरे पास आते हैं। शायद, जो हुआ अच्छा ही हुआ, क्योंकि अब मैं अपनी मर्जी का अस्पताल बनाऊँगा, जहाँ केवल रोगी ही नहीं बल्कि उनके रिश्तेदार भी आकर छोटी-छोटी झोपड़ियो मे रह सकेंगे, और इन अमीरों का इलाज करने मे सहायता दे सकेंगे।"

वह एक क्षण के लिए रुके। फिर उन्होंने अपना मुँह फेर लिया, मानो वह युद्ध की अग्नि मे झुलसे हुए योरप के पार, जहाँ स्वाभाविक सुख के बारे मे एक पारलौकिक सत्य का ज्ञान हुआ था, किसी धूमिल प्रदेश से अपनी आत्मा की मंत्रणाएँ सुन रहे हों। फिर वह इस प्रकार बोले मानो अपने-आप से बातें कर रहे हो।

"हमें मौत और गरीबी की यातना को खत्म करना है। हमे एक ही जीवन तो मिलता है..."

"तो फिर क्या मनुष्य का दूसरा जन्म नहीं होता?" आदमसिंह ने विस्मित होकर पूछा।

"मुमकिन है होता हो, या न भी होता हो, परन्तु मेरा तो ख्याल यह है कि अच्छे या बुरे कर्मों के बदले एक उच्चतर या निम्नतर योनि में जन्म लेने का विचार एक भ्रम है, जो दासों के मालिकों ने मर्दों और औरतों को काम पर लगाये रखने के गढ़ लिया था।"

"हाय हाय, आप क्या कह रहे है?" लक्ष्मी बोली।

"मैं जो कुछ कह रहा हूँ उससे तुम लौटकर ज्यादा आसानी के साथ लोगों का सामना कर सकोगी," डाक्टर साहब ने उत्तर दिया, "तुम्हें अपनी बेटी को नही बेचना चाहिए था। मैं समझता हूँ कि अपनी गाय के बजाय तुम गौरी को बेचने पर इसीलिए तैयार हो गयी कि तुमको तंगी के जमाने में मनहूस पैसे का लालच था। इसलिए तुमने कोई ऐसा

पाप नहीं किया जिससे तुम्हे छुटकारा न मिल सकता हो। लेकिन अब कभी लडकी के साथ ऐसा अन्याय न करना।"

"तो फिर मैं उसे ले जा सकती हूँ ?" लक्ष्मी ने हाथ जोड़कर पूछा।

"हाँ, अगर तुम उसे उसके पति को लौटा दो," महेन्द्रा साहब ने कहा।

"इसीलिए तो हम लोग यहाँ आये थे, मालिक !" आदमसिंह ने कहा।

"मुझे मालिक या हुजूर मत कहो ! बस खाली डाक्टर !"

"आप बने रहे, आप तो शरीर और आत्मा दोनों के रोगों को अच्छा करते हैं !" आदमसिह ने गहरी भक्ति की भावना से भरकर जैसे भगवान् की प्रार्थना की, "आपको नेकी का फल भगवान् देगा।"

"यह तो मै नही जानता कि मै टूटे हुए दिलों को जोड़ सकता हूँ कि नही, लेकिन हाँ, शरीर के रोगों को शायद ठीक कर सकता हूँ।..." डाक्टर महेन्द्रा ने इस तुच्छता के प्रदर्शन पर अधीर होकर अस्फुट स्वर मे कहा।

"मैं आपको कभी नही भूलूँगा," आदमसिह बोला, "मगर, डाकदर जी, आप को आकर हमारे गॉव के उन सब लोगों को ये बातें बताना चाहिये जिनके दिल मर चुके हैं।"

"वह मुझे नास्तिक, अधर्मी, बिगड़ा हुआ साहब समझेंगे, कहेगे कि विलायत में रहते-रहते मै खराब हो गया हूँ !" डाक्टर महेन्द्रा ने बनावटी व्यंग्य से कहा, "और वे अपने धर्म और धन-दौलत के नये देवताओं की गुलामी आसानी से थोड़े ही छोड़ देंगे ! वे उसी वक्त बदलेगे जब कोई बहुत बड़ी उथल-पुथल उनको नया जीवन देगी, पृथ्वी मे नयी जान डाल देगी। मैं तो इसे भी बुरा नहीं कहता, मगर वह इतने मूर्ख और बेरहम होते हैं कि गौरी जैसी लड़कियों को होशियारपुर के भेड़ियों के मुँह में डालने से पहले उनकी भावनाओं का जरा भी ख्याल नही करते..." उनके स्वर में एक अधीरता थी और साथ ही एक कोमलता

भी, जिसके कारण उनकी आँखों में कुछ नमी आ गयी थी। उनकी आवाज में भर्त्सना का भाव देखकर लक्ष्मी रोने लगी।

"बस, देखा तुमने !" डाक्टर महेन्द्रा इतना कहकर अपनी कुर्सी से उठ खड़े हुए और इस परिस्थिति मे अपनी उलझन को दूर करने के लिए उन्होंने एक सिगरेट निकाली। सिगरेट सुलगाकर वह तम्बू मे इधर-से-उधर टहलते हुए कहने लगे, "खूब जी भरकर रो लो, तभी तुम हँसोगे भी ज्यादा अच्छी तरह !"

"डाकदर जी, बस एक बार मै अपनी बेटी को उसके पति के पास पहुँचा दूँ तो मै सुख से मर सकूँगी।"

डाक्टर महेन्द्रा तम्बू के बगल की तरफवाले दरवाजे की ओर गये और चिक उठाकर बाहर निकल गये। शीघ्र ही वह गौरी की बाँह पकड़े हुए उसे अपने साथ अन्दर लाये और धीरे से धक्का देकर उसे उसकी माँ के सामने कर दिया।

"ले जाओ इसे, नही तो कहीं मैं ही इससे ब्याह न कर लूँ," उन्होंने सिगरेट का एक लम्बा कश लेते हुए कहा और हँस दिये।

आदमसिंह और लक्ष्मी दोनों ही इस विचित्र व्यक्ति को देख रहे थे और गौरी ने, जो डाक्टर साहब की बेतकल्लुफी और ढिठाई की आदी हो चुकी थी, लजाकर अपना दुपट्टा माथे पर खीच लिया।

डाक्टर महेन्द्रा ने लड़की की तरफ शरारत-भरी नजरों से देखा और बोले :

"घर पहुँचकर पंछी को पूरी तरह खुश रखना।"

"डाक्टर साहब !" गौरी ने शर्माकर प्रतिरोध करते हुए कहा।

"तो क्या हम सचमुच इसे ले जा सकते हैं ?" बुढ़िया ने पूछा, उसे इस उदारता पर विश्वास नहीं आ रहा था।

"हाँ, यह अपना सामान और अपनी तनख्वाह ले ले," डाक्टर महेन्द्रा ने उत्तर दिया, "अब कोई दिक्कत नही है, तुम लोग बाहर जाकर बैठो। वह रोगियों का काम खतम करके अभी वहीं आ जायेगी।"

लक्ष्मी डाक्टर साहब के पैरों पर गिर पड़ी। उसकी आँखों से आसुओं की धारा बह निकली। सुबह उसे जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था उससे तो उसे यह भय हुआ था कि अभी उसे न जाने कितनी बाधाओं और कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा, मगर सब कुछ सकुशल समाप्त हो गया।

गौरी सहारा देकर उसे बाहर ले गयी।

आदमसिंह भी अपने इस उदार शुभचिन्तक के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए हाथ जोड़े हुए चुपचाप बाहर चला गया।

डाक्टर महेन्द्रा उनके दब्बूपन को दूर करने मे सफल न हो सके थे, उन्होंने अपनी आधी जली हुई सिगरेट एक मुर्दे की खोपडी मे बुझा दी, जो राख झाड़ने के काम आती थी और चपरासी को बुलाने के लिए घंटी बजायी।

आठ

●●१

बुढ़िया, आदमसिंह और गौरी सूर्यास्त के बाद पिपलाँखुर्द पहुँचे और गोधूलि बेला के झुटपुटे मे उस घर की तरफ चले जहाँ पछी पड़ा था। उसके सर का जख्म अभी पूरी तरह अच्छा नही हुआ था। लक्ष्मी और आदमसिंह ने जान-बूझकर गोधूलि का यह समय गाँव वापस आने के लिए पसंद किया था, क्योंकि इस अँधेरे मे गाँववालों की कौतूहल-पूर्ण निगाहे उन्हे नही देख सकती थी, क्योकि गाँववालो के जीवन का लक्ष्य ही यह मालूम होता था कि किसी के बारे मे कोई चटपटी खबर उड़ाये; और फिर यह बात भी थी कि होशियारपुर से आखिरी बस भी पिपलाँखुर्द के सबसे पासवाले अड्डे पर, जो गाँव से आधा मील दूर था, शाम को ही पहुँचती थी। वे लारी से उड़नेवाली गर्द से अटे हुए थे, उनका सारा शरीर पसीने मे तर था और वे गर्मी से परेशान थे। जिस समय वे कोठरी मे आये तो उन तीनों की सूरत भूतों जैसी लग रही थी। हूरबानो पंछी का सर दबा रही थी; उन्हे देखकर वह इतनी चकित हुई कि उसके हाथ जहाँ के तहाँ रुक गये और रफीक चाचा जो पाँयती बैठे हुक्का पी रहे थे, उनका स्वागत करने के लिए हड़बड़ाकर उठ बैठे।

"सच कहा है इक सा विच सौ साँस !"

पंछी भी उन लोगों को भौचक्का होकर घूरता रहा।

"बेटा !" लक्ष्मी ने लपककर हूरबानो का स्थान ले लिया और पंछी का माथा सहलाने लगी। आदमसिंह उसकी इस दिखावटी ममता पर मन ही मन मुस्करा रहा था और कुछ सकपकाया हुआ-सा अपनी गरदन का पसीना पोंछ रहा था।

गौरी चुपचाप जाकर चारपाई की पाँयती लम्बा-सा घूँघट काढ़कर बैठ गयी।

"तो तुम उसे वापस ले आयी।" पंछी ने कटुता से कहा; उसके सिर की पीड़ा ही शायद इस कटुता का कारण थी; इसके अतिरिक्त इस कटुता का कारण उसका आत्मक्षोभ और आत्माभिमान की भावना भी थी।

"बेटा, वह सही-सलामत लौट आयी!" बुढ़िया ने उसे आश्वासन दिलाते हुए कहा, "बड़े डाकदर साहब ने, जिनके अस्पताल मे यह नर्स का काम करती थी, हमारे ऊपर बड़ी कृपा की। कैसे बताऊँ, वह कितने भले आदमी है!...उन्होंने बड़े ज्ञान की बाते बतायी।"

लक्ष्मी और अमरू ने पंछी के साथ जो ज्यादतियाँ की थी, उन्ही ज्यादतियों के बारे मे सोच-सोचकर पंछी इस समय मन ही मन कुढ़ रहा था, उनकी ओर से उसका ध्यान हटाने के लिए आदमसिह ने लक्ष्मी की बात मे योग देते हुए कहा, "हाँ बेटा, करनैल महेन्द्रा साहब मे यह बात तो है, है बड़े भले आदमी। उन्होंने गौरी को नर्स का काम सिखा दिया है और वह थोड़े ही दिन मे तुझे चंगा कर देगी। और मुझे तो यह भी यकीन है कि उनके यहाँ इसे कुछ अकल भी आ गयी होगी और अब यह घरवाली भी ज्यादा अच्छी बन सकेगी।..."

"तुम तो धर्मात्मा आदमी हो," पंछी ने व्यंग्य से कहा, "हर बात की अच्छाई को ही देखते हो।"

आदमसिंह को पंछी का यह आरोप सच ही मालूम हुआ और वह आगे बढ़कर उसके सर पर हाथ फेरने लगा। फिर खिसियानी हँसी हँसकर दूसरी तरफ देखते हुए उसने पंछी को और आश्वस्त करने का प्रयत्न करते हुए कहा, "गौरी को जब सेठ ज्वालाप्रसाद के यहाँ ले जाया गया, उसके बाद दो दिन और दो रात उसे बड़ा तेज बुखार रहा, इसीलिए डाक्टर महेन्द्रा इसे सेठजी के यहाँ से ले आये थे।.. सेठजी इस बात पर बहुत ही गुस्सा हुए और करनैल साहब ने तो इसे अपने अस्पताल में रख

कर अपनी सारी नेकनामी खतरे में डाल दी थी। मगर अब सब ठीक हो जायेगा।"

"लो भैया, चटाई पर बैठ जाओ," हूरबानो ने आदमसिंह को हाथ की बुनी हुई एक मोटी-सी चटाई देते हुए कहा।

"ये लोग थक गये होंगे," रफीक चाचा ने कहा, "मैं जाकर दूला हलवाई से कहे आता हूँ, वह तुम लोगों के लिए चाय बना लायेगा।" वह कुम्हार जानता था कि हिन्दू सास होने के नाते लक्ष्मी अपने दामाद के घर कुछ नही खायेगी। इसीलिए वह हलवाई की दुकान से खाने-पीने की चीजें मँगाने को तैयार हो गया था।

"नही, नही," लक्ष्मी बोली, "हम लोग तो अभी चले जायेंगे। भैया आदमसिंह और मैं, दोनों ही।" उसे कुछ-कुछ आभास हो गया था कि उसके प्रति पंछी का विरोध अभी तक कम नहीं हुआ था; इसलिए उसने सोचा कि सबसे अच्छा यही है कि वह रास्ते से हट ही जाये।

"हाँ, हाँ, हम तो चलेंगे," आदमसिंह ने भी लक्ष्मी का समर्थन करते हुए कहा।

"नहीं, नही, मै अभी चाय बनाये देती हूँ," गौरी ने पंछी के पॉयती से उठकर अपनी रसोई की ओर जाते हुए कहा।

"मै तुम्हारे चूल्हे के लिए आग लाये देती हूँ," हूरबानो ने गौरी से कहा।

"हा, हाँ," रफीक चाचा ने प्रोत्साहन दिया।

पर वह बुढ़िया रीति-रस्म की बड़ी पक्की थी। और इसके अलावा पंछी की त्योरियों पर बल देखकर उसने बहुत झुम-झूमकर जोर देकर कहा :

"मैं अपना काम पूरा कर चुकी। मैंने एक पाप किया था, उसका प्रायश्चित्त पूरा हो गया; मैने लड़की को वापस ला दिया। यह लड़की है ही इतनी सुन्दर कि सब इसके रूप को निहारते रह जाते हैं। अस्पताल के छोटे डाक्टर साहब हाथ धोकर इसके पीछे पड़ गये थे। मगर बड़े

डाक्टर साहब ने अस्पताल टूटने की परवाह न करके इसे बचा लिया। अब यह यहाँ आ गयी है।...अच्छा तो हम लोग चलते हैं।"

"भाई, थोड़ी देर मे रात हो जायेगी और पिपलॉकलाँ का रास्ता पूरे कोस भर का है।" रफीक चाचा ने कहा। "कोई बात नही है, चाँदनी रात है," लक्ष्मी ने उत्तर दिया, "करीब-करीब पूरा चाँद होगा, ठंडे-ठडे निकल जायेगे।"

"शायद तकदीर से कोई इक्का मिल जाये," आदमसिह ने बात जोड़ते हुए कहा, "चाहे उसके लिए कितनी ही दूर क्यों न चलना पड़े, अपने घर के बराबर सुख कही और नही मिलता।"

पंछी एक शब्द भी न बोला। बस वह सामने शून्य मे घूरता रहा, मानो लक्ष्मी और आदमसिह दोनों से आँखे चुरा रहा हो। गौरी को वापस पा जाने की उमंग मे उसके चेहरे पर एक रंग दौड़ गया था और वह नहीं चाहता था कि किसी को उसके इस असीम आन्तरिक संतोष का पता चले। उसने देखा कि उसकी बीवी ने शहरवालों के ढंग से तिरछी माँग निकाल रखी थी।

रफीक चाचा और हूरबानो भी उसकी खामोशी का मतलब समझ गये और इसीलिए फिर उन्होने भी ज्यादा जोर नही दिया।

गौरी भी उजाड़ रसोई पर एक नजर डालकर वापस लौट आयी और जान-बूझकर उसने जल्दी से आदमसिह के पैर छुये और फिर अपनी माँ के पैरो पर सर झुका दिया।

बुढ़िया और आदमसिंह के मन मे जाने के बारे मे जो थोड़ा-बहुत संकोच था भी, वह गौरी के इस प्रकार उन्हे विदाकर देने के कारण दूर हो गया।

एक क्षण के लिए तो बिल्कुल निस्तब्धता छायी रही, किसी के साँस लेने की भी आवाज नही सुनाई दे रही थी। पंछी के रवैये के कारण वातावरण मे और भी तनाव आ गया था।

आदमसिंह ने महसूस किया कि उन सबके विचार एक ही शृंखला

में जुड़े हुए थे। वे सब इसी एक बात के बारे में सोच रहे थे कि लड़की को बेचकर पंछी के साथ बड़ा अन्याय हुआ था। जाने से पहले उसने सोचा कि वह इस गुत्थी को सुलझा ही दे तो अच्छा है। इसलिए वह जाने का इरादा करके भी वहाँ से काफी देर तक गया नहीं। वह बोला, "डाकदर महेन्द्रा साहब से मिलने के बाद मेरी समझ में यह बात आ गयी है कि हम किसान लोग बहुत डरे-डरे रहते हैं। और हम लोग बहुत दब-कर रहते हैं। हम लोग अपनी इज्जत-आबरू को भूल गये हैं। मगर सच बात यह है कि हर आदमी भगवान के इशारे पर चलता है। हमारे सबके लिए दो रास्ते खुले हैं : एक तो रास्ता है मुसीबते सहते रहने का और दूसरा है हमेशा काम करते रहने और दूसरों की मदद करने का रास्ता..."

पंछी जहाँ लेटा था, वहीं से उसने सर उठाकर कहा, "उन्होंने तुम्हें यह नहीं बताया कि हम सभी लोग विपदाओं के भँवर में फँसे है, हम अकाल और नफरत के शिकार है। क्या यह सच नही है कि हम लोग उसी तरह पिसे जा रहे हैं जैसे कोल्हू में सरसों ? क्या हम एक-दूसरे का गला काटने, मुकदमेबाजी और गंदी बातों के शिकार नही हैं ?"

"हाँ बेटा," आदमसिंह ने उत्तर दिया, "उन्हे भी ये सब बाते मालूम हैं।"

"तब इसमें भगवान का इशारा कहाँ है !" पंछी ने पलटकर प्रश्न किया।

"करनैल महेन्द्रा साहब बड़ी-बड़ी चीजों की बात कर रहे थे।...वह बड़े विद्वान् आदमी हैं और उन्हे उन गरीबों से मुहब्बत है। उनका ऐसा ख्याल मालूम होता था कि हमारे देश की मुसीबतें दूर हो सकती हैं, अगर हम एक-दूसरे की मदद करें। और ऊपरी तौर पर जिंदगी की जो छोटी-छोटी बाते दिखाई देती हैं, वे सब दूर हो जायेंगी और तब बुनियादी बातों की सच्चाई का पता चलेगा। तभी हमें सत्य और गाँधी महात्मा का रामराज मिलेगा।"

"कब पता लगेगा, जब तुम मरकर नरक मे पहुँच जाओगे।" पंछी ने कटुता से कहा।

"राम-राम!" लक्ष्मी ने अन्धविश्वास से कहा।

"हाँ बेटा," आदमसिह ने उत्तर दिया, "जीवन ब्रह्मा की दृष्टि मे एक कण के बराबर है। जीवन मे भला और बुरा तो लगा ही रहेगा। हमें बस काम करते रहना चाहिये और संघर्ष करते रहना चाहिये, दूसरों की मदद करते रहना चाहिये। भारतमाता बहुत बड़ी हैं, और जब हमारे यहाँ महेन्द्रा ऐसे लोग और तुम्हारे ऐसे नौजवान हैं तो हमारे देश मे सुख का राज होकर रहेगा!"

"दुनिया मे कुछ तो न्याय होना चाहिये।" पंछी ने तल्खी से कहा।

"धीरज रखो बेटा, धीरज रखो!" आदमसिह ने सलाह देते हुए कहा, "भगवान का नाम लो, सब ठीक हो जायेगा!" और यह देखकर कि उस लड़के का हृदय कटुता से भरा हुआ है, उसने बुढ़िया की तरफ हाथ बढ़ाते हुए कहा, "आओ, लक्ष्मियाई, चले..."

लक्ष्मी ने अपनी बेटी को गले लगा लिया और रोने का ढोंग करने लगी।

"जा, जा, मक्कार कही की!" पंछी ने मुँह फेरकर कहा।

गौरी ने अपनी माँ को बाहर की तरफ ठेल दिया। वह डर रही थी कि उसके पति का क्रोध कही भड़क न उठे।

आदमसिह ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया और लक्ष्मी को साथ लेकर चल दिया।

इस निस्तब्धता में जब वे वहाँ से रवाना हुए तो गौरी ने जो दिया जलाया था, उसकी बत्ती कुछ तेज हुई और कोठरी मे ज्योति का एक छोटा-सा घेरा जगमगा उठा।

●●२

गौरी ने चौके में जाकर बहुत दिन से ठंडे पड़े हुए चूल्हे में आग सुलगायी और दूध गरम करने लगी। बात यह थी कि पंछी और गौरी दोनों ने ही रफीक चाचा के यहाँ खाना खाने का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था, इसलिए रफीक चाचा ने बाजार से थोड़ा-सा दूध ला दिया था।

इसी बीच, गौरी के वापस आने से पंछी के हृदय में जो उमंगें हिलोरें ले रही थी वे अपनी चरम सीमा को पहुँच गयी। वह इस विचार को पास भी नहीं फटकने देना चाहता था कि उसने गौरी को घर से निकाल दिया था। यद्यपि पछी के सर में दर्द हो रहा था और उसके अंग-अग में कमजोरी समायी हुई थी, फिर भी वह अपनी काम-पिपासा को तृप्त करने के लिए व्याकुल हो रहा था। भय और आशा से उसका हृदय धडक रहा था। वह उसके मटकते हुए कूल्हों को देख रहा था।

फिर भी उन दोनों के बीच एक अजीब सा खिंचाव पैदा हो गया था। प्रेम-प्रदर्शन में परम्पराजन्य सकोच के आवरण के अतिरिक्त दोनों में एक प्रकार का आत्माभिमान का हठ आ गया था। जिस प्रकार वे दोनों एक दूसरे से अलग हुए थे, उसकी स्मृति और उन्होंने जो विपदाएँ सहन की थी, वे ही इसका कारण थीं।

दोनों मे से कोई भी न बोला। गर्मियों की उस सन्ध्या को कोठरी के वातावरण मे एक खिचाव-सा था; रसोई के बाहर नाली से किसी झींगुर के बोलने की आवाज आ रही थी। बाहर ऑगन से रफीक चाचा के हुक्के की गड़गड़ाहट सुनाई दे रही थी। वह खाना खा कर चारपाई पर बैठे प्रतीक्षा कर रहे थे कि हूरबानो अपना काम खत्म कर ले तो दोनों ऊपर छत पर जाकर सोयें।

जब दूध गरम हो गया तो गौरी ने उसका अधिकांश पीतल के गिलास में उँडेला और गिलास को अँगौछे में लपेटकर पंछी की तरफ

चली।

रफीक चाचा ने एक झलक उसे पास से गुजरते देखा। वह इस बात को भलीभाँति समझते थे कि युवा दम्पति को एकान्त की आवश्यकता है, इसलिए उन्होंने छत पर जाने से पहले अपनी अन्तिम बात कहने के लिए यही अवसर उचित समझा।

"अरे पंछी," उन्होने पुकारा, और फिर कोठरी मे प्रवेश करने से पहले अपने आगमन की सूचना देने के लिए बाहर रुक कर खाँसने लगे, "कहो, अब तुम्हारा जी कैसा है?"

"आओ, रफीक चाचा आओ," गौरी ने कहा।

उस कुम्हार ने गौरी के चेहरे की तरफ न देखकर इधर-उधर झाँकते हुए कहना आरम्भ किया, "तुम दोनों मेरे ख्याल से बाहर आँगन मे सो जाओ; हूरबानो और मैं तो ऊपर छत पर सोने जा रहे है।...और तुम दोनों कुछ थोड़ा-सा खा भी लो। अगर तुम्हारा जी चाहे तो हूरबानो ने बावर्चीखाने मे थोड़ा-सा गोश्त और रोटी छोड़ दी है।" "नही रफीक चाचा, इस सब झंझट की कोई जरूरत नही," गौरी ने अपने पति के सिराहने स्टूल पर दूध का गिलास रखते हुए कहा।

कुम्हार अपने शर्मीले स्वभाव के कारण ज्यादा आग्रह न कर सका।

"अच्छा, तो खुदा हाफिज!" उसने बाहर आँगन में निकलते हुए एक बार फिर कहा, "आँगन खाली है और मैने तुम्हारे लिए दो चारपाइयाँ डलवा दी हैं।"

"अच्छा, रफीक चाचा," पंछी ने अधीरता से धीमे स्वर मे कहा और फिर उसने एक गहरी साँस ली, मानो वह एक आह के साथ अपनी सारी थकन और सर के दर्द को दूर कर देना चाहता हो। फिर उसने सर उठाकर गौरी की तरफ देखा, उसका दिल जोरों से धड़क रहा था।

उसकी पत्नी जड़वत् खड़ी इस बात की प्रतीक्षा कर रही थी कि रफीक चाचा की आवाज की प्रतिध्वनि खत्म हो जाये। कुछ देर बाद

वह पंछी के शरीर पर झुककर चारपाई की पट्टी पर बैठ गयी और अपने पति को दाहिनी भुजा में लपेटकर उसने अपना गाल उसके सीने पर रख दिया। यह सब कुछ गौरी ने बड़े सरल भाव से किया था कि उसका व्यवहार बनावटी और पहले से सोचा-समझा न मालूम होने पाये। यद्यपि उसने पहले से सब कुछ सोच रखा था कि उन दोनों के बीच जो एक दीवार सी खड़ी हो गयी थी उसे ढाने का सबसे आसान तरीका क्या हो सकता है।

पछी को इसकी आशा भी नहीं थी कि उसे सहसा इतना प्रेम प्राप्त होगा, यद्यपि यह भी सच है कि वह गौरी के लिए तड़प रहा था। सहसा ज्यों ही उसने गौरी के चेहरे का स्पर्श अनुभव किया, उसने उसे पास खींचकर सीने से चिपटा लिया और अधीर होकर पागलों की तरह बोला, "मैं अब तक नरक में था। चारों ओर अन्धकार था...अब तुमने आकर फिर उजाला कर दिया है और मैं हर चीज देख सकता हूँ!" इन भावनाओं में इतना आवेश था कि पंछी हर शब्द को बहुत धीरे-धीरे कह रहा था।

गौरी ने अपने होंट उसके चमकते हुए माथे पर रख दिये। गौरी को ऐसा प्रतीत हुआ कि उसके शरीर के रोम-रोम में पंछी के प्रति ममता की लहरें उठ रही हैं; उसने चाहा कि वह अपनी वाणी के माधुर्य और अपने आलिंगनों से उसकी सारी व्यथा दूर कर दे। पर उसने ऐसी ऊँचाइयों को छू लिया था कि वह अनेक बंधनों से मुक्त हो गयी थी; इसलिए वह अँधेरे में जहाँ की तहाँ लेटी रही और कोठरी के वातावरण को अपनी आँखों की ज्योति की सुइयों से बेधती रही, वह इस पुनर्मिलन के महत्व, उसकी वेदना और सुख को समझने की निष्फल चेष्टा करती रही। वह इसके अलावा और कुछ भी न समझ सकी कि उसका पंछी अब उसके पास था। वह धीरे-धीरे उसके जख्मी सर को सहलाती रही।

पछी गौरी के शरीर के बोझ के नीचे गहरी-गहरी साँसें ले रहा था, जब उसके पीड़ा होती तो उसका हृदय और भी जोर से धड़कने लगता।

जो विचार उसे व्यथित कर रहे थे उनका बोझ हल्का करने के उद्देश्य से उसने गहरी साँसें लेते हुए कहा :

"मैं...मैं क्रोध मे पागल हो गया था ! बिल्कुल पागल हो गया था...एक दिन झुँझलाकर मैंने अपना सर दीवार पर दे मारा।...अब, अरे अब जाकर मै साँस लेने लायक हुआ हूँ। मगर यह सब बातें तो बाद की हैं।...आओ, पहले तो मैं तुम्हें अपने सीने से लगा लूँ।.. आ जा, आ जा गौरियाई ! मेरे पास आजा, मैं...मैं तेरे बिना मरा जा रहा हूँ..."

उसकी बलिष्ठ भुजाओं मे भिचकर गौरी की चेतना गायब हो गयी और उसने अपना शरीर उसके बाहुपाश मे बिल्कुल ढीला छोड़ दिया। उसकी आँखों मे और आँसू उमड़ आये थे।

पंछी को ऐसा लग रहा था कि वह गौरी की शारीरिक उपस्थिति को पूरी तरह अनुभव नही कर रहा है; उनके कपड़े उन दोनों के बीच मे बाधा डाल रहे थे। यह अनुभव करते ही पंछी ने अपने कुर्ते के बटन खोल दिये और गौरी का सर अपने सीने पर रख लिया ताकि वह सुन सके कि उसका दिल उसके लिए किस तरह धड़क रहा है।

उसके सीने पर सर रखे गौरी लम्बी-लम्बी आहे भर रही थी और फिर एक सिसकी लेकर उसने अपनी उँगलियाँ पछी के शरीर मे कसकर गड़ा दी और संकोच के उन सब बन्धनों को तोड़ दिया जो उसे रोक रहे थे। वे एक-दूसरे के पसीने मे नहाये हुए थे। अन्धकार की गुफाओं मे वे कुछ ढूँढते रहे और शीघ्र ही दोनों अपने चारों ओर की घोर निशा मे विलीन हो गये, केवल उनका उन्माद ज्वालाओं की तरह उनके चेहरों पर चमक रहा था।

●● ३

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही गौरी अपनी गृहस्थी को ठीक करने मे

व्यस्त हो गयी। सभी हिन्दू स्त्रियो की तरह वह भी विश्वास करती थी कि यदि गृहिणी एक दिन के लिए भी घर से चली जाये तो सारे बरतनो और चौके की पवित्रता भ्रष्ट हो जाती है। इसलिए जब तक वह सारे बरतनो को राख से माँजकर चमका न लेती, तब तक घर का कोई काम ही नही हो सकता था।

इसलिए वह मुँह-अँधेरे ही काम मे जुट गयी और जब पछी ने आँखे खोली, उस समय वह उसके लिए चाय का गिलास लिये तैयार खड़ी थी।

पंछी ने अलमारी में चमकते हुए बरतनों को सजा हुआ देखा और फिर उसकी नाक मे ताजे गोबर की सुगध आयी, जिससे सारा घर लीपा गया था। हिन्दू पतियो की तरह, जो यह समझते है कि औरतो का काम घर को साफ-सुथरा रखना है और मरदो का काम खेती-किसानी करना है, उसने भी बड़ी लापरवाही से सारे घर पर एक सरसरी नजर डाली, मानो वह किसी राज्य का एकछत्र राजा हो। पर उसके देखने के ढग मे आश्चर्य भी छुपा हुआ था, क्योकि इससे पहले कि गाँव की दूसरी औरते घर का काम-काज शुरू करती, गोरी सारा काम निबटा कर उसकी चारपाई पर आकर बैठ गयी थी और सफेद धोती पहने हुए वह गरम पानी मे तौलिया इस प्रकार भिगो रही थी मानों कोई मशीन हो।

"मालूम होता है तुमने होशियारपुर जाकर वहाँ ईसाई मेमनियों को काम करते देखा है," पंछी ने व्यंग्य किया।

"मै तुम्हारा शरीर गरम पानी से पोछने जा रही हूँ," गोरी ने दृढ़ स्वर मे कहा, "इसलिए तुम जी कड़ा करके चुपचाप लेटे रहो, मै तुम्हारी सफाई कर दूँ। मुझे तुमको कुछ सलीका सिखाना पड़ेगा।"

"हाँ हाँ, क्यो नही, बहुत चहकने लगी हो! बाते तो देखो कैसी करने लगी है! तेरी जबान काटनी पड़ेगी!"

"अच्छा अच्छा, बस अच्छे रोगियो की तरह पड़े रहो। मै तुम्हे सभ्य आदमी बना दूँगी।"

"है, यह क्या बात कही ? मैं शरीफ बनना नहीं चाहता। मै कोई शहर का बाबू थोड़े ही हूँ। इसलिए भलीमानस, अपने यह सब नये चोंचले भूल जा ! मुझे यह बता कि होशियारपुर की मंडी मे चीजों का भाव क्या है ?"

गौरी ने ज्यादा बहस नही की, लेकिन एक कुशल नर्स की तरह, जो वह अब तक बन गयी थी, उसने पंछी का कुरता उतारा और एक गरम गीले अँगौछे से उसका शरीर पोंछने लगी।"

"क्या कर रही हो तुम यह ?" पंछी ने बालकों की तरह हठ करते हुए कहा।

उसकी गरदन को रगड़कर पोछते हुए गौरी ने कहा, "हमारे गाँव मे सफाई सूरज के जिम्मे छोड़ दी जाती है। अगर सूरज रोज सवेरे न निकलता तो हम सब तो अब तक मर गये होते। रोगो को पनपने के लिए इससे अच्छी जगह और क्या मिल सकती है।"

जिस समय वह यह कह रही थी, रफीक चाचा ने खाँसकर अपने आने की सूचना देते हुए हाथ मे हुक्का लिए प्रवेश किया।

"क्यो भैया पंछी राम !"

"मैं इनका बदन पोछ रही हूँ," गौरी ने मुँह पर दुपट्टा खीचे बिना ही उत्तर दिया, यद्यपि पिपलाँखुर्द से जाने के पहले वह हमेशा दुपट्टा मुँह पर सरका लिया करती थी।

उसका पति रफीक चाचा की ओर देखने के बजाय उसका मुँह ताकने लगा; उसकी इस बेहयाई पर उसे कुछ धक्का-सा लगा था।

"मालूम होता है इसीलिए तुम्हारे कपड़े उतार दिये गये है," रफीक चाचा ने गौरी की तरफ से आँखें फेरे हुए ही पछी से कहा।

गौरी ने रफीक चाचा के संकोच को दूर करने का प्रयत्न करते हुए कहा, "मै जहाँ डाक्टर महेन्द्रा के अस्पताल मे काम करती थी, वहाँ मैने सैकड़ों मरदों को बिना घूँघट काढ़े हुए देखा है, तो मै अब आपसे क्यों परदा करूँ ?"

पंछी ने रफीक चाचा से कहा," "इसको दुनिया की हवा लग गयी है।"

रफीक चाचा ने एक पुरानी कहावत दोहराते हुए कहा, "आदम को एक फावड़ा और हव्वा को एक चरखा दिया गया था—और सारी सच्ची शराफत उन्ही की देन है।"

रफीक चाचा की बात के उत्तर मे गौरी ने तड़ से उत्तर दिया, "पुरानी कहावतें और सफेद दाढ़ियॉ, यही तो बस रह गया है हमारे पास!"

"अरे पगली," पछी ने विस्मत होकर कहा, "अगर गॉववाले तुझे बडों से इस तरह बात करते सुनेगे तो क्या कहेगे?"

"रफीक चाचा," गौरी ने गरम पानी मे तौलिया निचोड़कर अपने पति के पैर पोंछते हुए कहा, "जब मै पहले-पहल इस घर मे आयी थी तब मुझे इस बात का बड़ा ध्यान रहता था कि गॉववाले क्या कहेंगे। यहॉ तक कि मेरे मुँह मे जबान ही नही रह गयी थी! मै बस घर का काम काज करके अपनी उस खटिया पर पड़ी कुढ़ा और रोया करती थी। अपनी अकल से तो मैं किसी चीज के बारे मे सोच ही नही सकती थी। बिना पर के कोई उड़ कैसे सकता है! गॉववाले तो बस लाला बीरबल और दूसरे बड़े-बूढ़ो की बात को पत्थर की लकीर मानते है। हम लोग सुअरों से बदतर जिन्दगी पर भी खुश रहते है।...डाक्टर महेन्द्रा कहते थे : जहॉ गरीबी होती है, वही महाजन, पुरोहित और जमीदार भी होता है। मगर साथ ही वह यह भी कहते थे कि ऐसा होना जरूरी नही है। ये गॉव पुराने जमाने मे आबाद किये गये थे और वे अब छिन्न-भिन्न होते जा रहे है, हर आदमी अपने से बड़े सफेदपोशों के सामने नाक रगड़ता है। आर इसके अलावा अकाल-सूखा हमेशा पड़ता ही रहता है, जुए, कर्ज और वाही-तबाही मे भी पैसा उड़ता रहता है—ऊपर से दारू-शराब की लत और अपनी जोरुओ को मारने की लानत भी हमारे साथ है।"

"अरे वाह वाह!" रफीक चाचा ने प्रशंसा और उत्साह के भाव से कहा, "बेटी, तू तो बड़ी अकलमन्द—मियॉ मिट्ठ बनकर लौटी है!"

"बड़े डाक्टर साहब कहते थे कि शिक्षा फैलनी चाहिए। शिक्षा हमें अपने भाग्य का निर्माता बनायेगी, धर्म नहीं," गौरी ने कहा।

"यह तेरा अकलमन्द डाक्टर कौन है?" पछी ने पूछा, "मुझे तो बेवकूफ मालूम होता है।"

गौरी ने उत्तर दिया, "बड़े धर्मात्मा आदमी है वह। उन्होंने कई अधमरे लोगों में दुबारा जान डाल दी है। उन्होंने बुराइयों की जड़ का पता लगा लिया है। वह कहते थे कि किसान के पास अगर कुछ बचा हुआ न हो और पानी न पड़े तो उसे या कर्ज लेना पड़ता है या फिर भूखों मरना पड़ता है। उन्हें मालूम है कि किस गाँव में कौन बीरबल किस हिसाब से सूद लेता है और उन्हें यह भी मालूम है कि किन-किन मुसीबतों के साँप-बिच्छू हमें डसते रहते है और किस तरह हम अपने जीवन पर सतोष की डकारें लेते रहते है, और वह यह भी कहते थे कि ऐसा होना अनिवार्य नहीं है, मनुष्य के भाग्य में यही नहीं लिखा है। उन्हें जनता से प्रेम है और वे जीवन का अर्थ समझते है। उन्होंने चाचा आदमसिंह और मेरी माँ से भी बातें की थी। और मुझे तो यकीन है कि वे तो उनके चेले हो गये है। वे तमाम बन्धनों से छूट गये है।"

"मगर बेटी, तू तो बड़ी अच्छी-अच्छी बातें करती है," रफीक चाचा ने तारीफ करते हुए कहा, "ये सब बातें हूरबानो को बताना। वह भी कह रही थी कि कर्ज लेना, एक-दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करना, वाही-तबाही में पैसा बरबाद करना और जुआ खेलना, शराब पीना, कितनी बुरी आदतें है। जहाँ तक शराब पीने का सवाल है...मैं उसकी राय को ठीक नहीं समझता। कभी-कभार एकाध कुल्हड़ पी लेने में कोई नुकसान थोड़े ही होता है, लेकिन..."

"अरे रफीक चाचा, इन दोनों को फिर साथ जोड़ने की सलाह न दो, नहीं तो अबकी बार ये दोनों पूरे गाँव में पाबन्दी लगवा देगी कि कोई अपनी बीवी को नहीं मार सकता!" पछी ने मजाक करते हुए कहा।

"बेटा," रफीक चाचा बोले, "आदमी का बोल तो फूल के बीज

की तरह होता है और अगर हवा फूल के बीजों को उड़ाकर दलदल में भी ले जाये तो वे वहाँ भी उग सकते है और दलदल हरा-भरा बाग बन सकता है।"

पंछी ने कहा, "ये सब नये फैशन हैं, जैसे गौरी की सफेद साड़ी और इसके दिमाग में डाक्टर साहब के विचारों का घर कर जाना, यह सब कुछ एकाएक ही हो गया है!" उसके दुखते हुए सर में कहीं बहुत पीछे इस मूलभूत सत्य की एक धुँधली, पर अटल चेतना थी कि वह एक गरीब किसान है और वह दान की बछिया के दाँत देखे बिना आँख मूँदकर अपने जन्मसिद्ध अधिकार को लपककर स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं था।

●●४

तीसरे पहर रफीक चाचा के घर के बरामदे में गौरी हूरबानो के पास बैठी कपास तुनकर पूनियाँ बनाने में उसकी मदद कर रही थी और हूरबानो चरखा चला रही थी। गौरी होशियारपुर शहर के चमत्कारों के लगातार वर्णन से हूरबानो को विस्मित कर रही थी। वह शहर के चमत्कारपूर्ण जीवन की तुलना पिपलाँखुर्द की तुच्छ मैली-कुचैली जिंदगी से कर रही थी।

"अरे चाची, रात को बिजली के कुमकुमे सितारों की तरह चमकते हैं; शहर के बाहर की सड़कें तो इतनी साफ हैं कि आदमी उनमें अपनी सूरत भी देख ले!...और अस्पताल में जब तक मैं सब औजारों को उबाल नहीं देती थी तब तक बड़े डाक्टर साहब उन्हें छूते भी नहीं थे। जख्म के लिए तो आदमी की साँस भी जहरीली होती है, इसलिए जब करनैल साहब किसी मरीज का आपरेशन करते थे तो हम सब नर्सों को नाक और मुँह पर एक साफ-सफेद कपड़ा बाँधना पड़ता था!"

"अरे, तब तो तुम लोग बिल्कुल जैनी वैरागिनो जैसी लगती होगी !" हूरबानो बीच में बोल उठी, "मैंने सुना है कि हमारे रमजान को भी कारखाने में काम करते वक्त एक लम्बा-सा नीला कोट पहनना पड़ता है। अगरेजी सरकार भी कुछ अच्छी आदतें छोड़कर गयी है। मगर जब से यह हिन्दू राज आया है तब से मैंने सुना है कि होशियारपुर में हमारी मस्जिदों की कोई खैर-खबर लेनेवाला भी नहीं है और मन्दिरों का ठाठ दिन दूना रात चौगुना होता जा रहा है..."

"ऐसी बेवकूफी की बातें न करो !" रफीक चाचा ने बरामदे के दूसरे सिरे से डॉटकर कहा, जहॉ वह कुछ ताजे मटकों को ठोंक-बजाकर देख रहे थे। "वह तुझसे बात कर रही है गुड़ की और तू कह रही है गोबर की। वह जो कह रही है उसे सुनो और अच्छी तरह समझ लो, क्योंकि चुपचाप सुननेवाले को ही ज्ञान मिलता है।"

"अरे जा जा, अपना काम देख," हूरबानो ने कहा, "जैसे तेरे कच्चे मटके बोलते हैं, वैसे ही तू भी बोलता है।"

कुम्हार और उसकी पत्नी की इस झड़प पर गौरी को अनायास ही हँसी-सी आ गयी और उसने फौरन शरमाकर अपने दुपट्टे का ऑचल अपने माथे पर खींच लिया।

"तुम कहे जाओ बहन, इनकी बातों की ओर ध्यान न दो," हूरबानो ने गौरी से कहा, "इन मर्दों को तो अपनी ही अकल सबसे बड़ी मालूम होती है और औरतें तो इनके नजदीक निरी बेवकूफ होती हैं।"

"यह तो है बहन !" गॉव की मुसलमान दाई रक्खी ने बायॉ हाथ कमर पर रखे, अन्दर आते हुए कहा। उस बुढ़िया का शरीर बिल्कुल सूखा हुआ था और नाक तोते की चोंच जैसी थी; वह पचास से ऊपर होने आयी थी और उसकी कमर भी कुछ-कुछ झुक गयी थी, फिर भी वह चमकदार साटन के कपड़े पहने थी। "मर्द दूसरों की आँखों में तो सब कुछ देख लेते हैं, पर अपनी आँखों में नहीं देखते।"

"आओ मॉ, आओ," हूरबानो ने दिखावटी तेजी के साथ उसका स्वागत करते हुए कहा, क्योंकि वह समझ गयी थी कि रक्खी, जो पहले कभी उधर झॉकती भी नहीं थी, गौरी के होशियारपुर से लौटने की खबर का भेद लेने ही वहॉ आयी थी।

"सलाम मॉजी," गौरी ने बड़े आदर से अभिवादन करते हुए कहा। वह उसके पति की चाची केसरो के घर अक्सर आया करती थी इसीलिए गौरी उसे अच्छी तरह जानती थी।

"ऐ बीबी, मै तो तुम्हारी सूरत देखने आयी थी, और यह जानने कि तुम्हारा क्या हाल है," बुढ़िया ने अपने पोपले मुँह से कहा, "मैने सुना था कि तुम पेट से हो, इसलिए मैने सोचा कि अपनी इन बूढ़ी हड्डियो को किसी तरह यहॉ तक लाकर तुम्हे देख जाऊँ।"

गौरी का चेहरा लज्जा के कारण लाल पड़ गया और उसने अपने दुपट्टे का ऑचल माथे पर और सरका लिया। हूरबानो ने जिस ढंग से दाई का स्वागत किया था, उसके अजीब स्वर से ही गौरी समझ गयी थी कि रक्खी का सहसा वहॉ आना कुछ मतलब रखता था।

"मॉ, कैसे बढ़िया कपड़े पहन रखे है तुमने," हूरबानो ने प्रशंसा के भाव से कहा, पर उसके स्वर मे व्यंग्य का पुट भी था। और इतना कह-कर उसने दाई की तरफ एक चटाई बढ़ा दी।

"अरे बहन, आदमी के कपड़ो से उसकी असलियत का पता थोड़े ही चलता है," रक्खी ने बाये हाथ से अपनी कमर को सहारा देकर बैठते हुए कहा।

"इसमे क्या शक है," रफीक चाचा बोले और रक्खी ने संक्षेप मे चरित्र का जो वर्णन किया था उसकी उन्होंने पुष्टि कर दी।

"अरे, ऑखे सभी काली होती है पर सब एक जैसी नही होती," रक्खी ने अपना बचाव करते हुए कहा, "मै तो अपने पंछी की बहू को देखने आयी थी। तुम तो जानते ही हो, मै ही अपने हाथों से उसे इस दुनिया मे लायी थी। और इसलिए जब से उसकी बहू आयी है तब से

मै आस लगाये थी कि...मगर मुझे केसरो से मालूम हुआ कि पंछी की बहू आने के फौरन ही बाद अपने मायके चली गयी और वहाँ मे होशियारपुर...आजकल की लड़कियाँ बहुत तेज होती हैं।"

"गौरियाई, जरा रक्खी माई को भी डाकदर साहब के बारे मे कुछ बता दे," हूरबानो ने बात बदलने के लिए कहा।

"हॉ बहन, मैंने सुना है कि यह लडकी बहुत पापड़ बेल चुकी है," रक्खी ने व्यंग्य करते हुए कहा, क्योंकि यह बात कि गौरी ने एक अस्पताल मे नर्स का काम सीखा था, उसकी अपनी रोजी के लिए खतरा था।

"मन चक्का तो घर मे मक्का!" रफीक चाचा ने उस दाई के लाछनो से गौरी की रक्षा करते हुए कहा।

रक्खी तीखी नजरो से गौरी को सर से पैर तक देखकर यह मालूम करने का प्रयत्न कर रही थी कि इसका पेट कितना बड़ा है।

"रक्खियाई, वह तुझी को तो बुलायेगी देखने को," हूरबानो ने उससे पीछा छुड़ाने के लिए अधीर होकर कहा।

"नही चाची," गौरी ने कहा। उसके ये शब्द लगी लिपटी बातो के विरुद्ध एक तलवार के समान थे, "मै तो अपना बच्चा जनने के लिए डाक्टर महेन्द्रा के अस्पताल जाऊँगी।"

यह सुनते ही जैसे गॉव की दाई के तन-बदन मे आग लग गयी।

"हॉ बीबी, अब तो तुम्हारे पर लग गये है," उसने कटुता से कहा, "और जब चीटियों की मौत आती है तब उनके भी पर निकल आते हैं!"

"हाय हाय, सुखी सन्दी!" हूरबानो ने बिगड़कर कहा, "खबरदार जो मरने-वरने की बात की। अकाल मे क्या कुछ कम लोग मरे है जो और लोगों के मरने की बात करती है!"

हूरबानो की बात सुनकर पंछी, जो अभी तीसरे पहर की नींद पूरी करके उठा था, आँगन मे निकल आया।

"हाय, हाय, बेटा! यह तूने अपने सर को क्या कर लिया!" रक्खी

ने ऐसे कहा जैसे उसे कुछ मालूम ही न हो, हालाँकि गाँव की सारी बातें इधर-उधर लगाने मे वह सबसे अव्वल थी, इसलिए उसे सब मालूम था कि क्या बात हुई थी।

"मैं अभी मरा नही हूँ," पछी ने क्रुद्ध होकर रुखाई से कहा।

"मगर बेटा," रक्खी ने होठ निकालकर बनावटी मोह जताते हुए कहा, "ऐसी बुरी बात मुँह से क्यों निकालते हो?...बेटा, तुम जुग-जुग जियो, फलो-फूलो।...अपने जनेऊ के वक्त तुमने मुझे जो मखमल का कुरता-शलवार देने को कहा था, अभी तो वही तुम्हे बनवाकर देना है। सचमुच तेरी माँ ने मुझसे वादा किया था। मगर हाय बिचारी! वह तेरा ब्याह देखने को भी जिन्दा नही रही। अगर तेरे ब्याह के वक्त वह जिन्दा होती तो वह मुझे एक जोड़ पूरे कपड़े बनवाकर देती।"

"कोई बात नही है," हूरबानो ने बीच मे कहा, "अब जब पछी के घर लड़का होगा तब जो चाहोगी, वह मिल जायेगा।"

"हाँ बेटा, तुम्हारा परिवार बढ़े!" रक्खी ने कहा।

"यह सब बातें मेरी घरवाली से कहो," पंछी ने रफीक चाचा की तरफ जाते हुए उत्तर दिया।

ये सब बाते सुनकर गौरी के चेहरे का रग शरम के मारे बिल्कुल लाल हो गया। दाई की मक्कारी-भरी बातों से तो उसे डर लग ही रहा था पर रीति-रिवाज द्वारा स्थापित अधिक गहरे बन्धनो के कारण उसमे एक घुटन और सवेदनशीलता पैदा हो गयी।

"वाह, मै तेरी घरवाली से क्या कहूँ?" रक्खी ने शिकायत के भाव से कहा, "वह शहर हो आयी है और उसने नर्सों की तरह सफेद कपड़े पहनना सीख लिये है। और वह तो कहती है कि तेरी बूढ़ी दाई रक्खी के बजाय वह एक मर्द डाक्टर के हाथ से बच्चा जनवाना ज्यादा पसन्द करेगी। इसीलिए तो मै कहूँ कि तेरी चाची केसरो उसे ज्यादा दिन अपने घर मे क्यो नही रख सकी और तुझे भी उसे छोड़ना पड़ा।...सारे गाँव में उसकी चर्चा हो रही है।"

जहर में बुझी हुई बातें सुनकर पंछी बोला, "क्या कहा ! क्या चर्चा हो रही है ?"

रक्खी बात में नाटकीय कौतूहल पैदा करने में तो उस्ताद थी; वह पंछी की बात का उत्तर देने के बजाय सर झुकाकर नीचे देखने लगी। इस पर पछी की उत्सुकता और बढ़ी कि आखिर लोग क्या कह रहे थे।

"सब उड़ी-उड़ायी बातें करते है, सचाई एक नही—यही तो इसका तरीका है !" गौरी बीच में बोल उठी।

"तू चुप रह," पछी ने डपटकर कहा, "मैं उससे पूछ रहा हूँ, तुझसे नहीं।"

"बेटा," रक्खी ने उत्तर दिया, "बुरी औरत से अपने सगे-सम्बन्धी कहीं अच्छे होते है। और केसरो..."

"अजीब बात है, उल्टा चोर कोतवाल को डॉटे !" हूरबानो ने प्रतिरोध किया।

"मै कहती हूँ, इसको उसीने भेजा है यहाँ !" गौरी ने दबी जबान से कहा।

"और अकेली केसरो ही क्यों, सारा गॉव कहता है," रक्खी ने कहा, "सब लोग इस सोच में पड़े है..."

"किस सोच में पड़े है ?" पछी ने कड़ककर कहा और आकर उन तीनो औरतों के पास तनकर खड़ा हो गया।

"बेटा," रक्खी ने अपनी दुष्टता को जारी रखते हुए कहा, "जब रावण सीता को हर ले गया था और उसके पति जाकर उसे छुड़ा लाये थे, तब लोग क्या कहते थे ?"

"हाय, मुई !" हूरबानो ने चिल्लाकर कहा, "मगर तू ऐसी बेकार की बाते क्यो कर रही है ?"

"बहन, सब लोग यही सोचते है कि यह बच्चा पंछी का ही है या किसी और का।" रक्खी ने अन्तिम प्रहार करते हुए कहा।

"अरे चुड़ैल कहीं की !" गौरी ने चिल्लाकर कहा, "लाज नहीं

आती तुझे ऐसी बात करते।"

"तेरी जबान भी कैसी मनहूस है," रफीक चाचा ने क्रोध से कहा, "तुझे शरम नहीं आती कि यहाँ आयी है इन लोगों को सताने; ये तेरे बच्चों के बराबर है।"

पंछी रक्खी के ऊपर झुका और उसका जूड़ा पकड़कर उसे घसीटने लगा; रक्खी ने बहुत हाथ-पैर मारे, पर पंछी भी अपने इरादे का पक्का था; वह उसे ऑगन में से घसीटता हुआ बाहर ले गया और गली में ढकेल आया।

"अरे गुण्डे! तू मरे, तेरे बस का नास हो जाये! मुझे जैसे सताया है, खुदा करे..." रक्खी अभी थोड़ी देर पहले उससे जैसी मीठी-मीठी बातें कर रही थी, अब उतना ही वह उसे कोस रही थी। वह पास-पड़ोस-वालों की सहानुभूति प्राप्त करने के उद्देश्य से गली में जोर-जोर से उनकी दुहाई दे रही थी और उनसे कह रही थी कि वे ही फैसला कर लें कि वह औरत कैसी थी, जिसने होशियारपुर जाकर न जाने कितने घाट का पानी पिया था और अब मटका ऐसा पेट लेकर अपने पति के पास वापस लौट आयी थी।

●●५

रक्खी ने अपने विषाक्त शब्दों से रफीक चाचा के घर के बरामदे में जिस जहर का बीज बोया था, वह सारे गॉव में ताऊन की तरह फैल गया, जैसे ताऊन के कीटाणु देखते-देखते चूहों से मनुष्यों के शरीर तक पहुँच जाते है। और इसका पहला शिकार पछी था, वह व्यक्ति जिसने बिना देर किये रोग वाहक को अपने घर से निकाल फेंका था।

रक्खी की बातें सुनकर उस पर जो पहली प्रतिक्रिया हुई थी और उसने जिस हिंसा का सबूत दिया था, उससे तो यही मालूम होता था कि

उस पर कोई ऑच नही आ सकती। पर थोड़ी ही देर बाद जब वह अपने बिस्तर पर लेटा तो होशियारपुर मे रहने के दौरान मे गौरी के सतीत्व के बारे मे रक्खी द्वारा उठायी गयी शंकाएँ उसकी चेतना पर भी प्रभाव डालने लगी। कोई काम न होने की मजबूरी के कारण इन शकाओं ने एक निश्चित संदेह का रूप धारण कर लिया। रक्खी ने कर्नल महेन्द्रा के बारे में जो दो-एक बाते कही थीं, उन्हे याद करके और गौरी द्वारा प्रशंसात्मक तथा उत्साहपूर्वक डाक्टर साहब का जिक्र किये जाने पर स्वयं उसकी जो प्रतिक्रिया हुई थी, उसने इस सदेह को ईर्ष्या का रूप दे दिया। यह तो खैर वह जानता ही था कि उसने स्वय गौरी को घर से निकाला था, क्योकि उसने कहा था कि उसके पेट मे बच्चा है, इसलिए गौरी का पेट बढ़ने की ओर रक्खी के संकेत से तो उसे चिन्ता नही हुई, पर साथ ही यह बात तो सच थी कि उसे सेठ ज्वालाप्रसाद के हाथ बेचा गया था और वह कई दिन तक सेठजी के घर मे रही भी थी। इसके अलावा उसकी सास ने बातो ही बातो मे इस बात की ओर भी इशारा किया था कि पहला अस्पताल, गौरी के साथ डाक्टर की अनधिकार चेष्टा के कारण ही भंग हुआ था। घटना किस प्रकार हुई थी, यह उसे नही मालूम था। इस घटना की जानकारी न होने के कारण उसके विचारों पर एक घटा-सी छा गयी, उसका मन उदास हो गया, रात को उसका दिल जोर-जोर से धड़कने लगता; उसके पाँव जवाब देने लगते; वह सोते-सोते चौककर उठ बैठता और चारपाई पर पड़ा करवटें बदलता रहता, पर उसे किसी करवट चैन नही मिलता था।

दुर्भाग्य की बात यह है कि जब मनुष्य किसी विचार को अपने मस्तिष्क मे लाने की चेष्टा करता है तब वह नही आता। रक्खी की बातो को उसने जो थोड़ा-बहुत सुना था, और अपनी सास और आदमसिह की बातो से उसे जो सूचना मिली थी, और जो थोड़ा-बहुत उसने गौरी से मालूम किया था, उन सबको पंछी किसी क्रम मे नहीं पिरो पा रहा था। इसलिए वह बौखला-सा गया; उसके अंग-अंग मे जैसे आग लगी हुई

थी, सारा शरीर पसीने में नहाया हुआ था और इस ज्वाला की लपटें उसके सर पर एक भूत की तरह मँड़राने लगी। वह इन विचारों से छुटकारा नहीं पा सकता था। उसके माथे पर पसीने की बूँदें थीं, उसके हाथ-पाँव और कुल्हे, सब पसीने से तर थे; इस बद और भाँय-भाँय करते वातावरण में उसका दम घुटा जा रहा था।

गौरी चावल बीन और साफ करके और दाल चूल्हे पर चढ़ा कर उसके पास आकर बैठ गयी और पंखा झलने लगी। पर इस समय उसके मन की जो हालत थी, उससे उसके शरीर में सहसा एक परिवर्तन आ गया था और गोरी से उसे एक घृणा-सी हो रही थी; उसके सफेद कपड़ों की शुद्धता और उसका पवित्र लाज-भरा अस्तित्व मानो पंछी को उससे दूर रहने को बाध्य कर रहा था। पंखे के झलने से जो थोड़ी-बहुत सुखकर हवा आ रही थी, उससे भी उसे झुंझलाहट हो रही थी। वह करवट बदलकर मुँह फेरकर लेट गया। वह गौरी से आँखें चुरा रहा था। गौरी जितनी भक्ति दिखाती, उसे उतना ही गुस्सा आता।

रक्खी ने जो लाछन लगाये थे, उसके फलस्वरूप गौरी के हृदय में कटुता पैदा हो गयी थी; इस कटुता के वातावरण में वह पछता रही थी कि उसने दाई के साथ इतना कठोर और रूखा बरताव क्यों किया था। बुढ़िया के प्रति अपने रूखेपन का प्रायश्चित् करने के लिए उसने अपने मन में अपने व्यथित पति के लिए कोमल भावनाएँ तथा प्रशंसा उत्पन्न करने का प्रयत्न किया। गौरी ने जाकर आँगन में उसका बिस्तर लगा दिया और जाकर रसोई में दाल को देखा कि गल गयी कि नहीं, और बैठकर बरतन माँजने लगी। जब दाल गल गयी तो गौरी ने उसे चमचे से चलाया और चूल्हे की लकड़ियाँ खींचकर आँच धीमी कर दी।

फिर वह पंछी के पास इस संकल्प से गयी कि उसकी सारी व्यथा को दूर कर देगी।

"मैंने तुम्हारे लिए बाहर बिस्तर कर दिया है।" गौरी ने धीरे से उसके शरीर पर झुकते हुए कहा, "जाओ बाहर ठंडे में जाकर बैठो। मैं

तुम्हारे लिए..."

पंछी ने उसे देखा, पहले तो यों ही सरसरी निगाह से, फिर घूरकर।

"आओ," उसने विनय के भाव से कहा।

"जा कुतिया कही की!" पंछी सहसा भड़क उठा और कसकर उसके माथे पर एक थप्पड़ रसीद कर दिया।

वह एक लम्बी सी सॉस लेकर कराहते हुए चारपाई के पास ढेर हो गयी और अपने घुटनों के बीच दुपट्टे मे अपना मुँह छुपाये सिसकियाँ भरने लगी।

एक ही क्षण मे उसने पंछी की करुणा भरी कराहने की आवाज सुनी:

"हे भगवान्, ऐसा क्यो हुआ! आखिर यह रक्खी आकर दुबारा जहर क्यों फैला गयी?...मेरी जिदगी बरबाद हो गयी!"

गौरी ने उसका पागलों जैसा प्रलाप और उसके टूटे फूटे शब्द सुने और एक बार फिर उसके हृदय मे पछी के प्रति दया की लहर उमड़ने लगी। वह सोचने लगी: 'बेचारा नादान, इसका कोई कसूर नही है!' फिर भी उसने उसे मारा था और उसके आत्मसम्मान का तकाजा था कि वह पंछी को भी उसी तरह थोड़ी देर वैसे ही यातना सहने दे जैसी उसके कारण गौरी ने सहन की थी। दोनों की आत्माओं मे द्वन्द्व चल रहा था; गौरी की आत्मा कठोर और दृढ़ होने के बावजूद उसके ऑसुओं के प्रवाह मे फँसी हुई थी।

आखिरकार अपने आत्मसम्मान पर और कुछ हद तक इस भय पर कि वह कही उसे फिर न पीटे, विजय पाकर वह उठी और पंछी के सीने पर गिर पड़ी।

गौरी के गदराये हुए शरीर की गरमी पंछी के शरीर मे प्रविष्ट होने लगी; पंछी आश्वस्त हो गया और यह अनुभव करने लगा कि गौरी उसकी है, उसके वश मे है, और यह भावना उसके हृदय मे घर करने लगी कि उसके और गौरी के अतिरिक्त किसी और चीज का महत्त्व नही है। उसके सिसकने के कारण उसके हृदय मे फिर दया की एक लहर उठी। उसने

स्वयं रोना-पीटना भूलकर आवेश में आकर गौरी को अपने बाहुपाश मे कस लिया और अन्धकार में उसके शरीर को ऊपर उठा कर अपने शरीर से चिपटा लिया।

रफीक चाचा पंछी की कराहने की आवाज सुनकर दबे पाँव दरवाजे तक आये थे, पर पति-पत्नी को साथ देखकर वैसे ही चुपके मे वापस लौट गये।

●●६

दूसरे ही दिन रफीक चाचा मौका पाते ही सवेरे-सवेरे पहला हुक्का गरम करके अपने दोस्त की ख्वैर-खबर पूछने ऑगन मे पड़ी पंछी की चारपाई पर आ बैठे।

"कहो भैया, क्या हाल है ?" रफीक चाचा ने हुक्का पीकर धुएँ की तेजी के कारण खाँसते हुए बहुत सोच-सोचकर धीरे-धीरे कहना आरम्भ किया।

"बहुत बुरा हाल है," पंछी ने झट से उत्तर दिया।

"अरे, भरोसा रखो, सबर से काम लो," रफीक चाचा ने नसीहत करते हुए कहा, "जरा मे मन में लड्डू फूटने लगते है, जरा में मुँह लटक जाता है।"

"रफीक चाचा !" पंछी ने कुछ देर रुक कर कहा, "तुम तो जानते हो, मैंने क्या-कुछ नहीं सहा। मैं चाहता था कि यह घर लौट आये, क्योंकि औरत के बिना घर, घर नही रहता। मुझे बस इसी एक बात की धुन थी कि किसी तरह वह वापस आ जाये। इसीलिए मैं पिपलॉकलॉ भी गया और वहाँ उसके बारे मे पूछ-गछ करने की वजह से मार भी खायी।...मगर मैंने यह सोचा भी नही था कि लक्ष्मी की बेटी भी लक्ष्मी जैसी ही निकलेगी !"

"बको मत," रफीक चाचा ने अधीर होकर उसकी बात काटते हुए कहा। उन्होंने अपना हुक्का एक तरफ रख दिया और पंछी को झाड़ना शुरू कर दिया, "तुम बेवकूफ हो जो उस पर शक करते हो। वह देवी है, देवी! समझे, गौरी देवी है! तुम अगर उसकी पूजा न करो तो लानत है तुम पर।"

"अगर तुम समझते हो कि मैं तुम्हारी तरह जोरू का गुलाम बन जाऊँगा तो तुम्हारी भूल है," पंछी ने दूसरी तरफ मुँह फेरकर कहा; उसके इस व्यवहार से स्पष्ट था कि वह इस बातचीत को पसद नही कर रहा था, "तुम तो जानते ही हो कि औरतों की अकल उनके टखने मे होती है और उन पर भरोसा नहीं किया जा सकता, वे जरा-सी चमक-दमक पर लट्टू हो जाती है। उनके चाल-चलन के बारे मे कभी कोई यकीन के साथ नही कह सकता।"

"हॉय! कैसी बात करते हो तुम!" रफीक चाचा ने अब गुस्से से झिड़ककर कहा, "अजीब बात है कि तुम्हारा ऐसा जवान आदमी यह बात कहे, जब कि मैंने खुद तुम्हे इस गॉव की कई लड़कियों को ऑख मारते देखा है।...मै तो समझता था कि परदे का दस्तूर हम मुसलमानों ने चलाया और हर मर्द को चार बीवियॉ रखने की इजाजत दी। मगर तुम ऊँची जातवाले हिन्दू होकर हर औरत को ऐसे देखते हो जैसे वह वह हर वक्त नगी हो और उसका बस एक ही इस्तैमाल हो। शरम आना चाहिये तुम्हें।"

"मगर रफीक चाचा!" पंछी ने अपनी सफाई पेश करने के लिए आवाज ऊँची करके कहना शुरू किया।

पर उस कुम्हार ने उसकी बात बीच मे ही काट दी, "हमारे गॉव के तो लोगों के दिलों पर परदा पड़ा हुआ है, और हम जबर्दस्ती उसे औरतो पर लादते है। हम खुद चाहे जितनी औरतों से सम्बन्ध रखें, पर हम चाहते यही हैं कि एक आदमी एक ही औरत रखे। अल्लाह मियॉ हमारी तरफ मालूम होते हैं। सारे रीति-रवाज भी हमारे पक्ष मे है और हर औरत भी,

ऐसा मालूम होता है कि आदत से मजबूर होकर हमारी तरफ है। इनके दिमाग बन्द हैं, इन्हे खुद तो कभी खुशी नसीब हुई नही इसलिए दूसरों को खुश देखकर ये जलते है।.. क्या तुम्हारा ख्याल है कि ऐसी हालत में जब गौरी के कानो मे इन बड़े-बूढ़ों के इन फतवों की आवाज गूँजती रहती है, वह तुम्हे छोड़कर किसी दूसरे मरद के पास गयी होगी ? अगर तुम इस बात पर यकीन करते हो तो तुम पागल हो।"

रफीक चाचा के इस धुआँधार भाषण के आगे पछी एक क्षण के लिए तो खामोश हो गया। वह यह तो सोचता था कि यह कुम्हार कुछ सनकी है, पर उसे यह नही मालूम था कि उसके विचार इतने अजीब है। इस बूढ़े की उदारता के आगे वह अपने आप को तुच्छ समझकर लज्जित हो गया। फिर भी उसके अंधकारपूर्ण जीवन मे, जो लगातार कई महीनों तक केवल कटुता से ही भरा रहा था, कोई चीज ऐसी मनहूस और भयकर जरूर थी, तभी तो यह सारी मुसीबतें उस पर टूटती थी। जब भी वह जरा सर उठाने के लायक होता, उसे ऐसा मालूम होता कि वह एक गर्त मे गिरा जा रहा है। अभी कल ही रात को गौरी को मारने और फिर उसे अपने आलिगन मे लेने के बाद वह पिछले पहर तक बड़े सुख की नीद सोया था। फिर सहसा उसने स्वप्न मे डाक्टर महेन्द्रा को देखा और सहसा चौंककर उसकी नीद खुल गयी; वह पसीने से एकदम नहाया हुआ था और उसका दिल जोर-जोर से धड़क रहा था, मानो कोई ढोल पीट रहा हो। वह करवट बदलकर लेट गया कि किसी तरह यह तेज धडकन रुक जाये। और धीरे-धीरे उसका स्वप्न धुँधला पड़ता गया और प्रातःकाल की ठंडी हवा मे उसे नीद आ गयी। अब रफीक चाचा की बात सुनने के बाद उसे कुछ ढाढ़स बँधा, पर साथ ही वह अकेला-अकेला महसूस करने लगा, मानो सारी दुनिया ने उसे ही यह यातना भोगने के लिए छाँट लिया हो कि वह हर बात पर शंका करता रहे।

"तुम्हे इस लड़की के आँसुओं पर तरस नही आता ?" रफीक चाचा ने हुक्के के कई कश खीचने के बाद पूछा, यद्यपि उनके उस लम्बे-चौड़े

भाषण के दौरान मे हुक्का ठडा पड़ गया था ।

"रफीक चाचा, मुझे तो इस बात का डर रहता है कि गॉव के बड़े-बूढ़े क्या कहेगे ?" पंछी ने कहा ।

"अधों मे काना राजा," कुम्हार ने एक पुरानी कहावत दुहरा कर कहना आरम्भ किया, "सवाल तो यह है कि वह लोग जो कुछ कहते है वह इन्साफ की बात है या बेइन्साफी की ।"

पछी की जबान पर फिर ताला पड़ गया । साथ ही उसमे जैसे नयी शक्ति आ गयी ।

बखार की दीवार पर जो रोशनी फैल रही थी, उससे पता चलता था कि सूरज निकल आया है । रफीक चाचा ने सर उठाकर देखा और इस बात से वह कुछ चिन्तित भी हुए कि वह शौचादि से निवृत्त होने खेत को भी नही गये थे ; यह विचार आते ही वह पछी की चारपाई मे उठ खड़े हुए ।

चलते-चलते कुम्हार ने कहा, "बेटा, घी डालने से आग बुझती नही, बढ़ती है । मुमकिन है तुम मेरी बातों को बकवास समझते हो, पर बाद मे न कहना कि हमे खबर न हुई । मन का बल सबसे बड़ा गुण है !"

"अगर तुम इस घी मे थोड़ी-सी शक्कर मिला देते तो मै आसानी से इसे हजम कर लेता," पंछी ने फिर लेटते हुए कहा ।

● ● ७

ऑगन से कोठरी मे जाते हुए पंछी बार-बार रफीक चाचा की दोहराई हुई इस कहावत को कि 'मन का बल सबसे बड़ा गुण है', मंत्र की तरह जपता गया । उसकी बीवी ने जब गरम पानी के अँगौछे से बड़े प्यार के साथ उसका बदन पोंछा तो उसने जरा भी आपत्ति नहीं की बल्कि जब वह उसके तलुओं को पोंछती तो उसे गुदगुदी-सी लगती और

वह अनायास ही मुस्करा देता।

जितनी देर गौरी उसका शरीर पोंछती रही, वह उसके शरीर और मुख को कनखियों से देखता रहा। वह उसके पूरे स्वभाव को भली-भाँति समझ लेना चाहता था और अपने-आपको आश्वस्त कर लेना चाहता था कि वह एक नेक-चलन औरत है, वह नहीं चाहता था कि इस पूर्व-निर्धारित धारणा के कारण कि 'औरत विष की गाँठ होती है', उसके हृदय में कोई शंका बनी रहे। उसके अंग-अंग को गौर से देखने के बाद उसे इस बात का आभास हुआ कि जितने दिन वह बाहर रही थी, उसी बीच में उसमें कितना परिवर्तन आ गया था। अब वह उतनी लजीली-सीधी गाय नहीं रह गयी थी जैसी कि वह इस घर में ब्याहकर आने के समय थी। उसके अंग-अंग में जैसे एक नयी शक्ति आ गयी थी। उसके चेहरे पर जो दमक थी, वह इसका सबसे स्पष्ट प्रभाव थी। एक ऐसी ज्योति जो बरबस मन को मोह लेती थी और जो उसके जीवन की सप्राणता का प्रतिबिम्ब थी। वह बहुत स्फूर्तिमय और रोबदार मालूम होने लगी थी: उसकी चाल-ढाल में विश्वास और बल आ गया था।

गौरी ने पछी को निहारते देख लिया और क्षण के लिए भी विचार किये बिना उसने जीभ निकालकर बड़े हास्य-पूर्ण ढंग से उसे मुँह चिढ़ा दिया।

वह हल्के-से हँसकर बोला :

"मैं तो रात-रातभर रोता हूँ और तुम खिलखिलाकर हँस रही हो!"

"रोने की कोई जरूरत नहीं है," गौरी ने मानो चुनौती देते हुए कहा, "तुम मुझे कल रात बहुत सजा दे चुके और तुम हमेशा की तरह नाहक अपने आपको सजा दे रहे हो।"

वह उसकी इस ढिठाई पर लज्जित हो गया। साथ ही उसे याद आया कि कल रातवाली घटना के बाद उसका हौसला और भी बढ़ गया था।

गौरी उसके ऊपर झुकी हुई खड़ी थी, हिरनी के बच्चे की तरह।

उसने गौरी के चेहरे को छुआ, उसकी ठोड़ी को छुआ और उसकी चमकदार आँखो मे आँखे डालकर देखने का प्रयत्न किया।

एक क्षण के लिए गौरी ने उससे नजरे मिलायी और फिर स्वीकृति प्रकट करते हुए सर हिला दिया।

"बड़े शहर मे जाकर तुमने मुझे बिल्कुल भुला दिया था, क्यो है न ?" पंछी ने गौरी से कहा।

"मै तुम्हारे लिए एक कुरते और दो चूड़ीदार पैजामो का कपड़ा लायी हूँ !" गौरी ने पछी के प्रश्न का उत्तर न देकर भी उसके प्रश्न का उत्तर दे दिया।

पंछी ने उसके इन शब्दो मे छुपे हुए स्नेह को अनुभव किया और इस प्रकार अपने-आपको उसके सिपुर्द कर दिया जैसे कोई बच्चा हो। गौरी अँगोछे से रगड़-रगड़ कर उसकी गरदन पोंछ रही थी और वह चुपचाप बैठा था। जब गौरी के हाथ उसकी बगल तक पहुँचे तो उसे फिर गुदगुदी लगी और अनायास ही उसे हँसी आ गयी और उसने प्रतिरोध करते हुए कहा, "न करो !"

"तुम इतने बड़े हो गये, मगर हो बिल्कुल बच्चे ही !" गौरी बोली।

"और तुम जब से लौटकर आयी हो तब से बिल्कुल बूढ़ी चाची हो गयी हो !" पछी ने उत्तर दिया।

पछी की इस बात पर गौरी मुस्करा दी। और यद्यपि वे दोनों एक दूसरे से आँखे चुरा रहे थे फिर भी उन्होने अनुभव किया कि पति-पत्नी के रूप मे दोनो के जीवन घुलमिलकर एक हो गये हों। पिछली रात के मिलन का उल्लास अभी तक बाकी था।

जब गौरी अपना काम खत्म करके पीतल की बाल्टी मे अँगौछा निचोड़ने लगी तो पछी को ऐसा अनुभव हुआ मानो वह चाहता है कि गौरी उसके पास ही रहे, उसकी चारपाई पर बैठकर उससे बातें करे, उसका जी खुश करे।

इसलिए जब वह वहाँ से जाने लगी तो उसने उसका हाथ पकड़ कर

उसे जबर्दस्ती चारपाई पर अपने निकट खींच लिया।

"न करो," गौरी ने प्रतिरोध करते हुए कहा। उसे दिन में पंछी की इस छेड़छाड़ पर कुछ लाज भी आ रही थी और यह भी डर था कि कहीं कोई आ न जाये।

एकाएक मानो गौरी की आशंका के कारण ही कोई भूत आ गया हो, उन्होंने गलीवाले दरवाजे पर किसी की आहट सुनी। पहले किसी के पैरों की हल्की-हल्की चाप सुनाई दी, फिर केसरो का चिर-परिचित स्वर सुनाई पड़ा।

"अरे पंछी बेटा, अरे कहाँ है तू!"

गौरी को तो जैसे काठ मार गया। वह दम साधे जहाँ की तहाँ बैठी रही; उसका हाथ अब तक पछी के हाथ में था।

पछी ने गौरी का हाथ नहीं छोड़ा और बिस्तर पर उठकर बैठते हुए चिल्लाकर कहा :

"जा, जा, वापस जा चाची! चली...जा और अब कभी अपना काला मुँह लेकर यहाँ न आना।"

"बेटा!...क्या कह रहा है तू?"

"जा चुड़ैल! खबरदार जो अब हमारे घर में अपना मनहूस कदम रखा!"

"अरे बेटा!"

पंछी तड़पकर बिस्तर से कूदा और चीखकर बोला, "अगर तू सीधे सीधे नहीं जायेगी तो मैं तेरा झोंटा पकडकर तुझे बाहर फेंक दूँगा।"

"देखते हो, अंधेर हो गया।" केसरो ने उल्टे पैरों वापस लौटते हुए चिल्लाकर कहा।

"जा, चुड़ैल कहीं की! झूठी-सच्ची बातें लगाने और जहर उगलने के अलावा और कुछ भी आता है तुझे!"

पर केसरो भागकर रोती-चिल्लाती, छाती पीटती और दुहाई देती हुई गली में पहुँच चुकी थी।

"अरे लोगो ! देखते हो, इसकी चुड़ैल घरवाली ने इसपर क्या जादू कर दिया है ! न जाने कौन सा मन्तर फूँक दिया है ! यह छिनाल होशियारपुर से लौटकर आ गयी है । लोगो देखते हो !..."

●●८

उस दिन पछी मे इतनी शक्ति आ गयी थी कि वह उस गली तक जा सका, जहाँ झल्ला लोहार रहता था । उसने उसे अपने हल का फाल बनाने को दिया था ताकि वह अगहन की फसल की जोताई के लिए वक्त से तैयार हो जाये, क्योकि वैसाखवाली फसल तो अब महीने-भर में काटी जानेवाली थी ।

अपने घर से निकलते समय आज उसका मन हमेशा से ज्यादा शान्त था । उसके मन मे भी वैसा ही संतोष था जैसा कि गोबर से लिपी हुई कोठरी के साफ-सुथरे फर्श से झलकता था । चौके मे पीतल के बरतन चमक रहे थे; गौरी ने उन्हे राख से माँजकर अलमारी मे सजाकर रख दिया था । बड़ी मसहरी पर एक रंगीन पलंगपोश बिछा हुआ था, जो गौरी के दहेज मे आया था । अपनी पत्नी की अनुपस्थिति मे पंछी ने कुआँरों जैसा लापरवाही का जीवन बिताते हुए जो गन्दगी और कूड़ा-करकट फैलाया था, वह सब बिल्कुल साफ हो गया था । गली मे निकलते ही तीसरे पहर की सूरज की चकाचौध के मुकाबले में गोबर से पुती हुई दीवारों की छाँह में उसे काफी शान्ति मिल रही थी ।

दिन के प्रकाश मे, वह आगे तो बढ़ता जा रहा था, पर उसके मन मे एक द्वन्द्व मचा हुआ था, और उसे इसका पता भी नही था । सुबह उसकी चाची केसरो के आने के समय जो कुछ हुआ था और जब उसने उसे घर से निकाल दिया था तब उसने जो दुहाई दी थी, उसके कारण पंछी के मन मे एक भय-सा समाया हुआ था । पर इसके साथ ही अपनी

पत्नी को दुबारा पाकर उसके शरीर को जो तृप्ति प्राप्त हुई थी, उससे हृदय में एक संतोष की भावना ने उसके अंग-अंग में एक नयी शक्ति का संचार कर दिया था। उसने अन्दाजा लगाया कि अपनी पत्नी की रक्षा के लिए उसने रक्खी के साथ जो बर्ताव किया था, उसकी खबर उसने सारे गाँव में फैला दी होगी; इसीलिए केसरो यह देखने आयी थी कि क्या गौरी सचमुच पेट से है, और अगर वह पेट से हो तो वह अपने भतीजे को पट्टी पढ़ा कर उसे अपनी पत्नी को त्याग देने पर राजी कर ले, क्योंकि होशियारपुर में अजनबियों के साथ रह चुकने के कारण बच्चे के पिता के बारे में संदेह होना स्वाभाविक ही था।

यद्यपि ऊपर से देखने में वह शान्त था पर अन्दर ही अन्दर वह सुलग रहा था और गौरी के आलिंगनों से उसमें जो नया विश्वास पैदा हुआ था, वह सब इस भय की लहर में ढह गया। विशेषकर इसलिए कि उसे डर था कि लोग उसे अजीब-अजीब नजरों से घूरकर देखेंगे... और पत्नी के गदराये हुए शरीर की जो सुखद स्मृति उसके मन थी वह भय की लहरों में दब गयी।

इन्हीं विचारों में खोया हुआ वह अभी कुम्हारोंवाली गली में ज्यादा दूर न गया होगा कि उसने रक्खी को चन्दन भुजुए की पत्नी के साथ बैठे देखा। भुजैनी अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठी चरखा कात रही थी। उसे इस बात का आभास था कि अपने चबूतरे की तरफ आते देखकर और उनके सामने से गुजरते समय, उन लोगों ने मुड़कर उसे देखा था, पर फौरन ही अपनी नजरें फेर ली थी। जी कड़ा करके उसने उनकी ओर कुछ ध्यान ही नहीं दिया था।

पाँच छः कदम आगे जाने पर वह अनायास ही उनकी बातें सुनने के लिए ठिठक कर खड़ा हो गया।

वे दोनों उसी की तरफ देख रही थीं, रक्खी की त्योरियाँ चढ़ी हुई थीं और चन्दन भुजुए की बीवी हीरो की आँखें कौतूहलवश फटी हुई थीं। जब उन दोनों वृद्धियों से उसकी आँखें चार हुईं तो उन्होंने कुछ

खुसुर-पुसुर की।

पंछी का खून सहसा खौल उठा और वह मुड़कर चिल्लाया, "जोर से क्यों नहीं कहती, चुड़ैलो! तुम मेरे खिलाफ अपना जहर उगलती क्यों नहीं? यह फुस-फुस क्यों कर रही हो!"

"अरे जा, जा, हरामजादे!" रक्खी ने उत्तर दिया, "जा अपनी छिनाल जोरू को बचा जाकर।"

"हॉ, बेशरम कही का!" चन्दन की बीवी हीरो ने दॉत निकाल कर कहा।

उनकी क्रोध-भरी आवाजे सुनकर कुछ बच्चे, जो चने भुजाने की प्रतीक्षा मे बगल ही मे बैठे हुए थे, पछी को देखने के लिए उस काली कोठरी मे से बाहर निकल आये।

पंछी को इस बात पर शरम भी आ रही थी कि इतने लोग उसे घूर-घूरकर देख रहे थे। साथ ही उसे यह भी ख्याल था कि इधर तो वह अकेला था और उधर इतने बहुत-से लोग थे, जो सब रक्खी का साथ देगे; इसलिए वह उल्टे पैरो वापस लौट पडा। दोनों औरते पूर्ववत् चिल्ला रही थी और कुछ लड़के मुँह मे उँगली डालकर सीटी बजा रहे थे।

उसने अपनी हार तो मान ली थी पर उसके मन मे जो झुँझलाहट थी, वह दूर नही हुई थी। वह ऑखे बचाकर इधर-उधर देखता जाता कि कही और लोग तो उसे नही घूर रहे है। जब उसने देखा कि गली में शोरगुल सुनकर लोग चुपके-चुपके अपने दरवाजो पर आकर खड़े हो गये हैं तो उसका जी चाहा कि वह उन सबको जाकर मारे कि वे उसे इस तरह क्यों यातनाएँ दे रहे थे।

"हे भगवन्!" वह अनायास ही भगवान् से प्रार्थना करने लगा। असह्य गरमी के कारण वह हॉफ रहा था; उसने अपने माथे का पसीना पोंछा और उस पतली सी गली और लोगों की घूरती हुई नजरों से भाग निकलने के लिए उसने अपने कदम तेज किये।

बाजार की चौड़ी सड़क पर पहुँचकर उसकी जान में जान आयी। उसने गला साफ करके जमीन पर थूका और सर उठाकर आगे चल दिया।

उसने अपना सर ऊँचा करने को कर तो लिया, पर वह अनुभव कर रहा था कि आत्म-सम्मान की भावना को पुनः प्राप्त करने के प्रयास में यह आशंका बाधा डाल रही थी कि यदि बाजार में भी लोगों ने गली की औरतों की ही तरह उसे घूरा तो वह फिर कोई झगड़ा कर बैठेगा। इसलिए उसने फैसला किया कि वह भागकर चौराहे के बीचवाले विष्णु के मन्दिर में जायेगा और वहाँ बैठकर, कुछ पानी पीकर अपने मन को शान्त करेगा। वह हाथ जोड़कर परमात्मा की प्रार्थना करेगा और अपने सारे भ्रम और शकाएँ भगवान विष्णु के चरणों में बैठकर साफ-साफ प्रकट कर देगा।

जिस समय वह बाजार की थोड़ी-सी दूकानों के सामने से गुजरा, उस समय दूकानदार तीसरे पहर की नींद का आनन्द ले रहे थे, इसलिए किसी ने उसे देखा नहीं। केवल दूला हलवाई ने पुकार कर कहा :

"अरे पंछी भैया, जरा ठहरो तो। थोड़ा-सा .गरम दूध और जलेबी तो खाते जाओ।...पेड़े अभी ताजे बनाये है। हॉ, यह तो बताओ क्या यह सच है, सुना है..."

"मैं जानता हूँ कि तुमने क्या सुन रखा है," पछी ने बुड़बुड़ा कर कहा और इस तरह मन्दिर की तरफ भागा जैसे कोई भूत उसका पीछा कर रहा हो। यह बात उसने दूला हलवाई से नहीं बल्कि स्वयं अपने से कही थी।

मन्दिर की तरफ भागते समय उसमें न जाने कहाँ से इतनी शक्ति आ गयी थी; पर आगे बढने पर सर के घाव के कारण उसे फिर कमजोरी महसूस होने लगी।

मोटी-मोटी दीवारोंवाले उस छोटे-से मन्दिर की सुखद छाया में पहुँचकर वह सीधे अन्दर की तरफ लपका, जहाँ भगवान् विष्णु की पीतल

की मूरत खड़ी थी। आगा-पीछा सोचे बिना वह हाथ जोड़कर घुटनों के बल बैठ गया और चौखट पर सर टेककर प्रार्थना करने लगा :

"ईश्वर ! ईश्वर ! परमात्मा !..."

सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का नाम ही उसके लिए एक मंत्र के समान हो गया। ज्यादा एकाग्रचित्त होकर परमेश्वर का ध्यान करने के लिए उसने अपनी आँखे मूँद ली। उसने सोचा कि इस प्रेम-पूजा के द्वारा वह अपने सारे शत्रुओं पर विजय पा लेगा। अपनी माँ की प्रार्थना मे सुने हुए भगवान् श्रीकृष्ण के ये शब्द उसे याद थे :

"जो भी मेरी शरण मे आता है, मै उसके दुःख दूर करता हूँ !"

उसे ऐसा लगा कि वह सारी विपदाओं से बचा रहेगा।

वह अपना सर उठाकर अभी ठीक से बैठ भी नही पाया था कि उसे मूरत के दाहिनी तरफवाले कोने से, जहाँ अँधेरा कुछ ज्यादा था, जोर-से कहकहे लगाने की आवाज सुनाई दी।

दूसरे ही क्षण उसने मुड़कर देखा कि उसके पुराने दोस्त; लाला बीरबल का बेटा दामोदर और चौधरी सूबेदार अछरूराम का बेटा राजगुरू दो अन्य दूकानदारों के साथ बैठे ताश खेल रहे है। ये दो और साथी मुनीचन्द और दुनीचन्द नाम के दो भाई थे, जिनकी कपड़े की दुकान थी। पंछी का चेहरा पीला पड़ गया; वह अपने-आप को अपराधी समझ रहा था कि उन लोगों ने, जो केवल परम्परा को निभाने के लिए हिन्दू थे और परमेश्वर के इस मन्दिर की उपासना करने के बजाय जुआ खेलने के लिए इस्तेमाल करने मे जरा भी संकोच नही करते थे, उसे पूजा करते हुए पकड़ लिया था।

"कहो यार," दामोदर ने कहना आरम्भ किया, "इतने दिन तक कहाँ थे ?"

"मालुम नहीं तुम्हे, बेचारा सर तुड़वाये बिस्तर पर पड़ा था !" राजगुरू ने सहानुभूति दिखाते हुए कहा।

"अच्छा तो इतनी मार पड़ी कि सन्त हो गए !" दामोदर ने व्यंग्य

किया, "वाह वाह, भाई पछी, क्या कहने हैं तुम्हारे ! मगर तुम तो भगवान पर विश्वास नहीं रखते थे !..."

"तुमसे तो अच्छा ही हूँ कि दिनभर अपने बाप की दूकान पर पैसों पर पादते रहते हो और जुआ खेलकर इस मन्दिर को अपवित्र करते हो !"

"अभी कितने दिन हुए है, तुम भी तो हमारे साथ यहीं ताश खेलते थे !..." दामोदर ने उत्तर दिया ।

पछी को सहसा इस बात का आभास हुआ कि उसकी शादी के बाद से पिछले कुछ महीनों मे अकाल पड़ने के कारण और उसके बाद की दुःखद घटनाओं के कारण उसके व्यवहार मे कितना परिवर्तन आ गया था । यह बिजली की तरह उसके दिमाग मे कौंध गया कि उसे सच-मुच भगवान् पर विश्वास नही था और वह केवल इस डर के मारे ही भगवान् की शरण मे आया था । सच तो यह था कि परम्परा की लकीर पीटनेवाले इन लोगों से भी बढ़कर, जो ज्यादा पैसा कमाने के लिए अपनी दुकान मे देवताओं के चित्रों पर केवल दिखाने के लिए फूल चढ़ाते थे, वह खुद अपनी शक्ति पर ज्यादा विश्वास रखता था । वह बहुत बलवान् था पर वह दिल का बहुत अच्छा था और उसने हमेशा कमजोरों की रक्षा की थी—उसकी गुंडई भी केवल एक मनोरंजन मात्र थी । वह सोचने लगा कि सचमुच दूसरो को कितना अजीब लगता होगा कि उसका ऐसा शेर इतनी जल्दी गीदड़ बन गया था ।

"अच्छा आओ, मै भी तुम्हारे साथ दो-एक हाथ खेलता हूँ," पंछी ने प्रस्ताव रखा; उसका विचार था कि अपने पुराने दोस्तों का साथ बनाये रखने का सबसे अच्छा उपाय यही था ।

"भाभी का क्या हाल है ?" दामोदर ने चुटकी लेते हुए कहा, "सुना है कि वह होशियारपुर से लौट आयी हैं ? वह तुम्हारी राह देखती होंगी ।..."

"जबान सँभाल कर बात करो !" पंछी ने उत्तर दिया । दामोदर के मुँह मे 'भाभी' शब्द सुनते ही वह आपे से बाहर हो गया था । कारण

यह था कि दामोदर ने कोई बेजा बात नहीं कही थी पर पंछी को उसकी बात में एक दूसरा अर्थ—एक व्यग्य छुपा हुआ दिखायी दिया। गॉव के सभी लोगों से अब उसे इसी व्यग्य का खतरा रहता था।

"अरे दामोदर! अपना खेल खेलो, लेक्चर न झाडो!" राजगुरू ने बात को टालते हुए कहा।

"अरे, इसमे लेक्चर की क्या बात है! हमारी भाभी, जिन्हे हमसे बहुत छुपाकर रखा जाता है, अब बहुत फैशनेबुल होकर लौटी है, साड़ी पहनने लगी है। सुना है..."

"सुअर का बच्चा!" पंछी ने चिल्लाकर कहा, "अपनी जबान बद रख!"

"अरे, जा जा, उसकी रखवाली कर जाके! वह जो सीता की तरह रावण के यहॉ रहकर बनवास से आयी है!"

"हरामी!" पंछी ने गरज कर कहा और शेर की तरह दामोदर पर टूट पड़ा। उसमें फिर वही पुराना जोर वापस आ गया था।

चूँकि दामोदर बेठा हुआ था इसलिए पछी को मौका मिल गया और उसने उसके एक घूँसा रसीद कर दिया। लेकिन राजगुरू और उन दो बजाजों ने बीच-बचाव करके दोनो को अलग कर दिया।

"मादर..." पंछी ने दात पीसकर गाली देते हुए कहा, "अगर तूने ज्यादा बकवास की तो टॉगे चीरकर फेक दूंगा!"

"अरे शान्त हो जाओ!"

"अरे झगड़ा खतम करो!"

"पछी भैया...इतना गुस्सा!"

"इसी बदमाश ने तो मुझे गुस्सा दिलाया था।" पछी ने अपनी सफाई में कहा।

"बदमाश होगा, तू!" दामोदर ने चिल्लाकर कहा और पंछी के सर पर इतने जोर से वार किया कि वह चक्कर खाकर गिर पड़ा; उसके पुराने जख्म पर फिर चोट लग गयी थी। उसने उठकर फिर हमला करने

की कोशिक की, पर कमजोरी के कारण वह उठ न सका।

मन्दिर का पुजारी मूरत के पीछे सुख की नींद सो रहा था; शोर-गुल सुनकर वह जाग पड़ा और लपकता हुआ घटनास्थल पर पहुँचा।

"थोड़ा-सा पानी ले आओ!" राजगुरू ने कहा।

दामोदर अपराधियों की तरह मुँह लटकाये मन्दिर से चला गया और मुनीचन्द तथा दुनीचन्द पछी की मरहम-पट्टी करने लगे।

मन्दिर के दरवाजे पर उत्सुक लोगों की भीड़ जमा हो गयी, जैसे किसी का कत्ल हो गया हो।

●●९

जब पछी की आँख खुली तो उसने अपने-आपको घर मे चारपाई पर पड़ा पाया। रफीक चाचा उसके सर पर गीला अँगौछा रखे बैठे थे। उसने कोठरी मे चारों तरफ नजर दौडाकर गौरी को देखने का प्रयत्न किया; आखिरकार उसने गौरी को चौकें में बैठा देखा।

"एक चुप सौ को हराती है," रफीक चाचा ने उँगली उठाकर उपदेश देते हुए कहा, "वह तेरे लिए लस्सी तैयार कर रही है।"

पछी को अभी तक कमजोरी बाकी थी; उसने कोई उत्तर नही दिया, केवल मुँह बनाकर बुदबुदाया, "पानी!"

"बीबी," रफीक चाचा ने पुकारकर कहा, "थोड़ा-सा पानी ला दो इसे।"

यह सुनते ही पंछी उठ बैठा, मानो वह पानी पीने के लिए व्याकुल हो। पर वास्तव मे वह अपनी पत्नी का चेहरा ध्यान से देखना चाहता था ताकि होशियारपुर के उसके जीवन के बारे मे सच्चाई को समझ सके; उसके इसी जीवन को लेकर सारे गाँव मे कानाफूसी हो रही थी और यही बात उसके दिमाग पर हरदम छायी रहती थी। जब तक वह इसके बारे

मे विस्तार से न जान ले तब तक वह न तो उसकी तरफ से लड़ सकता था और न स्वय ही जीवित रह सकता था। चूँकि गौरी की पीठ उसकी तरफ थी इसलिए उसकी ऑखे उसे देखकर भी कुछ पता न लगा सकीं; उसकी ऑखो ने गौरी मे केवल कठोरता और क्रोध देखा।

"बेटा, अगर तुम्हारे मन मे गुस्सा हो तो उसे पी जाओ!" रफीक चाचा ने कहा।

"चाचा, तुम बड़े ज्ञानी हो!" पछी ने रफीक चाचा पर व्यंग्य करते हुए कहा, "मगर अपना सारा ज्ञान लेकर तुम अपने घर बैठो, मै अपने ढग से इस औरत से निबट लूँगा।"

पछी के इन शब्दो के आगे रफीक चाचा के लिए अब इसके सिवा कोई चारा ही नही रह गया था कि वह वहॉ से उठकर, जहॉ बैठकर वह उसकी सेवा-सुश्रूषा कर रहे थे, चले जाये। वहॉ से जाने के पहले उन्होंने बड़ी नरमी से पछी का हाथ पकड़कर उसे लौटाने की कोशिश की।

पछी के सीने मे तरुणाई का घमंड उबल रहा था इसलिए उसने लेटने से इन्कार कर दिया।

"यहॉ आओ, गौरियाई!" उसने पुकारा।

"आती हूँ।" गौरी ने एक गिलास से दूसरे गिलास मे लस्सी उँडेलते हुए धीरे से कहा।

चूँकि उसकी आवाज सुनते ही वह फौरन भागकर नही आयी इसलिए पछी को ऐसा लगा कि वह उसका विरोध कर रही है। इस बात पर उसे क्रोध आ गया।

जब गौरी उसकी तरफ आयी उस समय भी वह शान्त और रहस्य-मय थी; उसमे एक ऐसा अभिमान था, जिसका पंछी को अन्दाजा भी न हो सकता था। पंछी की समझ से यह बाहर था कि वह औरत, जिसे अपराध की भावना से लज्जित होना चाहिये, इतना ऐंठती किस बात पर है।

गौरी ने लस्सी का गिलास पंछी की तरफ बढ़ा दिया।

क्रोध के आवेश में पंछी ने हाथ के झटके से गिलास हटा दिया और सारी लस्सी बिस्तर और फर्श पर बिखर गयी।

"हाय !" गौरी के मुँह से अनायास ही निकल गया।

"अरे, तेरे सर पर कौन-सा भूत सवार हो गया है !" रफीक चाचा ने चिल्लाकर कहा।

"है, क्या हुआ ?" हूरबानो ने अपनी कोठरी से भागकर आते हुए कहा। पंछी को रफीक चाचा के हवाले करके वह अपने घर में चली गयी थी।

"कुतिया, मुझे सच-सच बता क्या बात है ?" पंछी बिस्तर पर तनकर बैठ गया और गरजकर गौरी से पूछने लगा।

गौरी उसके सामने चुपचाप सर झुकाये खड़ी थी; उसके इस व्यवहार को पंछी ने यह समझा कि वह विद्रोह, अहंकार और हठ की भावना के कारण ऐसा कर रही है।

"बोल, नहीं तो मैं तेरी जान ले लूँगा।" पंछी चिल्लाया और बिस्तर से नीचे आ खड़ा हुआ।

"पंछी !" रफीक चाचा ने उसे शान्त करने के लिए कहा। वह उसे पकड़े हुए थे।

"हाय री, क्या हो गया है इसे ?" हूरबानो ने सख़्ती से कहा।

"मुझे बताने को है ही क्या," गौरी ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "इन्होंने मुझे निकाल दिया था और मैं वापस आ गयी हूँ। मैं उतनी ही निष्कलंक हूँ जितनी यहाँ से जाते समय थी।"

"तेरे निष्कलंक होने का सबूत क्या है ?" पंछी ने गरजकर कहा, "तेरे रोने-धोने से तो मैं तेरी बात मान नहीं लूँगा।"

गौरी हूरबानो से लिपटी खड़ी थी। वह कोई उत्तर न दे सकी।

यह देखकर पंछी का खून खौल उठा कि हूरबानो ऐसी औरत, जिसने स्वयं उसके प्रति कभी कोई सहानुभूति नहीं दिखलायी थी, अब गौरी को सान्त्वना दे रही थी। अगर गौरी उसके पास होती तो वह उसे

मारता-पीटता और फिर उसे सीने से लगा लेता और सब कुछ ठीक हो जाता। परन्तु संयोगवश हूरबानो और रफीक चाचा के वहाँ उपस्थित होने के कारण वह कुछ भी न कर सकता था; वे गौरी को उससे अलग किये हुए थे।

"यहाँ आओ," पछी ने ललकार कर कहा। उसके ये शब्द आग की लपटों की तरह गौरी की तरफ बढ़े।

गौरी ने हूरबानो की बाँहों से अपने को छुड़ा लिया और हाथ जोड़कर सिर झुकाकर बोली :

"सच कहती हूँ, मैंने तुम्हें धोखा नहीं दिया है।"

रफीक चाचा उसके रास्ते से हट गये और कुछ शरमाकर उन्होंने अपना मुँह फेर लिया। फिर उन्होंने हाथ हिलाकर अपनी बीवी को इशारा किया कि अब उन दोनों को वहाँ से चल देना चाहिये।

रफीक चाचा और हूरबानो अभी दो कदम भी न गये होंगे कि पंछी गौरी पर टूट पड़ा।

"इधर आओ, मै कह रहा हूँ!" पछी ने चिल्लाकर कहा। गौरी डर के मारे अपनी जगह से हिली नहीं। पछी उछलकर खड़ा हो गया और कस-कसकर उसे पीटने लगा।

गौरी गिर पड़ी और फूट-फूटकर रोने लगी।

इससे पहले कि रफीक चाचा और हूरबानो उसके पास पहुँचते, पंछी ने उसके एक ठोकर मारी और हाथ फैलाकर पागलों की तरह चिल्लाने लगा :

"तूने मेरी नाक कटवा दी, पिपलॉकलॉ की कुतिया! मेरी तकदीर का न जाने क्या खोट था कि तुझसे मेरा ब्याह हुआ, छिनाल की औलाद!"

"अच्छा, अगर मैं ही तुम्हारी सारी मुसीबतों की जड़ हूँ तो मै चली जाऊँगी!" गौरी ने सहसा जमीन पर से उठते हुए कहा, "मैं जाकर डाक्टर महेन्द्रा के अस्पताल मे काम करूँगी और वहीं अपना बच्चा

जनूँगी। और फिर कभी यहाँ लौटकर नहीं आऊँगी।" उसमें विद्रोह की भावना थी और उसके चेहरे पर एक भयानक शक्ति की दृढ़ता थी; साथ ही उसकी आँखों में आँसू भी थे।

"बीबी, ऐसा नही कहते," रफ़ीक़ चाचा ने कहा, "नही, ऐसा न करो।...यह लड़का तो पागल है! गॉव के लोगों ने अपनी जहर मे बुझी हुई बातों से इसे डरा दिया है।"

"अगर इन्हे शरम लगती है तो मैं इस शरम का कारण ही दूर कर दूँगी," गौरी ने चिल्लाकर आँसू पोंछते हुए कहा, पर ऑसू रुकते ही नही थे।

"अरी, यह तो नासमझ लड़का है," हूरबानो ने गौरी को मनाते हुए कहा।

"नही चाची!" गौरी ने रोते-सिसकते हुए कहा, "यह नासमझ नहीं हैं, यह कमजोर हैं। इनकी चाची केसरो ने इन्हे बिगाड़ दिया है। गॉव के लोगों के बीच यह बड़े शेर बनते थे, मगर सच पूछो तो यह बिल्कुल कायर है। लोग इनसे कहते हैं कि प्रजा के यह कहने पर कि सीता रावण के यहॉ रह आयी हैं इसलिए उनके सतीत्व का क्या विश्वास, राम ने सीता को निकाल दिया था!...मैं सीता तो हूँ नहीं कि धरती फट जायेगी और मुझे निगल लेगी! मगर मैं यहॉ से चली जाऊँगी और फिर कभी अपना मुँह नही दिखाऊँगी!"

वह धीरे से मुड़ी और गिलास उठाकर चौके की तरफ चली गयी। शुरू-शुरू मे तो उसके कदम ठिठक रहे थे और वह कॉप रही थी, पर गिलास चौके मे रखकर उसने अपना मुँह पोंछा, जी कड़ा करके उसने सर ऊपर उठाया और आगे चल दी। यद्यपि देखने मे वह बिल्कुल शान्त थी, पर अपनी मन की कमजोरी पर विजय पाने के लिए वह जो संघर्ष कर रही थी उसके कारण उसके पैर बहुत धीरे-धीरे उठ रहे थे।

एक क्षण के लिए रुककर उसने पंछी को देखा। सहसा उसका गला भर आया। पर अपनी भावनाओं पर काबू पाकर उसने नहाने की चौकी

के ऊपर अलगनी पर से अपने गीले कपड़े उतारे और तेजी से गली में निकल गयी।

उसका चेहरा व्यथित हृदय की वेदना से चमक रहा था। अब उसके चेहरे पर वह गाय जैसा सीधापन नही था, जो पंछी के घर मे ब्याह कर आने के समय था। अब वह एक ऐसी नारी का चेहरा था जो स्वयं अपने बारे मे फैसला कर सकती थी।

"लौट आओ, गौरियाई!" रफ़ीक़ चाचा ने पुकारा, "बीबी लौट आओ!..."

"अरी, लौट आ, अरी लौट आ," हुरबानो ने रो रोकर कहा।

पर गौरी तो गली मे पहुँच चुकी थी। उसने उन दोनों की आवाज सुनी, वह अपने ऑसू न रोक सकी, पर उसके हृदय मे एक अभिमान था। वह अपने सीने पर पत्थर रखे गली मे आगे बढ़ती जा रही थी। एक क्षण के लिए उसके मन मे यह विचार उठा कि जमीन फट जाये और वह उसमे समा जाये और सीता की तरह वह भी अपने को निर्दोष सिद्ध कर सके। पर उसके पैरो के नीचे जमीन ठोस और कठोर थी और इसकी कोई सम्भावना नही थी कि वह फट जायेगी। सतयुग मे ही वह चमत्कार हो सकता था जिसने सीता को बचा लिया, कलियुग मे यह होना असम्भव था। केवल डाक्टर महेन्द्रा के विचार से उसे कुछ ढाढ़स बँधता था। वह उनके पास जायेगी और उनकी शरण मे अपने बच्चे के जन्म तक नर्स का काम करेगी, जैसे सीता ने महर्षि बाल्मीकि के आश्रम मे रहकर अपने पुत्रों को जन्म दिया था। और उसका बच्चा न तो पंछी की तरह कायर होगा न स्वयं उसकी तरह कमजोर!